बिहार विश्वविद्यालय की पी-एच० डी० उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध-प्रबंध :—

रामभक्ति-शाखा के कवि संत श्री सियालाल शरण 'प्रेमलता' और उनका काव्य

104387

9804
7/12/2017

प्रस्तुतकर्त्ता
रामनिवास पाण्डेय
एम. ए.

निर्देशक :—
डॉ० महेन्द्र मधुकर,
एम. ए. (द्वय), पी-एच० डी०, डी० लिट०
रीडर, हिन्दी विभाग,
बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर।

१९८३

प्रमाण-पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि बिहार विश्वविद्यालय की पी-एच0 डी0 उपाधि हेतु मेरे निर्देशन में प्रस्तुत "रामभक्ति शाखा के कवि संत सियालाल शरण "प्रेमलता" और उनका काव्य" शीर्षक शोध-प्रबंध श्री रामनिवास पाण्डेय की मौलिक अनुसंधानात्मक कृति है, जो उनके अध्ययन, चिंतन और परिश्रम का प्रतिफल है । मेरे जानते अब तक उक्त विषय पर किसी को भी किसी प्रकार की शोध-उपाधि प्रदान नहीं की गई है ।

स्वभाव और चरित्र से भी शोधकर्त्ता पी-एच0 डी0 की उपाधि के लिए सर्वथा योग्य हैं।

19/1/83

[डॉ0 महेन्द्र मधुकर]
निर्देशक
रीडर, हिन्दी विभाग,
बिहार विश्वविद्यालय,
मुजफ्फरपुर ।

रामभक्ति शाखा के कवि संत सियालाल शरण "प्रेमलता" और उनका काव्य

विषयानुक्रमणिका

पुरोवचन :

पृष्ठ संख्या :

प्रथम अध्याय -- 14 – 91

रामभक्ति शाखा की मधुरोपासना-परंपरा में सियालाल शरण जी "प्रेमलता" का महत्व :-

प्रेमलताजी का मधुर भाव और महत्व-संकेत --

रामभक्ति का विषय -- भक्ति तत्त्व का विश्लेषण -- शांडिल्य भक्ति सूत्र -- भक्ति रसामृत सिन्धु -- रूपगोस्वामी के मत -- भक्ति या उपासना का मूल लक्ष्य -- भक्ति के तीन तत्त्व -- भक्ति के प्रकार -- प्रेम का महत्व -- हिन्दी रामकाव्य में वैधी और मर्यादावादी भक्ति -- रामभक्ति विषयक संहिताएं -- आचार्य रामानंद का व्यक्तित्व -- राम काव्य का वैशिष्ट्य -- मधुराभक्ति या रसोपासना का स्वरूप-विकास --सगुण रामभक्ति की प्रवृत्तियाँ -- शास्त्र भक्ति और रस भक्ति -- रसिक साधना का प्रवर्तन -- शुक्ल जी का मत-परीक्षण -- हजारी प्रसाद द्विवेदी की मान्यता -- डॉ० रामकुमार वर्मा -- फादर कामिल बुल्के -- डॉ० भुवनेश्वर नाथ मिश्र "माधव" --

मधुरोपासना के साम्प्रदायिक सिद्धान्त ग्रंथ -- रसिक संप्रदाय के पर्यायवाची नाम -- मधुरोपासना की साधना-पद्धति -- उपास्य राम और सीता -- सखी-सखा-भाव -- प्रेमलताजी की विशिष्टाद्वैत साधना का संकेत -- रसिक साधना का साध्य तत्त्व -- आचार्य प्रपत्ति -- पंच संस्कार -- दीक्षा -- अर्थ पंचक -- प्रपत्ति उपदेश -- भाव साधना [लगन की उत्पत्ति] -- शरणागति रहस्य -- नाम परत्व उपदेश -- लगन उद्रेक की आठ भूमिकाएं -- प्रीति की अष्ट स्थितियाँ और दृष्टि मुद्राएं -- श्री संप्रदाय अर्थात् प्रेमलता जी का श्री सिया सम्प्रदाय -- सतगुरु विचार -- अष्टयाम -- प्रेमलताजी की दीक्षा-परंपरा -- सम्प्रदाय-विवरण -- तिलक-विचार -- आचार्यों का सखी रूप -- स्थूल शरीर संबंधी नाम और आत्म संबंधी [महली] नाम -- मधुरोपासना परंपरा में प्रेमलताजी का महत्व -- अग्रदास "अग्रअली" -- नाभादास "नाभाअली" -- बालकृष्ण "बालअली" -- बालानंद -- छत्रसाल -- रामप्रिया शरण "प्रेमकली" -- जानकी रसिक शरण "रसमाला" -- रूपलाल रूपसखी -- रामप्रपन्न [मधुराचार्य] "मधुर प्रिया" -- सूर किशोर -- मामा प्रयागदास -- रामसखे -- प्रेमसखी -- हर्याचार्य हरि सहचरी -- कृपा निवास -- रामचरणदास -- रामगुलाम द्विवेदी -- महाराज विश्वनाथ सिंह -- जीवाराम "युगलप्रिया" -- जनकराज किशोरी शरण "रसिकअली" -- प्रताप कुंवरिबाई -- काष्ठजिह्व स्वामी "देव" -- पतितदास -- उमापति त्रिपाठी "कोविद" -- रामशरण -- युगलानन्द शरण "हेमलता" -- महाराज रघुराज सिंह -- हनुमान शरण "मधुरअली" -- बैजनाथ -- बनादास -- शीलमणि -- जानकी वर शरण "प्रीतिलता" -- परमहंस सीताशरण -- वृषभानुकुंवरि "रामप्रि

पं0 रामवल्लभा शरण "प्रेमनिधि" -- रामवल्लभाशरण "युगलविहारिणी" -- कामेन्द्र मणि -- सीताराम शरण "रामरसरंगमणि" -- सीतारामशरण भगवानप्रसाद "रूपकला" -- गोमती दास "माधुरीलता" -- सियाशरण मधुकरिया "प्रेमअली" -- संत सियालाल शरण प्रेमलता -- रसिक साधना का व्यावहारिक पक्ष -- साम्प्रदायिक सिद्धान्त-विवेचन और नाम-रटन द्वारा भक्ति-प्रसार -- संक्रान्ति काल के कवि प्रेमलता -- निष्कर्ष ।

द्वितीय अध्याय : 92-124.

कवि सियालाल शरणजी "प्रेमलता" की जीवनी : व्यक्तित्व और परिवेश --

रसिक संप्रदाय में प्रेमलताजी का परिचय -- जन्म और बाल्यकाल -- साधना-यात्राएं -- साधना और काव्य-रचना के प्रेरक सूत्र -- साधनाभूमि के रूप में चित्रकूट, काशी, अयोध्या और मिथिला भूमि विशेषकर सीतामढ़ी का महत्व -- सीतामढ़ी के लक्ष्मणा-तट पर "सद्गुरू निवास" आश्रम -- सीतामढ़ी परिक्रमा द्वारा व्यावहारिक साधना का आरंभ -- लीला-प्रेम -- मिथिला की मध्यमा परिक्रमा और तीर्थों के अन्वेषण द्वारा सामाजिक व्यक्तित्व का संकेत -- त्यागवृत्ति -- उच्च मानवीय गुण -- सं0 1998 में काशी में साकेतवास -- व्यक्तित्व -- रूपाकृति -- सद्गुरू चरित-विचार -- सियाराम की नामध्वनि के रूप और प्रकार -- वैयक्तिक गुण -- अंत:साक्ष्य द्वारा आत्म परिचय -- ध्यान, नामरटन और भक्ति -- मस्तमौला और अक्खड़ व्यक्तित्व -- मस्ती -- आवेश-भाव -- स्वरूप-परिचय -- परिवेश -- मिथिला-भूमि का महत्व -- जनकपुर -- सीतामढ़ी--

अयोध्या -- काशी के संकटमोचन हनुमान -- निष्कर्ष ।

तृतीय अध्याय : 125-216

कवि श्री सियालाल शरण "प्रेमलता" का कर्तृत्व --

प्रेमलताजी के कर्तृत्व का वर्ण्य तत्व -- प्रेमलताजी की पूर्व प्रचलित ग्रंथ-सूची -- डॉ० हजारी प्रसाद द्विवेदी के मत का पुनः परीक्षण -- प्रेमलताजी की रचनाएँ और उनकी काव्य-प्रवृत्तियों का विश्लेषण -- संकलन ग्रंथ -- वृहद् उपासना रहस्य -- प्रेमलता पदावली -- सीताराम रहस्य दर्पण -- षट्ऋतु विमल विहार [सियवर षट्ऋतु विहार दर्पण] -- जानकी विनय नामादि महत्व -- मिथिला-विभूति प्रकाश चालीसा -- वैराग प्रबोधक बहत्तरी -- हितोपदेश शतक -- सीताराम नाम रूप अनन्यता वर्णन -- ज्ञान पचासा -- भक्ति महारानी जू के अड़सठ अंग -- जानकी जन्म स्तुति -- प्रेमलता बाराखड़ी सीताराम नाम जापक महत्व -- नामस्तुति -- सार सिद्धान्त प्रकाश -- नाम तत्व सिद्धान्त दोहावली -- नाम महिमा दृष्टान्तावली -- सतगुरु शब्द यथार्थ ज्ञान वर्णन -- गुरु पदार्थ प्रबोधिका -- सीथ प्रसादी माहात्म्य -- अनन्य शतक -- नामस्तुति -- निजात्म बोध दर्पण -- अपेल सिद्धान्त प्रकाश -- युगलनाम संबंध अष्टोत्तरी -- नेही अष्टक -- षोडश प्रकार की भक्ति -- सन्त महिमा बीसिका -- उपदेश पेटिका -- सियाराम नामाष्टक -- नास्तिकी प्रश्न आस्तिकी उत्तर -- नाम रहस्य त्रयी -- सीताराम नाम संबंध बहत्तरी -- नाम महत्व वर्णन -- नाम वैभव प्रकाश चालीसा -- सीताराम नामाष्टक -- चैतन्य चालीसा -- नित्य प्रार्थना -- जानकी बधाई [जानकी

जी की बधाई‖ -- बाललीला -- विश्वविलास वीसिका -- श्री रामानंदी मार्ग में संकलित तीन रचनाएं -- रामानंदी अवधूतामार्ग ‖मुख्य वैष्णव सिद्धान्त‖ -- असली नकली परमहंसनि की पहिचान -- परमहंस ज्ञान प्रबोधक पचीसी -- सत्यसिद्धान्त रहस्य प्रकाश अर्थात् आत्म अनात्म ज्ञान -- श्री धाम श्री सीतामढ़ी माहात्म्य -- निष्कर्ष ।

चतुर्थ अध्याय : 217-271

श्री सियालाल शरण जी "प्रेमलता" के काव्य में भक्ति और दार्शनिकता --

प्रेमलताजी का कवि, भक्त और दार्शनिक रूप -- भक्ति तत्व पर विचार -- भक्ति ईश्वर-प्राप्ति का साधन -- रसिक भाव में नाम और रूप की प्रधानता -- प्रेमलता के काव्य में नाम रूप का महत्व -- प्रेमलता के काव्य में भक्ति और दार्शनिकता के सोपान और सूत्र -- सदगुरू महत्व -- नाम-महत्व -- नाम-रटन -- रूप-प्रसंग -- उपासना और उपासक प्रसंग -- पंच संस्कार -- अष्ट छाप -- प्रेमभक्ति प्रार्थना-प्रसंग -- सत्संग -- धाम-महत्व -- दार्शनिक मत -- तिलक-विचार -- सखी रूप और भावपरक महली नाम -- युगल उपासना और अष्टकुंज की भावना -- तत्सुख भाव -- हनुमत्भक्ति -- भजन -- निष्कर्ष ।

पंचम अध्याय : 272-304.

प्रेमलता जी के काव्य में माधुर्य-भाव --

प्रेमलताजी के काव्य में माधुर्य भाव -- मधुर रस-

विवेचन -- डॉ0 हजारी प्रसाद द्विवेदी -- पं0 गोपीनाथ कविराज -- भक्ति का रसात्मक रूप -- मधुर भाव में उपासना का लक्ष्य -- लीला-माधुरी और आन्तर मिलन -- गुह्य भक्ति लीला -- भाव या रति रूप में प्रेम की पूर्वावस्था -- प्रीति तत्त्व -- काम वृत्ति -- माधुर्य रस और उज्ज्वल रस -- फ्रायड द्वारा प्रतिपादित काम तत्त्व काम का उदात्तीकरण -- मधुरोपासना की मनोवैज्ञानिक दृष्टि -- मधुर रस का आस्वादन -- रसिक सन्तों की मधुर भावना में साकेत लीला ‡युगल दंपति सीताराम का नित्य विहार‡ -- अग्रदास की अष्टयाम-भावना -- भावद् विग्रह में पंच रसों की स्थिति -- देव संबंधी भक्ति -- मधुर भक्ति में ऐश्वर्य और माधुर्य मूला भक्ति का सामंजस्य -- श्री रामचरण दास के उपदेश -- प्रेमलता जी के ग्रंथों में भी सतगुरु, शरणागति, दिनचर्या, पंच संस्कार, आचार-विचार, 32 सेवा पराधों और दस नामापराधों की चर्चा -- कृष्ण भक्ति का रसिक भाव की उपासना पर प्रभाव -- उज्ज्वल नीलमणि का संकेत -- प्रेमलता जी के काव्य में मधुर भाव का निदर्शन -- अष्टयाम-प्रसंग का माधुर्य -- पंच रसों का संबंध स्वरूप और उनके चौबीस सूत्र -- अष्टयाम-भावना में निज रस अनन्यता को महत्व -- सखी वर्ग --तत्सुखी भाव का साक्षी भाव -- षट्ऋतु क्रीड़ा -- नख शिख शृंगार वर्णन -- आभूषण वर्णन -- भाविक प्रशंसा -- सेवा-भाव -- झूलन -- रसिक भाव -- रास नृत्य सखी भाव की महिमा -- होली वर्णन -- मधुर रूप और माधुर्य भाव -- गाली-सुख -- वैष्णव शृंगारी रूप -- रसिक गुणगान -- शृंगार रस और प्रभु भजन -- सीताराम-सौन्दर्य और माधुर्य -- निष्कर्ष ।

षष्ठ अध्याय : 305-335

श्री सियालाल शरण जी प्रेमलता के काव्य का भाषा-शिल्प --

प्रेमलताजी के काव्य में भाषा शिल्प का स्वरूप-संकेत -- काव्यभाषा का स्वरूप विवेचन -- साहित्यिक और लोकभाषा का आकलन - चित्रात्मकता -- रूपकात्मकता, संक्षिप्तता, व्यंजकता, प्रतीकात्मकता, बिम्बात्मकता, रागात्मकता आदि-- भाषा और काव्य का अभिन्न संबंध -- डॉ० सियाराम तिवारी -- डॉ० नगेन्द्र -- डॉ० महेन्द्र मधुकर -- शुक्ल जी की "रस मीमांसा" में निरूपित काव्यभाषा का महत्व -- काव्य भाषा की सर्जनात्मक शक्ति -- भाषा-शिल्प -- भारतीय काव्य शास्त्रीय चिन्तन में भाषा-शिल्प की चर्चा -- शब्द - प्रेमलताजी के तत्सम शब्द प्रयोग - तद्भव शब्द प्रयोग -- देशज शब्द प्रयोग -- उर्दू या विदेशी शब्द प्रयोग -- प्रमुख उदाहरण-- प्रेमलताजी के काव्य में शब्दों का गतिमय एवं सर्जनात्मक प्रयोग -- प्रेमलताजी की काव्यभाषा अवधी, व्रजभाषा और खड़ी बोली हिन्दी का कलात्मक मिश्रण -- निष्कर्ष -- अलंकार -विधान -- अलंकारों का शोभाधायक स्वरूप और काव्य शास्त्रीय चिन्तन का संकेत -- प्रेमलताजी के काव्य की आलंकारिक भाषा और उसके प्रमुख उदाहरण -- शब्दालंकार-प्रयोग -- अनुप्रास, वक्रोक्ति, यमक -- अर्थालंकार-प्रयोग -- उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, उदाहरण, स्वभावोक्ति आदि -- प्रेमलताजी की मिश्रित भाषा और उसके कुछ उदाहरण -- मुहावरे -- कुछ प्रमुख उदाहरण -- छन्द-विधान -- प्रेमलताजी के काव्य में छन्द वैविध्य-पद -- कवित्त -- चौपाई -- मंजु छन्द --

दोहा -- कुंडलिया -- गजल -- रेखता -- निष्कर्ष ।

सप्तम अध्याय : 336-348

उपसंहार ।

परिशिष्ट -- 349-365

(1) प्रमुख सहायक ग्रंथ-सूची ।

(2) संत कवि प्रेमलताजी का चित्र ।

(3) संत कवि प्रेमलताजी की हस्तलिपि की चित्र-प्रति ।

(4) सीतामढ़ी निवासी प्रेमलताजी के परमप्रिय शिष्य श्री उपेन्द्र नाथ मिश्र "मंजुल" जी का पत्र ।

(5) सद्‌गुरू निवास, सीतामढ़ी के महंत श्री राम जगन्नाथ शरण जी का पत्र ।

संकेत --

प्र0 - प्रकाशक

पृ0 - पृष्ठ

वृ0 उ0 र0 - वृहद् उपासना रहस्य

------- 0 -------

श्री सियालाल शरण 'प्रेमलता'

पुरोवचन

रामभक्ति शाखा के कवि संत श्री सियालाल शरण "प्रेमलता" और उनका काव्य नामक प्रस्तुत शोध-प्रबंध में मध्यकालीन वैष्णव रामभक्ति काव्य के मधुरोपासना का सैद्धान्तिक एवं व्यावहारिक संयोग प्रस्तुत करने वाले श्री सीताराम के अनन्य अनुरागी रससिद्ध भक्त कवि श्री सियालाल शरण जी"प्रेमलता" के व्यक्तित्व एवं परिवेश, काव्य, दर्शन और भक्ति का सांगोपांग प्रथम अनुसंधानात्मक विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। प्रेमलता जी [सं0-1928-सं0 1998] 19 वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध और 20 वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में संक्रमण काल के हिन्दी कवि हैं। उनकी मधुरोपासना भक्ति में शास्त्र और लोक का, ज्ञान और भक्ति का, मर्यादा एवं रसिकता का मणिकांचन संयोग हुआ है।

प्रस्तुत प्रबंध के पूर्व प्रकाशित एतद् विषयक सभी ग्रंथों में प्रेमलताजी के ग्रंथों की संख्या 33 बतायी गयी है तथा डॉ0 हजारी प्रसाद द्विवेदी ने अपने हिन्दी साहित्य उद्भव और विकास में उक्त सभी ग्रंथों को अप्रकाशित कह दिया है। यही नहीं काशी नागरी प्रचारिणी सभा द्वारा प्रकाशित हिन्दी साहित्य का वृहद् इतिहास पंचम भाग में भी सियालाल शरण "प्रेमलता" को सियाराम शरण के रूप में स्मरण किया गया है और उन्हें हनुमद् भक्ति स्तोत्र के रचयिताओं की परंपरा में परिगणित किया गया है। उपर्युक्त भ्रांतियों के परिहार के साथ प्रेमलता जी के काव्य के संतुलित अध्ययन की आवश्यकता बनी हुयी थी, इस दृष्टि से उस अध्ययन की आवश्यकता और

महत्त्व स्वत: स्पष्ट हो जाता है ।

प्रस्तुत शोध-प्रबंध के प्रथम अध्याय में रामभक्ति शाखा की मधुरोपासना परंपरा में सियालाल शरण जी "प्रेमलता" का महत्व निरूपित हुआ है । राम काव्य की मधुर भक्ति के स्वरूप का संकेत रटते हुए अन्य मधुरोपासक कवियों की चर्चा हुयी है तथा "प्रेमलता" जी के काव्य के विशिष्ट पक्षों पर प्रकाश डाला गया है । द्वितीय अध्याय में कवि सियालाल शरण जी "प्रेमलता" की जीवनी -- व्यक्तित्व और परिवेश का चित्रण हुआ है । वहि: साक्ष्य एवं अन्त: साक्ष्य के आधार पर उनकी जीवन प्रसंग में, वैयक्तिक विशेषताओं और साधना-स्थलों पर विचार हुआ है ।

तृतीय अध्याय कवि श्री सियालाल शरण प्रेमलता के कर्तृत्व से संबंधित है । उनके सभी प्रकाशित ग्रंथों की छानबीन करते हुए उनके वर्ण्य तत्त्वों का निदर्शन किया गया है । प्रबंध के चतुर्थ अध्याय में प्रेमलता जी के काव्य में भक्ति और दार्शनिकता का विवेचन है । उनके सभी महत्वपूर्ण ग्रंथों के आधार पर उनके भक्ति विषयक एवं दार्शनिक सिद्धान्तों की समीक्षा हुई है और महत्वपूर्ण निष्कर्ष ढूँढे गये हैं ।

प्रस्तुत प्रबंध का पंचम अध्याय प्रेमलता जी के काव्य में माधुर्य-भाव के अनुसंधान से सम्बद्ध है । संक्षिप्त: मधुर रस विवेचन करते हुए रसिक संत परंपरा में माधुर्य के विभिन्न गुह्य पक्षों को उद्घाटित किया गया है एवं प्रेमलता जी के काव्य के आधार पर माधुर्य भाव की सूक्ष्म विवेचना हुई है । प्रबंध के षष्ठ अध्याय में प्रेमलता जी के काव्य के भाषा शिल्प पर

विचार हुआ है । काव्यभाषा की सैद्धान्तिक चर्चा करते हुए उसकी सर्जनात्मक शक्ति के आधार पर निष्कर्ष ढूँढे गये हैं तथा प्रेमलता जी के भाषा-शिल्प में तत्सम्, तद्भव, देशज, उर्दू या विदेशी शब्दों के प्रमुख उदाहरण प्रस्तुत किए ग ये हैं । प्रेमलता जी की आलंकारिक भाषा पर सूत्र-रूप में विचार करते हुए कतिपय उदाहरण चुने गये हैं एवं उनकी रचनाओं के छंद प्रयोगों को भी वर्गीकृत कर निष्कर्ष ढूँढा गया है । प्रबंध का अंतिम अध्याय उपसंहार है जिसमें संपूर्ण शोध-प्रबंध में विवेचित तथ्यों को सूत्ररूप में प्रस्तुत कर निष्कर्षोपलब्धि की चेष्टा की गयी है ।

प्रस्तुत प्रबंध की मौलिकता और अपूर्वता का संकेत शोध- परीक्षा के नियम निर्वाह हेतु किया जा रहा है । प्रबंध की मौलिकता इस बात में निहित है कि मध्यकालीन रामभक्ति की रसिकोपासना परंपरा के प्राय: अंतिम कवि प्रेमलता जी पर यह प्रथम सांगोपांग अध्ययन है । जीवनी, काव्य और परिवेश के बिखरे हुए सूत्रों को एकत्र कर पहली बार उनके नाम-रटन एवं नाम-प्रचारक, मिथिला के तीर्थों के उद्घाटक और मिथिला परिक्रमा के प्रस्तोता लोक संत के रूप में दर्शन किये ग ये हैं । प्रबंध का सर्वाधिक महत्वपूर्ण अनुसंधान प्रेमलता जी के प्रकाशित ग्रंथों के कोटि विभाजन एवं उनकी संख्या के विवाद को समाप्त कर तथ्यपूर्ण निर्णय देने में है एवं प्रभाव तथा भ्रांति से बचते हुए सूत्रबद्ध संतुलित विवेचन का प्रयास किया गया है । विषय की नवीनता और साहित्य में प्रथम प्रस्तुति के कारण इसके विवेचित पक्षों का महत्वपूर्ण होना सहज और स्वाभाविक है । प्रेमलता जी के काव्य में दर्शन और भक्ति तथा माधुर्य-भाव की विस्तृत मीमांसा हुई है । प्रेमलता जी शास्त्रज्ञ पंडित न होकर

भावावेशी रसिक संत-कवि थे अत: उनकी भाषा में पांडित्य और चमत्कार के स्थान पर मधुर अनुभूतियों का प्रवेश हुआ है । उनकी रागात्मक भाषा एक ओर जहाँ सरस है वहीं दूसरी ओर सामाजिक कुरीतियों पर तीखा प्रहार करती है । अत: भाषा-शिल्प की दृष्टि से समवेत रूप से प्राय: सभी महत्त्वपूर्ण पक्षों पर संकेत करने की चेष्टा हुई है ।

प्रस्तुत शोध-प्रबंध की रचना में जिन ग्रंथों से सहायता मिली है उनके लेखकों के प्रति शोधकर्त्ता विनम्र कृतज्ञता ज्ञापित करता है, विशेषकर मधुर रस भाव के विचारक आचार्यों डॉ0 भगवती प्रसाद सिंह स्व0 डॉ0 भुवनेश्वर नाथ मिश्र "माधव" एवं स्व0 रामस्वार्थ चौधरी "अभिनव" की कृतियों से अमूल्य संकेत प्राप्त हुए हैं । प्रबंध-निर्माण में कई जटिल और विवादास्पद प्रसंगों को सुलझाने में आलोच्य कवि प्रेमलता जी के परम प्रिय शिष्य पंडित श्री उपेन्द्रनाथ मिश्र "मंजुल" (सीतामढ़ी निवासी) से अति महत्वपूर्ण सुझाव मिले हैं । प्रस्तुत प्रबंध उनके आशीर्वाद का व्यक्त रूप है । सीतामढ़ी के सद्गुरू निवास के महंत श्री रामजगन्नाथ शरण एवं श्री मैथिली वल्लभ शरण जी का मैं आभारी हूँ जिन्होंने अप्राप्त ग्रंथों को सुलभ बनाकर सहायता प्रदान की ।

बिहार विश्वविद्यालय के भूतपूर्व कुलपति और हिन्दी विभागाध्यक्ष पद्म श्री डॉ0 श्यामनन्दन किशोर का मैं चिर कृतज्ञ हूँ जिन्होंने मुझे सदैव प्रोत्साहन देकर आगे बढ़ाया ।

पूज्य गुरुवर एवं अपने शोध निर्देशक डॉ0 महेन्द्र मधुकर का मैं चिर ऋणी हूँ जिन्होंने पग-पग पर मेरा मार्ग निर्देशन किया

और मेरी शक्ति को जगाकर चैतन्य बनाया । आज मैं जो भी बन पाया हूँ यह उनकी ही प्रेरणा का फल है ।

रामभक्ति रस के मर्मी साधक अपने पूज्य पिता श्री राम नरेश पांडेय को मेरे वैष्णव-संस्कार का यह पत्र-पुष्प देखकर जो प्रसन्नता होगी -- वही मेरी शक्ति है । ग्रंथ-लेखन की अवधि में पूज्य अग्रज श्री रामविनोद पांडेय एवं श्री रामकृष्ण पांडेय मेरे सदैव प्रेरक रहे हैं । अपनी सहधर्मिणी प्रेमशीला का मधुरभाव तो इस प्रबंध के प्रत्यक्षर में विद्यमान है ।

नेशनल लाइब्रेरी कलकत्ता, काशी नागरी प्रचारिणी सभा, सिन्हा लाइब्रेरी पटना, लंगट सिंह कालेज पुस्तकालय, मुजफ्फरपुर तथा बिहार विश्वविद्यालय पुस्तकालय के अधिकारियों के प्रति भी मैं आभार प्रकट करता हूँ जिन्होंने अध्ययन की समुचित सुविधा प्रदान की ।

रा० निवास पाण्डेय
19/1/83

वसंत पंचमी, 1983 — [राम निवास पांडेय]

प्रथम अध्याय

रामभक्ति शाखा की मधुरोपासना-परम्परा में सियालाल शरणजी प्रेमलता का महत्व

प्रथम अध्याय

रामभक्ति शाखा की मधुरोपासना-परम्परा में सियालाल शरणजी प्रेमलता का महत्व

१९ वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध और बीसवीं शताब्दी तक के पूर्वार्द्ध तक उत्तरी भारत की जनता को रामभक्ति का संदेश देने और सियाराम नाम का प्रचार करते हुए जन जीवन को प्रेरित एवं उद्बुद्ध करने वाले भक्त कवि संत सियालाल शरणजी प्रेमलता को रामभक्ति परम्परा में विशिष्ट स्थान प्राप्त है । उन्होंने रामभक्ति को व्यावहारिक और सर्वजन संवेद्य बनाकर उसकी महिमा का विस्तार किया । तप और साधना को मानव-जीवन के क्रिया-कलापों से जोड़कर उन्होंने भक्ति और अध्यात्म को दैनिक जीवन में उतारने की चेष्टा की । रामभक्ति की मर्यादा का निर्वाह करते हुए उन्होंने मधुरभाव की रसिकता के साथ सियाराम की भक्ति का भावनापूर्ण रसात्मक चित्रण किया । प्रेमलताजी का काव्य भक्ति और नाम-रटन की महिमा के बोध से ओत प्रोत है । सम्पूर्ण हिन्दी भक्ति काव्य में तुलसी के बाद सियाराम नाम की महिमा का ऐसा उद्घोषक व्यक्तित्व दूसरा नहीं दिखाई देता ।

वस्तुत: रामभक्ति का विषय चरित्र, क्रिया और भाव की दृष्टि से इतना उन्नत है कि उसमें असाधारण भावों की प्रतीति

अनायास होती है । भक्ति मानव-जीवन का एक उदात्त और दिव्य भाव है । भक्ति शब्द संस्कृत के "भज सेवायाम्" [पाणिनि, धातु पाठ, भ्वादिगण पृष्ठ 15] धातु से "स्त्रियां क्तिन्" सूत्र के अनुसार भावार्थक "क्तिन्" प्रत्यय से बना है । इसका व्युत्पत्ति लब्ध अर्थ है सेवा करना । शांडिल्य भक्ति सूत्र[1] में परानुरक्ति या अपूर्व एवं प्रकृष्ट अनुराग रखने वाले भाव को भक्ति कहा गया है नारद भक्ति सूत्र में भगवान् के प्रति परम प्रेम को भक्ति कहा गया है ।[2]

भक्तिरसामृत सिन्धु में कहा गया है कि जिस भक्ति में आराध्य के अतिरिक्त किसी अन्य की अभिलाषा न हो [अन्याभिलाषिता शून्यं] जो ज्ञान तथा कर्म से आवृत न हो और जिसमें कृष्ण की अनुकूलता प्राप्त करते हुए उनका चिंतन मनन किया जाए, वही भक्ति उत्तम है ।"[3]

श्री मधुसूदन सरस्वती ने सर्वेश के प्रति भागवत धर्म सेवन से द्रवीभूत चित्त की अविच्छिन्न वृत्ति को भक्ति कहा है ।[4] भक्ति स्वतः ही पूर्ण भाव है । वह किसी बाह्य साधन कर्म, ज्ञान या अन्य उपादानों की अपेक्षा नहीं रखती । कर्म का लक्ष्य वैयक्तिक सुख होता है और ज्ञान का लक्ष्य होता है उस निर्विशेष ब्रह्म की प्राप्ति जो द्वैत भावना से रहित है, अर्थात् जहाँ "उपास्य उपासक में अभेद संबंध होता है । अतः भक्ति मूलतः उन दोनों से भिन्न है । इसलिए

---

1. सा परानुरक्तिरीश्वरे -- शांडिल्य भक्ति सूत्र-2
2. नारद भक्ति सूत्र-3
3. भक्ति रसामृत सिन्धु -- रूपगोस्वामी, पूर्वभाग पहली लहरी, श्लोक-
4. भक्ति रसायन, प्रथम उल्लास, श्लोक-3

गौड़ीय वैष्णव साहित्य में कर्म और ज्ञान का तीव्र विरोध मिलता है। श्री रूपगोस्वामी ने भी माना है कि जबतक साधक के हृदय में कर्म से प्राप्य भोगों के प्रति और ज्ञान से प्राप्य मोक्ष के प्रति अंशत: भी रुचि बनी रहेगी, तबतक उसमें भक्ति का प्रादुर्भाव संभव नहीं है।[5] रूपगोस्वामी ने भक्ति के प्रभाव की चर्चा करते हुए उसके छ: लक्षण बताए हैं -- 1. भक्ति सब प्रकार के दुखों का नाश करती है 2. यह संपूर्ण कल्याण को देनेवाली है, 3. यह मोक्ष को भी हेय समझती है, 4. यह अत्यंत ही दुर्लभ है, 5. यह घनीभूत आनंद है, 6. यह श्री कृष्ण भगवान् को आकर्षित करनेवाली है। अत: इनकी दृष्टि में भक्ति के तीन प्रकार हैं -- साधन-भक्ति, भाव-भक्ति और प्रेम-भक्ति। भक्ति को स्वयं मोक्ष रूपा कहा गया है। सच्चा अध्यात्म ज्ञान भी भक्ति का आनुषंगिक फल है। स्वरूपा शक्ति, तटस्था शक्ति और माया शक्ति से उपलक्षित ईश्वर के तीनों रूपों -- ब्रह्म, परमात्मा और भगवान् का साक्षात्कार ही सच्चा तत्त्व ज्ञान है। भक्ति द्वारा ही ईश्वर के स्वरूप की अनुभूति और उसका साक्षात्कार संभव है।

भक्ति या उपासना का मूल लक्ष्य होता है भगवत् सान्निध्य की प्राप्ति -- भागवत प्रेम पात्रता उपासना के लिए भक्त अमूर्त ब्रह्म के मूर्त आलंबन की आवश्यकता का अनुभव भी करता है, तब वह निर्गुण निराकार

---

5. भुक्तिमुक्ति स्पृहा यावत् पिशाची हृदि वर्त्तते।
तावद् भक्ति सुखस्यात्र कथमभ्युदयो भवेत्॥
--- भक्तिरसामृत सिन्धु, पूर्वलहरी, 2/11

को सगुण साकार रूप में देखना चाहता है । भगवत्प्रेम द्वारा अमूर्त का ज्ञान या परिचय भावात्मक तादात्म्य और आनंदानुभूति के रूप में होता है । "अज्ञेय और अव्यक्त को अज्ञेय और अव्यक्त ही रखकर उसका भावभूमि या काव्यभूमि के भीतर सन्निवेश संभव नहीं । ... संहिताओं, उपनिषदों में जो जो परमात्मा या ब्रह्म की मीमांसा की गई है, वह काव्य की भावना से नहीं बल्कि तत्त्व की दृष्टि से । इसलिए वह अज्ञेय और अव्यक्त तात्त्विक जिज्ञासा का विषय बन सकता है, रसानुभूति का नहीं पर दर्शन और काव्य में भेद है । इसलिए भारतीय साहित्यिक परंपरा में वाल्मीकि से लेकर पंडित राज जगन्नाथ तक कोई एक भी ऐसा कवि नहीं हुआ जिसने अज्ञेय और अव्यक्त को अज्ञेय और अव्यक्त ही रखकर उसके प्रति प्रेम व्यंजना की हो "।[6]

भक्ति सिद्धांतों के अनुसार भक्ति के तीन तत्त्व स्थिर किए गए हैं -- अनुग्रह, प्रेम और भक्ति । पुत्र, शिष्यादि के प्रति स्नेह अनुग्रह, भार्यादि के प्रति स्नेह प्रेम और गुरुजन, देवतादि के प्रति स्नेह भक्ति है । अतः भक्ति में स्नेह तत्त्व मधुर भाव के रूप में व्याप्त दिखाई देता है । साधक का चित्त जब कामना रहित, वांछा रहित, विकार रहित और सांसारिक विषयों के प्रति आसक्ति रहित हो जाता है तब उसके विमल मानस में भक्ति रूपी राजहंस का अवतरण होता है, जिससे संसार के सभी बंधन

---

6. साहित्यिक निबंधावली -- रहस्यवाद की रहस्यवादिता शीर्षक निबंध --- आचार्य देवेन्द्रनाथ शर्मा, पृष्ठ : 110-111

विकार और कामनाएँ लुप्त हो जाती हैं।"[7]

भक्ति के अनेक प्रकार प्रकल्पित हुए है। शांडिल्य सूत्र [72] तथा नारद भक्ति सूत्र [54, 55-69] में भक्ति के मुख्या और गौणी दो भेद किए गए हैं। श्री मद्भगवद्गीता में आर्त, जिज्ञासु, अर्थार्थी और ज्ञानी भक्तों में ज्ञानी की भक्ति मुख्या या अहेतुकी भक्ति कही गई है। कहा गया है कि भक्त प्रह्लाद ने भक्ति के श्रवण, कीर्त्तन, स्मरण, पाद-सेवन, अर्चन, वन्दन, दास्य, साख्य और आत्मनिवेदन ये नौ भेद बताए हैं जिनका विस्तृत विवेचन नारद पांचरात्र, शांडिल्य सूत्र, श्री मद्भागवत[8] आदि ग्रंथों में हुआ है। देवर्षि नारद ने ग्यारह प्रकार की प्रेम रूपा भक्ति की चर्चा की है -- गुण माहात्म्यासक्ति रूपासक्ति, पूजासक्ति, स्मरणासक्ति, दास्यासक्ति, सख्यासक्ति, कान्तासक्ति, वात्सल्यासक्ति, आत्मनिवेदनासक्ति, तन्मयतासक्ति, और परम विरहासक्ति श्री चैतन्य महाप्रभु के मतानुसार भक्ति दो प्रकार की है -- वैधी और रागानुगा वैधी भक्ति में प्रवृत्त होने की प्रेरणा शास्त्र से मिलती है जिसे विधि भी कहते है

---

7. यत्प्राप्ते न किंचिदवांछति, न शोचति, न द्वेष्टि
न रमते नोत्साही भवति।

--- नारद भक्ति सूत्र-7

8. श्रवणं कीर्त्तनं विष्णोः स्मरणं पाद सेवनम्।
अर्चनं वन्दनं दास्यं सख्यमात्मनिवेदनम्॥

--- श्रीमद्भागवत् 7/5/23

जिसकी बुद्धि तर्कशील है, जिसे शास्त्र का ज्ञान है, जिसका विश्वास दृढ़ है और जिसकी वैष्णव धर्म में परमनिष्ठा है, केवल वही साधक वैधी भक्ति का अधिकारी माना गया है । रागानुगा भक्ति वैधी भक्ति से भिन्न होती है । यह स्वाभाविक आसक्ति का नाम है । इसे आदर्श मानकर जो भक्ति की जाती है, उसी का नाम रागानुगा है । राग का अर्थ है आसक्ति भक्त का भगवान् के प्रति आकर्षण या तृष्णा की उत्पत्ति ।[9]

वस्तुतः भक्ति में प्रेम का स्थान महत्वपूर्ण होता है । ईश्वर और जीव का पारस्परिक प्रेम ही सर्वश्रेष्ठ प्रेम है । भक्त ईश्वर को प्रेम का अवतार स्वरूप समझता है ।[10] भक्ति एक त्रिकोण स्वरूप है जिसका प्रथम रूप निष्काम भावना, द्वितीय निर्भयता और तृतीय प्रेम मात्र को लक्ष्य मानना है । भक्ति एक ऐसी भाव मुग्धता है जिसके कारण हृदय भर आता है और महत्व भावना तीव्र हो जाती है ।[11]

---

9. तत्र विषयिणः स्वाभाविको विषय संसर्गेच्छामयः
प्रेमाराग: यथा चक्षुरादीनां सौन्दर्यादौ तादृश एव
भक्तस्य श्री भगवत्यपि राग इत्युच्यते ।
--- भक्तिसंदर्भ -- रूपगोस्वामी

10. भक्ति का विकास -- डॉ0 मुंशीराम शर्मा, पृष्ठ-99 (1958)

11. मुक्ति एण्ड भक्ति एज द हाइयेस्ट वैल्यूज -- द जरनल आव द इन्डियन एकाडेमी आव फिलासफी
--- भाग-2, पृष्ठ-27

भक्ति का वैधी और मर्यादावादी रूप हिन्दी रामकाव्य में स्पष्ट रीति से दिखाई पड़ता है । उत्तरी भारत में रामभक्ति के प्रचार, का श्रेय रामानंद को है । वस्तुतः यज्ञ प्रधान ब्राह्मण धर्म के प्रतिक्रिया स्वरूप भागवत धर्म का विकास मिलता है । भागवतों के इष्ट देवता वासुदेव कृष्ण वैदिक देवता विष्णु के अवतार माने गए हैं अतः भागवत और ब्राह्मण धर्म के समन्वय से वैष्णव धर्म की उत्पत्ति मिलती है । "ईस्वी सन् के आरंभ से राम भी विष्णु के अवतार के रूप में स्वीकृत होने लगे, किन्तु शताब्दियों तक रामभक्ति का कहीं निर्देश नहीं मिलता। गोपाल भंडारकर का कहना है कि भक्ति के क्षेत्र में राम की प्रतिष्ठा विशेष रूप से ग्यारहवीं शताब्दी ई0 के लगभग आरंभ हुई ।"[12] रामभक्ति की काव्यात्मक अभिव्यक्ति के बाद श्री संप्रदाय में इसका शास्त्रीय प्रतिपादन भी मिलता है । श्री संप्रदाय के प्रवर्त्तक रामानुज की भक्ति नारायण में केन्द्रित थी पर उन्होंने श्री भाष्य में अवतारों में राम और कृष्ण का उल्लेख किया है । रामभक्ति संहिताएं महत्वपूर्ण हैं, यथा अगस्त संहिता, कलि राघव, वृहद् राघव और राघवीय संहिता । श्री संप्रदाय के उपनिषद रामपूर्वतापनीय, रामोत्तर तापनीय तथा रामरहस्योपनिषद् भी महत्वपूर्ण हैं ।

आचार्य रामानंद श्री संप्रदाय में दीक्षित हुए थे पर वे उस रामभक्ति को नया रूप प्रदान कर रामावत संप्रदाय के प्रवर्त्तक बने ।

---

12. हिन्दी साहित्य कोश - प्रथम भाग --- सं0 डॉ0 धीरेन्द्र वर्मा, पृष्ठ-701, ज्ञानमंडल लि0 वाराणसी, प्रथम संस्करण

उनकी प्रसिद्ध रचनाएँ हैं "श्री वैष्णव मताब्जभास्कर" और श्री रामार्चन पद्धति। रामानंद के क्रान्तिकारी और "आकाशधर्मा" व्यक्तित्व ने राम को इष्ट मानकर सभी जातियों को दीक्षा लेने का अधिकारी बनाकर और संस्कृत के स्थान पर भाषा में रामभक्ति के प्रचार का आदर्श अपनाकर धर्म और भक्ति को लोकग्राह्य बना दिया।

डॉ० रामकुमार वर्मा[13] ने राम साहित्य की निम्नलिखित विशेषताओं पर बल दिया है --

1. राम साहित्य ने वैष्णव धर्म के आदर्शों को सामने रखकर सेवक सेव्य भाव पर जोर दिया।
2. ज्ञान और कर्म से भक्ति श्रेष्ठ समझी गई।
3. इस साहित्य में सभी प्रकार की रचना शैलियों का प्रयोग किया गया इसमें श्रव्य के साथ साथ दृश्य काव्य भी पाया जाता है और मुक्तक रचनाओं के साथ-साथ प्रबंध काव्य भी।

वैष्णव भक्ति के इतिहास में आलवारों के बाद आचार्यों का महत्वपूर्ण स्थान मिलता है। आलवारों की कृतियों के अनुशीलन से ज्ञात होता है कि उनकी भावपूर्ण आराधना में विष्णु के अन्य अवतारों की भाँति राम को भी महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त था। वे भावावेश के क्षणों में राम कथा के भी विशिष्ट प्रसंगों का गान करते थे। उनका उद्देश्य क्रमबद्ध रामचरित

---

13. हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास, पृष्ठ-336
चतुर्थ संस्करण, 1958

लिखा न था अतः इस काल में किसी रामायण की रचना न हो सकी । आलवार भक्तों का अवदान महत्वपूर्ण है क्योंकि "समाज में व्याप्त वैदिक-अवैदिक, ऊँच-नीच, ज्ञान-भक्ति आदि विविध प्रकारों एवं स्तरों की विषमता का शमन करना इनकी विशेषता थी । व्यापक समन्वय भावनानेही इनको प्राचीन शास्त्रों के युगानुकूल प्रस्तुतीकरण की प्रेरणा एवं शक्ति दी । इनकी दूसरी महत्वपूर्ण देन थी प्रपत्ति अथवा शरणागति भावना जिसके प्रकाश में अधिकारी-अनधिकारी का भेद समाप्त हो गया । आत्मनिवेदन की साधना का परम लक्ष्य और परमपद प्राप्ति का सोपान घोषित किया गया । भक्ति के क्षेत्र में इनकी, तीसरी अविस्मरणीय देन थी मधुराभक्ति अथवा रसोपासना "।[14]

सगुण रामभक्ति की प्रवृत्तियाँ मुख्यतः दो धाराओं में प्रवाहित मिलती हैं --

1. श्रौत स्मार्त परंपरा संवलित मर्यादाबद्ध रामोपासना {शास्त्रभक्ति}
2. आगमिक परम्परापुष्ट रसिक रामोपासना {रसभक्ति}

प्रथम अर्थात् श्रौत स्मार्त परंपरा की रामभक्ति का चरम विकार तुलसी की रचनाओं में उपलब्ध होता है । स्मार्तों की पंच देवोपासना, पंचायतन भावना, नवग्रह पूजन, लोकपाल वंदना के साथ ही आगमिकों की चतुर्व्यूह तथा चतुमूर्त्ति कल्पना और तांत्रिकों की पद्धति पर सीताराम लक्ष्मण का त्रिकोणात्मक ध्यान, द्वादशाक्षर मंत्र महिमा आदि आदि

---

14. रामभक्ति : परम्परा और साहित्य --- डॉ० भगवती प्रसाद सिंह, पृष्ठ : 27-28

तत्त्वों का संयोग भक्ति के स्वरूप से संबद्ध उनकी समन्वयात्मक प्रतिभा को सूचित करता है ।

विचारकों का मत है कि "रामभक्ति शाखा में संप्रदाय के रूप में रसिक साधना का प्रवर्तन यद्यपि 16 वीं शती में हुआ किन्तु उसके अणु परमाणुओं का संघटन शताब्दियों पूर्व से ही होता आ रहा था ।"[15] वाल्मीकि रामायण में गंधर्वों के समान विहार लीला निपुण राम[16] की विलासभूमि के रूप में चित्रकूट का वर्णन[17], सीताहरण के पश्चात् शृंगार प्रधान शैली में राम का विरह-वर्णन[18] आदि प्रसंगों द्वारा शृंगार की पुष्टि होती है । परवर्ती संस्कृत रामकाव्यों विशेषकर रघुवंश {13/16, 32} उत्तरराम चरित {1/27, 35}, जानकी हरण {2/74-77}, एवं हनुमन्नाटक आदि ग्रंथों में शृंगार चित्र बहुल रूप में प्राप्त हैं । हनुमन्नाटक अथवा महानाटक की गणना रसिक भाव की रामभक्ति के प्रेरक ग्रंथों में की जाती है । हनुमन्नाटक {2/19,2 के चित्र विलास-क्रीड़ा से युक्त हैं । रसिक मतावलंबियों के अनुसार इसके रचयिता स्वयं हनुमान हैं जो चारुशीला सखी के रूप में प्रिया-प्रियतम की दिव्य केलि के

---

15. वही, पृष्ठ-68

16. वैहारिकाणां शिल्पानां विज्ञानार्थ विभागवित् ।
गन्धर्वे च भुविश्रेष्ठो बभूव भरताग्रजः ।।
--- वा० रा० आ० कां०, सर्ग-2

17. वा० रा० आ० कां०, सर्ग : 99/12

18. वही, कि० कां० सर्ग : 1/58, 92, 93, 101

रहस्यद्रष्टा माने जाते हैं । भवभूति के परवर्त्ती कवि कुमारदास के "जानकी हरण" नामक काव्य में सीताराम की केलि-क्रीड़ाओं का रसात्मक चित्रण हुआ है । राम सीता की सुरति क्रीड़ाओं[19] के अनेक चित्र वहाँ प्राप्त होते हैं । रसिक संप्रदाय में बार बार वर्णित प्रमोदवन, निधुवन, नीबीबंधनकर्षण आदि के प्रेरक स्त्रोत जानकी हरण ग्रंथ ही है । डॉ० भगवती प्रसाद सिंह का मत है कि "जानकी हरण" में शृंगार क्रीड़ा वर्णन के प्रसंग में प्रयुक्त "निधुवन" शब्द यह ध्वनित करता है कि राम की लौकिक सुरति क्रीड़ा का वर्णन करते हुए कवि की दृष्टि में उनका अवतारी स्वरूप भी था । यह नितान्त संभव है कि उक्त निधुवन के पीछे राधावल्लभ तथा हरिदासी संप्रदाय के भक्तों और सत्यनिष्ठा के रामोपासक निंबार्काचार्य रामसखे के आराध्य युगल क्रमशः राधाकृष्ण और सीताराम की दिव्य केलि स्थली का ही प्रतिरूप रहा हो ।"[20]

19· (क) स्वेद विन्दु निचिताग्र नासिका, धूत हस्त लतिका सशीत्कृतिः ।
सोढ मन्मथरसा नृपात्मजा राघवस्य न बभूव तृप्तये ।।
--- जानकी हरण, 8/28

(ख) रामवस्त्र गलितैः श्रमाम्बु भिश्छिद्रितं कुचयुगस्य कुंकुमम् ।
सा निरीक्ष्य हसिते सखीजने संमुखाद्व्यपजगाम सस्मितम् ।।
--- वही, 8/32

20· रामभक्ति : परंपरा और साहित्य, पृष्ठ-70,
हिन्दी पुस्तक एजेंसी, कलकत्ता, प्रथम संस्करण, 1974

आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने भी अपने "हिन्दी साहित्य का इतिहास" में शृंगारी भक्ति पर आक्षेप करते हुए लिखा है कि "अत्यंत खेद की बात है कि इधर कुछ दिनों से एक दल इस रामभक्ति को शृंगारी भावनाओं में लपेटकर विकृत करने में जुट गया है। ... इस रसिक पंथ का आजकल अयोध्या में बहुत जोर है और वहाँ के बहुत से मंदिरों में अब राम की "तिरछी चितवन" और बाँकी अदा" के गीत गाये जाने लगे हैं। इस पंथ के लोगों का उत्सव प्रतिवर्ष चैत्र कृष्ण नवमी को वहाँ होता है। ये लोग सीताराम को "युगल सरकार" कहा करते हैं और अपना आचार्य "कृपानिवास" नामक एक कल्पित व्यक्ति को बतलाते हैं। ... भगवान् राम के दिव्य पुनीत चरित्र के कितने घोर पतन की कल्पना इन लोगों के द्वारा हुई है, यह दिखाने के लिए इतना बहुत है। लोकपावन आदर्श का ऐसा वीभत्स विपर्यय देखकर चित्त क्षुब्ध हो जाता है। रामभक्ति शाखा के साहित्य का अनुसंधान करनेवालों को सावधान करने के लिए ही इस "रसिक शाखा" का यह थोड़ा-सा विवरण दे दिया है। "गुह्य", "रहस्य", "माधुर्य भाव" इत्यादि के समावेश से किसी भक्ति मार्ग की यही दशा होती है।"[21] शुक्ल जी ने "कृपानिवास पदावली" के तथाकथित "अत्यंत अश्लील पदों"[22] को भी उद्धृत किया है।

21· हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृष्ठ : 148-150

22· नीबी करषत बरजति प्यारी।

रस लंपट संपुट कर जोरत, पद पर सत पुनि लै बलिहारी।

-- कृपानिवासपदावली -[पृष्ठ-138]

-- हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृष्ठ-149

डॉ0 हजारी प्रसाद द्विवेदी ने आचार्य रामचंद्र शुक्ल के दृष्टिकोण से भिन्न रामभक्ति काव्य पर कृष्णभक्ति के प्रभाव को स्वीकार करते हुए मधुर भाव को मर्यादित शृंगार-भाव के रूप में ग्रहण किया है । वे मानते हैं कि "कृष्ण भक्ति की ऐकान्तिक प्रेम साधना ने धीरे-धीरे रामभक्ति के साहित्य और साधना को भी प्रभावित किया है । अठारहवीं शताब्दी के बाद अयोध्या के रामायत वैष्णवों में इस प्रकार की मधुर भाव की साधना का सूत्रपात हुआ है । मधुर भाव की उपासना कुछ इतनी आकर्षक और मनोहर है कि भक्त हृदय उसकी ओर से आँख नहीं मूंद सकता । ... इन माधुर्य भावोपासक भक्तों में भी रामोपासना का प्रधान गुण मर्यादा का पालन एकदम गायब नहीं हो गया है । सारी सतह की सामाजिक और पारिवारिक मर्यादा का पालन दृढ़ता के साथ किया गया है । जो साधु राम को अपना छोटा भाई समझकर उपासना करते हैं, उसके सामने आने पर सीता या उनकी सखियों का अभिमान करने वाले भक्त तुरंत घूंघट खींच लेते हैं । इसी प्रकार जनक का अभिमान करनेवाले भक्त उनके सामने सन्तान-वत्सल पिता की भाँति ही उपस्थित होते हैं, इस प्रकार अपनी ऐकान्तिक प्रेमनिष्ठा में भी रामभक्तों ने मर्यादा की अवहेलना नहीं की है"।[23]

---

23. हिन्दी साहित्य उद्भव और विकास, पृष्ठ-397,
हजारी प्रसाद द्विवेदी ग्रंथावली-3, राजकमल प्रकाशन,
प्रथम संस्करण, 1981

डॉ0 रामकुमार वर्मा ने अपने "हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास" में रामकाव्य की महत्ता का संकेत करते हुए लिखा है कि "वैष्णव धर्म का राम-काव्य कृष्ण-काव्य से श्रेष्ठ रहा, क्योंकि राम-काव्य में किसी प्रकार की कलुषता नहीं आने पाई"।[24]

फादर कामिल बुल्के ने रामकथा [उत्पत्ति और विकास] नामक अपने ग्रंथ में रामभक्ति के विकास-सूत्रों का विवेचन करते हुए शृंगारी राम काव्यों का उल्लेख किया है, जिसमें शुद्ध साहित्यिक तथा भक्तिपरक दोनों प्रकार की रचनाएँ आई हैं। "रामलिंगामृत" ऐसी अप्राप्य[25] पोथियों का पता लगाकर लेखक ने तुलसी के समकालीन युग में रसिक भाव की महत्ता सिद्ध की है।

अतः इतना स्पष्ट है कि हिन्दी साहित्य के इतिहास ग्रंथों में शुक्ल जी के मत के अतिरिक्त अन्य लेखकों के मत में रामकाव्य की शृंगारोपासना एक विकासमान स्वस्थ काव्य परंपरा के रूप में प्रस्तुत हुई है।

रामभक्ति में मधुरोपासना का प्रवेश :-

भगवान् राम के चरित में भारतीय संस्कृति का समष्टि रूप व्यक्त हुआ है। चरित्र की लोकप्रियता और जातीय जीवन के प्रतिनिधित्व की विशेषता के कारण इन्हें सगुण और निर्गुण दोनों पंथों में

---

24. हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास, पृष्ठ-49।

25. रामकथा, पृष्ठ-186

स्वीकार किया गया है । रामभक्ति काव्य में कान्ताभावपरक मधुर रस-साधना का आरंभ निर्भ्रान्त रूप से नहीं बताया जा सकता । उसे "रामतापनीयोपनिषद्" आदि के आधार पर वैदिकी, नारद पांचरात्र, शारदातिलक आदि में वर्णित रामोपासना के आधार पर तांत्रिकी और श्रीमद्भागवत पुराण की राधाकृष्ण की मधुर प्रेमलीलाओं के आधार पर अभिव्यक्त मानते हैं । विचारकों का मत है कि "कृष्ण लीला प्रधान भागवत् परंपरा और राधा प्रधान गीत-गोविन्द-परंपरा के समान ही सीताराम भक्ति की मधुर रस-साधना को उत्प्रेरित करनेवाला कोई-न-कोई राममार्गी वैष्णव रस-साधना का आकर-ग्रंथ अवश्य रहा होगा जिसका प्रखर प्रकाश विगत चार-पाँच सौ वर्षों के अंतर्गत लिखे गए सीताराम की मधुरोपासना से संबंधित हजारों ग्रंथों में प्रस्फुटित हुआ है । ... रामभक्ति-साधना में मर्यादावाद, ऐश्वर्य और दास्य-भाव की प्रधानता का यह अर्थ कथमपि नहीं हो सकता कि उसमें माधुर्य गुण का सर्वथा तिरोभाव था"।[26]

डॉ० भुवनेश्वर नाथ मिश्र "माधव" ने भी लिखा है कि "रामोपासना का प्रादुर्भाव दास्य-सेवक-सेव्य भाव से हुआ तथा मर्यादा ही इसकी मुख्य प्रेरणा एवं आधारशिला रही । परन्तु क्रमशः दास्य सख्य में, सख्य वात्सल्य में और वात्सल्य माधुर्य में परिगणित होता गया और आज लगभग चार सौ वर्षों से रामभक्ति शाखा में [राम-भक्ति की] माधुर्य धारा उत्तर भारत में

---

26. मधुर रस : स्वरूप और विकास --- भाग-2

-- डॉ० रामस्वार्थ चौधरी "अभिनव", पृष्ठ-183

राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण, 1972

प्रवाहित हो रही है, आरंभ में तो गुप्त गोदावरी की भाँति अप्रकट रूप में परन्तु शनैः-शनैः व्यक्त एवं प्रकट रूप में। हाँ, अलबत्ता यह स्वीकार करना होगा कि कृष्ण भक्ति शाखा की तरह इसमें "सखी-भाव" अत्यंत उन्मुक्त रूप में व्यक्त नहीं हो पाया है"।[27]

राम की मधुरोपासना से संबद्ध काव्य ग्रंथों की भाँति साम्प्रदायिक सिद्धांत ग्रंथों की भी परंपरा मिलती है जिनमें मधुरोपासना या रसिकोपासना का सुन्दर विवेचन मिलता है। इन सांप्रदायिक ग्रंथों की प्रथम कोटि में अद्वैत मतानुयायी शैवों की कृतियाँ हैं तो दूसरी कोटि में विशिष्टाद्वैतवादी श्री वैष्णव भक्तों द्वारा रचे गए ग्रंथ हैं। पहले वर्ग में "कंबन रामायण", "आनन्द रामायण" एवं रामलिंगामृत आदि ग्रंथ हैं। दूसरे वर्ग में भुशुण्डि रामायण, शिव संहिता, लोमश संहिता, हनुमत्संहिता, सत्योपाख्यान, वृहत्कोशल जैसे ग्रंथ परिगणित हैं। इन ग्रंथों में सीताराम के पूर्वराग, प्रेमविवश भाव, प्रेमलीला, आदि के चित्र मिलते हैं। आनंद रामायण के विलास खंड में सीताराम की केलि-क्रीड़ाओं का स्पष्ट वर्णन[28] मिलता है। अष्टयाम क्रीड़ा आदि के चित्र भी शृंगार पूर्ण हैं। इसी प्रकार रामलिंगामृत नामक ग्रंथ के "जानकी राम क्रीड़ा हितक" शीर्षक अध्याय में सीताराम के अष्टयाम और शृंगार संयोग-लीलाओं के वर्णन मिलते हैं। भुशुण्डि रामायण के पूर्वखंड {अध्याय-27} में राम को देवावतार गोपियों और परशक्ति श्री सीता के साथ रासलीला में रत

---

27. रामभक्ति साहित्य में मधुरोपासना-- भुवनेश्वरनाथ मिश्र "माधव" पृष्ठ-118

28. आनन्द रामायण, पृष्ठ-132

दिखाया गया है ।

रामभक्ति की रसिकोपासना में हनुमत्संहिता को पर्याप्त महत्व प्राप्त है । हनुमत्संहिता के पत्र-1 में "रसिकानाम् आह्लादकारिणी" पावनीं कथाम्" कहकर रसिक शब्द का प्रयोग हुआ है । हनुमत्संहिता [4-17] के "प्रेमामृत महोत्सव" की प्रेमलीलाओं का वर्णन रसपूर्ण है इस ग्रंथ का प्रतिपाद्य है -- राम की रहस्यमयी माधुर्य लीला, जो देवताओं के लिए अलभ्य कही गयी है ।[29] डॉ0 भगवती प्रसाद सिंह ने स्पष्टतः कहा है कि "परवर्त्ती रसिक साधना के स्वरूप-निर्माण में इस ग्रंथ से बड़ी सहायता ली गई है "।[30]

रामभक्ति की रसिकोपासना के सन्निवेश की दृष्टि से "शिव संहिता" का महत्व अनुपेक्षणीय है । "शिव संहिता" में उपासक के ऐश्वर्य बोध, माधुर्य भाव, रामकथा श्रवण से चित्त शुद्धि, माधुर्य की स्फूर्त्ति, एकमात्र पुरुष और पति के रूप में राम, मधुर रस के मूर्तिमान विग्रह के रूप में राम और सीता जैसे तत्त्वों का विचार हुआ है । इसी प्रकार लोमश संहिता में रासलीला के सुन्दर चित्र मिलते हैं । "लोमश संहिता" के अध्याय-22, श्लोक

---

29. माधुर्यं गोपनीयं च यदलभ्यं सुरासुरैः ।
    व्रह्मा वेदविदां श्रेष्ठः कपिलो नारदस्तथा ।
    --- हनुमत्संहिता, पत्र-1
    -- उद्धृत रामभक्ति में रसिक संप्रदाय, पृष्ठ-98

30. रामभक्ति में रसिक संप्रदाय, पृष्ठ-98

136 में महारास का अत्यंत सुन्दर वर्णन हुआ है। रामभक्ति की मधुरोपासना के प्रेरक सूत्रों में "वृहत्कोशल खंड" का भी महत्वपूर्ण स्थान है। इसमें सीताराम की रसिकोपासना के गुह्य तत्त्वों का प्रकाशन किया गया है। कृष्ण लीला की भाँति इसमें राम लीला का विशद विवेचन प्राप्त होता है। इसमें 3072 श्लोक हैं जो राम और सीता के रास-विलास के माधुर्य पूर्ण प्रसंगों से युक्त हैं।

इस प्रकार रामभक्ति की मधुरोपासना या रसिकोपासना के प्रेरक मुख्य सांप्रदायिक ग्रंथ निम्नलिखित हैं जिनका प्रभाव किसी न किसी रूप में मधुरोपासना की परंपरा में परिलक्षित होता है। वे ग्रंथ हैं -- कम्बन रामायण, आनंद रामायण, रामालिंगामृत, भुशुण्डि रामायण, शिव संहिता, लोमश संहिता, हनुमत्संहिता, सत्योपाख्यान, वृहत्कोशल खंड, श्री रामतापनीयोपनिषद्, श्री सीतोपनिषद्, श्री विश्वंभरोपनिषद्, श्री मैथिली महोपनिषद्, श्री रामरहस्योपनिषद्, श्री वृहत्ब्रह्म संहिता, श्री अगस्त्य संहिता, श्री वाल्मीकि संहिता, श्री शुक संहिता, श्री वशिष्ठ संहिता, सदाशिव संहिता, श्री महाशंभु संहिता, हिरण्यगर्भ संहिता, महासदाशिव संहिता, ब्रह्म संहिता, पुराण संहिता, आलमंदार संहिता, वृहत्सदाशिव संहिता, सनत्कुमार संहिता, श्री रामस्तवराज, श्री जानकी स्तवराज, श्री जानकी गीता, श्री सहस्रगीति, आदि रामायण, रामायण मणिरत्न, मंजुल रामायण, लोमश रामायण, अगस्त्य रामायण, चान्द्र रामायण, रामायण चम्पू, प्रसन्न राघवम्, मैथिली कल्याण, उदार राघव, जानकी हरण, माधुर्यकेलि कादम्बिनी, श्री सुन्दरमणि संदर्भ, श्री राम तत्त्व प्रकाश, श्री राम तत्त्व भास्कर, उपासना त्रय सिद्धांत, भ्रमरदूत, भ्रमर संदेश, कपिदूत, कोकिल संदेश, चन्द्रदूत, रामगीत गोविन्द, गीताराघव,

जानकीगीता, रामविलास, राघवविलास, रामशतक, आर्यारामायण आदि ।

मधुरोपासक रसिक संप्रदाय का साहित्य मुख्यत: पाँच नामों से जाना जाता है -- जानकी संप्रदाय, रहस्य संप्रदाय, रसिक संप्रदाय, जानकीवल्लभी संप्रदाय और सिया संप्रदाय । "इनमें "रसिक संप्रदाय" नाम ही सर्वप्रचलित और विख्यात हुआ । जिसका कारण है -- इस धारा के प्रवर्तक अग्रदास का इसके अनुयायियों को "रसिक" नाम से संबोधित करना । उन्होंने ध्यानमंजरी तथा "अष्टयाम" अपनी इन दोनों रचनाओं में "रसिक" संज्ञा ऐसे भक्तों को दी है जो राम की रसमयी लीलाओं का ध्यान करते हैं और उनकी अंतरंग सेवा के आश्रित हैं "।[31]

जानकी संप्रदाय --

श्री जानकी संप्रदायं रामरासमनन्यताम् ।
श्रुते केऽपि न यास्यन्ति वांछितं फलमेव च ।।

--- रामनवरत्न सार संग्रह, पृष्ठ-49 [महाशिव संहिता से उद्धृत]

रहस्य संप्रदाय --

विमला विमल विहार में, रहति सदा लवलीन ।
रहस-संप्रदा लाल की, प्रगटति चाह नवीन ।।

--- भावना पचीसी [कृपानिवास], पृष्ठ-1

---

31. रामभक्ति में रसिक संप्रदाय --- डॉ0 भगवती प्रसाद सिंह, पृष्ठ-140

रसिक संप्रदाय --

तेई मंगल रूप जाको जस वरनन करौ ।

परंपरा सु अनूप, रसिक-संप्रदा रति कथा ।।

--- रसिक प्रकाश भक्तमाल [युगल प्रिया], पृष्ठ-2

अन्य कथन --

1. पिवत भागवतं रसमालयं

मुहुरहो रसिका भुवि भावुकाः । --- श्रीमद्भागवत, 1/1/3

2. अस्माद्रासादादिभूतान्ना रासो भविष्यति ।

ज्ञात्वैव रसिकाः सर्वे, रमते कथयन्ति च ।।

--- हनुमत्संहिता, पत्र-21

3. वेत्ता भोग्यस्य भोक्तुं वा, समर्थः शील इत्यपि ।

पुण्यश्लोकोऽनुरागी च, रसिकोऽसौ प्रकीर्तितः ।।

--- टीकानेह प्रकाश -- जानकी रसिक शरण, पत्र-34

जानकी वल्लभी संप्रदाय --

रसिक जानकी वल्लभी, प्रबल काल कीनो अबल ।

श्यामदास गुरु कृपा लहि, शिष्य उजागिर भे प्रबल

--- रसिक प्रकाश भक्त माल [युगल प्रिया], पृष्ठ-102

सिया संप्रदाय --

कोउ अहहि आचार्य जे, सिय सु संप्रदा माहिं ।

सखिनि के सु अवतार सब, नारि पुरुष जग माहि ।।

---वृ० उ० र० [प्रेमलता], पृष्ठ-104

मधुरोपासना की साधना पद्धति --

मधुर भाव के रामभक्त रसिकों की एक व्यवस्थित साधना पद्धति प्राप्त होती है । इनमें शृंगार और सख्य भाव को अधिक महत्व मिला है। शेष रस अंग रूप में या मिश्रित रूप में आए हैं । रसिकाचार्यों ने विशिष्ट भाव संपन्न वीतराग साधकों को ही माधुर्य भक्ति का अधिकारी घोषित किया है, इसलिए यह साधना गुह्य या रहस्य साधना है । हनुमत्संहिता में कहा गया है --

उपादिशोच्य संबंधं परीक्ष्य विधिवज्जनम् ।
वैपरीत्यं च नो कार्यं कदाचित् भाव ज्ञातृभिः ।।
अस्याधिकारिणो लोके कैपि कैपि महामुने ।
अतः सर्व प्रयत्नेने गोपनीयं सदैव हि ।। --- पृष्ठ-26

स्वामी अग्रदास ने सांसारिक भोगों से विरक्त ऊँची स्थिति के संतों को ही दिव्य शृंगार का पात्र[32] माना है ।

उपास्य -- राम और सीता ---

रसिक संप्रदाय के उपास्य राम और सीता हैं । अद्वैत होकर भी लीला विस्तार के लिए दो विग्रहों में वे विभक्त हैं । राम पूर्व तापनीयोपनिषद् में इसकी सुंदर व्यंजना हुई है --

हेमाभया द्विभुजया सर्वालंकार भूषिता ।
श्लिष्टः कमलधारिण्या पुष्टः कोशलात्मजः ।।

---

32. रामभक्ति में रसिक संप्रदाय, पृष्ठ-174

राम लीला पुराण और परब्रह्म के स्वयं साकार रूप हैं ।[33] निराकार ब्रह्म राम की छाया मात्र है । राम द्विभुज हैं और लीला का रूप यही है ।[34] राम के व्यक्तित्व में ऐश्वर्य और माधुर्य दोनों की पराकाष्ठा है । इह और पर दोनों लीलाओं में उनका ऐश्वर्य मिश्रित माधुर्य एक समान दिखाई पड़ता है । रास के समय वे अनन्त रूप धारण कर सीता की अंगजा सखियों के साथ क्रीड़ा-विहार करते हैं, उनके ये रूप भी स्वयं रूप या तदेकात्मरूप होते हैं, अंशावतार नहीं ।[35] राम दक्षिण अनुकूल नायक हैं ॥कहुँ दक्षिण नायक रस लीला -- नृ० रा० मि०, पृष्ठ-4।॥ रामसखे जी ने अपने उक्त ग्रंथ में राम की आठ पटरानियों[36] का उल्लेख किया है । किन्तु सीता सर्व प्रधान और पराशक्ति हैं । राम की सभी स्त्रियाँ उनकी अंशभूता अथवा उनकी अंगजा होने के कारण स्वकीया ही हैं । स्वकीया होकर भी राम से उनका मिलन सीता के माध्यम से होता है अतः वे सीताजी से अभिन्न हैं ।

सीता शब्द पर अनेक ग्रंथों में अनेक रूपों में विवेचन हुआ है । "सीतोपनिषद्" में बताया गया है कि सीता शब्द में सकार विष्णु का, ईकार माया का, तकार मोक्षप्रद सत्य का तथा आकार अमृतत्त्व का

---

33. अनन्य तरंगिनी, पृष्ठ-4

34. नृत्यराघव मिलन कवितावली -- पृष्ठ-6

35. वृहद् उपासना रहस्य--स्वामी सियालालशरण प्रेमलता, पृष्ठ-8।

36. एक रात आठहु पटरानी । मिलन चहति प्रभु सों रति सानी ।।
--- नृ० रा० मि० क०, पृष्ठ-42

प्रतीक है । यह नाम अव्यक्त रूपिणी महामाया का व्यक्त विग्रह है । सीता के तीन रूप है -- प्रथम शब्द ब्रह्ममयी मूला प्रकृति, द्वितीय - पृथ्वी पर श्री जनक के द्वारा सीता [लांगल पद्धति] से उत्पन्न होने के कारण सीता [जानकी] और तृतीय अव्यक्त स्वरूपा श्री साकेत विहारिणी सीता ।[37]

"उपासना त्रय सिद्धांत" में बताया गया है कि इच्छा, ज्ञान और क्रिया इन तीनों शक्तियों से समन्वित मूल प्रकृति रूप में

37· सिनोति वशं करोति स्व चेष्टया भगवंतं सा सीता
सीता त्रिवर्णत्या साक्षान्माया ।
विष्णुः प्रपंच बीजं च माया ईकार उच्यते ।
सकारः सत्वममृतं प्राप्ति सोमश्च कीर्त्यते ।।
तकारस्तार लक्ष्म्या च वैराजः प्रस्तरः स्मृतः ।
ईकार रूपिणी सोमामृतावायव दिव्यालंकार स्र्-
मौक्तिकाद्या भरणालंकृता महामाया व्यक्त स्वरूपिणी
व्यक्ता भवति । प्रथमा शब्द ब्रह्ममयी स्वाध्याय
काले प्रपन्ना उद्भावनकरी सात्मिका, द्वितीया
भूतले हलाग्रे समुत्पन्ना, तृतीया
ईकार रूपिणी अव्यक्त स्वरूपा भवतीति
सीता इत्युदाहरन्ति ।

---- सीतोपनिषद्, पृष्ठ-4

श्री सीता परम पुरुष श्री रामचंद्र की नित्यभोग्या हैं, उनका आविर्भाव ही ब्रह्म की रमणेच्छा से हुआ है ।[38] नेह प्रकाश[39] में श्री सीता की दिव्य शक्ति और श्री जानकी विलास[40] में सीता राम की अनन्यता, एकता और शाश्वतता पर विचार हुआ है ।

सखी-सखा-भाव --

रसिक भाव की साधना में युगल रूप की सेवा और

---

38. आह्लादिनी शक्तिरूपा जानकी यस्य वामतः ।
तं रामं सच्चिदानन्दं नित्यं रामेश्वरं भजे ।।
इच्छा ज्ञान क्रिया शक्ति त्रयं यद्भाव साधनम् ।
तद् ब्रह्म सत्ता सामान्यं सीता तत्त्व मुपास्महे ।।
--- उपासना त्रय सिद्धांत, पृष्ठ-90

39. जनक सुता समदेवता कहो कौन जग और ।
जाके बस रघुवीर पिय ब्रह्म रुद्र सिरमौर ।। -- नेह प्रकाश
उद्धृत पराशक्ति श्री सीता और अवतरण भूमि : सीतामढी
--- उपेन्द्रनाथ मिश्र "मंजुल" -- संपादक- डॉ0 महेन्द्र मधुप
पृष्ठ-18, मंजुल प्रकाशन, मुजफ्फरपुर, प्रथम संस्करण 1979

40. सीता रामं विना नैव, रामः सीता विना नहि ।
श्री सीता रामयोरेष सम्बन्धः शाश्वतो मतः ।।
--- श्री जानकी विलास-उद्धृत-- वही

उपास्य के साथ अन्तरंग संबंध को महत्व मिला है । सखी रूप को भावावेशी रसिकों ने श्रेष्ठ माना है ।[41] राम की आह्लादिनी शक्ति सीता का अंश होने के कारण सखियों के साथ राम का मधुर संबंध युगल-स्वरूप के दाम्पत्य-भाव में ही अन्तर्हित माना गया है । सखियों के साथ राम की रस-केलि-क्रीड़ा सीता के साथ उनके दाम्पत्य-केलि-विलास से विलग नहीं है । सीता की अंगभूता और अंशभूता होने के कारण ये सखियाँ अपने को जानकी के रूप में मानकर तत्सुख-सुखी-भाव से राम की मधुर प्रेम-लीलाओं का रसास्वादन करती हैं "।[42] स्पष्ट है कि रसिक भाव में मर्यादा के रक्षण का कारण स्वकीया भाव ही है ।

श्री सीता और राम की मुख्य सखियों की संख्या 16 कही गई है । सीता की अष्ट सखियाँ हैं -- श्री प्रसाद सखी, चन्द्रकला, विमला, मदनकला, विश्वमोहिनी, उर्मिला, चंपकला और रूपलता । सीता की निज सखियाँ अंगजा हैं । इनकी संख्या 33 कही गई है । इनमें श्री, भू, लीला,

---

41. संतन के राजा ते चारि । सखी सखा पितु दास निहारि ।।
जिनके सगुण मुख्य तिनमाहिं । तिनके चूड़ामणि जे आहिं ।।
तिनमें सखी भाव नह नारि । सकल सिरोमनि विन्है विचारि ।।
जिनके कर विहरैं दोउ लाल । खास महल बसि रहत निहाल ।।
--- सिद्धांत तत्त्व दीपिका, पत्र-34
द्रष्टव्य -- रामभक्ति में रसिक संप्रदाय, पृष्ठ-176

42. रामभक्ति में रसिक संप्रदाय, पृष्ठ- 151, 154 और 306

उत्कृष्टा, कलावती, विमला, शुभदा आदि मुख्य हैं। श्री राम की अष्टसखियों में चारुशीला, हेमा, क्षेमा, पद्मगंधा, लक्ष्मणा आदि मुख्य हैं। इनकी नामावली निश्चित नहीं है। "अष्टयाम पूजाविधि" आदि में इनसे भिन्न नामावली और संख्या मिलती है। सखी वर्ग के परिकरों में "सर्वेश्वरी" का स्थान सर्वश्रेष्ठ है।[43] इन्हें शृंगार रस की आचार्या माना गया है।[44] श्री सीताराम की लीला की संपूर्ण व्यवस्था इनके द्वारा ही संपन्न होती है। इनकी विशेषता है लीला के साथ कैंकर्य। षोडश सखियों में चारुशीला जी हनुमान जी का तथा चन्द्रकला जी भरतजी का महली सेवा का रूप है। रूप सेवा या युगलविहार दर्शन रसिक साधकों का सर्वोच्च कैंकर्य माना जाता है। लीला में आनन्द के आस्वादन की अनुभूति संभोगात्मक कही गई है। इस संभोग के तीन रूप बताए गए हैं -- मनस्संभोग, दृष्टिसंभोग और साक्षात् या स्पर्श संभोग।[45] साक्षी या द्रष्टाभाव का कैंकर्य सुख प्रथम दो स्थितियों में उपलब्ध होता है इसे तत्सुखभावना और द्वितीय प्रकृत रूप को स्वसुख भावना कहा गया है। "प्रथम का {तत्सुखभावना} आशय है -- संभोग क्रीड़ा में सीता जी द्वारा अनुभूत सुख को अपना सुख मानना और दूसरे का है -- प्रियतम के साथ की गई रसकेलि

---

43. सर्वेषामपि यूथानां ईश्वरीयं भविष्यति।
अतः सर्वेश्वरी ख्याता सखीनां भुवनत्रये ।।
--- लोमश संहिता, पृष्ठ-49

44. श्री चारुशीलास्तोत्रम्, पृष्ठ-20

45. रामचरितमानस -- सटीक --- रामचरणदास, पृष्ठ-110

में स्वानुभूत सुख को ही अपना सुख मानना । तत्सुख में साक्षी भाव की प्रधानता रहती है और स्व सुख में भोक्ता भाव की"।[46] तत्सुख और स्वसुख पर विचार करते हुए प्रेमलताजी ने लिखा है --

तत्सुख कहित प्रधान बुध, निज सुख धूरि समान ।
सो फुर पै प्रभु रूप लखि, होत आन की आन ।।
सियजू कृपा स्वसुख अलि भोगहिं । परिहरि कर्म धर्म जप सोगहिं ।।
आत्मनिवेदन करि सिय हाथा । भई सकल सिय रूप अनाथा ।।
सिय आलिनि महँ नहि कछु भेदा । यह प्रसंग अति गूढ़ अखेदा ।।

--- वृहद् उपासना रहस्य, पृष्ठ-184

रसिक साधना में सख्य तथा शृंगार भाव के अधिकांश आचार्यों ने अपनी उपासना पद्धति को द्वैतपरक सिद्ध किया है पर प्रेमलताजी ने अपने को विशिष्टाद्वैत मतानुयायी कहा है ।[47]

---

46. रामभक्ति में रसिक संप्रदाय, पृष्ठ-305

47. [क] विमल आत्मा सखी सख्या । सेवत रुचि लखि दोउ सुर भूपा ।।

--- वृहद् उपासना रहस्य, पृष्ठ-98

[ख] अगणित रूप धारि परधामहिं । सेवत नित सप्रेम सियरामहिं ।।
व्रह्म जीव मैं ये तिहुँ रूपा । एक अनादि अखंड अनूपा ।।

--- वही, पृष्ठ-103

[ग] यह सु विशिष्टाद्वैत मत, मोर संपदा केर ।
सत्य सनातन जान जिय, आराधहिं जन देर ।।

--- वही, पृष्ठ-104

रसिक साधना का साध्य तत्त्व --

रसिक साधना का साध्य तत्त्व है दिव्य दम्पति का सेवा-सुख और युगल केलि के लोकोत्तर रस का आस्वादन । उपास्य के सान्निध्य, निकुंज सेवा रस[48] और महल-माधुर्य[49] तथा युगल स्वरूप की

48· युगल निकुंज रहस्य नवल रस, सो सदगुरु उपदेश करै तस ।

--- माधुर्यकेलि कादंबिनी, पृष्ठ-5।

49· महल की टहल करिय चित लाभ ।।

सुर दुर्लभ मानुष तनु पायेउ, कहत संत श्रुति गाय ।।

आलस त्यागि सु प्रातकाल उठि, लागि गुरून के पाय ।।

तनकृत करि पुनि बैठि सुआसन कहुँ इकन्त थल जाय ।।

युगल नाम लय लाय रटै मुख, अधै स्वर हरखाय ।।

मन चित करि थिर मूँदि नयन दोउ, आशा नींद विहाय ।।

सावधान होइ निज स्वरूप लखि, पंचीकृत बिसराय ।

नख शिख किये शृंगार लिये कर, सेवा शुचि निरमाय ।।

सेवत जो दम्पति पद प्रमुदित, अलिगन संग सुख दाय ।।

कंचन भवन सुदिव्य मणिनमय रचना अनुप निकाय ।।

विहरहिं जहाँ सदा सिय पिय संग, वन उपवन बहुताय ।।

नित नूतन मुद मोद प्रकाशत, चहुँदिशि सुख रह छाय ।।

भोगराग शृंगार आरती सयन केलि वर भाय ।

करहि करावहिं प्रभुहिं सहचरी, सब लखि रीझि रिझाय ।

समय समय जेहि कुंज जायँ तहँ, परिकर सनमुख आय

प्रेमलता नइ अर्घ पाद्य दै, हँसि संग जात लिवाय ।

--- प्रेमलता पदावली, पद संख्या-48, पृष्ठ : 47-48

अष्टयाम सेवा में इस माधुर्य-भाव की प्राप्ति होती है । "भावना पचीसी" [पृष्ठ-4] में भी महल माधुरी का संकेत हुआ है । कृपानिवास जी ने सखी भावापन्न रसिक भक्त की अभिलाषा इस रूप में व्यक्त की है --

सब तजि होइ हौं महल उपासी ।
स्वर्ग मुक्ति वैकुण्ठ विसारौं होय गुलद की दासी ।।
सद्गुरु वचन महारस मानौं, परौ न भ्रम की फाँसी
सेज विहार रास रस लूटौं त्यागि वियोग उदासी
युगल-विहार भावना करिहौं भटकौं न तीरथ काशी ।
और ठौर बूझकौं नहिं नयनन राम सिया छवि प्यासी ।।

-- आदि ।

मर्यादा के अधीन रहकर भक्तों ने अपने युगल सरकार की केलि कला की मधुर लीलाओं को निरखकर हर्ष भाव का अनुभव किया है ।[50]

साधना-प्रवृत्ति और रसिक-साधना की अवस्थाएँ --

भगवद् साधना की यह प्रवृत्ति भगवत्कृपा से संभव होती है ।[51] यह अनुग्रह संसारी को विरक्त बना देता है । केवल प्रभु में दृढ

50\. मधुर मनोहर चरितवर दम्पति केलि कलान ।
निरखे हरखे एक रस, परिहरि अमित विधान ।।
--- अर्थपंचक [युगलानन्दशरण]

51\. रामचरन नहिं सुरति लघु, बिना कृपा श्री राम ।
बसीकरन जिमि मंत्र ते, हरत चित्त परदाय ।।
--- नामशतक, छंद-4।

आस्था, नाम में गंभीर प्रतीति बन रहती है । अनुग्रह का यह अवसर साधक के "मलपरिपाक" की स्थिति में होता है । यह ईश्वर कृपा अहैतुकी होती है, प्रयत्न साध्य नहीं । भक्त की साधना पद्धति का चुनाव और संकेत संतों की कृपा द्वारा होता है । स्थूल रूप से रसिक साधना उत्तरोत्तर विकसित होती हुई निम्नांकित चार अवस्थाओं[52] में बाँटी जा सकती है --

1. आचार्य प्रपत्ति अथवा ज्ञानदशा
2. सम्बन्ध दीक्षा अथवा वरणदशा
3. साकेत लीला प्रवेश अथवा प्राप्तिदशा
4. लीला सुखभोग अथवा प्राप्त्यनुभव दशा

इनमें प्रथम अवस्था शरणागति द्वितीय भाव देह द्वारा लीला भाव एवं कैंकर्य की योग्यता तृतीय भावानुकूल सेवा की प्राप्ति और चतुर्थ सेवा सुख का आनन्द भोग है ।

आचार्य प्रपत्ति में पंच संस्कार दीक्षा, अर्थ पंचक, प्रपत्ति उपदेश, भाव साधना [लगन की उत्पत्ति] आदि महत्वपूर्ण हैं ।

पंच संस्कार --

पंच संस्कार माया के पाँच अंगों से साधक की रक्षा

---

52. रामभक्ति में रसिक संप्रदाय, पृष्ठ-179

करते हैं और आराध्य के नित्य धाम की प्राप्ति में सहायक होते हैं ।[53] पंच संस्कार में मुद्रा संस्कार, तिलक, नाम संस्कार, मंत्र संस्कार और कंठी संस्कार परिगणित हैं । मुद्राएं पाँच हैं -- धनुष, वाण, नाम, चन्द्रिका और मुद्रिका । वृहद् उपासना रहस्य में कहा गया है कि "श्री रामजू महाराज ने क्रम से ऊर्ध्व पुण्ड्र तिलक, पीत सिंहासन समेत -- अष्टोत्तरी श्री तुलसी काष्ठ की माला, दाहिने कान में अपना श्री राम तारक षडक्षर मंत्र, धनुष, वाण की छाप दै युगल निज गायत्री सरणागत मंत्र युगल मंत्र, द्वै युगलनाम, रूप, लीला, धाम, उपासना, श्री श्रृंगारादि पंच रसों का भलीभाँति बोध कराय जीवों को निज प्राप्ति तथा संसार सागर से उद्धारार्थ पंच संसकार प्रचार करने की आज्ञा दई[54] रसिक साधक तिलक को सधवा स्त्रियों के सिंदूर की भाँति महत्व देते हैं ।[55]

---

53. उपासक सोइ जो नाम रटै ।
प्रथम तजै जग जाल जहाँ लगि, गुरू पद कमल सटै ।
कंठी तिलक मंत्र माला दृढ़, वैश्नव ठाट ठटै ।।
जो गुरू कहैं करै सोइ सोइ सिधि, सपनेउ नाहिं नटै ।
करि सेवा संबंध लिखावै, पृण करि गुरू ढिग डटै ।।
सीखै भेद भाव वर नाना, जेहि फिरि मन न हटै
श्री सियराम विहार भक्ति रस, तन मन वच लपटै ।।
--- श्री वृहद् उपासना रहस्य, पृष्ठ-148

54. वही, पृष्ठ-149

55. जिमि सुहागिनी बिन सिन्दूर । तस बिन तिलक रसिक जनकूर ।
--- सिद्धांत तत्त्व दीपिका, पत्र-39

तिलक युगल स्वरूप का प्रत्यायक है । तिलक साधक के रूपाभिमान की रक्षा करता है । नाम संस्कार में भावसंबंधी नाम प्रदान किया जाता है । शरणागति के बाद साधक का परिवर्त्तन हो जाता है । मंत्र की दीक्षा षडक्षर राममंत्र अथवा बीजमंत्र के रूप में दी जाती है । इनका उपदेश साधक के दाहिने कान में किया जाता है । संप्रदाय में इन्हें "रहस्य त्रय" कहा जाता है । रसिक आचार्य बीजमंत्र [रां रामाय नमः] के साथ सीतामंत्र के उपदेश को भी महत्व देते हैं । युगलोपासना में युगलमंत्रों का विधान होता है । प्रेमलताजी ने रामचंद्र जी के तीनों भाइयों और उनकी स्त्रियों के भी मंत्रों की दीक्षा को स्वीकृति दी है ।[56] पर उन्होंने सीताराम के युगल मंत्र को भी पर्याप्त महत्व दिया है । "सिया" के प्रति उनकी सहज अनुरक्ति दीख पड़ती है --

सिया मंत्र बिनु राम मंत्रवर । सोहन जिमि तिय हीन ग्रही घर ।।
राम मंत्र भवतारक नाईं । सीता मंत्र खिवैया भाई ।।
राम मंत्र तनु परम सुहावा । तेज सु सीता मंत्रहि गावा ।।
राम मंत्र जिमि अशन सु नाना । स्वाद सु सीता मंत्र बखाना ।
राम मंत्र फल सुमन सुहाये । रस सुगंध सिय मंत्र सु गाये ।।
राम मंत्र वर ब्रह्म अनूपा । शक्ति सु सीता मंत्रस रूपा ।।

--- मंत्र संस्कार प्रसंग 8 [वृ0 उ0 र0, पृष्ठ-183]

माला अथवा कंठी का महत्व संतों के लिए यज्ञोपवीत और तुलसी-विष्णु के मधुर संबंध की दृष्टि से है । युगनाम तथा मंत्र

---

56. वृहद् उपासना रहस्य, पृष्ठ-182

जप के लिए 108 दानों की तुलसीमाला ग्रहण की जाती है ।

अर्थ-पंचक --

सांसारिक प्रपंचों में आबद्ध जीव को अपने वास्तविक स्वरूप का बोध कराने के लिए पाँच आध्यात्मिक तत्त्वों का उपदेश किया गया है, उसे ही पंचार्थ ज्ञान या अर्थ पंचक कहा जाता है । वे अर्थ पंचक निम्नलिखित हैं --

1. जीव का स्वरूप
2. प्राप्य {ब्रह्म राम} का स्वरूप
3. प्राप्ति के उपाय
4. प्राप्ति के फल
5. प्राप्ति के विरोधी

स्वामी युगलानन्द शरण जी {अर्थ पंचक, पृष्ठ-1} ने अर्थ पंचकों को प्रेम के ज्ञान पक्ष का मूलाधार माना है ।

षट्शरणागति रहस्य --

आचार्यों के प्रपत्ति-उपदेश द्वारा षट् शरणागति का रहस्य स्पष्ट होता है । नारद पांचरात्र में प्रपत्ति के छः अंग हैं अनुकूलता का संकल्प, प्रतिकूल उपासनाविरोधियों का त्याग, उपास्य द्वारा स्वात्म रक्षा का दृढ़ विश्वास, सर्वतोभावेन समर्पण, रक्षक रूप में उपास्य का वरण और आर्तभाव से शरणागति ।[57]

---

57. आनुकूल्यस्य संकल्पः प्रातिकूल्यस्य वर्जनम् ।
रक्षिष्यतीति विश्वासो गोप्तृत्ववरणं तथा ।
आत्म निक्षेप कार्पण्ये षड्विधा शरणागतिः ।।

नाम परत्व उपदेश --

रसिक संप्रदाय में नाम परत्व-उपदेश की बड़ी महिमा है। राम और सीता के नाम, उनका अभ्यास, जप, अजपा जप सर्वाधिक मूल्य रखते हैं। "सीतानाम षट्कलाओं का आश्रय है।[58] राम अपने नाम से अधिक सीता नाम को महत्त्व देते हैं। स्वामी श्री युगलानन्द शरण ने "नाम अभ्यास प्रकाश" नामक ग्रंथ में नाम अभ्यास हेतु भूमि शोधन, नाम जप, अजपा जप नाम ध्यान, ताड़नध्यान, आरती ध्यान, मौक्तिक ध्यान आदि के अभ्यास की चर्चा की है। साधारण रामोपासकों के लिए एक दिन में 25 हजार युगल नाम लेने का विधान है। प्रेमलताजी ने[59] विरक्त साधकों के लिए नित्य एक लाख या सवालाख नाम जप आवश्यक माना है।

लगन उद्रेक की आठ भूमिकायें --

रसिक भाव में दिव्य दम्पति का सेवा सुख और युगल केलि विलास के अलौकिक रस का आस्वादन मुख्य है। इसके लिए साधक के हृदय में लाग या लगन का उद्रेक आवश्यक होता है। लगन का उद्रेक भी भागवत

---

58. श्री सीता निज नाम निधि, षट कल कला विचित्र।
युगलानन्दशरण लखे, भाविक भेद पवित्र।।
--- श्री जानकी स्नेह हुलासशतक, पृष्ठ-18

59. सवा लाख का लाख सुधारा। रटहु नाम निशि तज मद मारा।।
--- वृ0 उपासना रहस्य, पृष्ठ-30

कृपा का परिणाम है । लगन का प्रथम उद्रेक विरहपरक होता है ।[60] लगन की आठ भूमिकाएँ मानी गयी हैं -- छेददा, दु:खदा, सिद्धिप्रदा, अहंवासिनी, विरति विधारिणी, विघ्नहारिणी, छविदायिनी और विहारविलासिनी । प्रथम चार भूमिकाओं में लौकिक बाधाएँ प्रबल होती हैं । शास्त्र-श्रवण, सत्संग और लोक-व्यवहार के त्याग से इन बाधाओं से रक्षा होती है । "पाँचवीं भूमिका में निष्काम वृत्ति का उदय होता है । छठी भूमिका में प्रिय-छटा की झलक दिखाई देती है । सातवीं भूमिका में साधक ध्येय में लीन हो जाता है । यह पराभक्ति की स्थिति है । आठवीं भूमिका में युगल किशोर के विमल विहार का दर्शन होता है । इस दशा का अनुभव करने के पश्चात् साधक फिर विषयानुरक्त नहीं होता" ।[61]

प्रीति की अष्ट स्थितियाँ और दृष्टि मुद्राएँ --

लगन की अष्ट भूमिकाओं की परिणति प्रीति में होती है । साधक के हृदय में प्रेम के सभी अंग आ बसते हैं ।

ललित लाग सब भूमि जुत, जबहिं होत अति पुष्ट ।
अनायास रति रंग सब, आय बसे सजि तुष्ट ।।

--- प्रीति पचासिका, पत्र-17

60• नाम रूप गुन सुमिरत, विरह उदोत ।
ताहित लिहुँ चित चिन्तन, करहु निसोत ।।

--- विलास भावन रहस्य, छंद-184

61• रामभक्ति में रसिक संप्रदाय, पृष्ठ : 223-224

प्रीति लगन की सिद्ध और परिपक्व दशा है । यह अनुक्षण नये भावों का बोध और दिव्य आनंद का भोग कराती है ।

अनुछ न नूतन नेह जब, वर्द्धमान उर होय ।
अति अकाम आराममय, मोह मोहब्बत सोय ।।

--- वही, पत्र-17

रस साधना में प्रीति की अष्ट स्थितियाँ निम्नलिखित हैं -- प्रणय, प्रेम, आसक्ति, लगन, लाग, अनुराग, नेह और प्रीति-इनकी व्याख्या इस प्रकार की गई है --

मम तव तव मम प्रणय यह, बुद्धि निरंतर होइ ।
अति उमगाव यों प्रीति को, प्रेम जानिये सोइ ।
यों आसक्ति असक्त चित, जहँ तहँ निकसत नाहिं ।
किये उपाय सु कोटिविधि, नहिं लावत मन माहिं ।।
प्रतिछिन सुमिरन मित्र को, बिन कीन्हें जब होइ ।
टरै न टारै सहज चित, लगन यों कहिये सोइ ।।
प्रीति यों ठेलत चित्त को, चित्त विषम रस होइ ।
नेही निज हिय जानहीं, लाग सुलच्छन जोई ।।
व्यापकता जो प्रीति की, जिमि सुठि वसन सुरंग ।
द्रगन द्वार दरसै चटक, सो अनुराग अभंग ।।
चिक्कनता सोभा सहित, प्रीति हेत व्यवहार ।
हिलनि-मिलनि-बोलनि -हँसनि, नेह जान सुकुमार ।।
उपजै कोउ उपचार ते, पुनि न टरै सोइ प्रीति ।

पोषत तेहि आनंद ते, सब विधि लालन रीति ।।

--- रा० र० स०, पृष्ठ-225

प्रीति की विविध अष्ट स्थितियों के अनुसार साधक की दृष्टि मुद्राएं भी आठ प्रकार की बतलाई गई हैं -- सौम्य दृष्टि, विह्वल दृष्टि, निर्निमेष दृष्टि, चोप दृष्टि, उत्कंठित दृष्टि, मत्त दृष्टि, ललित दृष्टि और अधीन दृष्टि ।

प्रीति प्रगाढ़ और दृढ़ होकर अनुपम रहस्य-सुख में परिणत होकर महाभाव को उत्पन्न करती है । दृढ़ अनुराग ही महाभाव है।[62] इसके भेद हैं -- आरूढ़ महाभाव और अधिरूढ़ महाभाव । आरूढ़ महाभाव की दशा में प्रिया-प्रियतम की विहार-छवि और उसके आविर्भाव तिरोभाव के कारण अस्थिर दर्शन का सुख होता है । फलतः साधक का हृदय तीव्र वियोग से विकल हो उठता है ।[63] अधिरूढ़ महाभाव की दशा में विहार-दृश्य के विरह का संशय नहीं रहता । इसके दो भेद हैं -- मादन और उन्मादन । मादन दशा

---

62. दृढ़ अनुराग भये प्रबल महाभाव मन होत ।
जहाँ अनुपम रहस सुख, सुंदर छवि उद्योत ।।
---- प्रीति पचासिका, पत्र-18

63. Where the soul, wounded with lone for the Bridegroom, Strives more than ever for solitude... The sight, it has enjoyed of him, is so deeply imprinted on the spirit, that its one desire is to behold Him again.
-- The Interior castle or the Mansions, Page 112
उद्धृत रामभक्ति में रसिक संप्रदाय, पृष्ठ-226

में विहार दृश्य से मस्त साधक लीलामाधुरी के अलौकिक रस का भोक्ता बनता है और उन्मादन दशा में अपने स्व को मिटाकर प्रिय के रंग में रंग कर तद्रूप हो जाता है।

संबंध दीक्षा के अंतर्गत दिव्य देह की कल्पना की गई है। महाभाव और प्रेम रस की साधना का साधक भावानुरूप दिव्य देह धारक बनता है। रसिकसाधकों ने इसे चित् देह ‖परमहंसशील मणि‖, "महाकरण शरीर" या "तुरिया तन" ‖निम्बार्काचार्य रामसखे‖ कहा है। इस दिव्य देह में प्रिय मिलन की तीव्र उत्कंठा होती है जिसकी व्यवस्था सद्गुरु द्वारा पूर्ण होती है। रसिकाचार्य सद्गुरु श्री सियाराम के नित्य परिकरों के अवतार माने गए हैं वृहद् उपासना रहस्य में प्रेमलताजी का मत है कि सीताजी की प्रेरणा से नित्य मुक्त जीव अनंतकाल से लोक में अवतरित होकर त्रितापपीड़ित विमुख जीवों को प्रभु सम्मुख कर उन्हें सखी रूप में लीला प्रवेश की स्वरूप योग्यता प्रदान करते आ रहे हैं। ये दम्पति के अंश से ही उत्पन्न, साकेत धाम की नित्य लीलानुरक्ता सखियों के ही अवतार होते हैं --

1. यहि विधि दुखी देखि जीवधारी। सियउर नृपणी करुणा भारी ।।
तब निज यक संप्रदा उपाई। सहित सनेह सु रमहि पठाई ।।
सोइ आचारज कीन्ह प्रधाना। महात्मा जेहि वेद बखाना ।।

--- वृहद् उपासना रहस्य, पृष्ठ-120

2. मोर संप्रदा महँ जो अहहैं। पुरुष भाव तजि सो मोहि पइहैं ।।
पुरुष एक मम पति सब नारी। जहँ लगि जीव सकल तनुधारी ।।
पुरुष भाव उर धरि विमुखानी। आतम सहज स्वरूप भुलानी ।।

पुरुष भाव सब कर करि दूरी । सखी भावना दीजै रुरी ।।
सखी बिनु मम अंग सेवा । लहहिं न जीव होय वल्देवा ।।
मोर अंश जीवातम नारी । मिथ्या पुरुष बनी मतवारी ।
मम आयसु तजि वहु मतवादी । बनी सु आतम बादि प्रभावी ।।
तेहि कहँ चेत कराय तुम्ह, सन्मुख करहु सो मोर ।
संसकार करि पंच ये, मम कृत बन्दी छोर ।।

--- वृहद् उपासना रहस्य, पृष्ठ-121

श्री प्रेमलताजी ने श्री संप्रदाय को श्री सिया संप्रदाय कहना चाहा है "यथार्थ में यह श्री सम्प्रदा जीवों के कल्यानार्थ निर्हेतुकी कृपा करि दयामूर्ति श्री जानकी जी ने ही प्रगट करी है । इसी कारण से श्री सम्प्रदा धर्मावलंबी, श्री सीता इष्ट अपना मानते हैं, इष्ट ही प्रधान गिने जाते हैं, श्री जानकी मंत्र मानते हैं । ... श्री रामानंदी श्री वैष्णवों को तो श्री सिया सम्प्रदाय ही कहना चाहिए श्री सम्प्रदाय तो श्री रामानुजी वैष्णवों की है ।"[64]

"सतगुरु" ही "युगल सरकार" तक ले जानेवाला निर्देशक है । श्री सीताराम भद्र केलि कादम्बिनी के कवि श्री कामदेन्द्रमणि जी ने इन्हें "महलरस भेदी" [पृष्ठ-3] कहा है । सद्गुरु की अलौकिक शक्ति साधक मायिक संबंधों को मिटाकर श्री सीताराम में दृढ़ अनुराग स्थापित कर पाता है

अष्टयाम --

परमात्मा के साथ भक्त का संबंध चिन्तन और उसकी

---

64. वृहद् उपासना रहस्य, पृष्ठ-120

दृढ़ता के लिए संप्रदाय में अष्टयाम भावना, मानसी पूजा या अष्टयाम लीला के चिन्तन की योजना मिलती है। अष्टयाम-चिन्तन प्रिय की नित्यकेलि की भावना की तदाकारता है। "अष्टयाम भावना में साकेत लोक के अंतर्गत दिव्य दम्पति की नित्य लीला में पंचकाल[65] एवं अष्टकुंज[66] की सेवा का ध्यान किया जाता है। इस विषय पर अग्रदास, नाभादास, कृपानिवास तथा रामचरणदास आदि, रसिक संप्रदाय के प्रमुख आचार्यों के अष्टयाम मिलते हैं। इधर श्री कृष्णदास पयहारी जी के भी एक अष्टयाम का पता चला है, किन्तु वह अभी देखने में नहीं आया। इन सभी अष्टयामों में वर्ण्य विषय एक ही हैं।[67] इनके अतिरिक्त स्वामी श्री सियालाल शरणजी प्रेमलता रचित अष्टयाम नामक एक स्वतंत्र ग्रंथ है जो "वृहद् उपासना रहस्य" में संकलित है। अष्टयाम के कुंजलीला विषयक वर्णन "श्री सीताराम रहस्य दर्पण" में संकलित "षट् ऋतु विमल विहार" नामक ग्रंथ में भी आए हैं और उनका महत्व असंदिग्ध है। अष्टयाम लीला के विविध अंगों में माधुर्य लीला विषयक ऐश्वर्य मिश्रित माधुर्य का प्रवेश मिलता है और शुद्ध माधुर्य का विकास रासलीला में दिखाई देता है। सरसता का मुख्य कारण भूत तत्त्व लीला है। हनुमत्संहिता में कहा गया है कि जिन्हें साधना

---

65. अष्टयाम -- अग्रदास, पृष्ठ-68

66. अष्टकुंज -- स्नानकुंज, शृंगार कुंज, कलेऊ कुंज, भोजन कुंज, शयन कुंज, केलि कुंज, झूलनकुंज और रासकुंज।

--- श्री प्रेमलता वृहद् संबंध पत्रम्, पृष्ठ-59

67. रामभक्ति में रसिक संप्रदाय, पृष्ठ-240

द्वारा उसके रसास्वादन की क्षमता प्राप्त हो जाती है फिर मोक्ष की अपेक्षा नहीं करते।[68] लीलानुकरण के आयोजन के लिए द्वादश मास या षड् ऋतु लीला में युगल सरकार का ध्यान मनोरम माना गया है। शील मणिजी ने द्वादश मास के लीला विषयक चित्रों में लीला वर्णन को स्पष्ट किया है --

छहऋतु बारह मास की अवध पुरी सुख खानि।
सीय लाल नितरंग में तहँ सरसत रस सानि॥
सावन रंग हिंडोलने भादवँ नाव नेवार।
आश्विन शरद विहार बहु कार्तिक दीप उद्धार॥
अगहन व्याह महान रस, दुलह-दुलहिनी रंग।
पूस माघ सिय लाड़िलो विलसत परसत अंग॥
फागुन, होरी कुंज में गोरिन के संग रंग।
केसरि कुमकुम नीर के मचत मदन को जंग॥
चैत हरीरे ललन में विहरत सखिन समेत।
कूजत कोकिल भौंर बहुलाल रसिक रस लेत॥
फूल वाटिका बाग चहुँ बन विगसित सर कंजु।

---

68. कैवल्य दौर्बल्य करं महारसं
सीतामये रसविलासमाधम्।
कायेन वाचा मनसा स्मरेद्यः
स याति गोलोक निरामयं पदम्॥
--- हनुमत्संहिता, पत्र-2।

विलसत माधव मास में लली लाल रस मंजु ।।

तहखाने खसखान में मोती महल उदार ।

फूलन के बंगले बने तामें छुटत फुहार ।।

फूलन गादी गैंदुआ चैदवा झालरि झूल ।

परदा फूल बिछावने सोहत परम अमूल ।।

तामे सुमन सिंगार करि विलसत नवल किसोर ।

सेवति नैनन पलक से अली लली चित चोर ।।

केलरि अतर कपूर सुभ चन्दन अगर उसीर ।

जेठ मास दोउ लाडिले विहरत सरजू तीर ।।

सुन्दर मास असाढ़ में घटा व्योम दरसाय ।

विहरत छैल छबीलि दोउ राग रंग सरसाय ।।

--- संबंध प्रकाश [शीलमणि], छंद : 8।-9।

[उद्धृत रामभक्ति में रसिक संप्रदाय, पृष्ठ-313]

हमारे आलोच्य कवि स्वामी श्री सियालाल शरणजी प्रेमलता का संबंध श्री जीवाराम युगल प्रियाजी की गद्दी की परम्परा [चिरान-छपरा-विहार] से है । श्री जीवाराम "युगल प्रिया" शृंगार भाव के प्रचारक और प्रमुख आचार्य हुए हैं । उत्तर प्रदेश के पूर्वी जिलों तथा बिहार में इनकी परम्परा का पूरा विकास दिखाई देता है । इन्होंने रसिकाचार्य रामचरणदासजी [जानकी घाट अयोध्या] से शृंगारोपासना की दीक्षा ली थी । इनकी दो परंपराएं विकसित हुईं : एक अयोध्या में लक्ष्मण किला पर इनके शिष्य महात्मा युगलानन्द शरण द्वारा और दूसरी मूल गद्दी चिरान [छपरा] ...

जीवारामजी की अयोध्यावाली परंपरा में महात्मा युगलानन्द शरण, महात्मा जानकीवरशरण, रामवल्लभाशरण तथा सियालाल शरण"प्रेमलता" जैसे महा कवि और रससिद्ध साधक हुए । रसिक संतों में इस परम्परा के संतकवि सर्वाधिक हैं । यह परंपरा रामानंदजी के शिष्य सुरसुरानंद से विकसित हुई है ।

सम्प्रदाय-विवरण[69] --

1. इस संप्रदाय का नाम "श्री" सम्प्रदाय है ।
2. श्री लक्ष्मी जी आचार्य हैं ।
3. श्री हनुमान जी देवता हैं ।
4. श्री विश्वामित्र जी ऋषि हैं ।
5. श्री रामेश्वर जी धाम हैं ।
6. श्री अयोध्या जी धर्मशाला हैं ।
7. श्री चित्रकूट सुख विलास है ।
8. श्री रामानंदी वैष्णव हैं ।
9. श्री दिगम्बर अखाड़ा है ।
10. श्री कूवार जी का द्वारा है ।
11. श्री सीता जी इष्ट हैं ।
12. श्री मुख्य रस शृंगार है ।
13. अनन्त शाखा है ।
14. श्री ऊर्ध्व पुण्ड तिलक है ।

---

69. श्री प्रेमलताजी का वृहद् जीवन चरित्र, पृष्ठ-10

15. श्री धनुषक्षेत्र है ।

16. श्री गुरुद्वारा श्री अयोध्या जी है ।

तिलक -- पीत ऊर्ध्व पुण्ड, मध्य में नीचे श्री बिन्दु, ऊपर चंद्रिका, ऊर्ध्व पुण्ड के दोनों ओर युगल नाम की छाप, दोनों भृकुटियों के ऊपर मुद्रिका की छाप ।[70]

आचार्यों का सखी रूप --

संप्रदाय में आचार्यों के तीन रूप[71] माने गए हैं -- आचार्य, दास और सखी । सखी रूप धारक अंत:पुर में युगल सरकार की सेवा करते हैं । रसिक संप्रदाय में प्रचलित तीसरें सखी भावपरक या महली नामों की तालिका निम्नलिखित रूप में प्रस्तुत की गई है --

स्थूल शरीर संबंधीनाम	-	आत्म संबंधी {महली} नाम
1. श्री हनुमान जी	-	श्री चारुशीला जी
2. श्री ब्रह्मा जी	-	श्री विश्वमोहिनी जी

---

70. वृहद् उपासना रहस्य --- प्रेमलता, पृष्ठ-102

71. त्रिधा रूपेण वर्त्तन्ते महतो धर्मशालिनाम् ।
आचार्यत्वेन ब्रह्मांडे दासरूपेण सन्निधौ ।।
रामस्यान्त: पुरे ते वै सखी रूपा: प्रियानुगा: ।
--- रहस्य रामायण

उद्धृत य0 में र0 उ0, पृष्ठ-355

3.	श्री वशिष्ठ जी	-	श्री ब्रह्मचारिणी जी
4.	श्री पराशर जी	-	श्री पापमोचना जी
5.	श्री व्यासदेव जी	-	श्री व्यासेश्वरी जी
6.	श्री शुकदेव जी	-	श्री सुनीता जी
7.	श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी	-	श्री पुनीता जी
8.	श्री गंगाधराचार्य जी	-	श्री गौधर्वी जी
9.	श्री सदाचार्य जी	-	श्री सुदर्शना जी
10.	श्री रामेश्वराचार्य जी	-	श्री रामअली जी
11.	श्री द्वारानन्द जी	-	श्री द्वारावती जी
12.	श्री देवानन्द जी	-	श्री देवअली जी
13.	श्री श्यामानंद जी	-	श्री श्यामाअली जी
14.	श्री श्रुतानन्द जी	-	श्री श्रुताअली जी
15.	श्री चिदानन्द जी	-	श्री चिदाअली जी
16.	श्री पूर्णानन्द जी	-	श्री पूर्णअली जी
17.	श्री श्रियानन्द जी	-	श्री श्रियाअली जी
18.	श्री हरियानंद जी	-	श्री हरिसहचरी जी
19.	श्री राघवानंद जी	-	श्री राघवअली जी
20.	श्री रामानंद जी	-	श्री रामानंददायिनी जी
21.	श्री सुरसुरानंद जी	-	श्री सुरेश्वरी जी
22.	श्री माधवानंद जी	-	श्री माधवाअली जी
23.	श्री गरीबानन्द जी	-	श्री गर्वहारिणी जी

24.	श्री लक्ष्मीदास जी	-	श्री सुलक्षणा जी
25.	श्री गोपालदास जी	-	श्री गोपाअली जी
26.	श्री नर हरिदास जी	-	श्री नारायणी जी
27.	श्री अग्रदास जी	-	श्री अग्रअली जी
28.	श्री तुलसीदास जी	-	श्री तुलसी सहचरी जी
29.	श्री बालानन्द जी	-	श्री बाल अली जी
30.	श्री केवल कूबाराम जी	-	श्री कृपाअली जी
31.	श्री चिंतामणिदास जी	-	श्री चिन्तामणि जी
32.	श्री दामोदरदास जी	-	श्री मोददायिका जी
33.	श्री हृदयराम जी	-	श्री उल्लासिनी जी
34.	श्री मौजीराम जी	-	श्री हरिमना जी
35.	श्री हरिभजनदास जी	-	श्री हरिरत लता जी
36.	श्री कृपाराम जी	-	श्री करुणाअली जी
37.	श्री रतनदास जी	-	श्री रत्नावली जी
38.	श्री नृपतिदास जी	-	श्री नीतिलता जी
39.	श्री शंकरदास जी	-	श्री सुशीला जी
40.	श्री जीवाराम जी	-	श्री युगलप्रिया जी
41.	श्री युगलानन्दशरण जी	-	श्री हेमलता जी
42.	श्री जानकीशरण जी	-	श्री प्रीतिलता जी
43.	श्री रामवल्लभाशरण जी	-	श्री युगलविहारिणी जी
44.	श्री सियालाल शरण जी	-	श्री प्रेमलता जी

मधुरोपासना-परंपरा में प्रेमलताजी का महत्व --

मधुरोपासना या रसिकोपासना की विस्तृत काव्य-परंपरा में कवि श्री सियालाल शरण जी प्रेमलता का महत्व चार कारणों से सिद्ध होता है । पहला यह कि प्रेमलताजी सियाराम की भक्ति के महान् साधक और त्यागी संत थे, दूसरे वे सहज किन्तु रससिद्ध कवि थे, तीसरे उनमें संप्रदाय के सिद्धांतों को प्रस्तुत करनेवाली तत्ववेत्ता आचार्य की प्रखर प्रतिभा थी और सबसे अधिक वे नाम धुन के प्रचारक विरक्त संत थे जिन्होंने नाम जप और साधना को जन साधारण में प्रचलित और लोकप्रिय बनाने का बीड़ा उठाया । आत्म और लोक का समन्वित विग्रह उनके व्यक्तित्व में परिलक्षित होता है । प्रेमलताजी का काव्य मधुरोपासक कवि-आचार्यों की परंपरा की उज्ज्वल कड़ी है जिसमें संप्रदाय के सिद्धांतों की सूक्ष्माविसूक्ष्म व्याख्या के साथ स्वानुभूत सत्य की विवृति हुई है । प्रेमलताजी की शास्त्रीय स्थापनाएँ व्यावहारिक प्रयोगों और अनुभवों से पोषित हैं । इसलिए उनमें परंपरा के साथ व्यक्तिगत अनुभवों का भी बल दिखाई पड़ता है ।

मधुरोपासक प्रमुख संत कवियों का सामान्य परिचय और उनकी रचना के उदाहरण द्वारा संक्षेपतः मधुरोपासना-परंपरा का बोध और प्रेमलता जी का महत्व समझा जा सकता है ।

अग्रदास "अग्रअली" --

कृष्णदास पयहारी के शिष्य अग्रदास को युगलप्रिया जी ने सीता की प्रियसखी चन्द्रकला का अवतार माना है, ये अग्रअली नाम से विख्यात हैं । इन्हें बाग-बगीचों से प्रेम था [प्रसिद्ध बाग सो प्रीति-नाभादास]

इस कारण रसिक संप्रदाय कुंज, निकुंज बाग का महत्व है । इनकी दो रचनाएं मिलती हैं -- ध्यान मंजरी या रामध्यानमंजरी और कुंडलिया । "शृंगाररस सागर" या अग्रसागर नामक अनुपलब्ध शृंगार ग्रंथ भी प्रसिद्ध है । संस्कृत में एक रचना अष्टयाम प्रकाशित है । इनकी रचनाओं में अग्र, अग्रदास, अग्रस्वामी और अग्रअली के नाम संकेत प्राप्त होते हैं ।

1. सहज चलौंगी आपनी, अनखि मरैंगे लोग ।
अनखि मरैंगे लोग, वेद कुल कानि न करिहौं ।।
भली बुरी सिरधारि, अनन मारग अनुसरि हौं ।
देव पितर विधि अविधि, लोक परलोक न सूलो ।।
सरवसु सीताराम कोऊ, रूसो कोउ तूलो ।।
अग्र सुमति पथ हरि बरौं, करिहौं दृढ संयोग ।
सहज चलौंगी आपनी अनखि मरैंगे लोग ।।

---- अग्रदास कृत कुंडलिया, पृष्ठ-16

2. अरी हो रामा रंग मयी ।
तात हमारे पन कियो तोरन धनुष कठोर ।।
कोमल करतल सांवरो सखि मूरति मधुर किसोर ।।
राज सभा ऐसे भई ज्यो उडगन में चंद ।
बिधना विधि सो निर्मयो अलि मोहन को कंद ।।
लोक वेद की लाज सखी री यद्यपि दुस्तर आहि ।
रूपनिधान देखि रघुनंदन धीरन धीरज नाहिं ।।
ऐसी मो जिय उपजी ~~धीरज नाहिं~~ ।। चाप चढ़ायो गोइ ।

~~अथ पहलयो चौक।~~

अग्र स्वामि के हाथ बिकानी होनी होइ सो होई

~~होनी होइ सो होई~~

--- पदावली [अग्रदास], छंद-1

नाभादास "नामावली" --

आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने नाभादास को सं0 1657 [1600 ई0] के आसपास वर्त्तमान माना है । ये तुलसी के समकालीन थे । इनके तीन ग्रंथ हैं -- भक्तमाल और दो अष्टयाम ।

1. अग्रभाग शुभगा अति सोहै । सहजा हास विलासनि मोहै ।
श्री सरयू झारी लिये ठाढ़ी । पानदान सुख तुलसी बाढ़ी ।।
कमला विमला चँवर दुरावैं । चन्द्रकला कछु गान सुनावै ।
और सबै निज टहल सुधारैं । ठाढ़ी दम्पति निकर संवारैं ।।

--- अष्टयाम, पृष्ठ : 37-38

2. नैन सैन सों विनय करि बैठारे रघुनाथ ।
प्रात आरती करि सबै लोचन किये सनाथ ।।

--- रामाष्टयाम, पृष्ठ-22

3. जा दिन सीता जन्म लियो है ।
ता दिन ते सबही लोचन को मन को सूल गयो है ।
अहवर आदि अवनि ते प्रगटी दिवि दुदुभी बजाई है ।
बरखत कुसुम अपार शब्द जै व्योम विजानन छाई है ।।
जनक सुता उपजी कुल मंडनि सकल सिरोमनि नारी है ।

रावन मृत्यु मुक्ति अमरन गन अभयदान भयहारी है ।।

सुन्दर सील सुहाग भाग की महिमा कहत न आवै ।

परम उदार रामजी की प्यारी पद रज नामौ पावै ।।

--- जानकी जन्म बधाई पद संग्रह ‖हस्तलेख‖, पृष्ठ-7

बालकृष्ण बाल अली --

बालअली अग्रदास की पाँचवीं पीढी में आविर्भूत मधुर भावधारा के विशिष्ट आचार्य हैं । इनका रचना-काल सं0 1726 से सं0 1749 तक निश्चित किया गया है । इनकी आठ रचनाएँ ज्ञात हैं -- ध्यान मंजरी, नेह प्रकास, सिद्धांत तत्त्वदीपिका, दयालमंजरी, बालपहेली, प्रेमपहेली, प्रेम परीक्षा और परतीत परीक्षा । पहली और तीसरी कृतियाँ काव्य-दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं ।

सीता-छवि --

दुलहिया दूलह बने दिलदार ।

श्री जानकी लली ये पली भाग बस भली देव तरु डार ।।

निमि कुल वंश चन्द्रिका प्रगटी अवध कियो उजियार ।

श्री "बालअली" रसिकेन्द्र राज की जीवन प्राण अधार ।।

--- फुटकर पद

‖उद्धृत रा0 भ0 में र0 स0, पृष्ठ-387

बालानंद --

मुख्यत: राम के बालरूप और गौणत: राम के ऐश्वर्य और माधुर्य में भी श्रद्धा रखनेवाले बालानंद का जन्म सं0 1710 में हुआ था ।

थे गुरु विरजानंद के शिष्य थे। सामानंदी संप्रदाय में शक्ति और शार्य के द्वारा "लश्करी शाखा" तथा "रामादल" के संगठन से द्वारों और अखाड़ों की स्थापना कर इन्होंने वैष्णवों का संगठन किया था। इनकी फुटकल रचनाओं में रामभक्ति की गंभीर निष्ठा मिलती है।

सैजे-गमन =-

भवन गवन प्रभु कीजै सैजबिछी, भवन गवन प्रभु की जै।
परिश्रम भये सभा सब बैठे, सबको आयसु दीजै।
रामदूत हनुमान पवनसुत, संग चौकि को लीजै।
कमलमुखी कमला मुख हेरै, प्रेम प्रीति रस भीजै।।
मन क्रमवचन तुम्हें प्रभु सेवै, चपला अचल करीजै।
मंद मंद मुसकात छबीले, बोलत वचन रसीले।
"बालानंद" को देहै किंकरी, श्रीपति ऐसे सुलीले।।

--- भजन रत्नावली, पृष्ठ-23।

छत्रसाल --

योद्धा कवि छत्रसाल का जन्म सं0 1706 में हुआ था। वियोगी हरि द्वारा प्रदत्त छत्रसाल-ग्रंथावली में इनके निम्नलिखित आठ ग्रंथों की सूचना है -- रामावतार के कवित्त, रामध्वजाष्टक, हनुमानपचीसी, श्री राधाकृष्णपचीसी, कृष्णावतार के कवित्त, महाराज छत्रसाल प्रति अक्षर अनन्य के प्रश्न, दृष्टान्ती और फुटकर कवित्त, दृष्टान्ती तथा राजनैतिक दोहा समूह। इनकी रामभक्ति विषयक रचनाओं में माधुर्यलीला के प्रति भी आकर्षण मिलता है।

छविच्छटा --

मेरे नैन जुगल चकोर राम राकाससि

काय मन वचन विलोकि सुख पावैंगे ।

अंग अंग अमित अनंग छवि देखि देखि,

द्वन्द्व दुख भंजि भूरि आनंद बढ़ावैंगे ।

छत्रसाल मानस नदीस बीसबिसे आजु,

अमिय अमन्द चारु चखनि चखावैंगे ।

मोह भ्रम जनित विदारि तम तोम अब,

सीतावर चन्द उर मंदिर बसावैंगे ।

--- छत्रसाल ग्रंथावली, पृष्ठ-69

रामप्रिया शरण "प्रेमकली" --

मिथिलावासी मधुरोपासक संत प्रेमकली जी "नेहकली" जी के शिष्य थे । इनके सीतायन नामक प्रबंधकाव्य में जानकी जी की बाल एवं विहार लीलाओं का वर्णन मिलता है ।

संकीर्ण संयोग --

रसीले लाल रघुराई, विराजे रास सुखदाई ।।

मनोहर जानकी संगै, महासुख सिन्धु उमड़ाई ।।

सोहावत काछनी राजे, रतनमय क्रीट सिर भ्राजे ।।

हरत मन नाक की मोती अधर अति अरुण पर छाजे ।।

चिबुक विच विन्दु यक पीरा, लसत मुख पान की बीरा ।।

हंसत मन लेत तानन में, गले मुक्तावली हीरा ।।

स सखी सब राजतीं संग में, बजातीं साज को रंग में ।।

रसिक सब मत्त छवि पीवे, सिया पिय वदन लखि जीवे ।

बढ्यो आनन्द दस दिसिते, मगन "प्रियासरन" ही ते ।।

--- फुटकर पद

उद्धृत रा० में र० स०, पृष्ठ-395

जानकी रसिक शरण "रसमाला"--

अयोध्या के प्राचीन संत रसमालाजी के ग्रंथ "अवधी सागर" में सीताराम की विहार क्रीड़ाओं का चित्रण उपलब्ध है । रसमालिनि, रसमालिका जैसे आत्म संबंधी नाम के प्रयोग भी इनके काव्य में हुए हैं ।

झूलें सिय पिय रंग हिंडोरें ।

प्रीतम के संग रमक बढ़ावत रंगभरी सखियाँ चहुँ ओरें ।।

घन गरजत बिजुली अति चमकत बरसत रिमझिम पवन झकोरें ।।

"रसमालिनि" प्रीतम मन मोहत बोलत कारव मोर चकोरें ।।

--- झूलन विहार संग्रहावली, पृष्ठ-45

रूपलाल रूपसखी --

बालअलीजी के शिष्य रूपसखीजी को "रसिक प्रकाश भक्तमाल" में दिल्ली का दीवान कहा गया है । इनकी "होरी" नामक रचना में भावोन्मत्तता की स्थिति मिलती है ।

संपन्न संयोग --

कौशल राज लला मिथिलेश किशोरी हो ।

खेलत हैं दोउ मोद भरे रंग होरी हो

लीन्हे सखा संग सोदर श्री रघुबीर हैं ।

मैन महीपति साथ मनो भट भीर हैं ।।

केशरि पेंच विराजत है जरतारी के ।

राजत है तिनपै सिर पेंच किनारी के ।।

एकन के शिर सोहत पाग मुकेश की ।

छाजि रही झुकि कै कलंगी अति वेश की ।।

--- होरी, पृष्ठ-3

रामप्रपन्न [मधुराचार्य] "मधुर प्रिया" --

गलता गद्दी के आचार्य मधुर प्रिया ने मधुरोपासक भक्तों में वेद, उपनिषद्, तंत्र, वाल्मीकि रामायण आदि प्राचीन ग्रंथों से रामचरित की शृंगार वर्णन परंपरा की प्राचीनता सिद्ध की थी । इनके लिखे संस्कृत के चार ग्रंथ और हिन्दी में फुटकर पद प्राप्त हैं । संस्कृत ग्रंथों के नाम हैं -- भगवद् गुणदर्पण, माधुर्य केलि कादंबिनी, वाल्मीकि रामायण की टीका, राम तत्त्व प्रकाश ।

1. वन्दे सखी समाजं तं प्रेमरज्वा वशीकृतम् ।

बबन्ध क्रीऽमानो यो श्री रामरस सागरम् ।।

--- माधुर्य केलि कादंबिनी, पृष्ठ-१

संकीर्ण संयोग --

2. सखि मैं आजु गई सिय कुंज ।

देखि नृपति किसोर दौरे घेरि पिचका पुंज ।

तब कही मैं सुनहु लालन लाल कौसलचन्द ।

फाग मिस का करहु चोरी चबहु हमरे संग ।।

मधुर प्रीतम आजु तुमको जीतिहौं रतिरंग ।।

--- अद्भुत पदावली, पृष्ठ-110

सूरकिशोर --

इनकी भक्ति जानकी के प्रति वात्सल्य भाव की थी। इनके "मिथिला विलास" नामक ग्रंथ में वात्सल्य भाव की सुन्दर व्यंजना हुई है। सीता की रूप माधुरी --

सची सिर ढोरैं चौंर, उरवसी उड़ावैं भौंर,

सावित्री सेवैं चरन, महिषी महेश की ।

बरून धनेस राज राज उड़राज कन्या,

गांधर्वी किन्नारी कुमारी सेवैं सेवकी ।।

ललना नरेसन की दमकैं सुदामिनी सी

सौंज लिये आसपास खड़ी देसदेस की ।

कन्या सिहुलोकन की तिन में किसोर सूर,

अद्भुत किसोरी बेटी राज मिथिलेस की ।।

--- मिथिला विलास, पृष्ठ-17

मामा प्रयागदास --

महात्मा सूर किशोर के साधक शिष्य मामा प्रयागदास सीता की उपासना बहन के रूप में करते थे। "मामा प्रयागदास ने रसिक साधना में "जनकपुर के सखा" का एक नवीन भाव प्रवर्तित किया। इस दृष्टि से सख्य संप्रदाय में इनका विशिष्ट स्थान है। इनका रचित कोई ग्रंथ उपलब्ध नहीं है,

किन्तु ठेठ भाषा में इनकी जो उक्तियाँ प्रचलित हैं उनमें इनके नैसर्गिक भाव की एक विचित्र मिठास पाई जाती है ।"[72]

परागदास जो पीपर होते, राघो होते भुवारे ।
आठ पहर छाती पर रहते, वे दसरथ के पुतवारे ।
धुनि धुनि केसवा कहे महेसवा, पार न पावै सेसवा ।
परागदास पहलदवा के कारन, रच्छा होइगे बच्छा ।।

रामसखे --

रामसखे जी की रचनाओं में सखी और सखा दोनों भावों का वर्णन मिलता है । इनका जन्म 18वीं शती के पूर्वार्द्ध में हुआ था । संप्रदाय रूप में ये आधुनिक सख्य परंपराओं के प्रवर्तक माने जाते हैं । इनकी दस रचनाएं मिलती हैं -- द्वैतभूषण, पदावली, रूपरसामृत सिन्धु, नृत्यराघव मिलन दोहावली, नृत्यराघवमिलन कवितावली, रहस्यपद्धति, दानलीला, बानी, मंगल शतक, राममाला । इनमें नृत्यराघवमिलन दोहावली, कवितावली और रूपरसामृत सिन्धु अधिक प्रसिद्ध हैं ।

रूप-चमत्कार --

आजु की हाल सुनो सजनी मझ्ये प्रगटे यक कौतुकभारी ।
जेंवत नारि बराति सबै रघुनाथ लख्यो मिथिलेस अटारी ।
श्री रघुबीर को देखि सरूप भई मति विभ्रम गावनिहारी
भूलि गई अवधेस को नाम तो देन लगी मिथिलेस को गारी ।।
--- फुटकर छंद

---

72. रामभक्ति में रसिक संप्रदाय, पृष्ठ-403

प्रेमसखी --

प्रेमसखी जी के तीन ग्रंथ प्राप्त हैं -- होली, कवित्तादि प्रबंध और श्री सीताराम नखशिख । ये त्यागी और विरक्त भक्त थे "रसिक प्रकाश भक्तमाल" के अनुसार मिथिला में जानकी जी ने प्रकट होकर इन्हें सखी रूप में स्वीकार किया था और रहस्यकेलि से अभिहित कराया था । दिव्य दम्पति की विहार लीला के ये रसद्रष्टा कवि हैं ।

नैन सैन तब दई सीस लीन्ही धरि अपने ।
माथ नाइ तहँ चल्यो पुलक देखत नहिं सपने ।।
सरजू पुलिन पुनीत मध्य इक बाग सुहाई ।
जहँ वसन्त रति काम लता द्रुम वेश बनाई ।

--- होली, पृष्ठ-3

हर्याचार्य"हरिसहचरी"--

मधुराचार्य के शिष्य और गलता गद्दी के आचार्य हरिसहचरी जी की हिन्दी रचना अष्टयाम और स्फुट पद के रूप में है और संस्कृत में "जानकीगीत" । "गीतगोविन्द" की शैली की रसात्मक रचना है ।

रघुवर सीता तड़िदतिपीता
निवसति विपिनविताने ।
विचलित मन्दे मरूत्सुगंधि
परितनुते ति विलापम् । --- जानकी गीत, पृष्ठ-8

संकीर्ण संभोग --

माई री रास रच्यो सरजू तट सोम श्रवन वट छाहीं ।

नाचत राम गोपाल कुंज में दै सीता गरबाहीं ।।
रागिनि मैं अनुराग लता खिली वन प्रमोद के माहीं ।
"हरि सहचरि" सुखबहलपहल में लोक वेद सुधि नाहीं ।।
--- फुटकर पद

कृपानिवास --

कृपानिवास शृंगारी रामोपासना के प्रमुख आचार्य माने गए हैं । आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने इन्हें एक "कल्पित व्यक्ति" माना है -- "ये लोग सीताराम को "युगलसरकार" कहा करते हैं और अपना आचार्य "कृपानिवास" नामक एक कल्पित व्यक्ति को बतलाते हैं जिसके नाम पर एक "कृपानिवासपदावली" सं0 1901 में छपी [प्रिंटिंग प्रेस, लखनऊ] । इसमें अनेक अत्यंत अश्लील पद हैं ।"[73] किन्तु "इनके विषय में जो संदर्भ हिन्दी साहित्य के ऐतिहासिक स्रोतों में मिलते हैं, उनसे इनकी सत्ता असंदिग्ध ठहरती है ।"[74] युगल प्रियाजी के अनुसार इन्होंने लक्षावधि छन्दों की रचना की थी पर इनके प्राप्त 24 ग्रंथों में उनकी छंद संख्या पचीस हजार के लगभग है । इनके ग्रंथ हैं -- गुरुमहिमा, प्रार्थना शतक, लगनपचीसी, युगलमाधुरी प्रकाश, भावना शतक, जानकी सहस्रनाम, राम सहस्रनाम, अनन्यचिन्तामणि, समय प्रबन्ध, नित्यसुख,

---

73. हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृष्ठ-142
बारहवाँ संस्करण, सं0 2015

74. हिन्दी साहित्य कोश, भाग-2, पृष्ठ-92
ज्ञानमंडल लि0, वाराणसी, प्रथम संस्करण, सं0 2020

रहस्योपाख्य, वर्षोत्सव पदावली, रूपरसामृत सिन्धु, रससार, रहस्य पदावली, सिद्धांत पदावली, "उत्कण्ठा अष्टक", हनुमत्पचीसी, पदावली, अष्टयाम, सीताराम रहस्य, रास पद्धति, प्रीतिप्रार्थना और सम्प्रदाय निर्णय । कवि भक्त कृपानिवासजी रूपासक्त रामभक्त थे । सिद्धांत निरूपण के बावजूद इनके काव्य में भाव तत्त्व का विनियोग और विभिन्न राग-रागिनियों की योजना मिलती ।

मंगल मूरति अवधविहारी सीतापति कीप मैं बलिहारी ।
मंगल सरजू अवधपुरी शुभ मंगल सखी सबै वरनारी ।।
मंगल नृप दशरथ सब नारी मंगल कौशल्या महतारी ।
मंगल हनुमत आनंदकारी "कृपानिवास" मंगल अधिकारी ।।

--- कृपानिवास पदावली, पृष्ठ-25

रामचरणदास --

आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने रामचरणदास जी को शृंगारी भावना का प्रवर्तक [हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृष्ठ-141] कहा है पर नवीन शोधों के अनुसार तुलसी के समकालीन रसिकाचार्य अग्रदास इसके प्रवर्तक ठहराए गए हैं । [रा० भ० में र० संप्रदाय, पृष्ठ-418] । इनका जन्म 1760 ई० के लगभग हुआ था । इनके ग्रंथों की संख्या 25 है । वे हैं -- अमृत खण्ड, शतपंचाशिका, रसमालिका, रामपदावली, सियारामरस मंजरी, सेवाविधि, छप्पै रामायण, जयमाल संग्रह, चरण चिह्न, कवितावली, दृष्टांत बोधिका, तीर्थयात्रा, विरहशतक, वैराग्यशतक, नामशतक, उपासना शतक, विवेक शतक, पिंगल, काव्यशृंगार, झूलन, कोशलेन्द्र रहस्य, रामनवरत्नसारसंग्रह, रामचरितमानस की टीका, अष्टयाम सेवाविधि और रामानंद लहरी । इनका

महत्वपूर्ण कार्य रामचरित मानस की टीका-रचनाएं है । इनके स्फुट पदों से संकीर्ण संभोग का एक उदाहरण द्रष्टव्य है --

देखो सखि अति अनन्द रास रच्यो रामचंद्र,
रचनी छवि छिटकि रहो सरद चंदनी ।
बहु सखि मंडलाकार नृत्यगान स्वर सम्हार
नृत्यत रघुनन्दन मिथिलेश नंदिनी ।।

रामगुलाम द्विवेदी --

"रसिक प्रकाश भक्तमाल के अनुसार ये एक प्रसिद्ध रामायणी और महात्मा रामप्रसाद के शिष्य थे । इनके ग्रंथ निम्नलिखित हैं -- कवित्त प्रबंध, रामगीतावली; ललित नामावली, विनय नवपंचक, दोहावली रामायण, हनुमानाष्टक, रामकृष्ण सप्तक, श्री कृष्ण पंचरत्न पंच क, श्रीरामाष्टक रामविनय, रामस्तवराज, बरवा । इनमें से कतिपय हस्तलिखित रचनाएं काशी के पं० सीताराम चतुर्वेदी के पास उपलब्ध हैं ।

संपन्न संयोग --

देखि हरि होरी रंग रसे ।
प्रभु मुखलखि सिय सखिन जूथ महं लखन ए बन्धु धसें ।
झमकि लगी ललनागन उत ते जलज सुहार खसे
नृप विदेह पुर ते जे आई तिन बहु भांति हसे ।
जे अंग वसन सकल रंग बोरे अंजन नैन धसे ।
रामगुलाम जानकी वर के नित जस अवध लसे ।।

--- रामगीतावली

महाराज विश्वनाथ सिंह --

मधुरोपासक साधक और रामभक्त के रूप में प्रसिद्ध महाराज विश्वनाथ सिंह ने महात्मा प्रियादास से "षडक्षर राममंत्र" का उपदेश प्राप्त किया था तथा रामचरणदास जी से रसिक दीक्षा ली थी । इनकी महत्वपूर्ण कृति है आनंद रघुनंदन नाटक । उनके ग्रंथों की संख्या 38 हैं । उनके नाम इस प्रकार हैं -- रामगीता टीका, तत्त्वमस्यर्थ सिद्धांत भाष्य, राधा-वल्लभी भाष्य, सर्वसिद्धांत, राम रहस्य टीका, राममंत्रार्थ निर्णय-टीका, सुमार्ग स्तोत्र-टीका, बीजक-टीका, विनय पत्रिका-टीका, वैष्णव सिद्धांत-टीका धनुर्विद्या, रामचंद्रिकाह्निक-तिलक, राग-सागराह्निक, संगीत रघुनन्दन, भुक्ति मुक्ति सदानंद, दीक्षानिर्णय, व्यंग्यार्थ-चन्द्रिका, भागवत-एकादश स्कंध की टीका, सुमार्ग की ज्योत्स्ना टीका, रामपरत्व, व्यंग्य प्रकाश, विश्वनाथ प्रकाश, आह्निक अष्टयाम, धर्मशास्त्र-त्रिकालोकी, परमधर्म निर्णय शांति-शतक, विश्वनाथ चरित, ध्रुवाष्टक सतिलक, मृगया-शतक, परमतत्त्व, उत्तम काव्य-प्रकाश, गीता-रघुनंदन-शतिका, रामायण, गीता-रघुनंदन-प्रमाणिक, सर्व-संग्रह, रामचन्द्र जू की सवारी, भजनमाला , आनंद रघुनंदन नाटक ।

उठो कुँवर दोउ प्रान पियारे
हिमरितु प्रात पाय सब मिटिगे नभ सर पसरे बहुँकर तारे ।
जग वन महँ निकस्यो हरषित हिय, विचरन हेत दिवस मनियारे ।
विश्वनाथ यह कौतुक निरखहु रवि मनि दसहु दिसनि उजियारे ।।

--- साहित्य संकलन, पृष्ठ-69

जीवाराम "युगलप्रिया" --

श्री जीवाराम युगलप्रिया जी की साधना श्री चन्द्रकला परत्व परक है । इन्होंने अवध और बिहार में रसिक साधना का प्रचार प्रसार किया और 1857 ई0 में चिरान {छपरा} में उनका साकेतवास हुआ । उनका प्रसिद्ध ग्रंथ "रसिकप्रकाश भक्तमाल" रसिक संतों के जीवन-वृत्त का संग्रह है । इसके अतिरिक्त इनके तीन ग्रंथ हैं -- पदावली, शृंगार रस रहस्य और अष्टयाम वार्तिक ।

जय श्री चन्द्रकला अलबेली ।
अति सुकुमारि रूप गुन आगरि नागरि गर्व गहेली ।।
निमि कुल प्रगटि संग सिय प्यारी प्रियकारी रसबेलि ।
चन्द्र प्रभा जी के सुकृत कल्पतरु उलही लता नवेली ।।

---- खोजरिपोर्ट, 1917-19, पृष्ठ-207

उद्धृत रा0 में र0 स0 -- पृष्ठ-442

जनकराज किशोरी शरण "रसिकअली" --

रसिकअली जी मधुरोपासना के सिद्धांत प्रचारक आचार्य के रूप में स्थापित हैं {रसिक प्रकाश भक्तमाल, पृष्ठ-61} । इन्होंने संस्कृत, ब्रज तथा अवधी तीनों भाषाओं में काव्य-रचना की है । इनके ग्रंथों की संख्या 24 है । वे ग्रंथ हैं -- सिद्धांत मुक्तावली, सीताराम सिद्धांत अनन्य तरंगिनी, आंदोल रहस्य दीपिका, तुलसीदास चरित्र, विवेकसार चंद्रिका, सिद्धांत चौंतीसा, बारहखड़ी, ललित शृंगार दीपक, कवितावली, जानकी कर्णाभरण, श्री सीताराम अनन्य तरंगिनी, श्री सीताराम रहस्य तरंगिनी,

आत्मसंबंध दर्पण, होलिका विनोद, वेदान्तसार सुभ दीपिका, श्रुतिदीपिका, श्रीरामरास दीपिका, दोहावली, रघुवर कर्णाभरण, मिथिलाविलास, अष्टयाम प्रबन्ध पद, वर्षोत्सव पदावली, जिज्ञासापंचक, अमर रामायण।

राम की रूप-माधुरी --

राघव रंगभरी अखियाँ, अवलोकनि रंगहु में जनु बोरी।
रंगभरी मुसकानि मनोहर पान बिरी मुख रंग रच्योरी ।।
रंगभरे मुख बैन वदै गज चाल चलै रंग राचि रह्योरी।
अंगहि के रंग भीजि रहीं हम नाहक डारत हो रंगरोरी ।।

--- होलिकाविनोद दीपिका, पृष्ठ-12

प्रतापकुँवरिबाई --

इनकी रचनाओं में लीला-वर्णन और राम के निर्गुण रूप की भी झलक मिलती है। इनके दस ग्रंथ प्राप्त हो चुके हैं, वे हैं -- रामचन्द्र महिमा, रामगुणसागर, रघुवर स्नेह लीला, रामसुजसपचीसी, राम प्रेम-सुखसागर पत्रिका, रघुनाथ जी के कवित्त, भजनपद-हर-जस, प्रताप-विनय, श्री रामचंद्र विजय और हरजस गायन।

होरिया रंग खेलन आओ।
इला पिंगला सुखमणि नारी ता संग खेल खिलाओ।
सुरत पिचकारी चलाओ ।।
काचो रंग जगत को छाडो साँचो रंग लगाओ।
बाहर भूल कबों मत जाओ काया नगर बसाओ ।।

--- उद्धृत-मध्यकालीन हिन्दी कवयित्रियाँ, पृष्ठ-230

काष्ठजिह्वास्वामी "देव" --

काष्ठजिह्वा स्वामी रसिक रामभक्तों में परिगणित हैं। संन्यासी होकर भी ये रामोपासक और काशीनरेश महाराज ईश्वरी प्रसाद नारायण सिंह के गुरु थे। गुरु-अवज्ञा के पश्चात्ताप-स्वरूप आजीवन मौन रहने का व्रत लेकर जीभ पर काठ की खोल चढ़ाने के कारण ये उक्त नाम से प्रसिद्ध हुए। इनके ग्रंथों का विवरण इस प्रकार है -- रामायण परिचर्या, विनयामृत, पदावली, रामलगन, वैराग्यप्रदीप, अयोध्याविन्दु, अश्विनी कुमार विन्दु, गया-विन्दु, जानकी विन्दु, पंचक्रोश महिमा, मथुरा विन्दु, रामरंग, श्यामरंग, श्यामसुधा, उदासी संत-स्तोत्र।

जगत में तीन मतवाले।
हाल मस्त कोई माल मस्त है, जहरी चश्मके कोई वाले।
चश्म देवाना दर दर घूमै, माल मस्त धन के पाले।
हाल मस्त कोई राम देवाना, जिसकी जीभ पड़े छाले।

--- वैराग्य प्रदीप, पृष्ठ-121

पतितदास --

इनकी तीन रचनाएं प्राप्त हैं -- गुप्तगीता, पतित पदावली और भजनसर्व संग्रह।

गले दै बाहीं खड़े रघुबीर।
कानन कुंडल लालन कलंगी बायें हीरा औ पट चीर ।।
घर घर आनन्द बधाव कुलाहल चिंता सोच दूरि भै भीर ।।
निरखि-निरखि सिया राम लखन छवि दरबानी हनुमत वीर।

"दासपतित" प्रभु चरण न छूटै माफ करो तक्सीर ।

--- भजन सर्व संग्रह, पृष्ठ-199

उमापति त्रिपाठी "कोविद" --

इनका जन्म देवरिया जिले के पिपाडी ग्राम में 1794 ई० में हुआ था । ये संस्कृत हिन्दी के उद्भट विद्वान् थे । इनकी 42 रचनाएं मिलती हैं जिनमें रम्यपदावली और सुधामंदाकिनी स्तोत्र आदि महत्वपूर्ण हैं । रम्यपदावली में राग-रागिनियों और लोकगीतों का भी प्रयोग मिलता है ।

संकीर्ण संयोग --

झूलत दीने गलबाहीं ।
रघुनंदन अरु जनकनन्दिनी प्रेम पगे मुसुकाहीं ।
आलि झुलावति गावति नाचति वारति तन मन चाहीं ।
धनि सावन धनि धनि यह विहरनि धनि सुर परिमुर छाहीं ।
"कोविद कवि" छवि कविमति मोहिनि बस्यो सदा मन माहीं ।।

--- रम्यपदावली, पृष्ठ-103

रामशरण --

महात्मा रामशरण मिथिला में रहकर साधना करने वाले सख्यभावावेशी संत थे । इनके दो ग्रंथ हैं -- राम तत्त्व सिद्धांत संग्रह और मैथिली रहस्य पदावली । इनकी रचनाओं में लोक तत्त्व का आधिक्य मिलता है

रस रंगन धूम मचाये रसिया ।
तेरे रे अवध में सरयू बहति हैं उमगि उमगि सब आईं नदिया ।

राम सरन धन धन पुरवासी पिया प्यारी जहँ करैं केलिया ।।

--- श्री मैथिली रहस्य पदावली, पृष्ठ-42

युगलानन्दशरण हेमलता --

19वीं सदी के माधुर्य भाव के रसिक साधकों में महात्मा युगलानन्दशरण जी अन्यतम हैं । इनका जन्म सं0 1875 में हुआ था । ये संस्कृत, हिन्दी अरबी और फारसी के निष्णात विद्वान् थे । इनके काव्य में सूफियों की भावदशा मिलती है । इनके ग्रंथों की कुल संख्या 84 कही जाती है जिनमें कुछ प्रमुख ग्रंथ निम्नलिखित हैं -- सीताराम स्नेहसागर, रघुबर गुण दर्पण, मधुर मंजुमाला, सीताराम नाम प्रताप प्रकाश, प्रेमपरत्व प्रभा दोहावली, विनय-विहार, प्रेम प्रकाश, नाम प्रेम प्रवर्द्धिनी, सत्संग सतसई, भक्त नामावली, प्रेम उमंग, सुमति प्रकाशिका, हृदय हुलासिनी, अभ्यासप्रकाश, उपदेशनीतिशतक, उज्ज्वल उत्कंठा विलास, मंजुमोद चौंतीसी, वर्णविहार, मनबोधक शतक, विरति शतक, रूपरहस्य पदावली, संतसुख प्रकाशिका, रामनाम परत्व पदावली, सीताराम उत्सव प्रकाशिका, अवधविहार, अर्थपंचक, विरक्तिशतक, मननसीहत, फारसी हुकुफहजीवार झूलना, झूलन फारसी हुरूफ, अष्टयाम ककहरा, अनन्य प्रमोद, प्रीति पचासिका, विनोद विलास इत्यादि ।

संपन्न संयोग --

होरी के रंग जंग में क्या मौज नई है ।
हर चार तरफ बाग बहारों से छई है ।
कै उमंग संग सजन सोहनी लिए ।।
तर तान आसमान तलक होश हुई है ।

मोहर मरोरदार मधुमास मई है ।

श्री जानकी जीवन से लगन होरी में लगी हैं ।

सब तौर युगल अनन्य अली मौज मई है ।।

--- उत्सवविलासिका, पृष्ठ-101

हाल में (सन् 1980 में) टीकाकार शत्रुघ्नशरण द्वारा युगलानन्दशरणजी का 307 छंदों में निबंध एक ग्रंथ "श्रीइश्क कान्ति" प्रकाशित हुआ है । इसमें इश्क की आधार भूमि ध्यानस्मृति , लगन, इश्क स्वरूप, इश्क के अधिकारी अन्तर्गत में नखशिख दर्शन, श्री संप्रदाय विहित भक्ति आदि की चर्चा हुई है ।

"इश्क सहचर विरह" का उदाहरण --

सीताराम रूप आशक अलबेले अधिक आदानी है ।

सीताराम गहे गरिमा गुनसागर मगन सुभ्यगी है ।।

जीता काम काल काहिल कुल काफिर रहित विरागी हैं ।

युगलानन्द शरण अन्तर घट जरत विरह की आगी है ।

---- इश्ककान्ति, चौथा अध्याय, पृष्ठ-5।

प्रेम पंथ की कठिनाई --

आशक्त होना सहल नहीं मरने से मुश्किल मानोगे ।

पल पल पर मरना जीना जिसको क्योंकर पहिचानोगे ।।

खोज चमत्कारी न चले तह हाय हमेशे ठानोगे ।

युगलानन्द शरण आशक रस छानत छानत जानोगे ।।

--- वही, पृष्ठ-83

महाराज रघुराजसिंह --

इनकी बत्तीस रचनाओं में रामस्वयंवर तथा भक्तों के जीवन-वृत्त-संग्रह के रूप में "राम रसिकावली" प्रसिद्ध रचनाएं हैं। अन्य प्रमुख ग्रंथ हैं -- सुन्दरशतक, भक्ति विलास, राम अष्टयाम, रघुपतिशतक, भ्रमरगीत पदावली, रघुराजविलास, रामरंजन, हनुमच्चरित्र आदि।

रामविहार [वसंत लीला -- संपन्न संयोग का चित्र] --

विलसत रघुवर आलि वसंते।
शीतल मंद सुगन्धि समीरित सरयूतटे दिनंते ।।
अमल कपोले कुंडल लोले विलसत आभा पूरे।
मनसिज केतुबिम्ब इन मनसिज मुकुट तले न विदूरे ।।

--- रघुराजविलास, पृष्ठ-6।

हनुमान्शरण "मधुरअली" --

मधुरअली जी की पाँच रचनाएं प्राप्त हैं -- युगलविनोद पदावली, युगलवसंत विहार लीला, युगलहिंडोल लीला, युगलविनोद कवितावली, रामदोहावली।

करु मन युगल रूप को ध्यान।
दसरथ लाल लली सुखानिधि है दोउ जीवन प्रान ।।
बोलत मधुर सुधा जनु बरसत चित्त फसत कुसक्यान।
"मधुरअली" दंपति की पटतर लखि न परत कोउ आन ।।

--- ग्यारहवीं खोज रिपोर्ट, पृष्ठ-83

[उद्धृत -- रा० भ० में र० स०, पृष्ठ-476]

बैजनाथ --

दास्यभाव के उपासक बैजनाथजी की रचनाएँ निम्नलिखित हैं -- गीतावली की टीका, काव्यकल्पद्रुम, काव्य-कल्पद्रुम, कवितावली की टीका, रामचरितमानस की टीका, रामसतसैया भाव प्रकाशिका, रामसिया संयोग पदावली ।

भोरी भई सुधि माधुरी पागि लगे मुखचंद्र चकोर सुनैना ।
सौम्य चितै चितचोरि लियो सुधि बैजनाथ रही सुमनैना ।।
ज्यों मखिया मधु जाइ फंस्यो मन हाथ नहीं सुदै किमि बैना ।
मूरति श्यामल गौर लला की लखान बनै पै बखान बनै ना ।।

--- फुटकर पद

{उद्धृत रा० र० स०, पृष्ठ-478}

बनादास --

दास्यभाव के उपासक बनादास ने 64 ग्रंथों की रचना की थी । उनमें 61 ग्रंथ प्राप्त हैं । एक महाकाव्य "उभय प्रबोधक रामायण" प्रकाशित है ।

काल को करतब अति बल भारी ।
सात पुरित्त को माथ अवधपुर तहँ प्रभु अधिक प्रभाव पसारी
जोगी जती साधु जन पूजै राजन को सिर पद पर डारी
तीरथ धाम समाज सुजन को तहँ सब अर कीन खरारी ।
"दास बना" निजकृत नहिं मानत सब महिमा रघुनाथ तुम्हारी ।।

--- विशेष विनास, छंद-11

बनादासजी के मुख्य ग्रंथ निम्नलिखित हैं -- अर्ज पत्रिका, रामनिरूपण, विवेक मुक्तावली, रामछटा, मोहिनी अष्टक, ककहरा झूलना, विक्षेप विनास, आत्मबोध, नाम मुक्तावली, सार शब्दावली, संत सुमिरनी समस्या विनोद, झूलनपचीसी, हनुमन्त विजय, अर्जपत्री आदि ।

शीलमणि --

शीलमणि जी की 19 रचनाएं प्राप्त हैं जिनमें कनकभवन माहात्म्य, विवेक गुच्छा, सियाकर मुद्रिका, रामकर मुद्रिका, सख्यरस दर्पण आदि महत्वपूर्ण हैं ।

संपन्न संयोग का उदाहरण --

> झूलत सिया सुन्दर नार ।
> छुटी अलकें मदनमातीं वदन चन्द उदार ।।
> डरति झोंक न झुकति प्यारी होत पिय गरहार ।
> श्री शीलमनि सरसिज सु चम्पा मनहुं एकै डार ।।
>
> --- सियाकर मुद्रिका, पृष्ठ-28

जानकीवरशरण "प्रीतिलता" --

प्रीतिलता जी का जन्म सं० 1879 में हुआ था । ये परम विरक्त संत थे । इनकी स्वतंत्र कृति "मिथिला महात्म्य" है पर फुटकर रचनाएं भी पर्याप्त प्रचलित हैं ।

विलास माधुरी का उदाहरण --

> शरद ऋतु सरसी प्रीति भरी ।
> रस विलास करत प्रिया-प्रीतम, देखि चाँदनी चन्द लरी ।

त   ताथेई ताथेई ताता थेई धिना, धिना धा सु भृदंग झरी ।।

तान लेत प्रिय राग सोहनी, सिय गावत मुसकात खरी ।

चहूँओर सखि मंडल छाये, "जानकीवर" पिय मान हरी ।।

--- प्रीति प्रवाह, पृष्ठ-24

परमहंस सीताशरण --

सीताशरण जी का जन्म सं0 1888 में हुआ था। इनकी एक पदावली उपलब्ध है।

संपन्न संयोग का उदाहरण --

डफ बाजो सिय सुकुमारी को ।

कुंकुम केसर और अरगजा अबिर गुलाल संवारी को ।।

संग सखी सोहैं अलबेली होरि केलि मतवारी को ।

बाजत ताल मृदंग दुंदुभी गावहिं रंग संवारी को ।।

वृषभानु कुँवरि "रामप्रिया" --

महारानी वृषभानुकुँवरि द्वारा अयोध्या के कनकभवन की रचना और टीकमगढ़ के प्राचीन मंदिरों का जीर्णोद्धार उनकी आध्यात्मिक चेतना का प्रमाण है। उनके फुटकाल पद प्राप्त हैं।

विरह का एक चित्र द्रष्टव्य है --

अवध पिया काहे तरसावै जिया रे ।

हमरी लाग रही सुधि तुमसों सैनन हरत जिया रे ।।

घरि पल छिन मोहि कल न परत है तन मन विवश किया रे ।

अलि वृषभानु कुँवरि जीवनधन ऐसे तुम छलिया रे ।।

--- श्री कनकभवन रहस्य, पृष्ठ-47

पं० रामवल्लभाशरण "प्रेमनिधि" --

अयोध्या में रामवल्लभाशरण नामक दो संतों का आविर्भाव मिलता है । पं० रामवल्लभाशरण जी का जन्म सं० 1915 में हुआ था। इनका मुख्य साहित्य राम साहित्य के प्राचीन ग्रंथों की टीका-रचना से संबद्ध है । प्रमुख ग्रंथ निम्नलिखित हैं -- वृहत्कोशल खंड टीका, शिव संहिता की टीका, जानकी स्तवराज की टीका, ध्यानमंजरी की टीका, रहस्यत्रय की टीका आदि। ये दास्य भाव के साधक कवि थे ।

हे सिय पिय तव रस रस, अति गंभीर अथाह ।
व्यासवाक्य में हैं अरे, पावत नहिं कोउ थाह ।।
तामे मज्जन करन को, मम हिय बढ्यो उछाह ।
पै लघुमति नहिं पैठ सकों, बिन कृपा सिय नाह ।।

--- वृहत्कोशल खंड की टीका, पृष्ठ-1

रामवल्लभाशरण "युगलविहारिणी" --

रामवल्लभाशरण "युगलविहारिणी" जी का जन्म सं० 1915 में हुआ था । यह नाम इन्हें माधुर्य भाव में दीक्षित होने पर इनके गुरू श्री जानकीवर शरण जी से प्राप्त हुआ । इनका काव्य संग्रह "युगलविहार पदावली" नाम से प्रकाशित है ।

मान-निषेध का उदाहरण --

आई है चैती बहरिया हो प्यारी मान न कीजै ।
तरूवर तर सोउ मृदल परन किये प्रफुलित विपिन बहरिया हो ।।
तुम बिन मो मन कछु नहीं भावत बीतत समय बिहरिया हो ।

--- श्री युगलविहार पदावली, पृष्ठ-220

श्री रामवल्लभाशरण "युगलविहारिणी" जी हमारे आलोच्य कवि संत श्री सियालाल शरणजी प्रेमलता के दीक्षा गुरु थे ॥

कामेन्द्रमणि --

कामेन्द्रमणि जी सुहृद्सख्य रस भाव के रसिक भक्त थे। वे स्वयं को श्रीराम का अग्रज मानकर उपासना में संलग्न थे। उनकी दो कृतियाँ हैं -- श्री सीतारामभद्र केलि कादम्बिनी और श्री राघवेन्द्र रहस्य रत्नाकर।

श्री मिथिलेश नन्दिनी जी के द्वार सदा हम रहते हैं।
इस घमंड में भरे नहीं कछु श्री रघुबर से चहते हैं ।।
खुदादीदार अवधलालन का ललकि इसी जाँ चहते हैं।
श्री कामदेन्द्र आनन्द कन्द का मुदित मंजु कर गहते हैं ।।

--- श्री सीतारामभद्र केलि कादम्बिनी, पृष्ठ-109

सीतारामशरण "रामरसरंगमणि" --

श्री रामरसरंगमणि जी सख्य संप्रदाय के आचार्यों में परिगणित हैं। इनका जन्म सं0 1916 में हुआ था।

मधुर सख्य भाव का उदाहरण --

श्री गुरुदेव पियाओ प्याला सख्य मधुर रस रेला को।
जग संबंध नेह नस्वर भौ हाल मकर के मेला को ।।
तजि बाधन साधन अवराधंन नामहिं आठों बेला को।
मधुर सखा "रसरंगमणी" श्री रामलला अलबेला को ।।

--- श्री रामरसरंग विलास, पृष्ठ-39

इनकी खण्ड तथा काव्य के रूप में लिखित 27 रचनाएँ मिलती हैं । कुछ प्रमुख ग्रंथ निम्नलिखित हैं -- श्री रामस्तवराज टीका, श्री सीताराम नाममंजरी, होली विलास, श्री सीताराम नखशिख, श्री रामायण बारहखड़ी, श्री सीताराम नाम मंजरी आदि ।

सीतारामशरण भगवान प्रसाद "रूपकला" --

रूपकला जी का जन्म सं० 1897 में हुआ था । इनकी भक्तिपरक मुख्य रचनाएँ इस प्रकार हैं -- भागवत गुटका, रामायण रस विन्दु, भक्ति सुधाविन्दु स्वाद तिलक, मानस अष्टयाम, प्रेमगंग तरंग आदि ।

रूपकला बिनवति हनुमत ही, चंद्रकला अरु गिरिवर धिय की ।
एकौ उपाय न सूझत आली, मोहि आसा केवल श्री सिय की ।।

--- रूपकला प्रकाश, पृष्ठ : 133-34

गोमतीदास "माधुर्यलता" --

इनकी काव्य-रचना के रूप में हनुमान जी की बधाई में कुछ फुटकल पद मिलते हैं जिनमें "श्रीमतिशरण" उपनाम भी प्रयुक्त हुआ है ।

बधाई वायु लालन की । सु गाई मोद मालन की ।
सुमंगल मास क्या कातिक । नक्षत मंगल मयी स्वातिक ।।

सियाशरण मधुकरिया "प्रेमअली" --

इनका जन्म सं० 1919 में हुआ था । ये रसावेशी संत थे । इनकी प्रारंभिक फुटकल रचनाएँ ही प्राप्त हैं ।

हौं दासी मिथिलेस लली की ।
प्रिय प्यारी सनेह सुख सरि महँ विकसन चहौं नित प्रेम कली की ।

श्री कौसिला सुवन सुन्दर संग विहरण प्यारी सुमन थली की ।।
यह रस स्वाद मगन रहौं निसिदिन जानौं नहिं कछु सुगति भली की
जन्म जन्म चेरी भयो चाहत यहै साध उर "प्रेमअली" की ।।

[उद्धृत रा० मे र० सं०, पृष्ठ-52।]

मधुरोपासक प्रमुख भक्त कवियों की विशाल परंपरा के सर्वेक्षण में हमारे आलोच्य कवि संत स्वामी श्री सियालाल शरण जी "प्रेमलता" का विशिष्ट स्थान है। प्रेमलताजी का व्यक्तित्व साधक और कवि दोनों ही रूपों में सशक्त दिखाई देता है। रसिक संप्रदाय के पूर्वाचार्यों के सिद्धांतों का समन्वय और उनकी साधना प्रणाली का सरल विवेचन उनके ग्रंथों में मिलता है। उनका सम्पूर्ण जीवन-चरित[75] साधना और कवित्व का मणिकांचन संयोग प्रतीत होता है।

वस्तुतः मधुर भाव मानव-मन की सहज वृत्ति की रसात्मक परिणति है। भक्त और भगवान्, ब्रह्म और उसकी दिव्य शक्तियों के पारस्परिक मधुर भाव बंधन की यह सुन्दर व्यंजना है। लीला-रहस्य का भेदन प्रेम तत्त्व से ही संभव है इसलिए ब्रह्म का प्रेममय और रसमय रूप मधुरोपासना का प्रेरक केन्द्र रहा है। डॉ० हजारी प्रसाद द्विवेदी ने लिखा है कि "जड़ जगत् में जो सबसे नीची है, वही भगवद् विषयक होने पर सबसे ऊपर हो जाती है।

---

75. जीवनी और व्यक्तित्व विषयक विस्तृत विवेचन के लिए द्रष्टव्य -- इसी प्रबंध का द्वितीय अध्याय।

यही कारण है कि शृंगार रस, जो जड़ जगत् में सब से निकृष्ट है, वस्तुतः भगवद्विषयक शृंगार होने पर मधुर रस हो जाता है।"[76] इस दृष्टि से विचारक का कहना है कि "प्रेम लौकिक प्रीति का विषय बन जाने पर जड़ोन्मुख हो जाता है। फलतः कान्ताभाव की रति में जड़ासक्ति का ही चरमोत्कर्ष होता है। किन्तु वही प्रेम जब चिन्मुख होकर भगवद् प्रीति का विषय बन जाता है तब वह सर्वश्रेष्ठ उज्ज्वल रस किंवा मधुर रस के नाम से प्रतिष्ठित होता है।"[77]

स्वामी अग्रदास ने अपने ग्रंथ "ध्यानमंजरी"[78] द्वारा इस रसिक साधना को व्यावहारिक धरातल प्रदान किया है। सांप्रदायिक साहित्य में रामभक्ति की मधुर भावधारा के पाँच नाम प्राप्त होते हैं -- जानकी संप्रदाय, रहस्य संप्रदाय, रसिक संप्रदाय, जानकी वल्लभी संप्रदाय और सिया संप्रदाय।[79] इनमें रसिक संप्रदाय को अधिक महत्ता मिली है। अग्रदास ने अपने अष्टयाम [पृष्ठ-68] में ऐसे भक्तों को रसिक कहा है जो दिनरात राम की

---

76. मध्यकालीन धर्म साधना, पृष्ठ : 252-253

77. मधुर रस स्वरूप और विकास [भाग 1]
--- डॉ रामस्वार्थ चौधरी अभिनव, पृष्ठ-13
राजकमल प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 1968

78. श्री गुरु सन्त अनुग्रह ते अस गोपुर वासी।
रसिक जनन हित करन रहसि यह ताहि प्रकासी ॥
--- ध्यानमंजरी, पृष्ठ-24

79. वृहद् उपासना रहस्य --- प्रेमलता, पृष्ठ-104

रसमयी मधुर लीलाओं का ध्यान करते हैं और उनके अनन्य परिकर बनते हैं। बाल अली जी ने अपने ग्रंथ "सिद्धांत तत्त्व दीपिका" में भगवान् के प्रेमी मात्र को रसिक की संज्ञा दी है। "यह स्पष्टतः सिद्ध होता है कि रसिक भक्तों ने सीताराम की मधुर लीलाओं के आधार पर जहाँ एक ओर रसिक-साधना का सैद्धान्तिक विवेचन करनेवाले उच्च कोटि के साम्प्रदायिक एवं शास्त्रीय ग्रंथों का प्रणयन किया वहाँ दूसरी ओर अपनी दिव्य रसानुभूति की अभिव्यंजना करनेवाले उत्कृष्ट, मौलिक एवं भावात्मक साहित्य की सृष्टि की। इस प्रकार रसिक भक्तों ने धर्मरुचि के साथ-साथ लोक-रुचि को मधुर रस से मज्जित कर अत्यंत मनोज्ञ और महनीय बना दिया।"[80]

इस दृष्टि से कवि श्री सियालाल शरण जी "प्रेमलता" का काव्य[81] साम्प्रदायिक सिद्धांत-विवेचन और श्री सीताराम की विहार-लीलाओं में रुचि उत्पन्न करने के साथ नाम रटन को मानव-जीवन और समाज का एक अनुकरणीय आदर्श बना देने में समर्थ सिद्ध हुआ है। तत्कालीन अंग्रेजी दासता के युग में जन-जीवन को सीताराम के युगल भाव का दासत्व और माधुर्य प्रदान कर उनमें आस्था और शक्ति का संचार कर प्रेमलताजी ने अयोध्या, सीतामढ़ी जनकपुर और काशी आदि क्षेत्रों में श्री सीताराम नाम की दिव्य

---

80. मधुर रस : स्वरूप और विकास, [भाग-2], पृष्ठ-215

81. प्रेमलताजी के काव्य-ग्रंथों के परिचय के लिए द्रष्टव्य इसी प्रबंध का तृतीय अध्याय।

महिमा का उद्घोष किया । वे काव्य-रचना के साथ समाज-रचना में भी प्रवृत्त दिखाई देते हैं । वास्तव में इनका काव्य शृंगार के साधारण भाव को असाधारण और दिव्य धरातल प्रदान करता है । तत्कालीन सामाजिक जीवन, हिन्दू धर्म का ह्रास, अंग्रेज और अंग्रेजियत का कुप्रभाव, निराशा, दीनता, गाँधीजी की नीति आदि की चर्चा के साथ आध्यात्मिक बल का संकेत प्रेमलता जी के काव्य द्वारा हुआ है । सखी रूप से आन्तरिक आनंद और माधुर्य का भाव-बोध इनके काव्य द्वारा प्राप्त होता है ।

प्रेमलताजी संक्रान्ति काल के कवि हैं । उनमें जातीय जीवन के प्रति एक गंभीर आस्था का भाव मिलता है । भक्ति के आवेश से निर्द्वन्द्व, उन्मुक्त और माधुर्यरंजित भावों का प्रत्याख्यान तथा नाम-रटन द्वारा सोई हुई जनता को जाग्रत करने का आध्यात्मिक संकल्प उन्हें रसिक साधकों में विशिष्ट स्थान का अधिकारी बना देता है ।

------ 0 ------

द्वितीय अध्याय

कवि सियालाल शरण जी "प्रेमलता" की जीवनी, व्यक्तित्व और परिवेश

द्वितीय अध्याय

कवि सियालाल शरण जी "प्रेमलता" की जीवनी, व्यक्तित्व और परिवेश :-

रामभक्ति शाखा के मधुरोपासक कवि श्री सियालाल शरण जी "प्रेमलता" को "साक्षात् केलिकुंज की यूथेश्वरी के अवतार श्री किशोरी जी के परम अन्तरंग सहचरी, उनकी इच्छा से ही जीवोद्धार करने, वेश व नाम का प्रचार और मिथिला धाम के तीर्थ और माहात्म्य को पुन: उजागर करने"[1] वाले महात्मा के रूप में स्वीकार किया गया है ।

जन्म और बाल्यकाल :-

"प्रेमलता" जी नाम-जप-साधक और सिद्ध तपस्वी थे । उनका जन्म ग्वालियर राज्य के पनियार नामक ग्राम में सम्वत् 1928 (1871 ई0) के भादो मास में सनाढ्य ब्राह्मण-कुल में हुआ था । इनके पिता

---

1. वृहद् जीवन चरित्र का भूमिका भाग (पृ0 च)

--- सियाराम स्वरूप शरण "सुहागलता", काशी सम्वत् 2008 वि0

का नाम पं0 मौजीराम था । नाम संस्कार के समय इनका नाम बालाराम रखा गया । प्रेमलता जी का बाल चरित्र क्रीड़ापरक और आकर्षक रहा । पाँच वर्ष की अवस्था में चूड़ाकरण संस्कार और आठ वर्ष की अवस्था में इनका यज्ञोपवीत संस्कार हुआ । बाल्यकाल में इन्हें कन्दुक क्रीड़ा, पतंग उड़ाने एवं गिल्ली डंडा के खेल में बड़ी रुचि थी । धनुष बाण चलाने एवं कुश्ती का भी इन्हें चाव था । जीवन के आरंभिक काल से ही तुलसीकृत रामचरित मानस के पाठ-श्रवण एवं संत-महात्माओं के सत्संग का इन्हें अभ्यास हो चला था । "बालपन से वैराग्य, निर्भयता, धार्मिक प्रवृत्ति, भगवद् प्रेम और धारणा, पवित्र विचार आदिक दैवी गुण आप में कूट-कूट कर भरे थे"। ··· आपसे लोग कुछ सुनने की इच्छा से एकान्त में बैठाकर पूछते कि महाराज हम सुखी होना चाहते हैं, कहो कैसे हो सकते हैं । आप उत्तर देते -- " प्रत्येक प्राणी सुख प्राप्त करना चाहता है, धनी भी निर्धन भी । परन्तु इस क्षणभंगुर असत्य नाशवान् जग में सुख कहाँ । मनुष्य जानता है कि धन-स्त्री-पुत्र अथवा विषयों में सुख है । यह प्राप्त हो जावेंगे तो हम सुखी होंगे । परन्तु यह उसकी भूल है । इन सबों में तो सुख नहीं सुखाभास मात्र है । सच्चा सुख तो मन को उस भक्त वत्सल करुणा सागर आनंदघन प्रभु के चरणारविन्द में ही लगने से प्राप्त हो सकता है, अथवा उनके भक्तों की सेवा द्वारा" ।[2]

कहा जाता है कि प्रेमलता जी को भजन-प्रवृत्ति

2· श्री प्रेमलता जी का वृहद् जीवन-चरित्र, पृष्ठ : 20-21।

की प्रेरणा बाल्यकाल में ही जन्मकुंडली देखनेवाले ज्योतिषी द्वारा निर्देशित अल्पायु-योग के कारण मिली । अल्पायु-योग का निस्तार नाम-भजन को जानकर ये भजन हेतु घर त्यागकर निकल पड़े । आठ वर्ष की ही अवस्था में पिता का भी परलोकवास हो गया था और उसके दो वर्ष बाद संवत् 1938 में ये भजन के लिए प्रवृत्त हुए । प्रारंभ में इन्होंने बलदेवदास नामक एक संत से भजन की रीति सीखी । उनके साथ नित्य सत्संग करते हुए अटल विश्वास के साथ "सियाराम" नाम रटते हुए पहाड़ी के ऊपर सिद्ध हनुमान जी को यथाशक्ति नाम रटन सुनाते रहे । माता के लाड़ के कारण पढ़ने-लिखने का वातावरण इन्हें नहीं मिला । पर शुद्ध आर्त्त भावना के कारण ईश्वरीय कृपा से उन्हें वहीं प्रारंभिक पाठों की शिक्षा मिली और रामचरितमानस के पारायण द्वारा उन्होंने अपनी शिक्षा पूर्ण की । संवत् 1946 में इनकी माता भी दिवंगता हुईं और पारिवारिक बंधनों से मुक्त होकर ये तपोमय जीवन व्यतीत करने लगे । शृंगार भाव के रसिक संत होने के कारण पति-पत्नी भाव की उपासना के फलस्वरूप ये पंचकेश रखते थे । मुंडन कराने के भय से इन्होंने माता का दाह-संस्कार स्वयं न करके अपने कुटुम्ब संबंधी दुर्गाप्रसाद जी द्वारा पूरा कराया ।

प्रेमलता जी के साधक जीवन का महत्वपूर्ण मोड़ यहीं दिखाई देता है । यायावर के रूप में अनेक स्थानों और तीर्थों का भ्रमण करते हुए प्रेमलता का कठोर साधक रूप यहीं दृष्टिगोचर होता है । सांसारिक माया-ममता से अलग, भोजन और स्वाद से विरहित इनका जीवन एक सिद्ध और अद्भुत नाम जापक के रूप में परिणत होता हुआ परिलक्षित होता है ।

भ्रमण करते हुए पहाड़ी की एक गुफा में एक महात्मा श्री वल्लभदास जी द्वारा श्री सीताराम दर्शन की प्रेरणा के लिए कहे गए सूत्रों -- " भोजन शयन जल तीन चीजों का त्याग करो, जबतक दर्शन न हो, अखंड सियाराम नाम रटो" को उन्होंने अपने जीवन का लक्ष्य बना लिया । नाम-रटन की महिमा ही उनके साधनामय जीवन का केन्द्रीय तत्व रही है ।

श्री प्रेमलता जी की प्रथम साधना-यात्रा चित्रकूट की मिलती है । चित्रकूट परिक्रमा करते हुए सियाराम नाम जपते हुए कुछ समय बिताकर ये सं० 1959 में अयोध्या जाकर महात्मा वल्लभा शरण से मंत्र प्राप्त कर माधुर्य संबंध की भक्ति में दीक्षित हुए । यहीं उनको साधना-नाम भी प्राप्त हुआ । इनके स्वकथित परिचय द्वारा इसका स्पष्ट संकेत मिलता है --

श्री सियलाल सु शरण अरू, "प्रेमलता" दुइ नाम ।
दीन्हि एक तनु थून कर, इक आत्मीय ललाम ।।
श्री रसराज श्रृंगार कर, भाव सुखद संबंध ।
दीन्ह दयाकरि सद्गुरू, नाशि जगत् दुर्गन्ध ।।
अष्टयाम की भावना, करन कहेउ रटि नाम ।
सद्गुरू परम उदार मय, रसिक राज सुख धाम ।।
सरयू तट लक्ष्मण किया, तहँ, सिय बाग सुहाग ।
अवध धाम गुरू कीन्ह मोहिं, शिष्य सहित अनुराग ।।
श्री "रामवल्लभाशरण" मय, सद्गुरू परम सुजान ।
निर्मयिउ पुनि सरयु तट, सद्गुरू "सदन" स्थान ।।
नाम रटन के भेद मोहिं, अरू उपासना रीति ।

बार-बार बहु भांति प्रभु, समझायेउ करि प्रीति ।।

--- वृहद् जीवन चरित्र, पृष्ठ-44

प्रेमलता जी दीक्षा-काल में ही तीर्थयात्रा, महंत-पद, भिक्षाटन या साधारण लोभ-लाभ की इच्छाओं से विरहित हो चुके थे उन्हें सद्गुरु श्री रामवल्लभा शरण जी से पंच संस्कार रूप श्री सीताराम, युगल षडक्षर महामंत्र, राज तिलक छाप, युगल कंठी और आत्मनाम, गुरुमंत्र और श्री हनुमान जी का मूल बीज मंत्र एवं युगल शरणागति, युगल मंत्रद्वय, युगल चरण मंत्र प्राप्त हुए । श्रृंगार-रस की उपासना और नाम-रटन और वैष्णव-भाव को अपनाकर परमानन्द स्वरूप महाकारण नित्य-सच्चिदानन्द तुरीय एकरस सीता और रामचंद्र से अभेद अखण्ड-सखी स्वरूप सर्वशक्तिमान सिया स्वामिनी की सहचरी मान कर ये साधना में प्रवृत्त हुए । धर्म के प्रति गंभीर आस्था रखते हुए मस्तमौला फक्कड़ व्यक्तित्व के कवि प्रेमलता के उपदेशों में दृढ़ता और आत्मबल के साथ सियाराम नाम के प्रति तीव्र आकर्षण मिलता है --

छटो अगुण गुण गण जटो, गटो न भक्षाभक्ष ।
फटो विषय सुख दुखद ते, प्रेमलता लखि अक्ष ।।
ठटो सु वैष्णव ठाठ दृढ, डटो सु भक्ति पथ भाय ।
कटो शीश निज धर्म हित, प्रेमलता हरषाय ।।

नाम रटो जगते हटो, अटो अवनि वशु याम ।
सटो संग शुचि रस चटो, लटो देह दुख धाम ।।

श्री वैष्णव कर वेष वर, सोइ अटूट पतवार ।
अपर सुगुण सामान बहु, चलनि रटनि इकतार ।।

नाम नाव पर चढहि जे, एहि विधि जन कलिकाल ।
सोइ विनु श्रम तरि घोर भव, पैहहि श्री सियालाल ।।
तिलक छाप कंठी युगल, युगल मंत्र निज नाम ।
श्री रसराज उपासना, धारि रटहु सियराम ।।
नामु प्रताप प्रभाव, महिमा करतब रीति ग ति ।
पद गुण पावन ताव, शील सनेह स्वभाव रति ।।
गरूता प्रभुता प्रीति, षोडश भेद विचारि उर ।
रटै होय जगजीति, छूटै आवागमन फुर ।।

--- वृहद् जीवन चरित्र, पृष्ठ-36

प्रेमलता जी ने अयोध्या में कुछ समय तक गुरू सेवा करने के पश्चात् पुनः चित्रकूट की ओर प्रयाण किया । हनुमान जी का प्रत्यक्ष कृपा और अत्रिमुनि के संकेत पर ये मिथिला की ओर प्रस्थित हुए । उत्तर बिहार में सीता की जन्मस्थली सीतामढ़ी {सीतामही} में लक्ष्मणानदी के किनारे श्री सिद्ध बाबा का सामीप्य इन्हें प्राप्त हुआ । उनकी प्रेरणा से इन्होंने मधुकरी वृत्ति, गुदरी टोप आदि धारण कर मिथिला के गुप्त रहस्यों का ज्ञान प्राप्त कियस ।

श्री सियालाल शरण जी "प्रेमलता" की साधना और काव्य-रचना के प्रेरक सूत्रों में श्री सिद्ध बाबा और सीतामही का महत्वपूर्ण स्थान है । "श्री अयोध्या धाम लक्ष्मण किला के सिद्ध संत शिरोमणि अनन्त श्री स्वामी युगलानन्द शरण जी महाराज के परम कृपापात्र साधक परम सिद्ध बाबा ने उक्त स्वामी जी के दिव्य आदेशानुसार सर्वप्रथम श्री कनक भवन

[श्री अयोध्या] की वर्षों सेवार्चना के बाद श्री 108 महान्त श्री भगवद्दास जी के समकाल में सीतामढ़ी पधार कर यहाँ के उर्विजा कुंड पर रहकर श्री जानकी मंदिर में नि:स्वार्थ निष्ठा के साथ बारह वर्षों तक निरन्तर अर्चन-सेवा करके सिद्धि प्राप्त की । विरागमूर्त्ति श्री भगवद्दास जी महाराज ने प्रसन्न होक र उन्हें सिद्ध नाम से संबोधित किया और यहीं श्री लक्ष्मण-तट पर रहकर भगवद् भजन और संत-सेवाव्रत का उपदेश दिया । तबसे ये सिद्ध बाबा के नाम से ही प्रख्यात हुए, इसके पूर्व इनका पूर्वनाम श्री सियाराम दास था"।[3]

श्री सिद्ध बाबा के ही अनुरोध और आदेश से प्रेमलता जी ने सीतामढ़ी के सिद्धाश्रम में अठारह वर्षों तक शिष्यों सहित निवास कर अखंड श्री सियाराम नाम का जपानुष्ठान कर इनका अमोघ आशीर्वाद प्राप्त किया था । "यहीं उस अवधि में परमपूज्य परमहंस श्री प्रेमलता जी ने वृहद् उपासना रहस्य" और श्री सीताराम रहस्य दर्पण" आदि अनेक ग्रंथों की रचना की । भइ प्रगट कुमारी -- श्री जानकी जन्म स्तुति की रचना बाबा की स्नेहपूर्ण प्रेरणा से यहीं हुई जिसका गायन प्रति प्रात: आरती के समय भारत के प्राय: सभी राममन्दिरों में अद्यावधि होता है ।"

भइ प्रगट कुमारी भूमि बिदारी जन हितकारी भयहारी ।
अतुलित छवि भारी मुनि मन हारी जनक दुलारी सुकुमारी

---

3. पराशक्ति श्री सीता और अवतरण भूमि सीतामढ़ी
--- उपेन्द्रनाथ मिश्र "मंजुल", पृष्ठ-17।
मंजुल प्रकाशन, मुजफ्फरपुर, प्रथम संस्करण, 1979

सुन्दर सिंहासन तेहि पर आसन कोटि हुताशन घुतिकारी ।
शिर छत्र विराजै सखि गण भ्राजै निज निज काजै कर धारी ।।
सुरसिद्ध सुजाना हनहिं निशाना चढ़े विमाना समुदाई ।
बरषहिं बहुमूला मंगलमूला अनुकूला सिय गुण गाई ।।
देखिहिं सब ठाढ़े लोचन गाढ़े सुख बाढ़े उर अधिकाई
अस्तुति मुनि करहीं आनंद भर ही पायनि परहीं हरषाई ।।
ऋषि नारद आये नाम सुनाये सुनि सुख पाये नृप ज्ञानी ।
सीता असनामा पूरण कामा सब सुखधामा गुणखानी ।।
सिय सन मुनिराई विनय सुनाई समय सुहाई मृदुबानी ।
लालनु तनु लीजै चरित सुकीजै यह सुख दीजै नृपरानी ।।
सुनि मुनिवर बानी सिय मुसिकानी लीला ठानी सुखदाई ।
सोवत जनु जागी रोवन लागी नृप बड़भागी उरलाई ।।
दम्पति अनुरागेउ प्रेम सुपागेउ तेहि सुख लागेउ मन लाई ।
अस्तुति सियकेरी प्रेमलतेरी वरणि कुवेरी शिरनाई ।।
निज इच्छा मखभूमि ते, प्रगट भई सिय आय ।
चरित किये ~~सब~~ पावन परम, बरषन मोद निकाय ।।

--- उद्धृत - पराशक्ति श्री सीता और अवतरण भूमि :
सीतामढ़ी, पृष्ठ-234

प्रेमलता जी की साधना-भूमि के रूप में मिथिला-भूमि विशेषकर सीतामढ़ी और काशी विशेष महत्वपूर्ण हैं । सीतामढ़ी में रहकर वे अनवरत सियाराम नाम का भजन करते हुए अपने अमूल्य उपदेशामृत से जिज्ञासु

जनों को तृप्त करते रहते थे । सीतामढ़ी में लक्ष्मण तट पर प्रेमलता जी का आश्रम "सद्गुरू निवास" {पीली कुटिया} के नाम से प्रसिद्ध है । प्रेमलता जी के समय सह ही संचालित सीतामढ़ी की अन्तर्गृह एक कोशी परिक्रमा अक्षय नवमी के अवसर पर आज भी नियमानुसार फाल्गुन मास में सम्पन्न होती है । सीतामढ़ी की वृहद् परिक्रमा इन्हीं की सत्प्रेरणा से परमहंस शिष्य श्री सिया सुन्दरी शरण जी मधुकरिया द्वारा विगत चालीस वर्षों से संचालित हो उनके योग्य शिष्य श्री मैथिलीवल्लभ शरण मधुकरिया {श्री प्रेमलता भजनाश्रम, गोलाघाट अयोध्या निवासी} द्वारा जानकी जन्मोत्सव पर वैशाख में नियमानुसार संचालित होती है ।

प्रेमलता जी लीलास्वरूप के प्रेमी रसिक भक्त थे । लीलाभाव की यही आकुलता उन्हें बार-बार काशी की ओर आकर्षित करती रही । प्रारंभ में काशी में ये अधिकतर दशाश्वमेध घाट पर निवास करते थे । लगभग तैंतीस वर्षों तक रामनग र की लीला की झाँकी का सुख ये लेते रहे । लीला के आदि, मध्य, अन्त और संध्या विश्राम के समय सामूहिक कीर्तन कराने क ा आपका नियम निर्बाध चलता रहा । काशी के संकटमोचन हनुमान के दर्शन से इनके भक्तिभाव को प्रभूत बल मिला । श्री सीताराम उपासक होने के कारण हनुमत्साधना में इन्हें प्रारंभ से ही रुचि थी । उस समय अपने गुरू श्री रामवल्लभाशरण जी के साथ इनका पत्र-व्यवहार रहस्य-तत्वों का समाधान प्रस्तुत करता है । उक्त काव्यात्मक पत्र-व्यवहार के कुछ प्रमुख अंश इस प्रकार हैं-

अथ श्री गुरू पत्रिका[4] --

---

4. वृहद् जीवन चरित्र, पृष्ठ-56

है सियलाल प्रपन्न प्रसन्न रहौ कधाम सु नाम पुकारि कै ।
या भव सिन्धु अथाह प्रवाह से आप तरौ जन औरहु तारि कै ।
औसर देह प्रलभ्य मिली निशिवासर तात तौ हीय विचारिकै ।
श्री गुरुदेवहि जो उपदेश हमेशहि सो दृढ़ कैह्यि धारिकै ।

मोह भई निद्रा बिच सोये हैं अनन्त जीव
कोई बड़ भागी गुरुदेव कृपा जागे हैं ।
तिन हिय भूमि में भजन रूपी खेत जाम्यो
तामें सीताराम दरशन फल लागे हैं ।
भजन स्वरूपी खेत रक्षा भली भांति करै
ज्यों अनाज हेतु ही किशान अनुरागे हैं ।
पशु चोर पक्षी अरु सूकर हरिण आदि
नाम की आवाज देवै, तब सब भागे हैं ।।

प्रेमलता विरचित प्रश्नोत्तर वीसिका के कतिपय अंश अत्यंत काव्यात्मक और आलोच्य भक्त कवि के जीवन-दर्शन को स्पष्ट करते हैं --

प्रश्न -- को तुम हो, का वर्ग तव, क्वन जाति, का नाम ।
प्रेमलता कहु सत्य सब, कहा सो तेरो काम ।।
उत्तर-- नारि वर्ग प्रभु अंश हो, जाति किंकरी मोर ।
नाम जीव वर, काम यह, नाम रटो निशिभोर ।।
प्रश्न -- कहाँ गमन, आगमन कित, रहना कहाँ तुम्हार ।
कहा सुनो देखो कहा, प्रेमलता संसार ।।
उत्तर-- आना जाना है नहीं, रहना नित्य विहार ।

सुन्यो सार भागवत भजन, असत लख्यो त्योहार ।।[5]

काशी-यात्रा के पश्चात् प्रेमलता जी ने पुनः मिथिला यात्रा की । जय सियाराम नाम का प्रचार ही इनका काम्य था । इनकी उपाधि तभी से "जय सियराम जय जय सियराम नाम ध्वनि प्रचारक वैष्णव धर्मावलंबी" पड़ गई । स्थान-स्थान पर कीर्तन केन्द्रों की स्थापना और हनुमत्पूजा का प्रसार करते हुए प्रेमलता जी ने भक्ति और धर्म को व्यावहारिक रूप प्रदान किया । मिथिला के प्राचीन लुप्त तीर्थों का उद्धार करते हुए जीर्ण मंदिरों और भग्नावशेषों का भी जीर्णोद्धार कराने का प्रयत्न करते रहे । "मिथिला महात्म्य" और पुराणों के अनुसार अनुसंधान करते हुए इन्होंने अष्टकूप -- सीरध्वज कूप, शतानन्द कूप, अक्रूर कूप, सैमन्त कूप, विद्या कूप, ज्ञान कूप आदि और बहत्तर सरोवरों यथा -- पुरन्दर सर, दशरथ सर, भार्गव सर, माण्डवा सर, रक्ष सर, विडाल सर, रुक्मिणी सर, जनक सर, सुनयना सर, बलदेव सर, गोपाल सर, धनुष सर, पाद प्रक्षालन सर, पयस्विनी सर, लक्ष्मण सर, सनकादिक सर, लोमश सर, जानकी कुण्ड, विहार कुण्ड, गंगासागर, अंगिरा सर, गौतम सर, विशिष्ट सर आदि का जीर्णोद्धार किया नेपाल राज्य के दीवान की सहायता से प्रत्येक के नाम का पत्थर और सरोवरों के बीच में खंभा लगाया गया । दो-तीन वर्षों में यह कार्य संपादित हुआ । इससे स्पष्ट होता है कि प्रेमलता जी का व्यक्तित्व न केवल भक्त, महात्मा और कवि का व्यक्तित्व था बल्कि उनमें अनुसंधान की प्रवृत्ति के साथ

---

5. वही, पृष्ठ-57

लोकोपकारक चेतना तथा जन शक्ति के नेतृत्व की अद्भुत क्षमता थी ।

प्रेमलता जी के व्यक्तित्व का एक महत्वपूर्ण सामाजिक पक्ष मिथिला की "मध्यमा परिक्रमा" में दिखाई देता है । तत्कालीन परिस्थितियाँ यात्रा के अनुकूल नहीं थी पर ग्राम और जंगल सबको जागृत करते हुए हनुमान नगर, कल्याणेश्वर, गिरिजाबाग, मटियानी, जलेश्वर, मड़ई, ध्रुवाश्रम, कंचनवन, पर्वता, धनुषकुण्ड, सप्त ऋषि सरोवर, विमला सर, राम सरोवर, विश्वामित्राश्रम और विहार कुण्ड होते हुए पन्द्रह दिनों में मिथिला-यात्रा पूर्ण की गई । परिक्रमा का मुख्य उद्देश्य नाम ध्वनि और वेश प्रचार था । साधारण जन जीवन को भक्ति की ओर उन्मुख करने का यह व्यावहारिक मार्ग प्रेमलता जी के व्यक्तित्व के लोकपक्ष को स्पष्ट करता है ।

सीतामढ़ी में श्री सद्गुरू निवास की स्थापना भक्तों और सत्संग प्रेमियों की देन कही जा सकती है । प्रेमलता जी कुटिया बनाने के पक्ष में नहीं थे । उनकी दृष्टि में संत सदा अलमस्त होते और राम नाम गुणगायक[6] होते हैं । पर लोगों के आग्रह से भक्त साधिका श्रीमती रामप्रिया, सिया सहचरी और रामसखी जी आदि के उद्योग से पीली कुटिया की नींव

---

6. संत रहैं अलमस्त जक्त में रामनाम गुण गाते हैं ।
ऋद्धि सिद्धि सुख संपति सारा, संग चलैं, जित जाते हैं
भक्ति ज्ञान वैराग्य बोध वर जीवों को सिखाते हैं ।
प्रेमलता करि संगति जिनकी पापिउ मुक्ति पाते हैं ।।

--- प्रेमलता

डाली गई। सीतामढ़ी में प्रवहमान लक्ष्मणा के तट के समीप स्थित इस आश्रम में पूजा और सत्संग की परम्परा आज भी पूर्ववत् चल रही है।

मुख्यतः प्रेमलता जी की साधना स्थली अयोध्या, काशी, जनकपुर और सीतामढ़ी रही है। वे गुरुपूर्णिमा और झूलन के समय अयोध्या में, रामलीला के समय काशी में, विवाह पंचमी और परिक्रमा के समय जनकपुर तथा शेष समय सीतामढ़ी में व्यतीत करते थे।

प्रेमलता जी के जीवन में त्यागवृत्ति की प्रमुखता रही है। निश्छल अकृत्रिम व्यवहार किन्तु भक्ति की दृढ़ता और आत्मविश्वास की झलक के साथ सर्वस्व समर्पण का अद्भुत भाव उनके जीवन में परिलक्षित होता है। उनके गुरु श्री स्वामी रामवल्लभाशरण ने अपनी गद्दी का उत्तराधिकारी इन्हें नियुक्त किया पर मुखिया-वृत्ति भजन में बाधक होती है, यह मानकर इन्होंने महंत पद को अस्वीकार कर दिया। अनेक लोगों द्वारा प्रयत्न होने के बाद भी इन्होंने उसे स्वीकार नहीं किया और संकटमोचन हनुमान के मंदिर (काशी) में अपने छोटे गुरुभाई श्री रामकृपालु शरण को महन्त पद का अधिकारी सहर्ष प्रदान कर दिया। इनकी त्याग-वृत्ति इनके सिद्धांत में ही नहीं, व्यवहार में भी समानतः मिलती है।

संवत् 1968 में प्रेमलता जी का आगमन पुनः अयोध्या में हुआ। इसी वर्ष इनके गुरु श्री रामवल्लभाशरण का गोलाघाट पर "सद्गुरु सदन" नामक स्थान बनकर तैयार हुआ था। इसके बाद प्रायः बीस वर्षों तक इनका निवास अयोध्या में ही रहा। सं0 1998 के सावन महीने में ये सीतामढ़ी गए। वहाँ से अयोध्या लौटते हुए काशी में उतरे। दैवयोग से

स्टेशन से नगर की ओर आने के लिए जब ये रेल्वे लाइन पार कर रहे थे, इन्हें इंजन का धक्का लगा जो घातक सिद्ध हुआ । इस तरह श्रावण की अमावास्या सं0 1998 को श्री प्रेमलताजी ने भौतिक शरीर त्यागकर साकेत-यात्रा की ।

व्यक्तित्व --

सीतारामनामानुरागी कवि संत सियालाल शरण "प्रेमलता" का संपूर्ण व्यक्तित्व आपादमस्तक फक्कड़ और मस्तमौला था । व्यक्तित्व की इसी शक्ति के बल पर उन्होंने नाम-प्रचार में अभूतपूर्व सफलता प्राप्त की । सामाजिक वैषम्य और कुरीतियों की निन्दा करते हुए आक्रामक शैली का प्रयोग किया । उनका सम्पूर्ण काव्य भक्ति का व्यावहारिक स्वरूप प्रस्तुत करता हुआ नाम-निष्ठा का उदाहरण प्रतीत होता है । स्वादु साधुओं या गुरुआ ढोंगियों की वे खूब खबर लेते हैं । वहाँ उनकी भाषा अत्यंत कठोर और कुछ-कुछ कबीर की भाँति आक्रोशपूर्ण प्रतीत होती है । कबीर का व्यक्तित्व-विश्लेषण करते हुए डॉ0 हजारी प्रसाद द्विवेदी का निम्नलिखित कथन प्रेमलताजी के लिए भी सटीक बैठता है -- "वे सिर से पैर तक मस्तमौला थे । मस्त -- जो पुराने कृत्यों का हिसाब नहीं रखता, वर्त्तमान कर्मों को सर्वस्व नहीं समझता और भविष्य में सब कुछ झाड़-फटकार कर निकल जाता है । जो दुनियादार किये-कराये का लेखा-जोखा दुरुस्त रखता है वह मस्त नहीं हो सकता । ... कबीर की यह घर फूँक मस्ती, फक्कड़ाना लापरवाही और निर्मम अक्खड़ता उनके अखंड आत्मविश्वास का परिणाम थी । उन्होंने कभी अपने ज्ञान को, अपने गुरु को और अपनी साधना को सन्देह की नजरों से नहीं देखा । अपने प्रति उनका विश्वास कभी डिगा नहीं । ... वे वीर साधक थे,

और वीरता अखण्ड आत्मविश्वास को आश्रय करके ही पनपती है । कबीर के लिए साधना एक विकट संग्राम-स्थली थी, जहाँ कोई विरला शूर ही टिक सकता था । जिसे अपने सिर को उतार कर देने की कला नहीं आती, वह इस मार्ग का राही नहीं बन सकता ।"[7]

प्रेमलता की मस्ती भी वाह्याचार को चकनाचूर कर देनेवाली भाषा के रूप में अभिव्यक्त होती है । उनकी शैली और तीव्र प्रकाशन भंगिमा उनकी शुद्ध भक्ति का परिणाम है । निर्लोभ, दंभहीन और अखंड आत्मविश्वासी व्यक्तित्व के बिना ऐसी अभिव्यक्ति असंभव है ।

रूपाकृति --

प्रेमलता का व्यक्तित्व महान् था । उनकी रूपाकृति और स्वभाव के संबंध में उनकी शिष्य-परंपरा के लेखकों ने विशद रूप से लिखा है । उनके चित्रों[8] में व्यक्तित्व की अनेक भंगिमाएं और मुद्राएं मिलती हैं । उनका वर्ण गौर था । सुन्दर और आजानुबाहु व्यक्तित्व तुलसी मालाओं से मंडित था । शरीर स्वस्थ और स्थूल था । दाढ़ी और मूँछ से युक्त दिव्य शरीर प्रभावशाली और गरिमामय थीं । प्रेमलताजी के वैयक्तिक गुणों को

---

7. कबीर, पृष्ठ : 165 तथा 167, राजकमल प्रकाशन, तीसरा संस्करण, 1976

8. प्रेमलताजी के चित्र के लिए द्रष्टव्य प्रस्तुत प्रबंध का प्रारंभिक भाग ।

अनेक विशेषणों[9] से विभूषित किया गया है, यथा -- अखिल जीवोद्धारक, तरण तारण, भगवत्पाद, श्रीमत्परमहंस परमाचार्य, बालब्रह्मचारी, सिद्ध बाल-कवि, जय सियाराम जय जय सियाराम नाम ध्वनि प्रचारक, महर्षिवर, जगद्गुरू, अनन्त श्री स्वामी आदि।

प्रेमलताजी की स्तुति में संस्कृत स्तवन भी मिलते हैं जिनमें उनके स्वरूप और व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला गया है --

1\. पूर्णं परेश रुचिचंद्र कलाभि वृद्धं
दीप्तं सदास्वमहिमानल रो चिषैकं ।
विष्णोर्निवासममत्वं मुनि नै त्रपीतं
वन्द्रे निशंक मपि सद्गुरू वारिधीशम् ।।
नित्यं तमस्ति हरं कमनीय कान्ति
मानार्तिता खिल मतीन्द्र चकोर चक्रम् ।
तारावलम्बित करं स्मित निन्दिताजं,
देवं नामामि विलसद्गुरू पूर्णचन्द्रम् ।।[10]

2\. परं पीतं वासो धृतयुगल कौपीन सुभगं
ललद् भालं सीता पतिपद कृदानाम रुचिरम् ।
सविन्दु श्री युक्तं प्रचुर धृत पुण्ड्रोर्ध्वं तिलकं

9\. श्री प्रेमलता जी का वृहद् जीवन चरित्र, पृष्ठ-1 {चित्र}

10\. पं0 उपेन्द्रनाथ मिश्र "मंजुल" कृत श्री सद्गुरू स्तवम्
--- उद्धृत वही, पृष्ठ-5

प्रपद्ये तं देवं शरण मवरं सद्गुरू महम् ।।

करे भिक्षा पात्रं कथमपि च कन्था पुलहि मे

समं चौदासीनं ह्युपदिशति तत्त्वं परिवदि ।

परिव्राजाचार्य जय जय सियाराम रटनम्

प्रपद्ये तं देवं शरण मपरं सद्गुरू महम् ।।[11]

इसके अतिरिक्त श्री जानकी नाथ शरण "प्रेमअली" द्वारा विरचित "श्री सद्गुरू चरितम्" या श्री प्रेमलतावृहद् चरितामृतम्" के रूप में चौबीस सर्गों का संस्कृत काव्य प्रस्तुत हुआ है । इस ग्रंथ के बाईसवें सर्ग में प्रेमलताजी के सामाजिक व्यक्तित्व का भी विशद वर्णन हुआ है । नाम प्रचारक एवं परिक्रमा प्रारंभ करनेवाले साधक के रूप में उनका महत्व घोषित हुआ है ।[12]

---

11. पं0 सीतारामदास कृत श्री सद्गुरू स्तोत्रम्

उद्धृत वही, पृष्ठ-3

12. श्री सियारामा भिधं नाम जयशब्द प्रयूर्वकम् ।

प्रचारितं जगन्मध्ये दिव्यं सद्गुरूणा बुदा ।

श्री सीताजन्म भूमौ श्री सिद्ध जीवस्य धीमतः ।

निकटे तस्थिवांस्तेनाष्टादशाब्दं जगद् गुरूः ।।

श्री जानकी जन्मभूमेश्च जनकाख्य पुरस्य च ।

परिक्रमा समारब्धा या वत्साभ्यत्पुरः ।।

--- सदगुरूचरित, पृष्ठ-30

इसी ग्रंथ के परिशिष्ट में प्रेमलता मानसी पूजा पद्धति, प्रेमलताष्टक, प्रेमलता कवच, प्रेमलताष्टोत्तर शतनामस्तोत्र, नामाक्षर स्तुति आदि का भी समावेश किया गया है । प्रेमलताजी की नामाक्षर-स्तुति में भी उनकी रूपाकृति का सुन्दर संकेत किया गया है --

शमन सकल सन्ताप दिव्य छवि महाटोप शिर सोहत हैं ।
रटहिं सु जय सियाराम नाम मुख युगल कंठि गर पोहत हैं ।
नवल पंच मुद्रिका मनोहर उर्द्ध पुण्ड मनमोहत हैं ।
जीवन जानकिनाथ शरण के गर उपबीत सुसोहत हैं ।।
मनमुद पंचकेश संयुत शिर दाढ़ी उदर लागि सो हैं ।
हार गले तुलसी के सुविमल द्वादश तिलक सुमन सो हैं ।
राजत लाल लंगोट कटिहिं पट पीत पीत अंचला सोहैं ।
जटित सुम्मासन निकट कमंडल थैली तिलक छत्र जोहैं ।

--- पृष्ठ-36

प्रेमलताजी ने श्री सियाराम की नामध्वनि को कीर्तन का आधार बनाया था । उनकी नामध्वनि के निम्नांकित रूप और प्रकार उपलब्ध हैं --

1. जय सियाराम जय जय सियाराम ।
2. जय सियाराम जय जय सियाराम, जय सियाराम जय जय सियाराम ।
3. जय सियाराम जय जय सियाराम
   जय जय सियाराम जय जय सियाराम ।

4. जय सियराम सियराम सियारामा,

जय सियाराम, सियरामा हो ।

5. सियारामा, सियराम सियवर रामसिया,

सियारामा सियारामा हो हो ।

6. राम सियाराम रामा, सियराम सियारामा ।

7. सियाराम सियाराम सियावर राम सियाराम सियाराम ।

8. सियावर राम सियावर राम सियाजू राम सिया वर राम ।

9. जय सियाराम जय जय सियारामा

10. सियाराम सियाराम सियाराम सियाराम

जय राम सियाराम सियाराम सियाराम ।

11. सियाराम सियारामा सियारामा सियारामा,

सियरामा सियारामा सियारामा सियाजू ।

12. सियाराम सियावर राम सियाराम,

सियजू सियावर राम सियाराम

13. राम सियाराम, सियाराम जय सियाराम

14. सियाराम सियावर राम सियाजू रामा

15. सियराम सियारामा सियरामा सियरामा ।

सियरामा सियावर राम, सियाराम रामा ।

प्रेमलताजी के व्यक्तित्व में मनुष्यता, उदारता, सहिष्णुता आदि गुणों का अपूर्व समन्वय था । वे महामानव और ब्रह्मर्षि थे । उनका स्वांत: सुखाय लोकहित में लीन हो गया था । भक्त और साधक के

प्रति उनका समर्पण भाव उनके अनेक छन्दों में व्यक्त हुआ है । अहिंसा, सत्य, इन्द्रिय निग्रह आदि मानव धर्मों को उन्होंने अपने जीवन में उतारने का सफल प्रयत्न किया । उनके उदार और परोपकारी व्यक्तित्व में पर्याप्त दया और कोमलता थी । उनका यह औदार्य सभी वर्गों को भक्ति-क्षेत्र में प्रवेश करने का अधिकारी बनाता है । सांसारिक सुखों और भौतिक लालसाओं को प्रपंच मानकर प्रेमलताजी ने सदैव कठोर एवं साधु के त्यागपूर्ण जीवन को ही अपना आदर्श माना । भक्ति, साधना, तर्क सभी क्षेत्रों में उनकी सहिष्णुता-शक्ति दिखाई देती है, केवल नकली गुरुओं और भोगी साधुओं के प्रति वे असहनशील हैं । ऐसे ढोंगियों के प्रति उनका व्यंग्य कशाघात की भाँति प्रकट हुआ है । प्रेमलताजी का पांडित्य पुस्तकीय ज्ञान पर आधृत न होकर भक्ति एवं अनुभूतिमूलक है । धर्म को उन्होंने स्वानुभव से समझा था । उनके तर्क का पैनापन विरोधियों और तार्किकों को परास्त करने में पूर्णत: समर्थ था । इसके अतिरिक्त उनके व्यक्तित्व में सूक्ष्मेक्षण शक्ति, भावुकता, गुणग्राहकता, आदर्शवादिता परंपरानुयायिता के पालन के साथ अनाडंबर पूर्ण प्रगतिशीलता, भक्ति निष्ठता और अपूर्व प्रतिभा सम्पन्नता परिलक्षित होती है । प्रेमलताजी का महान् व्यक्तित्व व्यक्तिगत अनुभवों और युगीन परिस्थितियों के अनुसार निर्मित होकर भी व्यक्तिमत्ता और देशकाल की सीमितता से ऊपर दिखाई देता है । उनमें भक्त, समाज सुधारक और साधक चित्त का सम्मिश्रण दिखाई देता है ।

अंत: साक्ष्य की दृष्टि से विचार करने पर ज्ञात होता है कि प्रेमलताजी ने अपने ग्रंथों में अनेकत्र आत्म-परिचयात्मक टिप्पणियाँ दी हैं और अपने कवि एवं साधक व्यक्तित्व का अन्तर्निरीक्षण प्रस्तुत किया है ।

"श्री नाम तत्व सिद्धान्त दोहावली" की भूमिका में श्री राम विश्वनाथ शरण ने लिखा है "ये ग्रंथकार महाराज कुछ भी लिखे-पढ़े नहीं रहे । केवल एक श्री सियराम नाम बालपन ते रट-रट श्री हनुमान जी को सुनाने से ऐसी प्रभु की कृपा हो गई जो अपने आप दिव्य विद्या बेपरिश्रम के आ गई और नाना प्रकार के रहस्यों के तथा गुप्त प्रकट प्रभु चरित्रों के भेद भाव जान गये । पिंगलादि कविताओं के भेद बिना पढ़े कई ग्रंथ रच दिये जो कि लोक में प्रचलित प्रसिद्ध हो रहे हैं ।"[13] इसी ग्रंथ में प्रेमलता ने "अवधूत मत" की चर्चा करते हुए प्रकारान्तर से सन्त-गुण के साथ-साथ अपने स्वरूप और भक्तिभाव का भी संकेत किया है --

स्वामी रामानन्द कृत, श्री वैष्णव मत सार ।
प्रेमलता श्री नामकर, जेहि मह' मुख्य अधार ।।
भिक्षावृत्ति पवित्र अति, गर गुदरी सिर टोप ।
प्रेमलता कर खप्पर नाम रटैं तजि कोप ।।
कंठी तिलक कमंडल, अचला युग कोपीन ।
प्रेमलता राखैं सदायुगल नाम लयलीन ।।
रसिक भाव निष्काम मन, नाम रटन अधिकाय
प्रेमलता सु प्रबोध कन, अचल अछोभ अमाय ।।
माँगि खात माधूकरी, वैष्णव द्वार सुजाय ।
प्रेमलता सह भावना, रटै नाम लय लाय ।। --- पृष्ठ-117

---

13. पृष्ठ-5

प्रेमलताजी ने अपने "अनन्य शतक" नामक ग्रंथ में नाम रटन के मार्ग की बाधाओं का संकेत करते हुए अपनी दृढ़ भक्ति-भावना का भी परिचय दिया है --

असविचारि नामै रटै, हटै न कोनउ काल
राम उपासक ते असल, मुदित रहै हरहाल ।।
कहुं कोउ न्योति मधूकरी, देत बुलाइ सम्हारि ।
व्यंजन विविधि प्रकार के, प्रेमलता सतकारि ।।
अनायास कहुं देत कोउ, ऐन बखत पर आय ।
दधि चूटा वा चूरई, पावत नीर भिजाय ।।
कहुं कोउ ब ूझत बात नहिं, मागि खात कहुं जाय ।
मिलत कबहुं मागेउ नहीं तब बैठहिं गम खाय ।।
रटहिं नाम पै मुदितमन, होत न कबहुं उदास ।
प्रेमलता रस एक नित, सजि नूतन विश्वास ।। -- पृष्ठ-152

"निजात्मबोध दर्पण" नामक ग्रंथ में प्रेमलता जी ने ध्यान और नाम रटन की प्रक्रिया में शांतचित्त एवं क्षमाशील समभाव को महत्व दिया है --

चाह बड़ाई मान्यता, सुख दुख भोग विलास ।
प्रेमलता तजि एक रस, भजु सियराम निरास ।।
नयन मूंदि बैठो रहै, प्रेमलता मन मारि ।
रटै नाम सियराम नित, मधुर मधुर धुनिकारि ।
प्रभु प्रेरित कोउ देइ जो, भोजन पावै थोर ।

रटै अधिक सियराम नित, प्रेमलता चितचोर ।।
विघन करै कोइ आय जो, तापर करै न क्रोध ।
प्रेमलता सियराम रटि, उपजै आतम बोध ।।
निन्दा अस्तुति सम लखै, जाति पाँति दुख रूप ।
प्रेमलता पाखंड तजि, रटु सियराम अनूप ।।

प्रेमलताजी का यह व्यक्तित्व-बोध उनके जीवन-दर्शन की भी रचना करता है ।

"सार सिद्धान्त प्रकाश" में कवि ने अपने प्रिय भोज्य पदार्थ चूरा आदि की चर्चा के साथ मिथिला धाम के प्रति अपनी निष्ठा व्यक्त की है --

चूरा चाउर चाबि बसि, श्री मिथिलापुर धाम ।
दुग्धवती आदिक तटनि, बैठि रटिय सियराम ।।
बैठि रटिय सियराम काम कामना विहाई ।
पहिरि गूदरी टोप अटै महि लखि सुखदाई ।।
भजन करै दिन राति मुदित गुरू पाइ सु पूरा ।
प्रेमलता तजि भोग भजै हरि चाबि सु चूरा ।। --- पृष्ठ-25

इसी ग्रंथ में कुटिया-मोह का त्याग-भाव अनेक रूपों में व्यक्त हुआ है --

1. प्रेमलता रटु नाम त्यागि जग उटिया कुटिया ।
2. प्रेमलता सब भाँति लखी हम बैरिनि कुटिया ।।
3. प्रेमलता महि माँहिं अटिय नित सुख तजि कुटिया ।।

कुटिया या मठों के प्रति यह विरक्ति प्रेमलता का जीवन-दर्शन बन गई प्रतीत होती है --

कुटिया बाँधी ईंट की खूब सफाई दार ।
चहुँदिशि बिरची बाटिका ठगन हेतु संसार ।।
ठगन हेतु संसार कछुक भक्ती फैलाई ।
लग्यो माँगने भीख साधु सेवाहित जाई ।
जमा करै धन अन्त कहै चोरनि सब लुटिया ।
प्रेमलता बनि दीन दिखावत सन्तनि कुटिया ।। -- पृष्ठ-48

"षट्ऋतु विमल विहार" नामक ग्रंथ की भूमिका में भी प्रेमलताजी को"अपूर्व अनुभवी महात्मा" और "वैराग्य वो भक्ति" के प्रचारक के रूप में स्मरण किया गया है ।

"वैराग्य प्रबोधक बहत्तरी" में आत्मपरिचयात्मक कई सूत्र मिलते हैं जिनसे प्रेमलताजी के रहन-सहन, स्वरूप और भक्ति-सिद्धान्त पर प्रकाश पड़ता है --

1. सतगुरू कृपा प्रसाद पाय नहिं माया मोह भुलाये हैं ।
पद्मपत्र इव रहहिं लोक में प्रेमलता यश छाये हैं ।। -- पृष्ठ-104

2. जाति पाँति को भार शीस ते दूरि नाम बल नाखा है ।
कर्म धर्म जप जोग जाग व्रत धरे उठाइ सुताखा है ।।
केवल श्री सियराम नाम एक दृढ़ अवलंब सु राखा है ।
रटै सदा करि नेम निरन्तर श्रुति पुराण जो भाखा है ।। -- पृष्ठ-105

3• सपनेउ नहिं परवाह किसी की उर भरोस सिय पीका है ।
कंठ तुलसिका माल कंठिका भाल ऊर्ध्व बर टीका है ।।
भुजनि लसैं धनु बाण तप्त का सीतल सुभद गती का है ।
गर गुदरी कर पात्र शीश पर टोप सुसोहत नीका है ।। -- पृष्ठ-वही

4• परमारथी प्रपंच वियोगी मितभोगी दिन कटते हैं ।
हटते जांय विषय ते दिनदिन प्रभुपद पंकज सटते हैं ।।
भजन भावना पुष्ट रहैं अति बिलग सदा खटपट ते हैं ।
प्रेमलता आशक सियवर के रटहिं नाम जे भटते हैं ।। -- पृष्ठ-वही

"हितोपदेश शतक" नामक ग्रंथ के आरंभ में ही कवि ने अंत:साक्ष्य के रूप में अपनी मस्ती का परिचय दिया है --

1• आशक हैं सियराम नाम के सहर जनकपुर रहते हैं ।
अक्कड़े रहैं सदा सियवर बल तीनि ताप नहिं दहते हैं ।।
रखते नहिं परवाह किसी की जग ते कछू न चहते हैं ।
सियलाल शरण मस्तान हुए नहिं चाल दूसरी गहते हैं ।। -- पृष्ठ-119

2• मतलब सीताराम नाम से दुनियाँ से क्या करना है ।
धर्म मूल सर्वोपरि सुखनिधि नाम सन्त श्रुति वरना है ।
सर्व दुराग्रह त्यागि दिवस निशि केवल सोई रहना है ।
सियलाल शरण गुरुदेव कृपा ते भवनिधि पार उतरना है ।--पृष्ठ-वही

3• रटते हैं सियराम नाम मुख माँगि मधुकरी खाते हैं ।
गले गूदरी टोप शीस पर छापा तिलक लगाते हैं ।।
रखते नहिं परवाह किसी की सो परम्हन्स कहाते हैं ।

प्रेमलता अलमस्त हमेशे सन्त सजाती भाते हैं ।। -- पृष्ठ-129

4. मित भोजन इकबार दिवस महँ शुद्ध पदारथ लेते हैं ।
पावहिं बैठि इकन्त चालचित शेष पशुहिं दै देते हैं ।।
भक्षाभक्ष न खाँय पियहिं जल छानि सु रहहिं सचेते हैं ।
प्रेमलता सियराम नाम रत परमहंस अनिकेते हैं ।। -- पृष्ठ-129

श्री सीताराम नाम रूप वर्णन नामक ग्रंथ में भी मस्ती, रूप-माधुर्य की अनन्य निष्ठा और नाम-रटन के अभ्यास का संकेत हुआ है --

1. परम तत्व रस रास अनूपम पाय हुआ मस्ताना हैं ।
अस्थिर भया चित्त चंचल मन दम्पति रूप लुभाना हैं ।।
नाना मत की नशी वासना नाम निरंतर गाना हैं ।
प्रेमलता गुरुदेव कृपा ते पावा अचल ठिकाना है ।। -- पृष्ठ-152

आवेश-भाव --

2. श्री सियराम विहार मनोरम गुणातीत सुखदाई है ।
निरखि सुलोचन सफल करहिं निज जन्मलाय भलपाई है ।।
भरे रहैं आवेश हमेशे प्रेम प्रीति अधिकाई है ।
प्रेमलता परलोक लोक की शंका धोइ बहाई है ।। -- पृष्ठ-153

स्वरूप-परिचय --

3. रटै नाम तजि सकल भरोसा पहिरि फकीरी बाना है ।
सिर पर टोप सु गले गूदरी बिचरै होइ मस्ताना है ।।
जाति कर्म कुल मान बड़ाई झूठ जगत पहिचाना है ।

प्रेमलता सो सन्त सनेही सियबर रूप समाना है ।। -- पृष्ठ-155

"नित्य प्रार्थना" शीर्षक ग्रंथ के अंत में सतगुरू रामशरण "मधुरलता" ने प्रेमलता जी का दो पृष्ठों में गद्यात्मक परिचय दिया है । इसके अतिरिक्त राजेन्द्र शरणजी ने भी श्री प्रेमलताजी का संक्षिप्त पद्यात्मक जीवन चरित्र 179 दोहों में प्रस्तुत किया है । साधारण भाषा में लिखित यह परिचय मुख्यत: वर्णनात्मक एवं पूर्व प्रचलित तथ्यों पर ही आधारित है ।

इतना अवश्य है कि कवि संत प्रेमलताजी के व्यक्तित्व में एक प्रभावशाली महात्मा का प्रभाव मिलता है जिसने न केवल अपने समसामयिक युग जीवन को बल्कि परवर्त्ती काल की रामभक्ति-चेतना को भी नाम-स्मरण और अनन्यता की दृष्टि से प्रभावित किया है ।

परिवेश --

संत कवि श्री सियलाल शरण "प्रेमलता" जी की लीलाभूमि मुख्यत: अयोध्या, चित्रकूट, काशी और मिथिला रही है, मिथिला में जनकपुर और जानकी जन्म भूमि सीतामही [सीतामढ़ी] से उन्हें विशेष अनुराग रहा है । उनके सभी ग्रंथों में किसी न किसी रूप में उनके भक्ति-परिवेश का भावमय चित्रण मिलता है । सम्प्रदाय और साधना के सिद्धान्तों के क्रम में उन्होंने साकेत का दिव्य वर्णन किया है । विशेषकर वृहद् उपासना रहस्य में एतद् विषयक वर्णन प्राप्त होते हैं --

1. नित्यधाम साकेत बखाना । विरिजा पार न तेहि सम आना ।।
जनहित धरि बहु तन भगवान । करहिं जदपि लीला जग जाना ।।
तदपि न श्री साकेत विहारा । तजत कबहुँ सियराम उदारा ।।

वेद पुरान न जहँ कर मर्मा । जानहिं पंडित भूलेउ भर्मा ।।

चन्द्र सूर्य की गति जहँ नाँहीं । बिहरहिं सिय पिय जेहि पुर माँहीं ।।

-- श्री धाम प्रसंग, पृष्ठ-89

2. परम प्रकास रूप बसु जामा । श्री साकेत सुधाम ललामा ।।

गऊ लोक के सिरो भाग पर । राजत तेहि साकेत नाम बर ।।

सब पर राजत केतु समाना । तेहि लगि श्रुति साकेत बखाना ।।

-- श्री धाम प्रसंग, पृष्ठ-89

3. सबके कारन श्री सियरामा । राजहिं निज साकेत सुधामा ।।

जो साकेत अयोध्या सोई । नाम भेद नहिं कारन कोई ।।

भोगस्थल साकेत ललामा । लीला थल श्री अवध सुधामा ।।

उभय धाम प्रिय श्री सियरामहिं । विहरहिं दोउन विच वसुयामहिं ।।

अवध धाम तनु तजि नर वामा । पावहिं पर साकेत सुधामा ।।

-- श्री धाम प्रसंग, पृष्ठ-93

कवि प्रेमलताजी के जीवनगत परिवेश में मिथिलाभूमि का महत्व सर्वाधिक वर्णित है । "सार सिद्धान्त प्रकाश" में मिथिला भूमि का निदर्शन अनेक छन्दों में उपलब्ध होता है --

1. मिथिलावासी दिव्यता, सिय जू के प्रिय प्राण ।

रामरूप ताते कहे, विष्णु आदि पुराण ~~[illegible]~~

विष्णु आदि पुराण राम सिय प्राण बखानी ।

दोउनि के मन हरे धन्य मिथिला महरानी ।।

सरिता सर बन बाग विपुल निरखत मन जितिला ।

सब नाते परित्यागि बसैं पिय प्यारी मिथिला ।। -- पृष्ठ-147

2• सीतारामहिं यदपि प्रिय, मिथिला अवध्य सु धाम ।
तदपि मिथिला अधिक प्रिय, दम्पति मन अभिराम ।
दम्पति मन अभिराम अलौकिक रचना पावन ।
मंगलमय सब भाँति भरी ऐश्वर्य सुहावन ।।
कलिमल संशय शोक हरणि प्रद प्रेम प्रतीता ।
प्रेमलता अस जानि निवसि नित ध्याउ सु सीता । -- पृष्ठ-149

3• सीताजन्म सु भूमि अरु, रघुनन्दन ससुरारि ।
उभय भाँति आनन्द प्रद, मिथिला पुरी विचारि ।।
मिथिला पुरि बिचारि युगल उर अतिशय प्यारी ।
परम रम्य मन हरन सुखद महि न्यारी न्यारी ।।
सरिता सर आराम विपुल सब परम पुनीता ।
प्रेमलता शुचि सन्त बसहिं बहु सुमिरि सु सीता ।। -- पृष्ठ-148

4• मिथिला तू बड़भागिनी, कवन पुन्य तप कीन ।
जगत जननि सिय प्रगटि जहँ, विपुल बड़ाई दीन ।।
विपुल बड़ाई दीन कहहिं सुर नर मुनि धनि धनि ।
सकल तीर्थ शुचि धाम पुरिनि की भई शिरोमनि ।
देश भयो महि तिलक निरखि रामहुँ भये सिथिला ।
प्रेमलता त्रैलोक्य पूज्य पावनि तू मिथिला ।। -- पृष्ठ-150

वृहद् विष्णु पुराण के मिथिला माहात्म्य मे सीता

जन्मदात्री मिथिला को सच्चिदानन्द रूपा, मायातीता, निरंजना, रामस्वरूपा कहा गया है ।[14] अयोध्या यदि श्री राम की जन्मभूमि है तो मिथिला उनकी क्रीड़ाभूमि ।[15]

कहा गया है कि "अयोध्या के द्वादश नाम अयोध्या, आनंदिनी, सत्या, सत्यलोक, साकेत, कोशला, विमला, अपराजिता, ब्रह्मपुरी, प्रमोदवन, सान्तानिक और दिव्यलोक प्रधान हैं वैसे ही मिथिला के भी द्वादश मुख्य नाम क्रमशः मिथिला, तीरभुक्ति {वैदेही}, निमिकानन, ज्ञानक्षेत्र, कृपापीठ, स्वर्णलांगलपद्धति, जानकी जन्मभूमि, निरपेक्षा, विकल्मषा, रामानंदकरी, विश्वभाविनी और नित्यमंगला विख्यात हैं ।"[16] वृहद् विष्णु पुराण में मिथिला-माहात्म्य के प्रसंग में श्लोक 19 से 23 तक निर्दिष्ट किया गया है कि

---

14. रघुनाथ तनुः साक्षाद् यस्या जाता तु मैथिली ।
    सच्चिदानन्द रूपा हि मायातीता निरंजना ।।

15. अयोध्या जन्मभूमिश्च मिथिला क्रीडने मता ।
    रामो पि मिथिलां त्यक्त्वा क्षणार्ध मपि ना वसद् ।
    मिथिला सर्वदा पुण्या देवानामपि दुर्लभा ।
    --- उद्धृत पराशक्ति श्री सीता और अवतरण भूमि
    सीतामढी -- उपेन्द्र नाथ मिश्र"मंजुल", पृष्ठ-55

16. पराशक्ति श्री सीता और अवतरण-भूमि : सीतामढी
    -- उपेन्द्र नाथ मिश्र"मंजुल", पृष्ठ-56, मंजुल प्रकाशन,
    मुजफ्फरपुर, प्रथम संस्करण, 1979

काशी, प्रयाग आदि तीर्थों में निवास का जो फल है वह मिथिला की परिक्रमा मात्र से प्राप्त हो जाता है । लोमश संहिता अध्याय 16 के 12 श्लोकों में मिथिला-महत्व के संबंध में कहा गया है कि सप्तद्वीपवती पृथ्वी पर पुण्य भूमि भारतवर्ष में महापुण्यमयी मिथिलापुरी है जहाँ अनेक पुण्यदायक पावन क्षेत्र, सर, सरिता, वनोपवन और पर्वत हैं ।[17] प्रेमलताजी ने जनकपुर की महिमा को म सधुक्कड़ी भाव-रस में वर्णित किया है ।[18]

प्रेमलताजी ने मिथिलान्तर्गत सीता-जन्मभूमि सीतामही {सीतामढ़ी} का भी भावभक्ति पूर्ण वर्णन किया है । प्रेमलताजी के परमशिष्य श्री उपेन्द्रनाथ मिश्र"मंजुल" ने लिखा है कि "सीतामही की महिमा का रसाविल निर्व्याज सौन्दर्यपूर्ण तथा सुरस कवित्वपूर्ण वर्णन परमपूज्य श्री सियालाल शरणजी प्रेमलता के विविध ग्रंथों एवं छन्दों में मिलता है । ये वर्णन माधुर्य भाव-धारा के रसावेग की तीव्रता को प्रत्यक्ष कर देते हैं, इनमें सिद्ध संत और समर्थ कवि की वाणी का रसात्मक विनियोग दीख पड़ता है । श्री जानकी जन्मभूमि का सेवन सब प्रकार की भूख मिटाकर मनोवांछित फल देकर पूर्ण परितृप्ति प्रदान करता है ।[19] यही नहीं सीतामही का "सुवास" श्री सीताराम की प्राप्ति में सहायक

---

17. वही, पृष्ठ-65 {पर्वत शब्द से लेखक का अनुमान है कि उस समय वर्तमान नेपाल मिथिला के अंतर्गत था ।}

18. हितोपदेश शतक {1}

19. महितल मह सीतामही कामधेनु सुररूख ।
सेवत नासत जानकी सब प्रकार की भूख ।।
-- सत्य सिद्धान्त रहस्य प्रकाश, दोहा संख्या-336

और लक्ष्मणा का जल-पान तथा नाम-रटन "जन्म मरण की पीर" को मिटानेवाला है ।[20] बिना सीतामढ़ी की सेवा और दर्शनानुभूति के यह मनुष्य-जीवन व्यर्थ है ।[21]

प्रेमलताजी के "सत्य सिद्धान्त प्रकाश" अर्थात् आत्म अनात्म ज्ञान नामक ग्रंथ में 555 दोहों में सीता-जन्मभूमि सीतामढ़ी की महिमा का आख्यान हुआ है । इसके अतिरिक्त मधुरलता द्वारा संपादित प्रेमलताजी विरचित "श्री धाम श्री सीतामढ़ी माहात्म्य" नामक ग्रंथ में भी 205 दोहों में सीतामढ़ी का ललित वर्णन हुआ है । ये सभी कथन कवि की साधना-भूमि के महत्व का प्रतिपादन करते हैं ।

काशी में संकटमोचन हनुमान के प्रति प्रेमलताजी की अटूट निष्ठा का प्रकाशन उनकी हनुमत भक्तिपरक प्रार्थनाओं में मिलता है । उनके शिष्य सुहागलता द्वारा सम्वत् 1997 में प्रकाशित "श्री हनुमत्प्रार्थना" नामक ग्रंथ में हनुमत्स्तुतियों का सुन्दर संकलन मिलता है । काशी नागरी प्रचारिणी सभा

---

20. श्री सीतामढ़ी सुवास दृढ़ करहि लक्ष्मणा तीर ।
    प्रेमलता सियराम रटि, लहहि ते सिय रघुबीर ।।
    सेवत श्री सीतामढ़ी, पियत लक्ष्मणा नीर ।
    रटत नाम तिन्हि फिर कहाँ जन्म मरन की पीर ।।
    --- वही, पृष्ठ-4

21. मानुष तनु धरि जगत में जग जननी को धाम ।
    लखेउ न सेयेउ जियत सो, वृथा भूमितल बाम ।। -- वही

द्वारा प्रकाशित हिन्दी साहित्य के वृहत् इतिहास भक्तिकाल (सगुण भक्ति) पंचम भाग, पृष्ठ 409 पर "संकटमोचन" हनुमान्नाष्टक" की चर्चा करते हुए उन्हें हनुमत्भक्तिकाव्य के रचयिताओं में परिगणित किया गया है, पर ऐसा भ्रमवश और एक पक्षीय दृष्टि के कारण हुआ है । उक्त ग्रंथ में भ्रमवश सियालालशरण के स्थान पर सियारामशरण मुद्रित हो गया है ।

प्रेमलताजी ने श्री जानकी बधाई और श्री जानकी जन्मस्तुति ग्रंथों में भी सीता-तत्व और सीता-जन्मभूमि के महत्व का संकेत किया है ।

अतः प्रेमलताजी का जीवन और परिवेश भक्ति और साधना की रससिद्ध यात्रा है जिसमें स्व के साथ पर का, आत्म के साथ संपूर्ण समाज का विकास दृष्टिगत होता है । भक्ति का व्यावहारिक स्वरूप प्रेमलताजी की साधना-पद्धति में मिलता है । कवित्व के कारण इनके जीवन-दर्शन में रसिकता और भावुकता का संयोग मिलता है । अतः स्पष्ट है कि रामभक्ति शाखा के बीसवीं शताब्दी के रसिक संत कवियों का प्रतिनिधित्व प्रेमलताजी के काव्य द्वारा सफलतापूर्वक हुआ है ।

------ 0 ------

तृतीय अध्याय

कवि श्री सियालाल शरण प्रेमलता का कर्तृत्व

तृतीय अध्याय

कवि श्री सियालाल शरण प्रेमलता का कर्तृत्व

रामभक्ति शाखा के मधुरोपासक शृंगारी कवियों में श्री सियालाल शरण जी "प्रेमलता" का स्थान 19 वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध और बीसवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध के कवियों में अन्यतम है। प्रेमलता जी के काव्यग्रंथ भक्ति शृंगार भाव के पोषक ग्रंथ हैं जिनमें भक्त हृदय की अटूट निष्ठा की झलक मिलती है। विचारकों की स्पष्ट मान्यता है कि "प्रेमलता जी की गणना शृंगारी परम्परा के रस सिद्ध संतों में की जाती है। उच्च श्रेणी के साधक होने के साथ ही ये रसिक भक्ति पद्धति के मर्मवित्ता भी थे। रसिक संप्रदाय के पूर्वाचार्यों के सिद्धान्तों का समन्वय और उसकी साधना-प्रणाली का विवेचन जैसी सुबोध शैली में इनकी "वृहद् उपासना रहस्य" नामक रचना में मिलता है, वह अन्यत्र दुर्लभ है। इनकी व्यापक दृष्टि शृंगारी साधना के सभी अंगों पर पड़ी और सबको इनकी साधना पुष्ट प्रतिभा की कुछ न कुछ सेवा प्राप्त हुई।[1]

---

1. रामभक्ति में रसिक संप्रदाय -- डॉ0 भगवती प्रसाद सिंह, पृष्ठ-530, अवध साहित्य मंदिर, बलरामपुर

अद्यावधि प्रकाशित सभी संबद्ध ग्रंथों में प्रेमलता जी के निम्नलिखित 33 ग्रंथों का ही परिगणन किया गया है, पर अनुसंधान करने पर शोधकर्त्ता को जो सामग्री प्राप्त हुई उनसे प्रेमलताजी के ग्रंथों की संख्या बढ़कर 63 हो जाती हैं। ये सभी ग्रंथ प्रकाशित हैं। पूर्व प्रचारित कृतियाँ निम्नलिखित हैं :-

1. वृहद् उपासना रहस्य
2. प्रेमलता पदावली
3. चैतन्य चालीसा
4. सीताराम रहस्य-दर्पण
5. नाम रहस्य त्रयी
6. नाम तत्त्व-सिद्धांत
7. जानकी स्तुति
8. षट् ऋतु विमल विहार
9. सीताराम नाम जापक माहात्म्य
10. सीताराम नाम रूप वर्णन
11. ज्ञान पचासा
12. मिथिला विभूति प्रकाशिका
13. वैराग्य प्रबोधक बहत्तरी
14. हितोपदेश शतक
15. प्रेमलता बाराखड़ी
16. नाम संबंध बहत्तरी
17. नाम वैभव प्रकाश चालीसा
18. जानकी विनय नामादि
19. नाम दृष्टान्तावली

20. सतगुरू पदार्थ प्रबोधिका

21. संत प्रसादी महात्म्य

22. अनन्य शतक

23. निजात्मबोध दर्पण

24. अपेल सिद्धांत

25. षोडश भक्ति

26. संत महिमा

27. उपदेश पेटिका

28. पंच संस्कार

29. अष्टयाम

30. जानकी बधाई

31. सार सिद्धांत प्रकाश

32. नित्य प्रार्थना

33. विश्वविलास बीसिका

प्रेमलता जी के उक्त सभी ग्रंथ प्रकाशित हैं किन्तु भ्रान्तिवश डॉ0 हजारीप्रसाद द्विवेदी ने अपने ग्रंथ "हिन्दी साहित्य : उद्भव और विकास" में लिखा है -- "बीसवीं शताब्दी में भी इस संप्रदाय में बहुत अच्छे भक्त हुए हैं । युगलानन्दशरण जी के शिष्यजानकीवरशरण जी हुए जिनका भक्त नाम प्रीतिलता था ; इनके शिष्य श्री रामवल्लभाशरण जी हुए जिनका साधना नाम युगलविहारिनी जी था । इनके शिष्य श्री सियालालशरण ज हुए जो प्रेमलता नाम से साधन-भजन और काव्य-रचना करते थे । प्रेमलता जी के

लिए तैंतीस ग्रंथ हैं जो सब अप्रकाशित हैं । इनका साकेतवास 1941 ई0 में हुआ है । इनकी रचनाओं में कुछ तो सिद्धांत व्यापक ग्रंथ हैं ॥जैसे, "नाम तत्व सिद्धांत, नामरहस्य त्रयी, सीताराम रहस्य दर्पण" इत्यादि॥, कुछ उपदेशपरक हैं ॥जैसे, वैराग्य प्रबोधक बहत्तरी, हितोपदेश शतक, उपदेश पेटिका इत्यादि॥, और कुछ में राम-जानकी के विहार और अष्टयाम-लीला के पद हैं । बीसवीं शताब्दी में इस शाखा में ये बहुत प्रभावशाली संत रहे हैं । पर यह सारा-का-सारा साहित्य अप्रकाशित और अविवेचित पड़ा हुआ है"।[2]

स्पष्ट है कि डॉ0 द्विवेदी की उक्त स्थापना विचारणीय हो जाती है । वस्तुतः प्रेमलता जी रचित ग्रंथ उनके जीवन-काल में ही प्रकाशित हो चुके थे और उसी बीच उनके कतिपय ग्रंथों के कई-कई संस्करण हो चुके थे ऐसे ग्रंथों में वृहद् उपासना रहस्य प्रमुख है । प्रेमलता जी की रचनाओं और उनकी काव्य-प्रवृत्तियों का विश्लेषण प्रस्तुत है --

<u>वृहद् उपासना रहस्य --</u>

प्रेमलता जी का वृहद् उपासना रहस्य नामक ग्रंथ "प्रसंगावली" है जिसमें चौदह प्रसंगों के वर्णन द्वारा वेद, शास्त्र, पुराण सम्मत भगवद् धर्म उपासना का सिद्धांत निरूपण किया गया है । इस ग्रंथ का प्रकाशन श्रीमती रामसखी देवी तथा मुंशी श्री रामकुमार क्लर्क, रामघाट बनारस वाले ने किया था और इसका तीसरा संस्करण सम्वत् 1986 में प्रकाशित हुआ । इसकी भूमिका में सतगुरू रामशरण मधुरलता ने लिखा है -- "कौन कौन पदार्थों का बोधक गुरू होना चाहिए, आत्मा जो बहिरंग नश्वर पदार्थों मे आसक्त हो अपना स्व स्वरूप भूल गई है । उसे स्व स्वरूप का बोध कराय चेतावे, सम्यक्

---

2. हजारी प्रसाद द्विवेदी ग्रंथावली ॥भाग-3॥, पृष्ठ : 398-399 राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण, 1981

प्रकार की शंका समाधान करि सावधान करै, पुनः प्रभु के श्री नामादि बोध करावै, उपासना की राह दिखावै, श्री सीताराम जी महाराज की परिचर्या अर्थात अष्टयाम की भावना बतावै, पुनः षट शरणागत, अरु षट सम्पत्ति तथा प्रेम भक्ति प्रार्थना की रीति, अरु अर्थ पंचम, रहस्यत्रय, तत्त्व त्रय, शृंगारादिक पंचरस, सालोक्यादि पंच मुक्तीत्रिपादादि प्रभु की विभूती, इत्यादि का भले प्रकार बोध कराय दे, पुनः गर्भ से चितागत तक का कौतुक दिखाय देई .... बहुरि द्वैताद्वैत, विशिष्टाद्वैतादि चतुःसिद्धांतों में मुख्यामुख्य का भेद दिखावै जीवों को तारने और बुझानेवाला गुरु होता है"।[3]

श्री वृहद् उपासना रहस्य में वर्ण्य एवं विचार्य विषय की दृष्टि से चौदह प्रसंग हैं -- 1. श्री सतगुरु प्रसंग 2. श्री सियाराम नाम प्रसंग 3. श्री रूप प्रसंग 4. श्री लीला प्रसंग 5. श्री धाम प्रसंग 6. श्री उपासना प्रसंग 7. श्री उपासक प्रसंग 8. श्री पंच संस्कार प्रसंग 9. श्री अष्टयाम प्रसंग 10. श्री षट शरणागत प्रसंग 11. श्री षट संपत्ति प्रसंग 12. श्री प्रेमभक्ति प्रार्थना प्रसंग 13. श्री प्रश्नोत्तर प्रसंग 14. श्री अन्तिम ज्ञान प्रसंग ।

इसके अतिरिक्त श्री वैष्णवों की शुभ लक्षणावली, श्री पार्वती शिव संवाद, प्रभु सेवा में 32 अपराध, सत्संग के 82 अपराध, दशनामापराध वर्णन, दंडवत विधि, द्वादश तिलक विधि, श्री सीतारामजी के चरण चिह्न तथा श्री सियारामनामाष्टक भी संकलित हैं ।

सतगुरु प्रसंग में सतगुरु की महिमा, माया का

---

3. वृहद् उपासना रहस्य--भूमिका (पृष्ठ : क-ख)

स्वरूप-विवेचन लक्ष्मण नदी सीतामढ़ी, मधुर भाव आदि की सुन्दर चर्चा हुई है।

सतगुरु-महिमा --

श्री सतगुरु विनु द्रवत नहिं, श्री सियराम न नाम।
श्री सियराम सु नाम विनु लहहिं न जन विश्राम ।। - [पृष्ठ-1]

तन मन धन ते वचन ते, गुरुहिं करै सन्तुष्ट।
सीखै युगल उपासना, सियाराम को पुष्ट ।। -- [पृष्ठ-2]

प्रेमलताजी ने माया के क्रीड़ा-भाव की विस्तृत चर्चा की है।[4] इसी प्रथम प्रसंग में मधुर भाव का वर्णन करते हुए कवि ने दंडकवन -वासी ऋषियों के द्वारा नारी और सखी रूप की भक्ति को महत्व दिया है --

हम सब प्रभु की सखीं अनूपा। तिहि संग आजु रमहु सुरभूपा
डाढी मूंछ पुरुष आकारा। बिसरेउ सब बहिरंग विचारा।
नाचहिं गावहिं भाव बतावहिं। पतिपत्नी सम प्रभुहिं रिझा वहिं।।

---

4. भीतर बाहिर मायहि माया। खेलि रही धरि रूप निकाया।।
उपजय पलय बहुरि बिनशावे। आपहि आप न को उलखि पावे।।
विधि हरिहर त्रय देव प्रधाना। तेउ मायाकर भेद न जाना।
जीव-आतमा-विद्या-माया। चेतन-शक्ति सु नाम निकाया।
येहि कर सखी अविद्या प्यारी। सो अतिशय सुंदर गुनकारी।।
तेहि संग हिलिमिलि खेलति खेला। दिन बहु गयेउ भयेउ अति मेला
---- वही, पृष्ठ-3

भक्ति मोरि अतिशय प्रिय दासी । सो तुम सबके हृदय प्रकाशी ।
प्रेमभक्ति जब लगि नहिं आवति । तब लगि आतम मोहि न पावति ।
पुरुष भाव उर आतम धारी । ताते भोगति दुख संसारी ।।
मधुर स्वरूप भाव अति मीठा । त्यागि पुरुषपन धारेउ सीठा ।।

--- वही, पृष्ठ-7

इसी अंश में आत्मज्ञान और सद्गुरू का संबंध निरूपण करते हुए कवि ने नकली गुरूओं के प्रति आक्रामक भाव अपनाया है --

1. नानावेश बनाय सुढंगा । द्रव्य बटोरहिं गुरूवा बंगा ।
2. कपट दंभ उर लोभ प्रचंडा । नावत तिहि वस नीच अखंडा ।।
3. छल करि चेलनि केर सुधर्मा । नासत गुरूवा कुटिल कुकर्मा ।।
4. नकली गुरूनि के शिषि जोई । वेश्या सुत सम जानहु सोई ।

--- वही, पृष्ठ : 10-11

श्री सियाराम नाम प्रसंग में सियाराम की महिमा[5] का प्रतिपादन किया गया है और नाम महिमा को सर्वाधिक महत्व दिया ग या है । नाम का प्रभाव, नाम की महिमा, नामफल, नाम-गणना,

---

5. राम नाम संग सिय के नामा । क्वनिउ होय युगल ते कामा ।
श्री सियनाम सुरस सरल अति । रटत राम संग होत विमल मति ।।
राम नाम सिय नाम सु संगा । रटत देत सब सुख सु अमंगा ।।
गूढ़ अर्थ निज नाम प्रतापू । सिय संग रटत लखावत आपू ।।

--- पृष्ठ-38

नाम विधि, नाम-विश्वास, नाम-युगल, जय सियराम धुन, नाम-स्तुति आदि के रूप में नाम-माहात्म्य निरूपित हुआ है ।

श्री रूप प्रसंग में सियाराम के अवतार का वर्णन हुआ है ।

अवध राम मिथिलापुर सीया । प्रगटे दोउ जानत नर तीया ।
नित्य विभूति नित्य दोउ धामा । विहरहिं जहाँ आय सियरामा
मिथिला अवधहु सोइ साकेता । यह महिमा समुझहिं चितवेता ।।

--- पृष्ठ-52

इसी प्रसंग में राम को पति और पुरुष रूप में कहा गया है ।

एक पुरुष सोइ जग सब नारी । जहँ लगि दृष्टि परै तनुधारी ।।
सब महँ करै रमन सोइ रामा । आतम राम परयो तेहि नामा ।।
हम सब सिय की शक्ति स्वरूपा । सबके पति सोइ राम अनूपा ।

--- पृष्ठ-61

लीला प्रसंग में प्रभु-लीला और चरित्र का महत्व निरूपित हुआ है । "सवालाख सियनाम रटन" करनेवाला ही "राम अयन" का "गूढ़तर भेद" जान सकता है ।[6] श्री धाम प्रसंग में चित्रकूट, मिथिला और अवध का माहात्म्य वर्णित हुआ है । श्री राम के ऐश्वर्य का विराट् रूपांकन ही कवि

---

6. सवा लाख सियराम नित रटन करैं जो कोय ।
राम चरित कर मर्म तब, पावैं सब विधि सोय ।। 20

--- पृष्ठ-83

का अभीष्ट प्रतीत होता है । "स्थिवर अंस कृष्णा अवतारा, सब कहँ विदित न गुप्त विचारा" कहकर कृष्ण को राम का अंश घोषित किया गया है । यहाँ अंशी रूप में राम की श्रेष्ठता भी बता दी गई है । सर्वत्र प्रभु कृपा से तृप्त वचन, सर्वत्र कण-कण में अपने इष्ट के मोहक रूप की प्रतिच्छवि का अनुभव कवि करता चलता है । विशेष रूप से मिथिला के माहात्म्य-वर्णन में कवि ने रुचि ली है --

उघरैं जब उर के दोउ नयना । देखि परै मिथिला सुख दयना ।
मिथिला की महिमा प्रभुताई । प्रगट लोक तिहुँ जात न गाई ।।

श्री उपासना प्रसंग में उपासना की विधियों का दार्शनिक विचार हुआ है ।[7] इस खंड में माया तथा जीवात्मा के स्वरूप पर गंभीरतापूर्वक प्रकाश डाला गया है । श्री उपासक प्रसंग में "पुरुष शरीर आतमा नारी" के विचार को महत्व दिया गया है और शृंगार के रसराजत्व को स्वीकार कर श्री राम को शृंगार के साथ वात्सल्य, दास्य, सख्य, शान्त का

---

7. तीनि काण्ड चहुँ वेद के, कर्म उपासन, ज्ञान ।
कृपा तीनि रोचक प्रथम, अपर, यथार्थ, भयान ।
रोचक कृपा सु ज्ञान की, कर्म भयानक जानि ।
तीसर काण्ड उपासना, कृपा यथार्थ बखानि ।
कहहुँ यथार्थ उपासना, तेहि महँ तीनि प्रकार ।
प्रथम विशिष्टा द्वैत पुनि द्वैताद्वैत विचार ।।
--- पृष्ठ-108

आश्रम स्थल घोषित किया गया है -- "पाँचहु रस रसिकनि सुखदाई । निवसहिं प्रभु के अंगनि भाई ।" कवि ने युगल उपासना पर सर्वाधिक जोर दिया है । युगल उपासक को मुकुटमनी,[8] गायत्री धाम[9] कहा गया है । श्री सम्प्रदाय को सिया सम्प्रदाय कहकर कवि ने पूर्वाचार्यों की युगल नामावली प्रस्तुत करते हुए साकेताधीश श्री सीताराम से पंच संस्कार परम्परा में हनुमानजी से लेकर श्री युगल विहारिनी जी अर्थात् श्री रामवल्लभाशरण जी तक का नामोल्लेख किया है । अंत में टिप्पणी रूप में आत्म परिचय[10] भी दिया गया है । इस युगल नामावली की कुल संख्या इक्तालीस है ।

अष्टम प्रसंग में पंच संस्कारों के महत्व का प्रतिपादन मिलता है । ये पंच संस्कार हैं --

तिलक छाप कंठी युगल, युगल मंत्र निजनाम ।
संसकार ये पाँच शुभ, हरण शोक सुख धाम ।।

--- पृष्ठ-157

इन पंच संस्कारों का गहरा संबंध श्रद्धा और भक्ति से है । कोटि जप-तप, तीर्थ साधन सभी पंच संस्कारों के विना व्यर्थ हैं । कवि ने अनन्यता को भक्ति की

---

8. वही, पृष्ठ-131

9. वही, पृष्ठ : वही

10. इन्हकर मैं सियलाल, शरण शिष्य मन वचन क्रम ।
सतगुरू दीनदयाल, प्रेमलता के हरण भ्रम ।।

--- पृष्ठ-155

कसौटी के रूप में सिद्ध किया है -- "सेवै तब सियराम पद, हिय अनन्यता धारि"। पंच संस्कारों से युक्त रामभक्त की महनीयता और रामविमुख की क्षुद्रता का भी वर्णन किया गया है । युगल मंत्र को यहाँ भी परम महत्व मिला है --

युगल मंत्र विधिवत् जप करहीं । ते जन अवसि घोर भव तरहीं ।।
युगल मंत्र बिनु मोक्ष न होई । कोटि न मंत्र जपै किन कोई ।।
युगल मंत्र बिन्दु युगल उपासी । होत न होय सकल गुण राशी ।।
युगल मंत्र जब लगि नहिं पासा । तब लगि लागत वेष उदासा ।।
युगल मंत्र भावना विहीना । श्री वैष्णव पद पाव न दीना ।।

--- पृष्ठ-184

कवि ने कंठी को "भगवान् की साँची चौकीदार" और ऊर्ध्व पुण्ड तिलक को भक्ति की " ध्वजा पताक समान" कहा है । वैष्णव भाव के अधीन सर्वत्र भक्ति तत्त्व सद्गुरु तत्त्व, माया आदि का वर्णन कवि ने किया है ।

श्री अष्टयाम भावना प्रसंग में श्री सीताराम की भावमयी भक्ति का "गुप्त रहस्य" प्रकाशित हुआ है । अपने उपास्य सीता और राम के अष्टयाम वर्णन-प्रसंग में कवि ने राजसी ऐश्वर्य और शोभा का भाव गद्गद् रूप में वर्णन किया है । "कुंज कुंज महं सिय रघुराई" या "जहं देखो तहं श्री सियरामा" कहकर लीला विहार को प्रमुखता दी गई है । सखीभाव की उपासना के ये चित्र माधुर्य भाव की व्यंजना करते हैं । कुंजलीला[11] की अनुपम

---

11. विश्वरूप प्रभु कुंज सब, कुंज रूप संसार ।
बिहरत श्री सियराम जहं, सेवत जीव अपार ।। 54

शोभा और विस्मयविमुग्ध चित्त का रसास्वादन ही इस रचना का अभिप्रेत प्रतीत होता है । इस "महल की टहल" [महल की टहल करिय चित लाय] में कवि सेवा-भाव का सुख लेता है ।

श्री षट् शरणागत प्रसंग में उपासक जीव के लिए षट् शरणागति का भेद-ज्ञान आवश्यक बताया गया है --

संग्रह प्रभु अनुकूल कर, प्रतिकूलहिं कर त्याग ।
गोपत्रत्व सब महं रमै, रक्षहिं सोइ बड़ भाग ।।
कारपण्यता दोष निज प्रभु सन कहै बखानि ।
आत्म निवेदन आत्म निज अर्पै सियवर पानि ।।
षट् शरणागति सुभग यह, समुझहु कही बखानि
चूक क्षमा करि मोर सब, लघु बालक निज जानि ।।

--- पृष्ठ : 253-54

श्री षट् संपत्ति खंड में गुरुकृपा, जगत्-प्रपंच, सुख-दुःख, इष्टदेव का नाम स्मरण संकेतिक हुआ है । षट् संपत्ति हैं -- शम, दम, उपरति, तितिक्षा श्रद्धा और विश्वास । सियराम नाम के प्रति कवि की दृढ़ आस्था दिखाई देती है ।[12]

---

12. [क] तजि सियराम नाम की आशा । जे जन करहिं आन विश्वासा ।।
-- पृष्ठ-270

[ख] करि विश्वास रटहु सियरामा । नाम काम तिरु कलि सुख धामा ।
-- पृष्ठ-वही

[ग] श्री सियराम सु नाम कर, उपजै जब विश्वास ।
अभय होय तिहुं लोक महं, नशै वासना त्रास ।। 36
-- पृष्ठ-वही

प्रेम भक्ति प्रार्थना-प्रसंग में प्रेम भक्ति और प्रार्थना को सब भक्ति साधनों का सार कहा गया है । प्रेमभक्ति को कवि ने सर्वाधिक महत्त्व दिया है ।

1. प्रेम मूर्ति प्रीतम रघुराई । भक्ति सु विग्रह सिय सुखदाई ।।
2. भक्ति प्रार्थना प्रेम विहीना । जिमि बासर महँ चन्द्र मलीना ।।

--- पृष्ठ-273

प्रश्नोत्तर प्रसंग का आरंभ कथात्मक और वर्णनपरक है । कवि को जहाँ भी अवसर मिलता है अपने इष्टदेव श्री सियराम की रूप छवि उनके युगल स्वरूप[13] की चर्चा वह करता चलता है । "शुशीला" नामक सखी द्वारा नाम विषयक प्रश्न से प्रसंग का विचार किया गया है । इस खंड में कुल एकादश प्रश्नों का उत्तर प्रस्तुत हुआ है । अंत में रचना-स्थल[14] का भी संकेत हुआ है ।

अंतिम ज्ञान प्रसंग में ममता और मद की समाप्ति के लिए नाम स्मरण को महत्त्व मिला है । प्रभु को भक्ति विवश (भक्ति विवश प्रभु रहत सदाई --पृष्ठ-381) कहकर श्रद्धा विश्वास को श्रेष्ठ माना गया है ।

---

13. कनक भवन महँ श्री सियरामा ।।
    वेदी पर दोउ दै गर बाँहीं ।। --- पृष्ठ-302
14. श्री लक्ष्मण सु गंग तट, सीतामढ़ी सु धाम ।
    प्रेमलता सु प्रसंग यह, लिखेउ सुमिरि सियराम ।। 137

--- पृष्ठ-370

इस अंश में निगुनियाँ साधकों की खूब खबर ली गई है और सगुण व्रह्म की महत्ता का प्रतिपादन किया गया है --

निर्गुनियाँ डोलत जग व्राता । बिनु दूल्हा की मनहुँ बराता ।
इष्टहीन अति दीन दुखारे । फिरत विपुल जिमि कागा कारे ।
अहँ व्रह्म कहि गाल बजावहिं । टुकरनि कहँ कूकर इव धावहिं ।।

--- पृष्ठ-39।

सगुण व्रह्म आराधना, करि उतरौ भव पार ।
निर्गुन मत जनि सुनहु कोउ, जो निज चहहु उबार ।। 54

--- पृष्ठ-39।

अन्तिम ज्ञान प्रसंग के अंतर्गत उत्तम श्री वैष्णवों की शुभ लक्षणावली और श्री शिव पार्वती संवाद को गद्य में अभिव्यक्त किया है। शिव पार्वती संवाद में श्रृंगार भाव का विश्लेषण हुआ है -- "श्री श्रृंगार रस की एक अद्भुत अनूप मनोहर मूर्ति श्री जानकी जी, श्री राम परव्रह्म को रमानेवाली हैं। अखिल व्रह्मांड जड़ चेतन रचना उन्ह का खेल है, भृकुटीविलास हैं, कार्यकारिणी माया लख लखि छन छन बनाती और बिगारती रहती है, अनन्त कोटि जीवात्मा इसमें काम करनेवाली हैं, सो सर्वश्री जानकी जी की ही शक्ति सखी स्वरूपा है, नाना तनु धरि खेल दिखाय रही है। इस सुख के भोक्ता, महापुरुष एक श्री राम जी हैं। दूसरा कोई पुरुष नहीं, त्रिपाद विभूति से लेकर अनंत व्रह्मांड श्री जानकी जी की शक्ति स्वरूप तथा भोग रूप हैं। पुरुष केवल श्री राम ही हैं। सो भी श्री सर्वेश्वरी श्री जानकी जी के इच्छावर्ती तदाधीन हैं।[15] इसके

---

15. वृहद् उपासना रहस्य - श्री अंतिम ज्ञान प्रसंग, पृष्ठ-432

अतिरिक्त प्रेमलता जी ने सत्संग के 82 अपराध वर्णन, दश नामापराध वर्णन के द्वारा साधना मार्ग के विधि विधानों का संकेत किया है। दंडवत विधि[16] और द्वादश तिलक विधि[17] भी वर्णित है। श्री सीताराम के चरण चिह्न वर्णन में दोनों के चौबीस-चौबीस चिह्न वर्णित हुए हैं। अंत में क्रम से प्रसंगों के नखादि वर्णन, सियराम नामाष्टक और आरती एवं नामधुन के साथ ग्रंथ की परिसमाप्ति हुई है।

प्रेमलता पदावली :-

प्रेमलता पदावली का प्रकाशन सम्वत् 1980 में सिया रघुनाथ शरण द्वारा संपादित और बाबू काशी प्रसाद भार्गव द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, त्रिलोचन-काशी से हुआ है। इसमें 421 पदों का संकलन हुआ

---

16. (क) अष्ट अंग धरि भूमि नति, करै हरै उन्माद।

(ख) नासा, दोउ कर जानु, पद, सप्त अंग महि लाय।
बैठि करै नति इष्ट ढिग, प्रेमलता अघ जाय॥

(ग) अथवा मन, शिर, नयन, ते, इष्टहिं नवे विशेष
प्रेमलता प्रभु भाव वस, राम ब्रह्म सीतेश॥

--- पृष्ठ-448

17. प्रथम ललाट, सु कण्ठ, उर, नाभि, कुच्छ दोउ ओर।
आदि अंत युग पृष्ठ पर, चारि भुजनि चितचोर॥

--- पृष्ठ-वही

है और अंत में 42 छंदों तथा 2 दोहों में श्री सीताराम नाम रूप अनन्यता का वर्णन किया गया है । प्रेमलता जी ने "भगवद् प्राप्ति की इच्छा" रखनेवाले विरक्त या जिज्ञासु भक्तों के लिए धर्म भाव और "सतगुरू" तत्त्व का प्रकाशन करना चाहा है । ग्रंथ के भूमिका-भाग में नाम महिमा का प्रतिपादन हुआ है -- "अखंड सियाराम नाम रटने में कैसा अनंद है, परन्तु सर्व आशा त्यागि केवल एक ही नाम रटे । नाम महा निधि मंत्र नाम ही सेवा पूजा । जप तप तीरथ नाम नाम बिनु और न दूजा । नाम बैर नाम प्रीति नाम कहि नामी बोलै । नाम अजामिल साखि नाम बंधन ते खोलै । नाम बड़ो रघुनाथ ते राम निकट हनुमत कह्यो । श्री कबीर कृपा ते पद्मनाथ परम तत्त्व परच्यो लहो ।। अनन्यता धारण करै । प्रभु प्रतिकूल कर्म को त्यागै । तब अवश्य अकथनीय आनंद पावैगा"।[18] इस भूमिका के अंत में "सियालाल शरण दरवेस" की उपाधि जुड़ी हुई है । संत स्वभाव और फकीराना भाव के कारण ही दरवेश शब्द परमात्मा के साथ जीव के प्रेम तत्त्व के सूफियाना प्रभाव को भी व्यक्त करता है ।

"प्रेमलता पदावली" में पदों की रचना पद, गजल, लावनी कुंडलिया छंद के रूप में की गई है । इनका वरार्य विषय है भक्ति, सौन्दर्य, प्रेम, युगल उपासना, मिथिला-प्रेम, श्री सीताराम विषयक भक्ति मूलक उद्‌गार आदि । मंगलाचरण का प्रारंभिक पद भक्तिमूलक है --

भजु मन जनक नंदिनि चरण ।
अरूण तलवर परम मंजुल, मधुर मंगल करण ।।

---

18. प्रेमलता पदावली - भूमिका, पृष्ठ-7

मीन पावन चिह्न अंकित, विविधि बर आभरण ।

पदज सुन्दर चारु नख शसि, कोटि आभा हरण । ।2

ध्याइ जो पद सिद्ध मुनिजन, होत तारण तरण ।

अहहिं प्रमुदित अवनि सादर, कालहू को डरन ।।3

-आदि §पृष्ठ-1§

सखी भाव और युगल उपासना के प्रेम और सौन्दर्यमूलक चित्र अत्यंत ही मनोरम हैं --

1· गोर तनु सियाराम घनश्याम अनूपम जोरी सुखदाई । -- पृष्ठ-4

2· पिया रंग रंगी सिया प्यारी, पिया सिय छवि की बलिहारी ।

-- पृष्ठ-5

3· सियवर रंग रंगे दोउ नैना ।

श्यामल अमल अनूप सु अद्भुत त्रिभुवन अस रंग है ना । -- पृष्ठ-13

4· युगल छवि कैसी बनी अलबेली ।

नख शिख अंग अनूप मनोहर, पावन पर्म सहेली ।। ।

अवलोकहु भरि नैन सु पुनि पुनि लोकलाज हठिपेली ।।

रघुनंदन घनश्याम सलोने, तिमि सिय सुभग रसैली । -- पृष्ठ-14

5· युगल छवि प्यारी लगै मन भावे । -- पृष्ठ-15

6· युगल छवि मन में लगै अति प्यारी ।

राम श्याम तनु लसत पिताम्बर, सिय तनु गोर नील भल सारी ।

-- पृष्ठ-16

7· जोड़ी बनी सुहावनी सिय राम लाल की । -- पृष्ठ-16

कवि ने मिथिला के प्रति अपनी अनन्यता और प्रियता प्रदर्शित की है --

मन भावै हमें मिथिला की गली ।
अलि नि संग बिहरत जहं निशि दिन, प्रमुदित श्री मिथिलेश लली ।
उमा रमादिक करत खवासी, सुरनर मुनि की कहा चली ।
उमगत परमानंद दशो दिशि, खिलि रहि सरनि सुकुंज कली ।।

--- पृष्ठ-17

सियराम नाम के प्रति अटूट आस्था अनेक पदों में व्यक्त हुई है और उन्हें लौकिक प्रतीकों और रूपकों के माध्यम से व्यंजित किया गया है । प्रेमलता जी के काव्य में लौकिक रूपकों का बहुल प्रयोग हुआ है । कवि ने नाम स्मरण को सर्वाधिक महत्व देना चाहा है --

1• चलत सियाराम नाम की रेल ।
बानी परा प्रथम इस्टेशन, पश्यन्ती दूसर तहं मेल ।
मध्यम तीसर चौथ बैखरी, पटरी प्रीति प्रेम अलबेल ।।
श्रद्धातार सुरति शिगलवर, लालटैन लय तृष्णा तेल ।
अहंकार इंजन इंजिनियर, दृढ़ विश्वास सुठेल ।।
मन बाबू चित चतुर सिपाही, बुद्धि सुझंडी कर महं लेल
उच्चारण सोइ शब्द सुहावन, गर्जन सीटी सोइ जब देल
श्री गुरु दीन पास संबंध सु, पाइ त्यागि जग जेल ।
जीव मुसाफिर बैठि सपरिजन प्रमुदित पियपुर गेल ।
नासेउ आवागमन भजन लहि, परमानंद अपेल ।

प्रेमलता प्रिय प्रिया संग मिलि, खेलत बहुविधि खेल ।।

पद संख्या-29 --- पृष्ठ : 31-32

2. उपासक सोइ जो नाम रटै ।

प्रथम त जै जग जाल जहाँ लगि, गुलाद कमल सटै ।

कंठी तिलक, मंत्र माला दृढ़ वैष्णव वेष ठटै ।

-- पद-27 --- पृष्ठ-30

3. सुमिरत नाम संत कोउ प्यारा ।

विविध वाद मत मान बड़ाई, तजि जग मोह पसारा ।

तन मन बचन रंगे एकै रंग, व्रत अनन्द हिय धारा ।।

-- पद संख्या-121 --- पृष्ठ-108

4. सुमिरत नाम निरन्तर कोई ।

ज्ञान विचार सुदशा विलक्षण, जेहिकर जगते होई ।

-- पद संख्या-122 --- पृष्ठ-109

5. जो नर नाम रटन में काँचे ।

पावत ते सुख सुगति न सपनेउं, फिरत सदा जग नाँचे ।।

-- पद संख्या-41 --- पृष्ठ-41

6. आलस त्यागै नाम रटन में ।

बातनि में अति निपुण सचेत सु, भोजन स्वाद चटन में ।

भजन भाव पथ अज्ञ सु पंडित युवतिनि अंग सटन में

बैरागी को वेश बनाये कंचन धरे जटन में ।

-- पद संख्या-48 --- पृष्ठ-46

7. रटतौ नाम न सुख उर सर सत । --- पृष्ठ-53

गजल और लावनी के प्रयोग में उर्दू के शब्दों और प्रयोगों का भी उपयोग हुआ दिखाई देता है --

1. दिल में बसी दिलदार की छवि माधुरी आली ।
शिर मै जड़ाउ ताज लसै कान में कुंडल
हल्के बुलाक नाक में मुख पान की लाली ।
-- पद-78 --- पृष्ठ-73

2. चरचा हमारी आपकी हर तर्फ छा रही ।
चितचोर जरा हेर तो हँसि लौ लगा रही ।।
घर घर गली बाजार हाट बाट जहँ तहाँ
यारी मुझे ये आपकी जल्वा दिखा रही ।।
जाहिर हुई संसार में प्यारे की मुहब्बत ।
दुनिया अनेक रंग की बातें बना रही ।।
लागी लगन महबूब से सर जान के बदले,
रावी सु अंग अंग में लहरें उठा रही ।।
अलि प्रेमलता भूले सब रंग जगत के
सूरत मेरे सरकार के दिल में समा रही ।।

कवि ने मिथिलावासियों के वचन के रूप में "छैला राम" और दूल्हा राम का सुन्दर चित्रांकन किया है । मिथिला की मधुर व्यंजना ससुराल रूप में की गई है ।

1. बाँके नयना ना मारो अवध छैला ।

हम हैं नारि पराये घर की, समुझि लगो पिय निज गैला ।

-- पद-96 --- पृष्ठ-90

2. सियाधारी को दूल्हा अजब आली ।

माथे मौर अनूपम सोहत, लट लटकायें युगल काली ।।

-- पद-99 --- पृष्ठ-91

3. तजत नहिं राम कबहुं सुसुरारि ।

नित नवनेह पहुनई नित नव, नित नव लखि मनुहारि ।।

सास ससुर कर भाव अनूपम, अनुपम सरहज गारि ।

वेदी के मंत्रनि ते लागत, अधिक राम कहं प्यारी ।।

-- पद-42 --- पृष्ठ-42

"प्रेमलता पदावली" में पद संख्या 366 से पद संख्या 421 तक श्री जानकी जी की विनय से संबंधित पद हैं जिनमें शक्ति रूपा परम आह्लादिनी सीता की भक्ति और विनय विषयक पद संकलित हैं । इनमें निष्ठा-विश्वास, आत्मसमर्पण, सेवा-भाव, सौन्दर्य-भाव, प्रार्थना, निवेदन, स्मरण, भाव-विह्वलता, सर्वस्व-समर्पण, अनन्य भाव आदि के चित्रों की प्रधानता है । कुछ महत्वपूर्ण पद द्रष्टव्य हैं --

1. भरोसो सब विधि जनक लली को ।

अब न शोच परलोक लोक को, नाश्यो संशय जी को ।

-- पद संख्या-366 --- पृष्ठ-313

2. हमारे सिय स्वामिनि सरकार ।

रूप शील गुण गुणनि आगरी, हरनि अमंगल भार ।।

-- पद संख्या-368 --- पृष्ठ-314

3. जय जय जगदम्ब सिया राम भामिनी ।

चरण कमल अमल ध्याइ, कपट दम्भ छल विहाइ,

जागत जन नाम गाई, मोह यामिनी ।

-- पद-373 --- पृष्ठ-318

4. जय जय जय मिथिलेश किशोरी ।

रूप राशि सुख खानि सुनैनी, पिय मुख चन्द चकोरी ।।

-- पद संख्या-387 --- पृष्ठ-327

5. सिया जू सरल सुस्वामिनि मेरी ।

कृपाखानि सब गुणनि आगरी, परम सुहित जनकेरी ।।

-- पद संख्या-396 --- पृष्ठ-334

6. सिया जू मोहि मिथिला अधिक सुहाय ।

जहँ सब भाँति सुपास सकल सुख, सुलभ होत समुदाय ।

बसहिं सिद्ध शुचि संत देव द्विज, सुकृती जन बहुताय ।।

रगी सकल सियराम रूप रंग, मन वचक्रम भल भाय ।।

-- पद संख्या-397 --- पृष्ठ-334

7. सिया जू की महिमा अपरंपार ।

वरणत बेद पुराण संत कवि, शिवविधि बदन हजार ।।

कहत न बनी सकल हिय हारे, लखेउ न पारावार ।।

-- पद संख्या-398 --- पृष्ठ-335

8· मोरा मन सिय पद कंजनि अटको ।

परमानंद निरन्तर दरसत, मिट्यो सोच सब घट को ।।

नाना योनि विविधि तनु धरि धरि, लख चौरासी भटको ।

-- पद संख्या-399 ---- पृष्ठ-336

9· सुमिरि सिय मूरति करुणा मई ।

केहि लगि फिरत विकल मन इत उत, सहत विपति नित नई ।

-- पद संख्या-412 --- पृष्ठ-346

10· सरस अति सिय जू को सिय नाम ।

कोमल कलित मधुर मनभावन, दावन दुख सुख धाम ।।

अमित प्रभाव रटत प्रगटत उर, भाव सुभाव ललाम ।

उमगत आनंद सिन्धु दशोंदिशि, मंगल आठों याम ।।

सिय सिय नाम जपत पियहू हिय, दशरथ सुत श्रीराम ।।

रीझत अति सिय राम नाम सुनि, देत सकल मन काम ।

ज्ञान विराग योग जप तप व्रत साधन सिद्धि तमाम

सुलभ होत बिनु यतन जपत सिय, सहित राम बिनु दाम ।।

श्री सिय नाम रूप गुण महिमा सतगुरु बिनु नर बाम ।

लखि न सकहिं सपनेउँ निज बुधिबल, सेवहिं जे तनु चाम ।।

सोइ सीता सोइ सिया जानकी, भेद न भाषत साम ।

प्रेमलता जे भेद बखानत, ते न लहहिं शुभ ठाम ।।

"प्रेमलता पदावली" मुख्यतः भक्तिभाव की विविध अनुभूतियों का कोश है । इसके अंतिम भाग में सीताराम नाम रूप अनन्यता के

रूप में नाम वैभव प्रकाशिका चालीसा संकलित है जिसके प्राय: 42 छंदों और 2 दोहों में सीताराम नाम और रूप के प्रति भक्त कवि की अनन्यता वर्णित हुई है । इस ग्रंथ के पूर्वार्द्ध भाग में नाम और भक्ति तत्त्व की महिमा के साथ नकली गुरुओं और साधुओं के कृत्रिम वैष्णव वेश पर टिप्पणी हुई है । साथ ही इस खंड का वैशिष्ट्य ही कवि का अन्त:साक्ष्य द्वारा प्रदत्त परिचय जिसमें कवि के आन्तरिक और बाह्य आचार-विचार का संकेत किया गया है ।[19]

इस प्रकार पदावली में वर्णित नाम तत्त्व, सेवा-भाव, सियाराम का मधुर युगल रूप, मिथिला-प्रेम और प्रेम-भाव कवि के साधनाशील जीवन-दर्शन को पुष्ट करते हैं ।

---

19. (क) मन उरझ्यो सियराम रूप मधि रसना नाम सुगाते हैं ।
संत सजाती संग परम प्रिय चरित सुनत पुलकाते हैं ।
अकड़े रहैं नाम बल अनुछन कालहु ते न डराते हैं ।।
प्रेमलता बुध संत सोइ राम रसिक कहलाते हैं ।

-- छन्द संख्या-27, पृष्ठ-361

(ख) परम तत्त्व रस रास अनूपम पाय हुआ मस्ताना है ।
अस्थिर भया चित्त चंचल मन दम्पति रूप लुभाना है ।
नाना मत की नशी वासना नाम निरंतर गाना है ।
प्रेमलता गुरुदेव कृपा ते पावा अचल ठिकाना है ।

-- छन्द संख्या-30, पृष्ठ : 361-362

सीताराम रहस्य-दर्पण :-

श्री सीताराम रहस्य दर्पण नामक ग्रंथ मंजु छंदावली में कवि प्रेमलता जी के ।। ग्रंथों और नामस्तुति के 8 छंदों और 3 दोहों के साथ सिया रघुनाथ शरण कृत श्री सतगुरू सुयश कव्वाली भी संगृहीत है । प्रस्तुत ग्रंथ का प्रकाशन संवत् 1986 में प्रेमलता जी के प्रिय शिष्य श्री धनुषधारी शरण जी के लघुभ्राता श्री हनुमान शरण जी द्वारा हुआ है । ग्रंथ की भूमिका में सत्गुरू रामशरण "मधुरलता" ने प्रेमलता जी के "जय सियराम नाम" के ध्वनि-प्रचार की भूरिश: प्रशंसा की है । प्रस्तुत ग्रंथ में संकलित ग्रंथों की क्रमबद्ध तालिका इस प्रकार है --

1. षट् ॠतु विमल विहार / श्री सियवर षट् ॠतु विहार दर्पण
2. जानकी विनय नामादि महत्व
3. मिथिला-विभूति प्रकाश चालीशा
4. वैराग प्रबोधक बहत्तरी
5. हितोपदेश शतक
6. सीताराम नाम रूप अनन्यता वर्णन
7. सीताराम नाम जापक महत्व
8. ज्ञान पचासा
9. भक्ति महारानी जू के अड़सठ अंग
10. जानकी जन्म स्तुति
11. प्रेमलता बाराखरी

उपर्युक्त ग्रंथों में संकीतित नवाँ ग्रंथ "भक्ति महारानी जू के अड़सठ अंग" नामक काव्य-खण्ड प्रेमलता विरचित ग्रंथों से संबद्ध सूचनाओं में कहीं भी परिगणित नहीं किया गया है । यहाँ प्रथमवार उसका विचार हो रहा है । इसी प्रकार "सीताराम रहस्य दर्पण" में संकलित "श्री जानकी जन्मस्तुति" स्वतंत्र रूप से भी कुछ अन्य बधाई के छंदों के साथ बाबू कैलाश नाथ भार्गव द्वारा भार्गवभूषण प्रेस काशी से संवत् 1984 में प्रकाशित है यह ज्ञातव्य है कि तबतक उसके छह संस्करण हो चुके थे । जानकी जन्मस्तुति के अतिरिक्त इसमें बधाई-लावनी चाल में पाँच छंद और दो कवित्त अतिरिक्त रूप से जोड़े गए हैं । इस लघु ग्रंथ के उत्तर भाग में सिया रघुनाथ शरण कृत प्रेमलता चरितामृत तथा "श्री जानकी जन्म कव्वाली" का भी संग्रह किया गया है । स्पष्ट है कि इस ग्रंथ का प्रकाशन भक्तों के नित्य पाठ हेतु हुआ है जैसाकि इसकी पद्यबद्ध भूमिका से भी सिद्ध होता है ।[20]

षट् ऋतु विमल विहार :-

स्वतंत्र काव्य ग्रंथ होते हुए भी प्रस्तुत ग्रंथ

---

20. प्रात साँझ यह पाठ जन, जे करिहैं मन लाय ।
सिय स्वामिनि तेहि रीझि हठि, अवसि लेहिं अपनाय ।।
कंठ करै बाँचे सुनै, गुनै अर्थ करि ख्याल ।
रटना श्री सियराम की, तिनहिं देहि सियलाल ।।
--- श्री जानकी जन्म स्तुति-भूमिका
संवत् 1984 [छठवीं बार]

सीताराम रहस्य दर्पण में अन्य रचनाओं के साथ संकलित है । कवि ने इसे "श्री सियवर षट् ऋतु विहार दर्पण" नाम भी दिया है । ग्रंथ का आरंभ ही युगल नाम सियराम[21] के नाम-स्मरण से किया गया है । मुख्यतः इस ग्रंथ में सियाराम की रूप-माधुरी, मिथिला-माहात्म्य, कुंज लीला, झूलन, प्रेमा भक्ति, वाह्य वेश की निन्दा, होली, चैन का रसात्मक चित्रण हुआ है ।

रूप-माधुरी और युगल रूप --

1\. सुन्दरता सुख सुकृत खानि दोउ कनिक मण्डप तर राजे हैं ।
गावहिं मंगल मधुर स्वरनि अलिं बजत विविधविध बाजे हैं ।
नखशिख अंग अनूप सहचरिनि भूषण वसन सुसाजे हैं ।
प्रेमलता चख छके सुछवि लखि पूरे सकल मनकाजे हैं । -- पृष्ठ-2

2\. पावन प्रेम परस्पर अस जिमि एक प्राण दुइ देही हैं ।
रहि न सकत इक इक विनु पल जिमि थल विनु जल विधि केही हैं ।
सियाराम संयोग सनातन भाषत संत सुनेही हैं ।
प्रेमलता यह भेद गूढ़ अति लखैं मूट किमि गेही हैं । -- पृष्ठ-5

21\. श्री गुरुसिया रघुवर सुखद युगल नाम सियराम ।
प्रेमलता पर करि कृपा, रटवाइय वसु याम ।। ।
बल भरोस विश्वास इक, आश त्राश अभ्यास ।
नामई कर चाहै सदा, प्रेमलता सहुलास ।।

--- पृष्ठ-1

आलसवश झुकि परत परस्पर पुलकित उरगर भुज डारे ।

प्रेमलता पदभरे नयन चहुं घूमत अति प्रियमतवारे ।। -- पृष्ठ-12

मिथिला-माहात्म्य --

1· मिथिला मायापुरी परम शुचि महिमा कही न जाती है ।
श्री सियराम विहार थली नित नव आनंद प्रगटाती है ।।
जन्मभूमि श्री सियस्वामिनि की जन अघ ओघ नशाती है ।
प्रेमलता हतभाग जीव ते जिन्हैं न मिथिला भाती है ।। 29

--- पृष्ठ-8

2· झकैं बकैं मनमुखी आलसी हठी अभागी अविचारी ।
तजि सियराम नाम मिथिलहिं जो आन तत्त्व भाखैं भारी ।
अन्ध अकोविद अधम अलायक अघसीते जग नर नारी ।
प्रेमलता तजि तिन्हैं रटिय बसि मिथिला नाम सुदुखहारी ।। 31

--- पृष्ठ-9

कुंज लीला --

प्रेमलता जी ने कुंजलीला में पर्याप्त रुचि ली है । बहत्तर कुंजों की परिकल्पना और ऐश्वर्यमूला भक्ति, आली रूप में सेवा भाव, क्रीड़ा-भाव, ज्योनार, वर्षा वर्णन, झूला वर्णन आदि के वर्णन के साथ युगल रूप का चित्रण अत्यंत काव्यात्मक है । कुछ उदाहरण द्रष्टव्य हैं --

कुंज-लीला --

1· मुख्य निवास विलाश भवन यह नव कंडापट द्युतिराशी ।

परम सुभगमणि जटित बहत्तर कुंज पुंज तेहि महं दासी ।।
कुंज कुंज प्रति अलिनि संग दोउ विहरहिं सिय पिय अविनाशी ।
प्रेमलता कृतकृत्य होत लखि चरित नवल नित सहवासी ।। 37

--- पृष्ठ-10

जेहि विधि लहहिं प्राण प्रीतम सुख सोइ सिय करहिं सखुख मानी ।
सिय पिय होयं प्रसन्न करहिं सोइ ललनागण सब पहिचानी ।।
कुंज कुंज प्रति नित नव क्रीड़ा प्रगटहिं दम्पति मुददानी ।
प्रेमलता सुख देत लेत यहि भाँति परस्पर दोउ प्रानी ।। 71

--- पृष्ठ-19

वर्षा-वर्णन --

1. झनर झनर झींगुर झनकारत चातकि मोर मचाय रही ।
सीतल मन्द सुगंध बहै बर जात उछाह बढ़ाय रही ।।
झरना झरहिं चरहिं प्रमुदित मन खग मृग सुखमा छाय रही ।
हरे बाग बन विटप हटी महि प्रेमलता लहराय रही ।। 78

--- पृष्ठ : 20-21

2. हरे हिंडोर हरे पट भूषण हरे कुंज सुखदानी है ।
हरे किशोर किशोरी परिकर हरी साज मनमानी हैं ।।
हरे हरे स्वर राग-रागिनी उचटिहिं सखी सयानी हैं ।
हरे कीट उड़ि प्रेमलतनि पर बैठि पढ़हिं बरबानी हैं ।। 79

--- पृष्ठ-21

3. हरे हरे झूलत सिय पिय दोउ हरे हरे कछु बोलत हैं ।
हरे हरे शिर चमर करहिं अलि हरे हरे महि डोलत हैं ।।
हरे हरे कोउ नवहिं सु घूंघट हरे हरे कोउ खोलत हैं ।
हरे हरे फल प्रेमलता कोउ हरे हरे हित छोलत हैं ।। 80

--- पृष्ठ-21

झूला-वर्णन --

1. झूलत हिलि मिलि दै गरबहियाँ सिय सिय सैंयाँ सुखरासी ।
झुकि-झुकि पैंग देइं ललना नव पियहिं नयन पुट छवि खासी ।।
कैतिक विलग विलोकहिं ठाढ़ी हाव भाव दम्पति दासी ।
प्रेमलता दोउ रूप अनूपम उपमा त्रिभुवन नहिं भासी ।। 84

--- पृष्ठ-22

2. कबहूँ उतरि नेहबस प्रीतम सियहिं झुलावत धरि डोरी ।
एक ओर अलि लाल एक दिशि मध्य विरा जहिं सिय गोरी ।।
सुखाखानि कृतज्ञ शिरोमणि परम चतुरजन हित भोरी ।
प्रेमलता की इष्ट देवता पियहिं लखहिं हँसि मुखमोरी ।। 85

--- पृष्ठ-22

प्रेमभक्ति --

तुम्ह विनु द्रवौं न कबहुं जनन पर प्यारी यह दृढ़ प्रण मेरो ।
कृपा पात्र जे तोर रहूँ मैं तिन्हके संग सु बनि चेरो ।।
तब प्रसन्नता हेत करौं बहु चरित चहौं निज हित तेरो ।

प्रेमलता तोहिं सम मनमोहिं प्रिय प्राणहु सुख त्रिभुवन केरो ।।

--- पृष्ठ-23

माधुर्य --

यह रसिकन को ध्यान मनोहर जे रसराज उपासी हैं ।
रंगे रहत सियराम नाम रंग गुरुमुख विषय उदासी हैं ।।
डंक बजाय निशंक लहहिं ते प्रेम भक्ति गति खासी हैं ।
प्रेमलता सुचि संत कहहिं जे सिय पिय संग विलासी हैं ।।

--- पृष्ठ-24

इसी क्रम में कवि ने भक्त रस रसिका अमित सहचरी के रूप में बहत्तर यूथेश्वरियों की वन्दना और गणना की है । वे हैं -- कमला, कला, कोविदा, काशी, कामद, कृपा, कल्याणी, कावेरी, कोकिला, कुमारी करपूरा, कलकत्यानी, करमैती, कौतुकी, कुवेरी, कपिला, कुब्जी, किरपानी, कंचना, कौशिकी, कैतकी, कुसुमा, कुमरानी, गंगा, गौरा, गया, गेरूका, गोमति, गंडकि, गति, ज्ञाना, विश्वमोहिनी, विरजा, विमला, वैना, वरुणा, वरदाना, वाकमती, सुविचित्रा, विद्या, वेदवती, बुद्धि, विद्याना, प्रेमलता, प्रेमा, प्रवीना, पावनि, पुष्पा, प्रदमाना, दया, दामिनी, हगजा, देवी, दुर्गा, दोला, दमशीला, दम्पतिअली, द्वारिका, दाना, दर्भा, दक्षधा, मानी, मधुमा, मृगा लोचनी, मीरा, मथुरा, मनमीला, पद्मा, सुपाटला, पापमोचनी, परचीला, मितभाषनि ।[22]

22· वे अली बहत्तरि यूथेश्वरीं बरवानी हैं । --- पृष्ठ-27

षोडश नारियों की कल्पना करते हुए कवि ने निम्नलिखित नामों का उल्लेख किया है -- वनबोषा, लक्षमना, सुभ्रा, अघोउबारा, श्रानी, जामुनी, सुदुग्धा, विल्ववती, विदुरानी, कीर्ति मानिनी, मदनकला, श्री जुगल विहारिनी, हेमा, क्षेमा सुधामुखी और शुभा।

शास्त्रों में सीता-प्राकट्य-वर्णन में भी यूथेश्वरियों का वर्णन हुआ है पर वहाँ उनकी संख्या आठ है। कात्यायन-संहिता[23] में कहा गया है कि सदक्षिण यागविधिपूर्ण होने पर यज्ञवेदी फाड़कर अतिशय कृपालु सर्वेश्वरी सीता रत्न सिंहासनारूढ बारह वर्ष की अवस्था में प्रकट हुईं जिनके चारो ओर अष्ट यूथेश्वरियाँ [चन्द्रकलादि सखियाँ] पंखा झल रही हैं। अपने अलौकिक तेज से सूर्य की प्रभा को आच्छादित करती हुईं, ब्रह्मा विष्णु, शिव और इन्द्रादि देवताओं से संस्तुत, समस्त शृंगारों से सम्पन्न, विकसित कमल के समान प्रसन्नमुख मध्याह्न काल में उस प्रकार पृथ्वी से प्रकट हुईं जैसे मेघ से बिजली निर्गत हुई हो। यही वचन थोड़े से अंतर के साथ श्री "जानकी चरितामृत"[24] में भी उपलब्ध होता है।

---

23. दक्षिणायां प्रवृत्तायां ब्राह्मणो यस्तदन्तरम्।
यज्ञवेदीं विनिर्भिद्य प्रादुर्भूता कृपानिधि ॥
अष्ट यूथेश्वरी भिश्च वीज्य माना समन्ततः।
रत्न सिंहासना रूढा वयसा द्वादशात्मिका ॥
--- कात्यायन संहिता, अ० 6, श्लोक : 41-46

24. श्री जानकी चरितामृत, अध्याय 32 श्लोक : 43-47
उद्धृत -- पराशक्ति श्री सीता और अवतारण भूमि : सीतामढी
पृष्ठ-138 --- उपेन्द्रनाथ मिश्र मंजुल,
प्रथम संस्करण, 1979

प्रेमलता जी ने "षट्ऋतु विमल विहार" में, पाँच प्रधान अलियों की चर्चा की है -- चन्द्रकला, श्रुतिकीर्ति, माण्डवी, चारुशीला श्री उर्मिला /[25] छन्द संख्या 109 से 117 छन्दों तक नृत्य लीला[26] का वर्णन हुआ है। नृत्य के ये चित्र पर्याप्त गतिशील और स्वाभाविक मुद्राओं से युक्त हैं। युगल रूप वर्णन में प्रेम-समाधि के अंतर्गत एक दूसरे के वस्त्र परिवर्त्तन का भी संकेत मिलता है --

भूषण वसन उतारि पीतपट पहिरैउ पिय एक सिय सारी।
प्रेमलता पौढ़े दोउ हिलिमिलि प्रेम समाधि सु पिय प्यारी ।। 133

--- पृष्ठ-35

इसी ग्रंथ में होली का विशद वर्णन मिलता है --

1. एक ओर श्री जनकनन्दिनी एक ओर रघुलाल लिये।
परिकर साज समाज भाग करि आधे आधे बाँटि दिये ।।
हो हो करि करि सोर सम्हारे पटभूषण कर पिचकलिये ।।
प्रेमलता निज निज स्वामिन जय भाषि बदीं करि अभय हिये ।।-पृ0-49

---

25. षट्ऋतु विमल विहार, पृष्ठ-27

26. झमकि धरहिं महिचरण चमकि जब सुर संग दामिनि सम गोरी।
फैलति दश दिशि छटा छिटकि तब चितवहिं सुरि सिय पिय ओरी।
बिथुरे भूषण वसन बारबर दशा देह की भइ भोरी।
प्रेमलता पै ताल न चूकै सुरति रास रस में बोरी ।।

--- वही, पृष्ठ-30

2· अस कहि भिरीं परस्पर जय हित धावहिं दशदिशि पुलकि हिया ।

वर्षत रंग अबीर गुलाल सु छाय रहेउ नभ लाल किया ।।

सूझि न परै कहाँ को ललना बोलहिं जय जय शब्द तिया ।

जीते प्रीतम प्रेमलता कोउ कहै जीति गईं लली सिया ।।

--- पृष्ठ-52

"षट् ऋतु विमल विहार" के चित्र शृंगार परक और रसमय हैं । राम और सीता को नायक और नायिका के रूप में उपस्थित कर भावात्मक औदात्य का परिचय दिया गया है । ऐसे वर्णनों की सर्वाधिक महत्वपूर्ण विशेषता है शृंगार के मधुर भाव की मर्यादित अभिव्यक्ति, कहीं भी अश्लील चित्रण नहीं मिलता । प्रेमलता जी की अभिव्यक्ति में तुलसीदास की भाँति मर्यादित शृंगार बोध मिलता है जो मधुर भाव परक होकर भी उच्छृंखल नहीं हुआ है ।

जानकी विनय नामादि महत्त्व --

"सीताराम रहस्य दर्पण" नामक ग्रंथ विभिन्न काव्य-ग्रंथों का संकलन है । दूसरे संकलन जानकी विनय नामादि में ।।0 मंजु छंदों में काव्य-रस प्रस्तुत हुआ है । आत्म परिचय के साथ कवि ने ~~सिया~~प्रेम[27] सिया का परिचय दिया है । इस ग्रंथ के वरार्य विषय निम्नलिखित हैं --

---

27· रँगे जानकी नाम नारिनर मगन जगत जिमि फागन में ।

प्रेमलता अनुराग मूर्त्ति जनु बूड़े सिया सुहागन में ।। 7

--- पृष्ठ-6।

1. आत्म परिचय -- भक्ति-भाव
2. मिथिलावासियों का महत्व
3. सिया के प्रति अनुरक्ति-भाव -- सिय-पद-प्रेम
4. नाम रटन का महत्व -- नाम-महिमा
5. धन-निन्दा ।

इस रचना में नाम जप में बाधक 25 दोषों[28] की चर्चा की गई है जिनमें "लोकलाज-कुलकानि", "काज-गृह धन विधा", कर्मज्ञान युक्ती-सुत इच्छा आदि प्रमुख हैं । काव्य-तत्त्व और वर्ण्य विषय की दृष्टि से कतिपय प्रमुख उदाहरण इस प्रकार हैं --

मिथिला-माहात्म्य --

सातद्वीप नवखंड धाम चहुँ सप्त पुरी शुभ थल जेते ।
श्री मिथिला महि रज पै वारौं विनु विचार त्रिभुवन तेते ।।
दुग्धवती सीकर पर वारौं तीरथ जो शुभगति देते ।
प्रेमलता तिन्हि पै सुवारौं जेरटि नाम सु तेहि सेते ।। 34

--- पृष्ठ-68

नाम-माहात्म्य --

1. श्री सियराम नाम की महिमा सब विधि अथक अनूपा है ।
श्रुति पुराण मुनि सिद्ध साधु सुर शारद साधी चूपा है ।।

---

28. वही, 73 वाँ छंद, पृष्ठ-78

बारक हू जपि जीह पतित जेहि तरत घोर भव कूपा है ।

प्रेमलता लय लाय रटहिं जेते जन रामस्वरूपा है ।। -- पृष्ठ-73

2. नामहिं मंत्र यंत्र तंत्रादिक नामहिं जादू टोना है ।

नाम सकल गुण षट् प्रयोग निधि कलाकोष सुखदोना है ।।

नाम महामणि भुक्तिभोगगत रोग सुवादी सोना है ।

प्रेमलता मनमृतक जिवावन नाम अमीरस लोना है ।। 57

--- पृष्ठ-74

3. इहाँ उहाँ सोना अरु जगना, नामहिं है आना जाना ।

षटरस नवरस सकल नामहिं दूध दही घृत पकवाना ।।

नामहिं वेष सम्प्रदा नामहि टेक टेक पोथी पाना ।

प्रेमलता आवेश देश घर नामहिं सर्बस प्रिय पाना ।। -- पृष्ठ-75

4. नामहिं संझा भोर नामहीं मध्याना अरु तिहुं काला ।

गायत्री चौबीसो मुद्रा जअनुखी नामहिं माला ।।

पूरक कुंभक रेचक नामहिं न्यास आचमन करताला ।

प्रेमलता नामहिं आवाहन ध्यान विसर्जन कृत जाला ।। 64

---- पृष्ठ-76

ग्रंथ के अंत में आत्मसंतोष, नाम रटन और सुखबोध का संकेत किया गया है ।

जहँ राखैं सिय तहँ जेहि तेहि विधि रटै नाम सिगुणाई ।

सिय रुख लखि रस एक देहभरि भजन करै तजि कदराई ।।

गणे बैठि एकान्त छंद यें अष्टोत्तर मन चित लाई ।

प्रेमलता पैहैं सो सो सब सुख ते जो [illegible] लाई ।। 110. पृ०-87

मिथिला विभूति प्रकाश चालीसा --

"मिथिला विभूति प्रकाश चालीसा" नामक ग्रंथ मंजु छंद में लिखित कुल 41 छंदों और 3 दोहों का संकलन है, जिसके वर्ण्य विषय हैं --

1. मिथिला-सौन्दर्य-वर्णन
2. नदी-वर्णन
3. पुर-वर्णन
4. सीता-सौन्दर्य-वर्णन
5. अपर सहचरी-वर्णन
6. मिथिला-महिमा-वर्णन

इस ग्रंथ के कुछ विशिष्ट उदाहरण निम्नलिखित हैं --

मिथिला-सौन्दर्य-वर्णन --

दशयोजन विस्तार बसै पुर बाहिर चहुँदिशि उपवन हैं ।
विलग विलग बट विटप नदिनि तट कतहुँ बाग बन अति घन हैं ।।
वकुल कदंब तमाल जम्बु बहु पाकर मोहहिं मुनि मन हैं ।
पनस रसाल अशोक आदि बहु प्रेमलता तरू अनगन हैं ।। -- पृष्ठ-89

सीता-सौन्दर्य-वर्णन --

बिके आपहू सिय दुलहिनि पर राम रसिक सिरताजा हैं ।
प्रिय प्रेम वश रहत सदा प्रभु जगदीशनि के राजा हैं ।
सिया सनेही कहत करत सोइ मन चीते सब काजा हैं ।

वैराग्य प्रबोधक बहत्तरी :-

वैराग्य प्रबोधक बहत्तरी मंजुछंद में लिखित 72 छंदों की वैराग्य प्रबोधक छंदों का संग्रह है जिसमें 73 वाँ छंद बहत्तरी की महिमा से संबंधित है और इसके अतिरिक्त एक दोहा और एक सोरठा भी संयुक्त है ।

वास्तव में कवि प्रेमलता का व्यक्तित्व कबीर की फक्कड़ाना लापरवाही, व्यंग्यपूर्ण शैली के साथ तुलसी की मर्यादा, नाम और स्वरूप भक्ति का माधुर्यमूलक मिश्रण है । उनमें कबीर की अक्खड़ता, तुलसी की भक्ति और मर्यादा तथा मधुरोपासक भक्ति का समावेश मिलता है । वे प्राचीनता और आधुनिकता के संक्रमण-विन्दु पर खड़े दिखाई देते हैं इसलिए न तो उनमें पुराने पंथों की "गतानुगतिकता और रूढ़िवादिता है और न पिछले सब कुछ को अस्वीकार कर देने का दुराग्रह । उनकी भक्ति का प्रधान तत्त्व है नाम-स्मरण और नाम-रटन । नामोपासना ही उनके भक्ति-भाव का केन्द्रविन्दु प्रतीत होती है ।

रचना का आरंभ संप्रदायवादी, गद्दीधारी महंत साधुओं के दिग्भ्रमित रूप के संकेत से हुआ है । प्रेमलता जी में कट्टर अनन्यता के बावजूद एक उदार और सामंजस्य मूलक दृष्टि मिलती है । वे विभिन्न मतवादों पंथों का समर्थन करते प्रतीत नहीं होते । यह तीखा व्यंग्य उनके व्यक्तित्व का प्रधान गुण है ।

घर ते निकले भजन करन को त्यागि मातुपितु सुत नारी ।
बीचहिं रहे अटकि तनु सुख लगि बनि महंत कोउ अधिकारी ।।
कनफट्टा कोउ दादूपंथी नानकसाही गति धारी ।

जगजीवन कोउ पल्टू पंथी सतनामी कोउ ब्रह्मचारी ।। -- पृष्ठ-99

प्रेमलता जी ने सांसारिक मायिक प्रपंच को शिशु के खिलौने के रूपक से व्यक्त किया है ।[29] उन्होंने इस रचना में "विरह की पीर",[30] "प्रभु दर्शन की लय",[31] "विमल वैराग"[32] आदि शब्दों द्वारा भक्ति तत्त्व की वास्तविकता से परिचित कराया है । उन्होंने संतों के स्वभाव और वैशिष्ट्य पर भी प्रकाश डाला है --

1. सतगुरू कृपा प्रसाद पाय नहिं माया मोह भुलाये हैं ।
पद्म पत्र इव रहहिं लोक में प्रेमलता यश छाये हैं ।। -- पृष्ठ-104

2. निज मन कंचन कियो कसौटी दुष्ट वचन ठहराये हैं ।
ज्यों ज्यों कसैं कढै रंग त्यों त्यों बढ़त सुमोल सवाये हैं ।।
धरहिं फूंकि पगधरनि करनि करि टहल नाम रट लाये हैं ।
संत सजाती संग सदा रूचि प्रभु चरित्र चितभाये हैं ।। -- पृष्ठ-104

---

29. ज्यों रोवै शिशु देखा विवस तब मातु खिलौना देइ लाई ।
खेलन लगे भूलि सुत जननिहिं त्यों प्रपंच समुझो भाई ।।
जो न गहै शिशु खेल खिलौना लेइ मातु तब उर लाई ।
गोद राखि पय पान करावति दै मुख अस्तन दुलराई ।।
--- पृष्ठ-101

30. वही, पृष्ठ-101

31. वही, पृष्ठ : वही

32. वही, पृष्ठ-102

3. गुरु प्रसाद सियराम नाम रस प्रेमलता मुख चाखा है ।। -- पृष्ठ-105

वैराग्य प्रबोधक बहत्तरी का भी केन्द्रीय विषय नामोपासना है । कवि ने अनेक छंदों में नाम-महत्त्व पर विचार किया है, उनमें काव्यत्व और भावावेश का अद्भुत संतुलन मिलता है । ऐसे कुछ उदाहरण द्रष्टव्य हैं --

1. श्री सियराम नाम रटु सादर मूढ़ फिरै क्यों धाया है ।
नामई में सब रूप धाम गुण जहँ लगि विश्व निकाया है ।
रटत रटत फटि जात कपट पट जो प्रभु पद विमुखाया है ।
प्रेमलता तब लहै परम सुख जो मुख जात न गाया है ।। -- पृष्ठ-106

2. रटहिं नाम सियराम याम बसु जे जन जगत अकाया है ।
पूजनीय पावन त्रिभुवन ते पावहिं प्रभु सुख धामा है ।। -- पृष्ठ-108

3. नाम अनन्य रसिक सन्तन कर सेवा संग सु चित लाई ।
करै सदा मनमारि भली बिधि तज गुमान मद ठकुराई ।।
उपजै परमानन्द अनूपम जाय न जो केहु विधि गाई ।
रोम रोम धुनि उठै नाम की भाव भक्ति रह उर छाई ।। --पृष्ठ-10

4. नाम सरिस प्रभु नाम न दूसर नाम रूप निर्मायक हैं ।
परब्रह्म श्री रामचन्द्र जो तिनहू के ये नायक हैं ।।
अवतारी अवतार जिते सब राम नाम के पायक हैं ।
तेहि लगि राम नाम जापक संग रहत धारि धनु सायक हैं ।।

--- पृष्ठ-110

इस रचना में फकीरी की मौज, वैराग्य का सुख और संत-भूपति की तुलना में संत को अधिक सुखी और कल्याणकारी घोषित किया गया है।[33] भोगी साधुओं और "पाँव पुजावन" गुरुओं पर उन्होंने गहरा व्यंग्य किया है --

किये शिष्य दुइ चारि बन्यो गुरु भजन कौल बिसराया है।
लगे पुजावन पाँय विश्व ते ठगि ठगि महल चुनाया है।।
खाते दूध सोहारी मेवा मिसरी पेट फुलाया है।
बातें करैं बनाय गर्व की घर का ज्ञान भुलाया है।। -- पृष्ठ-111

---

33. (क) फकीरी की मौज --

फक्त फकीरी प्रभु कहँ प्यारी नाना रंग दिखाती है।
कोटिन लोक अमीरी तिस पर न्योछावर होइ जाती है।।
बैठे हैं तरु छाँह मुदित मन नाम रटन मुख भाती है।
स्वप्नेउ आशा न त्रास किसी की महामौज दिनराती है।। 50

--- पृष्ठ-111

(ख) संत-भूपति-तुलना --

संतों के सियराम सहायक निज बल भूप विचारत हैं।
तेहि कारण परलोक लोक में मूढ़ महीपति हारत हैं।।
परहित लागि सहैं दुख संत सु भूपति जीवनि मारत हैं।
संत छुड़ावत बन्दि जीव की भूप कैद में डारत हैं।। 56

--- पृष्ठ-113

इस प्रकार प्रस्तुत रचना युगल स्वरूप के नाम-प्रेम, वैराग्य बोधक भाव, और संसारी प्रपंची गुरुओं की भोग भावना पर आक्रामक शैली से प्रहार करती है । कवि ने भक्ति को अनुभूतिगम्य बनाकर सहज आत्म विश्वास और निष्ठापूर्वक अभिव्यक्ति देने में सफलता प्राप्त की है ।

हितोपदेश शतक --

संख्यावाचक काव्य-परंपरा में उपदेश परक अनुभूतियों का प्रस्तुत काव्य सौ छंदों का संग्रह है जिसमें ग्रंथ महत्व का छंद जोड़कर 101 छंद हैं और अंतिम एक दोहे से समापन हुआ है । इस ग्रंथ के वरार्य तत्त्व निम्नलिखित हैं --

1. अन्तःसाक्ष्य मूलक आत्म परिचय
2. गुरु-महिमा
3. सियराम नाम-महत्व
4. पाखंडी साधुओं का तिरस्कार
5. भक्ति की मस्ती और आवेश

उपर्युक्त तत्त्वों के निदर्शनार्थ कुछ उदाहरण लिये जा सकते हैं --

अन्तःसाक्ष्य मूलक आत्म परिचय --

आशक्त हैं सियराम नाम के सहर जनकपुर रहते हैं ।
अकड़े रहें सदा सियवर बल तीनि ताप नहि दहते हैं ।।
रखते नहिं परवाह किसी की जग ते कछू न चहते हैं ।
सियलाल शरण मस्तान हुए नहिं चाल दूसरी गहते हैं ।। -- पृष्ठ-119

गुरू-महिमा --

सुखनिधान गुरूदेव मिले मोहिं सोइ मेरे उर बस्ते हैं ।
रटवावहिं सियराम कृपा करि रोकहिं जात कुरस्ते हैं ।।
तेहि लगि कठिन विषय कामादिक जन मन अधिकन धस्ते हैं ।
प्रेमलता जे लाल गुरू के रहहिं सदा अलमस्ते हैं ।। -- पृष्ठ-122

सियराम-नाम-महत्त्व --

1. सियराम नाम में रूची न जिस्की सो न हमारा कोई है ।
पुनि पुनि कहौं सत्य सुनिये सब भुज उठाय कर दोई है ।।
परम इष्ट सियराम नाम मय रटौं सदा यह जोई है ।
प्रेमलता जो नाम सनेही मेरा साथी सोई है ।। -- पृष्ठ-123

2. नाम रटत कहु कौन प्रयासा केवल जीभ हिलाना है ।
लाभ अमित अति अकथ अनूपम गावत वेदब पुराना है ।।
नहिं कोउ कर्म धर्म साधन सिधि तेहि सम ज्ञान न दाना है ।
प्रेमलता ते धन्य नाम जिहि सब विधि सर्वस माना है ।। -- पृष्ठ-127

3. नाम प्रभाव अपार-बखानत रामउ हिये लजाते हैं । -- पृष्ठ-143

4. रटत नाम हुलसात रटे विनु विकल होत अति दीना है ।
मन वच क्रम तजि सकल मनोरथ रहत नाम लयलीना है ।।
नाम रटन रस कुन्ड कीन्ह जिन आपन मन लय मीना है ।
प्रेमलता ते धन्य कहावत सफलित तिन्हि कर जीना है ।। -- पृष्ठ-127

5. बरषें नाम शुभाशुभ मुक्ते हरषहिं उर अति खुशियाली ।
सर्वोपरि लखि नाम इष्ट निज भई बुद्धि बर मतवाली ।।

श्री सियराम रटन बिनु जिन्हिका रहत न कबहूँ मुख खाली ।

प्रेमलता सोइ परमहंस जग पीवत नाम सुधा प्याली ।। -- पृष्ठ-131

पाखंडी साधुओं का तिरस्कार --

1. परमहंस का वेष बनाकर दुनियाँ ठगि ठगि खाते हैं ।

सोवत टाँग पसारि जागि कै मूरख गाल बजाते हैं ।।

लोभी लम्पट लोल मोल बिनु विषयनि हाथ बिकाते हैं ।

प्रेमलता अज्ञान अभागी श्री सियराम न गाते हैं । -- पृष्ठ-132

2. नाम रटत अलसात कुटिल अति अशन सयन के पक्के हैं ।

वेष बनाये परमहंस का घर घर खाते धक्के हैं ।

भजन भावना हीन दीन ज्यों धावत फिरहिं उचक्के हैं ।

प्रेमलता जेहि दीन्ह देह यह कबहुँ न तेहि दिशि तक्के हैं ।।

--- पृष्ठ-132

भक्ति की मस्ती और आवेश --

1. श्री सियराम नाम चिंता हर सब भजनों का दादा है ।

सकल भजन आधीन नाम के रटि रसना तजि बादा है ।।

सवा लाख करि नेम वर्ष षट् पैहै अनुपम स्वादा है ।

प्रेमलता अनयास दुसह दुख नाशहिं सकल विखादा है ।। -- पृष्ठ-135

2. प्रेमलता अलमस्त हमेशे संत सजाती भाते हैं ।। -- पृष्ठ-129

वस्तुतः इस चालीसा की रचना मिथिला के लोहवा ग्राम में हुई थी ।

सीताराम नाम रूप अनन्यता वर्णन --

सीताराम नाम रूप अनन्यता वर्णन मंजु छंद में 42 छंदों और 2 दोहों का काव्य है । इसके वरार्य तत्त्व हैं --

1• भजन-भाव

2• सांसारिक प्रपंच

3• भोगाधीन व्यक्तियों के प्रति व्यंग्यात्मक भाव

4• सियवर राम की महिमा

5• युगल रूप और जानकी महिमा

6• अनन्यता-बोध

7• भावावेश

8• नाम रटन

आदि ।

नाम रूप की अनन्यता में सगुण भाव और नाम रटन को महत्त्व दिया गया है । कवि ने आत्म परिचय के माध्यम से स्वानुभूत अनुभूतियों को भी व्यक्त किया है । कुछ प्रमुख उदाहरण निम्नलिखित हैं --

सियवर राम की महिमा --

सबके पर्म उपास्य देवता सियवर जगत प्रकाशक हैं ।
सतचित आनंद रूप अनूपम शरण पाल खल त्रासक हैं ।।
व्यापक व्रह्म अखंड अनामय भव भय भर्म बिनाशक हैं ।
प्रेमलता अवतार जिते जग सीताराम उपासक हैं ।।

---- पृष्ठ-147

युगल रूप और जानकी-महिमा --

सियबिनु द्रवहिं न राम करै कोउ कोटि न ज्ञान विरागा है ।
तीरथ जप तप नेम कठिन व्रत ध्यान समाधि सुयागा है ।।
नामहुं रटत न होइ विमल उर सियबिनु पचत अभागा है ।
प्रेमलता भजु जनक लली पद पंकज पदुम परागा है ।। -- पृष्ठ-149

अनन्यता-बोध --

सीताराम अनन्य भाव बिनु परमानन्द न पाते हैं । -- पृष्ठ-15

भावावेश --

श्री सियराम विहार मनोरमा गुणातीत सुखदाई है ।
निरखि सुलोचन सफल करहिं निज जन्म लाभ भल पाई है ।।
भरे रहैं आवेश हमेशो प्रेम प्रीति अधिकाई है ।
प्रेमलता परलोक लोक की शंका धोइ बहाई है ।। -- पृष्ठ-153

नाम-रटन --

1. बिना रटे सियराम खूब नहिं मन कर संशय जाता है ।
मन निर्मल बिनु भये जीव निज सहज स्वरूप न पाता है ।। -- पृष्ठ-154

2. अकड़े रहैं नाम बल अनुछन कालहु ते न डराते हैं ।
प्रेमलता बुधवन्त संत सोइ राम रसिक कहलाते हैं ।। -- पृष्ठ-152

ग्रंथ के अंतिम दोहे में भी "सियराम नाम" से "नवल स्नेह" की वृद्धि की कामना ग्रंथकार द्वारा की गई है ।

सीताराम नाम जापक महत्व --

"सीताराम नाम जापक महत्त्व" नामक ग्रंथ की

रचना अयोध्या के "सतगुरू सदन" में मंजु छंद में 101 छंदों तथा एक दोह में हुई है । रचना की समाप्ति के पश्चात् एक श्लोक[34] भी महत्त्व रूप में रचित है । मूलत: यह रचना स्वरूप की दृष्टि से शतक है । यद्यपि सभी छंद एक साथ ही दिए गए हैं पर उनका विषय नाम जापक के अनुभूति पक्ष की विविधता से जुड़ा हुआ है । इस ग्रंथ के वरार्य तत्त्व इस प्रकार हैं --

1. युगल रूप उपासना-भाव
2. सियाराम महिमा
3. मधुर रूप
4. नाम-महत्त्व
5. नाम-जापक महत्त्व

युगल रूप-उपासना-भाव --

1. सियमोहिनि प्यारी पुरूषोत्तम हिलि मिलि दोउ गर मुंज डारी

--- पृष्ठ-158

2. दम्पति भोग विलास हास रस रंग संग की बलिहारी ।

सतगुरू कृपा प्रशाद पाय अलि भाव बिलोकहिं शृंगारी ।।--पृष्ठ-158

---

34. पठति सकल शास्त्रं वेद पारं गतो पि

यम नियम परो वा धर्म शास्त्रार्थ कर्ता ।

अपितु सकल तीर्थं व्राजको वा हिताग्नि

नं हि रटति यदि नामं सर्व मेतद्वृथा स्यात् ।।

--- सीताराम नाम जापक महत्व -- पृष्ठ-183

सियाराम-महिमा --

1. सियाराम सम हेतु रहित हित है न होइ या त्रिभुवन में ।
सुमिरत ही सुख देत दयानिधि धरतन दास दोश मन में ।।
--- पृष्ठ-161

2. प्रेमलता सियराम रूप के समता योग न ते सारे ।। -- पृष्ठ : वही

मधुर रूप --

1. श्री सियराम रूप अनुरागी रटहिं नाम लय लाई है ।
बसहिं धाम मद मोह काम तजि बनिता सुत पितु माई है ।।
माँगि खाय मधुकरी मुदित मन गुरु पद प्रीति दृढ़ाई है ।
प्रेमलता अलि भाव विमल उर मूरति मधुर बसाई है ।। -- पृष्ठ-166

2. श्री सियराम बिहार उपासक शृंगारी रस रागी हैं ।
चेतन अमल अनूप भाव उर रटहिं सु नाम अदागी हैं ।। -- पृष्ठ:वही

3. प्रेमलता सोइ राम जनन हित नाना रूप बनावत हैं । -- पृष्ठ-160

नाम महत्व --

1. बलिहारी सियराम नाम की रूप धाम गुण की बखि है ।
नाम रूप गुणधाम अनूपम वर्णत श्रुति महिमा भलि है ।। -- पृष्ठ-163

2. नहिं सियराम नाम से नाम सु ईश न श्री सिय रघुवर से ।
--- पृष्ठ-162

3. नामहिं सेवा नामहिं पूजा नाम महानिधि सिधि दाता ।
नाम इष्ट गुरु सखा सहायक लायक नाम सु पितु माता ।।
नाम सुवन शुचि सुखद नाम ही युवती जनतनधन भ्राता ।

प्रेमलता प्रिय नाम सुरक्षक भक्त भय श्रम भ्रम त्राता ।। -- पृष्ठ-181

4· नाम नरेश ईश ईशन के सुखनिधान भावाना हैं ।

हेतुरहित हित सियरामहु ते अधिक सुवेद बखाना है ।

सुमिरत देत सकल सुख जीवनि परम सुलभ सुजाना है ।

प्रेमलता जे रटहिं नाम नित तिन्ह सम धन्य न आना हैं ।।

--- पृष्ठ : वही

नाम जापक महत्त्व --

1· श्री सियराम उपासक साँचे ते न किसी से डरते हैं ।

रटहिं रटावहिं नाम याम बसु निज प्रभु धाम विचरते हैं ।।

रंगी रहत सियराम रूप रंग चरण कुपथ न धरते हैं ।

प्रेमलता तजि आश त्रास सब महामोद मन भरते हैं । -- पृष्ठ-163

2· प्रेमलता पै नाम जापक न सम न मोहि प्रिय आना हैं । -- पृ0-178

3· भक्ति आदि सब साधन ते मम नाम अधिक सुखदाता है ।

तेहि ते अधिक नाम जापक जो रटता और रटाता है ।।

--- पृष्ठ : वही

ज्ञान पचासा :-

"ज्ञान पचासा" पचास छंदों का संकलन है जिसकी रचना मिथिला में रतनसागर के किनारे हुई है । रचना के अंत में महत्त्व और रचना-स्थल के संकेत के लिए दो दोहे जोड़े गए हैं । "ज्ञान पचासा" के मुख्य विषय हैं -- सीताराम नाम रटन, संतगुरू की सेवा, वैष्णव वेश, संसार की ठगहाट, माया रंडी, मानव शरीर की सार्थकता का विचार, सीताराम

उपासकों की धन्यता, युगल रूप की महत्ता आदि ।

"ज्ञान पचासा" की सर्वाधिक विशेषता खड़ी बोली में की गई रचना है । कवि ने उपदेशात्मक और स्वानुभूतिमूलक शैली में भक्ति के सार अनुभव को प्रेषणीय बनाने का प्रयत्न किया है । सरल भाषा में गंभीर अनुभव को संक्रान्त करनेवाली यह भाषा अपने युग के समानान्तर चलती हुई दिखाई देती है । कुछ उदाहरण द्रष्टव्य हैं --

1. ठग लोगों की हाट न जाना खोटा सौदा पावोगे ।
अपर सुन्दर देखि सफाई भाई चित्त चलाओगे ।।
जा सौदा में सार न अंदर पाछे धोखा खायोगे ।
प्रेमलता फिर हाट उठे पर शिर धुनि धुनि पछितावोगे ।।
--- पृष्ठ-185

2. भला सोच तू अपने दिल में तेरा साथी है कोई ।
लगी ठगों की हाट दिवाने मतलब के गरजी सोई ।। -- पृष्ठ-187

3. प्रेरित काल स्वभाव कर्मगुण प्रभु बिनु जन दुख पाते हैं ।
बार बार धरि देह विविध जग फिर फिर आते जाते हैं ।।
करहिं न संत गुरू की सेवा मुख सियराम न गाते हैं ।
प्रेमलता मन वचन कर्म करि पापहिं पाप कमाते हैं ।। -- पृष्ठ-193

4. सीताराम उपासक श्री सियराम नाम अनुरागी हैं ।
कंठी तिलक माल दृढ धारें मारें मनहिं अदागी हैं ।।
संत संग हरि चरित निरंतर सुनें भक्ति मति पागी हैं ।
प्रेमलता सो धन्य जीव जग जाये प्रभु लय लागी हैं । -- पृष्ठ-195

भक्ति महारानी जू के अड़सठ अंग --

"भक्ति महारानी जू के अड़सठ अंग" शीर्षक प्रेमलता कृत लघु रचना मात्र ग्यारह छंदों तथा दो दोहों में रचित है जो स्वरूप से लघु होकर विचार और सिद्धान्त विवेचन की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है । विचारकों ने यद्यपि श्री प्रेमलता जी के पूर्व कथित तैंतीस ग्रंथों में इसे स्वतंत्र रूप में परिगणित नहीं किया है पर यह रचना स्वतंत्र रूप से परिगणित की जा सकती है ।

प्रेमलता जी ने भक्ति के अड़सठ अंगों के रूप में निम्नलिखित तत्त्वों को स्वीकार किया है -- सद्गुरुशरण, संस्कार, अभेद, साधु सेवा, धर्म, अनुकूलता, त्याग, इष्टधाम, धाम अंग परिज्ञान, रासरंग, प्रेम प्रयोजन, दुर्जन त्याग, प्रशिष्य विरति, निर्भ्रम, बहुमत, विधावाद तुलसी, सियराम जन्म महोत्सव, कामादिगत, सत्य, दृढ़, अनिन्दा, अद्रोह, इष्ट श्रवण, नाम रटन, इष्ट परिक्रमा, दण्डवत, प्रसाद, विराग, प्रभुलीला, मंत्र जाप, आकर्षण, प्रेम, मधुधारा, सार सुग्राही, संतोषी, दास सख्य प्रीतम की राजी में राजी, सदाचार प्रिय, सियराम अनन्य उपासक आदि ।

जानकी जन्म स्तुति --

"जानकी जन्म स्तुति" नामक लघु ग्रंथ की रचना रामचरित मानस के बालकाण्ड के प्रसिद्ध छंद "भए प्रगट कृपाला दीनदयाला कौशल्या हितकारी" की शैली पर हुई है । यह रचना संभवतः प्रेमलता जी की सर्वाधिक प्रचारित हुई है । प्रस्तुत "सीताराम रहस्य दर्पण" संकलन का रचना-काल संवत 1986 है पर स्वतंत्र पुस्तिका के रूप में इस संकलित अंश से अधिक

संवत् 1984 में इसका छठा संस्करण प्रकाशित हो चुका था । उस संग्रह को बाबू कैलाशनाथ भार्गव ने भार्गवभूषण प्रेस काशी से प्रकाशित किया था ।

जानकी जन्म स्तुति में मूलतः प्रथम छंद में चार छंद और एक दोहा, द्वितीय छंद में आठ छंद और सोरठा, तृतीय छंद में आठ छंद और एक दोहा, चतुर्थ छंद में चार छंद, एक दोहा और एक सोरठा वर्णित है । इसके अतिरिक्त बधाई -- लावनी चाल में पाँच छंद और अंत में दो कवित्त अंकित है ।

जानकी जन्मस्तुति में भाव और कवित्व का मणिकांचन संयोग मिलता है । इसके कुछ उदाहरण देखे जा सकते हैं --

1. लई प्रगट कुमारी भूमि विदारी जन हितकारी भयहारी ।
अतुलित छवि भारी मुनिमन हारी जनक दुलारी सुकुमारी ।

--- सीताराम रहस्य दर्पण -- पृष्ठ-20।

2. जय जानकी जग जननि स्वामिनि प्रणत जन सुखदायिनी ।
गुण रूप शोभा खानि सीता राम पिय मन भायनी ।।
जय जनक जाया जन निकाया शरण आए स्वामिनी ।
अपराध छमि सिय पालु देवि कृपालु राम सुभामिनी ।।

--- श्री जानकी जन्म स्तुति -- पृष्ठ-7

{छठी आवृत्ति, संवत् 1984}

<u>प्रेमलता बाराखरी --</u>

"प्रेमलता बाराखरी" वर्णमाला के प्रारंभिक अक्षरों पर आधारित भक्तिकाव्य का श्रेष्ठ निदर्शन है जिसमें वचन-भंगिमा के प्रयोगों के

साथ प्रेमलता जी के भक्त-चित्त का निश्छल उद्‌घाटन मिलता है । सरल पदावली में उपदेशात्मक शैली का आश्रय लेकर संत कवि ने ज्ञान को व्यावहारिक रूप में अभिव्यक्त किया है --

1. ग - गगा गर्व गुमान न कीजे जीवन जग में थोरा है ।
गम खाना गहि चाल गरीबी मन मतंग बर जोरा है ।।
गहु गुण दोष त्यागि रहु प्रमुदित करू जनि तोरा मोरा है ।
गई बहुत बय प्रेमलता अब भजु सियराम किशोरा है ।। 3

--- पृष्ठ-207

2. झ - झझा झटपट करो त्यारी आयू जात सिरानी है ।
झगरा जगत झमेल खेल तजि श्रवण सुनो गुरुबानी है ।।
झमकि चढ़ो सियराम भजन पथ क्षन क्षन होत सुहानी है ।
झरी झराझर लगी नाम की प्रेमलता मुददानी है । -- पृष्ठ-209

3. ल - लला लखो मोहनी मूरति सूरति की बलिहारी है ।
लटपट हुए हजारनि आशक सुधबुध सकलबिसारी है ।।
लछिमण लसैं दाहिने दिशिवर बामें जनक दुलारी है ।
ललकि दिये गरबाहिं मुदित मन प्रेमलता पिय प्यारी है ।।

--- पृष्ठ-214

इस प्रकार "प्रेमलता बाराखरी" में नाम-भजन, राम अनुकूलता, गुरू-वन्दन, राम-स्नेह, दृढ़विश्वास, प्रभु-प्रीति, राम-नाम-महिमा, नाम रटन की अदम्य इच्छा का वर्णन हुआ है । कवि ने इसे "बत्तिस छंद प्रबंध" कहकर "सतगुरू" को अर्पित किया है ।

नामस्तुति --

"सीताराम रहस्य दर्पण" के अंत में नामस्तुति नामक अति लघु रचना का संकलन हुआ है जो रचना की दृष्टि से स्वतंत्र अवश्य है पर उसे स्वतंत्र ग्रंथ नहीं माना जा सकता है । इसमें सियराम नाम की वन्दना दो छंदों में हुई है, प्रत्येक छंद में चार-चार छंद हैं । प्रथम छंद के अंतर्गत चार छंदों की समाप्ति पर एक दोहा और द्वितीय छंद के अंत में चार छंदों की समाप्ति पर दो दोहों की रचना हुई है । रचना में "तुलसी श्री रामचंद्र कृपालु भजुमन" की भी स्पष्ट छाप मिलती है ।

1. जय जय ति श्री सियराम नाम अकाम जन मन रंजनम् ।
जय जय ति सब सुख धाम पूर्ण काम भवभय भंजनम् ।
जय जय ति अशरण शरण अमरण मरण अघदल गंजनम् ।
जय जय ति मानस मलिन के प्रभु अमल अनुपम मंजनम् ।।

---- पृष्ठ-216

2. जय नाम नमामी सरल अकामी समरथ स्वामी परधामी ।
जय परम प्रतापी त्रिभुवन व्यापी अगम अलापी गति नामी ।।

---- पृष्ठ-217

सार सिद्धांत प्रकाश --

"सार सिद्धांत प्रकाश" प्रेमलता जी द्वारा कुण्डलिया में रचित 452 छंदों का संग्रह-ग्रंथ है । मुक्तक की भांति इसमें विभिन्न भावों और विषयों से संबद्ध रचनाएँ मिलती हैं । छंद संख्या 341 के बाद "सरयू षोडसी नामक रचना है जो 358 छंद तक वर्णित है । इसके पश्चात् उसी क्रम में संतचर्या,

पाखंडी साधुओं पर व्यंग्य, सीता, सीतामढ़ी, मिथिला आदि विषयों का विचार हुआ है । यह एक पूर्ण कृति है जिसे सिया रघुनाथ शरण ने संपादित कर महेश प्रसाद द्वारा सत्यनाम प्रेस, मैदागिन वाराणसी से सम्वत् 1985 में प्रकाशित कराया है । इसकी भूमिका सतगुरू रामशरण मधुरलता ने लिखी है । भूमिका में प्रेमलता जी के ग्रंथों के प्रचार-प्रसार, बिना मूल्य वितरण का संकेत देते हुए विनीत भाव से कहा गया है कि " ... सार सिद्धांत प्रकाशादि ग्रन्थकार के प्रिय शिष्य वर्गों ने निज निज द्रव्य व्यय कर प्रभु भक्तों के हितार्थ छपाकर ग्रंथकारजी की आज्ञानुकूल बिना मूल्य देश विदेशी प्रभु के कृपा पात्रों को समर्पण किए हैं, जो कि काशी, दरभंगा, मुजफ्फरपुर, भागलपुर, पटना, कलकत्ता, वृन्दावन, नैमिसार, इलाहाबाद, कानपुर, लखनऊ आदि बड़े-बड़े सैकड़ों शहरों तथा ग्रामों में प्रचार हैं, बड़े-बड़े विद्वान उपासक वैष्णव, सैव, शाक्त, आर्यसमाजी, राधास्वामि आदि कई एक मजहबी लोग हार्दिक प्रशंसा के साथ ग्रंथों का आदर करि रहे हैं, बराबर दूर-दूर देशों से मांग आ रही है, कितने कुतर्की भाई उन भगवत संबंधी ग्रंथों का शुद्ध सार छोड़कर खोंट रूपी छिलका खोजा करते हैं, जिनकी कृपा रूप समालोचना से जो कुछ त्रुटि रहि जाती हैं, सो सब सुधरती जाती हैं, उन भाइयों से प्रार्थना है कि वे अपना काम करते जायें ।"[35]

"सार सिद्धांत प्रकाश" में निम्नलिखित तत्त्वों का विचार हुआ है --

---

35. सार सिद्धांत प्रकाश - भूमिका -- सतगुरू रामशरण मधुरलता, पृष्ठ-1

1. सीताराम नाम महत्व
2. सतगुरु उपदेश
3. नाम-रटन और नाम महत्व
4. आत्म परिचय
5. गुरु-शिष्य-संबंधी विचार
6. धन-निन्दा
7. पाखंडी बाबा और साधुओं पर व्यंग्य
8. माया-खंडन
9. संत-स्वभाव और कुटिया का विरोध
10. भक्ति तत्त्व और माधुर्य भाव
11. सामयिक प्रभाव -- गाँधी जी और अंग्रेजों की चर्चा
12. संत-वेष का प्रभाव
13. तर्कवाद का विरोध
14. "सरयूझोड़ली" में सरयू-महिमा-वर्णन
15. जानकी जन्मभूमि -- सीतामढ़ी का माहात्म्य
16. मिथिला-प्रेम
17. रस-शृंगार और वैष्णव-भाव आदि ।

"सार सिद्धांत प्रकाश" के महत्वपूर्ण विवेच्य पक्षों के कुछ उदाहरण निम्नलिखित हैं --

सीताराम नाम-महत्व --

सीया बिनु नहिं द्रवत प्रभु, कबहूँ जन पर राम ।

रटै करोरनि जन्म बरू, सिय तजि राम सुनाय ।।

सिय तजि राम सुनाय कतहुँ विश्राम न पावै ।

आवै उर न सुबोध क्यस विनु ऐस नशावै ।। -- पृष्ठ-3

सीया नाम सुखा सिय, छवि शरीर सुख धाम ।

गुणमय मूरति सीय की, राम सु इष्ट ललाम ।। -- पृष्ठ-4

नाम रटन --

सिद्धि न ऋद्धि न निद्धि विधि, भजन भाव भगवान ।

नाम सरिस कोउ सुखद नहिं जनहित वेद बखान ।।

जनहित वेद बखान ध्यान धरि सुनि गुनि देखौं ।

तीनि काल तिहुलोक नाम सम सुहृद न लेखौ ।। -- पृष्ठ-20

चातक सम दृढ़ धारि उर टेक विवेक विचार ।

रटै पुकारि पुकारि नित, नामसु बारहिं बार ।। -- पृष्ठ-21

गुरू शिष्य-संबंध-विचार --

चेला मधुकर सुमन गुरू भावत तत्त्व सुगंध ।

जो न होय तो अपर लखि तेहि सन तजि संबंध।।-- पृष्ठ-26

धन-निन्दा --

पैसा पैसा प्रिय लगे, तैसा लगे न नाम ।

दाम हेतु निज परमहित, मूढ़ बिसारेउ राम ।।

मूढ़ बिसारेउ राम कामप्रद सब सुखदानी ।

चेरी जाकी रमा स्वामिनी सिय पटरानी ।।

तेहि प्रभु को बिनु भजे कहो सपनेहु सुख कैसा ।

प्रेमलता सुचि सीख सुनत नहिं जोरत पैसा ।। -- पृष्ठ-31

व्यंग्य --

1. खावै प्रभु पद रिजक नित, गावै नहिं सियराम ।
पहिरि गूदरी टोप शिर, सोवै निमकहराम ।।
सोवै निमकहराम नाम परम्हंश धरायो ।
भजनहीन गत लाज वृथा वर वेष बनायो ।। -- पृष्ठ-63

2. रचि-रचि ठौंक ढकोसला, यहि बिधि कलियुग लोग ।
नामारूप सु धारि-धन ठगि ठगि करिहैं भोग ।।
ठगि ठगि करिहैं भोग वचन परमारथ रूपा ।
कहहिं बनाइ बनाइ भाँति बहु विपुल अनूपा ।। -- पृष्ठ-104

सामयिक प्रभाव और व्यंग्य -- गाँधी और अँग्रेजों की चर्चा --

1. गाँधी प्रगट्यो जगत में, खद्दर करन प्रचार ।
जीवन के कल्याण हित, चरखा कीन तयार ।।
चरखा कीन तयार सैया मागि करेरे ।
तन मन धन दै लोग सहै बहु दुखहु करेरे । -- पृष्ठ-103

2. हिन्दू के संतान बनैं कृचन कट फुटिया ।
प्रेमलता धन लागि बेचि खाईं सो चुटिया ।। -- पृष्ठ-112
चुटिया धारै शीस यक हिन्दुस्तानी लोग ।
कामकाज विललायती करैं काबुली भोग ।। -- पृष्ठ-113

तर्कवाद का विरोध --

डोलहिं भरे विवाद कहहिं हम पढ़े पुराना ।
सुन्यो न देख्यो कहूँ पुलस कहँ लिख्यो जनाना ।।

तर्क करहिं बहु भाँति रसिक सन्तनि के नेरे ।

प्रेमलता मन मुखी मूढ़ माया के चेरे ।। --- पृष्ठ-121

संत स्वभाव और कुटिया या संग्रह का विरोध --

कुटिया कबहुँ न बाँधिये, रहिये जहँ तहँ सोइ ।

रटिये श्री सियराम नित, जग संबंधहिं सोइ ।।

जग सम्बन्धहिं खोइ संग सन्तनि कर करिये ।

प्रमुदित मन वसुयाम पेट जे हि ते हि विधि भरिये ।।

रखिये खप्पर टोप कमंडल गुदरी मुटिया ।

प्रेमलता महि माँहिं अटिय नित सुख तजि कुटिया ।। -- पृष्ठ-47

जानकी जन्मभूमि -- सीतामढ़ी का माहात्म्य --

सीतामढ़ी अनूप अति, श्री सिय जन्मस्थान ।

निवसि जहाँ पावहिं सुजन, भक्ति मुक्ति कल्यान ।।

भक्ति मुक्ति कल्यान लछिमना गंग सु बहतीं ।

दरश परस जेहि करत अमंगल कोटिन दहहीं ।। -- पृष्ठ-143

प्रेमलता जी ने सीतामढ़ी और मिथिला के प्रति अपने गंभीर प्रेम का परिचय दिया है वहीं सीता के प्रति उनकी अनन्यता भी बार बार व्यक्त हुई है । भाव, विचार, ज्ञान, क्रिया सभी रूपों में सीता-भाव का बोध उनकी अभिव्यक्ति में परिलक्षित होता है --

सीता पूजा पाठ मम, समदम शरधा धाम ।

सीता श्रवण सु मनन सिय, समाधान विश्राम ।।

समाधान विश्राम धारणा अचल समाधी ।

अहंकार अपराम तितिक्षा बुद्धि अबाधी ।। -- पृष्ठ-144

सीता नेम उछाह धुम, मुक्ति मुक्ति गुरू भूप ।
सीता परमानन्द पर नाम धाम गुण रूप ।।
नाम धाम गुण रूप सुकीरति सरल सुहावन ।
सर्व सुकृत फल फूल मूल सीता पद पावन ।।
सीता नाम अनूप अमीरस सज्जन पीता ।
प्रेमलता निशि दिवस रटै मुख नाम सु सीता ।। -- पृष्ठ-145

सीता प्राण अधार धन, आश ।बास विश्वास ।
सीता भजन सुतोष पुण, सीता हर्ष हुलाश ।।
सीता हर्ष हुलाश जहाँ लगि सुखद सु जेते ।
रहस राम रस रंग संग शुभ सिय जू तेते ।।
जाग्रत स्वप्न सुषुप्ति तुरिया अनुभव के मीता ।
प्रेमलता सब मोर एक श्री स्वामिनी सीता ।। -- पृष्ठ : वही

सिय सेवत वस होत राम भगवान आजीता ।
प्रेमलता अस जानि जपहिं जन नाम सुसीता ।। -- पृष्ठ-146

कवि को मिथिला के दृश्यों से गहरा अनुराग है --

मिथिला बसी दिव्य तर, सिय जू के प्रिय प्राण ।
राम रूप ताते कहे, विष्णु आदि पुराण ।।
विष्णु आदि पुराण राम सिय प्राण बखानी ।
दोउ नि के मन हरैं धन्य मिथिला महरानी ।।
सरिता सर वन बाग विपुल निरखत मन जितिला

मिथिला तू बड़ भागिनी, क्वन पुन्य तप कीन ।
जगत जननि सिय प्रगटि जहँ, विपुल बड़ाई दीन ।।
विपुल बड़ाई दीन कहहिं सुर नर मुनि धनि धनि ।
सकल तीर्थ शुचि धाम पुरिनि की भई शिरोमनि ।।
देश भयो महि तिलक निरखि रामहु भये सिथिला।।
प्रेमलता त्रैलोक्य पूज्य पावनि तू मिथिला ।। -- पृष्ठ-150

"सार सिद्धांत प्रकाश" के अंत में "विशेष सूचना" के रूप में कवि ने गद्य में भक्ति और उपासना विषयक अपने चार पृष्ठों के वक्तव्य में तद्युगीन तार्किक मनःस्थिति और धर्म के मूल तत्त्व के अंतर को स्पष्ट किया है एवं मधुर भाव की भी व्याख्या की है ।

नाम तत्त्व सिद्धांत दोहावली --

नाम तत्त्व सिद्धांत दोहावली ग्रंथ अनेक ग्रंथों का एकत्र संकलन है । इसका प्रथम प्रकाशन सम्वत् 1987 में श्री सियाश्याम शरण पताही निवासी तथा श्री रामगोविन्द शरण शिवहर निवासी के सहयोग से हुआ था । भूमिका लेखक श्री रामविश्वनाथ शरण के अनुसार " इस ग्रंथ में 14 प्रकार के विषय-वर्णन किया गया है ... इन सब ही विषयों में यथार्थ रूप से विशेष श्री सियाराम नाम ही का सिद्धांत तत्त्व-वर्णन किया गया है"।[36]

इस ग्रंथ में संकलित ग्रंथों की नाम-सूची इस प्रकार है --

---

36. नाम तत्त्व सिद्धांत दोहावली - भूमिका --- पृष्ठ-2

1. नाम महिमा दृष्टान्तावली
2. सतगुरु शब्द यथार्थ ज्ञान वर्णन
3. गुरु पदार्थ प्रबोधिका
4. सीय प्रसादी माहात्म्य
5. अनन्य शतक
6. निजात्म बोध दर्पण
7. अपेल सिद्धांत
8. युगल नाम संबंध अष्टोत्तरी
9. नेही अष्टक
10. षोडश प्रकार की भक्ति
11. सन्तमहिमा वीसिका
12. उपदेश पेटिका
13. सियाराम नामाष्टक
14. नास्तिकी प्रश्न आस्तिकी उत्तर {गद्य रचना}

नाम महिमा दृष्टान्तावली --

प्रस्तुत ग्रंथ की रचना दोहों में हुई है और उनकी कुल संख्या 241 है । इनमें मुख्यतः सियाराम की नाम महिमा का विचार हुआ है । रचना-शैली के कुछ उदाहरण इस प्रकार है --

1. सन्तनि के मुख विमल नभ, रति निशि शरद अदोष ।
प्रेमलता श्री नाम शशि, सोहत कला कोष ।।

--- दोहा संख्या-13

2· नाम नेह बिनु बादि सब, ग्यान ध्यान अनुराग ।
प्रेमलता तिहुँ काल जिमि, बाजीगर को बाग ।।

--- दोहा संख्या-35

3· नाम तत्त्व जेहि लखि पर्यो भयो तासु उर मोद ।
प्रेमलता सुख सोव जिमि, बाल सु जननी गोद ।।

--- दोहा संख्या-47

4· नाम रटन रस अनुपम, सकल रसन शिर मौर ।
प्रेमलता चाखत सुजन, जिमि मधुमाखी भौंर ।।

--- दोहा संख्या-68

5· नाम रटत रटावहिं, और नि ते तजि लाज ।
प्रेमलता जग-जलधि विच, ते जिमि नवल जहाज ।।

--- दोहा संख्या-12

6· नामहीन नर कालवश, भये बाम आधीन ।
प्रेमलता कपि भालु जिमि, नाँचहिं जहँ तहँ दीन ।।

--- दोहा संख्या-117

7· नाम रटन बिनु निपट अति फीको लगे फकीर ।
प्रेमलता जिमि समर में, शस्त्र टाल बिनु वीर ।।

--- दोहा संख्या-121

8· तन सराय में बैठि जनि, दिन दिन होय अचेत ।
प्रेमलता चलना अवसि, सिय पिय पुर साकेत ।।

--- दोहा संख्या-208

9. जय जय श्री गुरुदेव की, जयति नाम सियराम ।
प्रेमलता जय जयति सब, संत सु जापक नाम ।।

--- दोहा संख्या-239

10. जन्मी कौनिउ योनि महं, कर्म विवश तजि देह ।
प्रेमलता कर नाम सन, छूटै कबहुं न नेह ।।

--- दोहा संख्या-241

सतगुरु शब्द यथार्थ ज्ञान वर्णन --

"सतगुरु शब्द यथार्थ ज्ञान वर्णन" 387 दोहों का संकलन-ग्रंथ है जिसके प्रथम खण्ड में गुरु के व्यवहार और प्रयोग की चर्चा है, दूसरा खण्ड "अथ गुरुआ वाक्य ब्यान बरनन" है जिसमें गुरु के उपदेश वर्णित हैं, तीसरे खण्ड में गुरुज्ञान वर्णन है और अंतिम खण्ड में सतगुरु ज्ञान वर्णन है । उदाहरण स्वरूप कुछ प्रमुख दोहे निम्नलिखित हैं --

1. गुरु तावै सीतल करै, पीटि रटावै नाम ।
जिमि सुनार गढ़ि सोनहि, भूषण करै ललाम ।।5।।

2. गुरु माली शिषि बाग ही, जुगवत रहत सचेत ।
ऊपर ते काटत रहै, नीचे पानी देत ।।6।।

3. गुरु बढ़ई शिषि लाकरी काटि छाँटि गढ़ि छौलि ।
प्रेमलता प्रगटावहीं, पुतरी अति अनमोलि ।। 15।।

कवि ने इस अंश में अधिकतर लौकिक एवं व्यावहारिक उदाहरणों से अपने कथ्य को पुष्ट किया है ।

गुरु ज्ञान वर्णन आदि खंडों में भी अनेक्त्र नाम रस का भी संकेत होता गया है --

सदा एक रस रहत तनु षोड़स वर्ष किशोर ।

राम सच्चिदानन्द सोइ, प्रेमलता चित चोर ।। 135

कवि ने तिलक छाप कंठी और वेश को भी सच्ची साधुता का लक्षण और भक्ति मार्ग का साधन सिद्ध किया है --

तिलक छाप कंठी युगल, मात्र मंत्र निज नाम ।

संस्कार ये कहत श्रुति, इन्हिविनु द्रवहिं न राम ।। 133

सतगुरु ज्ञान वर्णन में भक्ति ज्ञान, कर्म, नाम रटन सतगुरु रूप में दिव्य नामोपासकों का वर्णन किया गया है । गुरु और गुरुआ त्याज्य हैं, सियराम भजने-रटने वाले ही सतगुरु हैं --

गुरु गुरुआ दोउ परिहरो, कर्मी ज्ञानी जानी ।

सत गुरु करि सियराम इक रटहु सकल प्रण ठानि ।। 244

इसी ग्रंथ में छंद संख्या 286 से छंद तक क्रमबद्ध नाम माहात्म्यह घोषित हुआ है --

नामहि जानो भक्ति वर, नामहिं ज्ञान निधान ।

नामहि कर्म उपासना, नामहिं जप तप ध्यान ।। 286

नामहिं जानो भजन वर, नाम सु सेवा टहल ।

नामहि सहज समाधि बल, नामहिं निर्भय महिल[37] ।। 290

नामहिं जानहु वेद विधि, शास्त्र पुराण सु नाम ।
नामहिं अर्थ समर्थ सुख, नाम सुभग विश्राम ।। 294

सतगुरु-महत्व का आधार भी नाम ही है --

सतगुरु शब्द सु धारि उर, रटि श्री नाम अखंड
प्रेमलता बिनु श्रम तरिय, पाम पयोधि प्रचंड ।। 376

सतगुरु शब्द यथारथ, बोधक यह सु प्रसंग ।
प्रेमलता पदि गुनि सुजन, रटहिं सु नाम अभंग ।। 379

---

37. "प्रेमलता पदावली" में भी सेवा भाव को महल की टहल" के रूप में अंकित किया गया है --

महल की टहल करिय चित लाभ ।।
सुर दुर्लभ मानुष तनु पायेउ, कहत संत श्रुति गाय ।।
आलस त्यागि सु प्रात काल उठि, लागि गुरून के पाय ।
तन कृत करि पुनि बैठि सुआसत, कहुं इकन्त थल जाय ।।
युगल नाम लय लाल रटै मुख, ऊंचे स्वर हरषाय ।
कंचन भवन सुदिव्य मणिमय रचना अनुपनिकाय ।
विहरहिं जहाँ सदा सिय पिय संग, वन उपवन बहुताय ।।

--- पद संख्या-48, पृष्ठ-47

गुरु पदार्थ प्रबोधिका --

गुरु पदार्थ प्रबोधिका नामक ग्रंथ 357 दोहों में रचित है । इसका वरार्य विषय सतगुरु-महत्व का प्रतिपादन, नाम-महित्व और रटन वैष्णव वेश और वृत्ति, युगलोपासना का माधुर्य आदि हैं ।

सतगुरु महिमा --

1. सतगुरु बिनु न उपासना, सतगुरु बिनु नहिं ज्ञान ।
सतगुरु विनु नहिं मिलत प्रभु, जिन्हिं विनु नहिं कल्यान ।।

--- दोहा संख्या-3

2. सतगुरु प्रभु के भजन रंग, रंगी रहत दिन राति ।
तिन्हिं कहँ कछु सूझत नहीं, निज पर जाति अजाति ।।

--- दोहा संख्या-5

3. साँचे गुरु के शब्द की चोट वज्र की मार ।
प्रेमलता जेहि उर लगी, चूर चूर करि डार ।।

--- दोहा संख्या-8।

4. सतगुरु मारा सो जिया, युग युग रहित क्लेश ।
प्रेमलता प्रमुदित सदा, पाइ सु नाम परेश ।।

--- दोहा संख्या-83

युगलोपासना का माधुर्य --

समय समय सब ठौर दोउ, बैठहिं कै गर बाँहि ।
प्रेमलता अलि अमित छवि, हरखि निरखि बलि जाँहिं ।।

--- दोहा संख्या-126

दोहा संख्या-158 से 190 तक कवि और राम तथा सीता का मानसिक संवाद वर्णित है जो युगलोपासना तथा सियानाम के महत्व को सिद्ध करता है । इस संवाद में भाव और संवेदना का प्रयोग हुआ है ।

संतों की नाम सेवा, वेशभूषा और व्यवहार क्रिया को अवधूत मत की संज्ञा देकर उसका परिचय दिया गया है --

स्वामी रामानंद कृत श्री वैष्णव मत सार ।
प्रेमलता श्री नामबर, जेहि महँ मुख्य अधार ।।
भिक्षा वृत्ति पवित्र अति, गर गुदरी सिर टोप ।
प्रेमलता कर खप्पर, नाम रटै तिजि कोष ।।
कंठी तिलक कमंडल, अचला युग कौपीन ।
प्रेमलता राखैं सदा, युगल नाम लयलीन ।।
रसिक भाव निष्काम मन, नाम रटन अधिकाय ।
प्रेमलता सु प्रबोध धन, अचल अछोभ अमाय ।।
माँगि खात माधूकरी, वैष्णव द्वार सुजाय ।
प्रेमलता सह भावना, रटै नाम लय लाय ।।
यही मुख्य अवधूत मत, श्री वैष्णवी रसाल ।
प्रेमलता निसाच्चि जे हि, रक्षक नाम कृपाल ।।

--- दोहा संख्या : 276 से 281

{पृष्ठ : 116-117}

मठ और कुटिया के लोभी गुरुओं और साधुओं के प्रति व्यंग्य भाव और उनका यथार्थ चित्र कवि ने अंकित किया है --

गुरूजी लरैं मुकद्दमा, चेला जोतै खेत ।
प्रेमलता मठ बंद करि, स्वारथ विवश अचेत ।।
ठाकुर जी भूखन मरैं, साधू फिरि फिरि जाँय ।
प्रेमलता गुरू शिष्य दोउ, अन्तै मौज उड़ाँय ।।
ऐसे गुरू ते मंत्र जो, लेत देत बहु दान ।
प्रेमलता दोउ व्यर्थ जिमि, ऊसर बोयो धान ।। -- पृष्ठ-120

ग्रंथ के अंत में कवि द्वारा संकेत किया गया है कि इस ग्रंथ की रचना सं0 1974 के मधुमास शुक्ल त्रयोदशी गुरूवार को पूर्ण हुई थी ।

<u>सीथ प्रसादी माहात्म्य</u> --

सीथ प्रसादी माहात्म्य को "वैराग्य प्रदीपनी" भी कहा गया है । सीथ शब्द संतवाचक है --

मिलन चहहिं सियराम कहँ, उभय लोक महँ छेम ।
संत सीथ चरणोदक, पावैं सो करि नेम ।। । ।। -- पृष्ठ-128
संत सीथ चरणोदक, हरण अमंगल भार ।
पावत होत सु विमल उर, ज्ञान विवेक विचार ।। -- पृष्ठ-129
खात मधूकरी, वीत राग मतिमान ।
श्री सियराम अनन्य मुख, रटहिं नाम नहिं आन ।। -- पृष्ठ-138
ते बड़भागी संत जग, राम रूप सुखधाम ।
जेनकेन विधि उदर भरि, रटहिं निरन्तर नाम ।।
सन्तन सीथ महात्म्य शुचि, अरू प्रदीप वैराग ।
पाठ करै नित उर धरै, जे जिनके बड़ भाग ।। -- पृष्ठ-13[illegible]

अनन्य शतक --

अनन्य शतक ।।9 दोहों का संग्रह ग्रंथ है जो कवि के अनुसार "रसिक अनन्द सु संतमत" है । राम और सीता की अनन्यता का प्रतिपादन ही इस ग्रंथ का लक्ष्य है --

1· सिय बिनु राम न राम बिनु, सीता यह जिय जानि ।
युगल रूप सेइय सदा, प्रेमलता उर आनि ।। --- पृष्ठ-139

2· सिय बिनु आधे राम, तेजहीन ज्यों चंद्र दिन ।
कबहुं न जनमत काम, पूरहिं भजिय जो जन्म सत ।।
सिय युत पूरण राम, सबहीं विधि सब कहं सुखदा ।
सकल कलागुण धाम, राकहिं लहि जिमि पूर्ण शसि ।। -- पृष्ठ-141

3· यद्यपि सीय स्वतंत्र, रहति सदा केहु वश नहीं ।
राम प्रेम को मंत्र, प्रेमलता पढ़ि कीन वश ।।
सिया पिया दोउ एक, विकल होत इक एक बिनु ।
यह विचारि धरि टेक, प्रेमलता दोउ भजिय नित ।। -- पृष्ठ-141

अनन्य शतक में नाम रटन को भी केन्द्रीय विचार बनाया गया है, ऐसी अभिव्यक्तियों में भाषा की सहजता और प्रवाहमयता द्रष्टव्य है --

1· रटहिं नाम पै मुदित मन, होत न कबहुं उदास ।
प्रेमलता रस एक नित, सजि नूतन विश्वास ।। -- पृष्ठ-152

2· कहुं मटिया चटिया कहूं, कहुं खटिया पर सैन ।
कहुं कटिया खासा कहूं, फटिया बसन मिलैन ।।

कहुँ लटिया तनु थूल कहुँ, बटिया बल त्योहार ।

प्रेमलता बटिया नहीं, रटिया नाम उदार ।। -- पृष्ठ-153

नामस्तुति --

नामस्तुति का संकलन "सीताराम रहस्य दर्पण" में भी मिलता है और नाम तत्त्व सिद्धांत दोहावली में भी । इसकी चर्चा "सीताराम रहस्य दर्पण" के अंतर्गत हो चुकी है ।

निजात्मबोध दर्पण --

"निजात्म बोध दर्पण" 283 दोहों की रचना है । इसका रचना-काल "जेठ शुक्ल वर द्वादसी 1967 सम्वत् सरयू तीर" है और रचना स्थल अयोध्या सदगुरू सदन है । कवि ने निजात्म बोध और भक्ति के स्वरूप को विवेचित करते हुए युगल स्वरूप और नाम तत्त्व को महत्त्व दिया है । प्रेम ही भक्ति का काम्य बनकर प्रकट हुआ है । ज्ञानोपदेश और स्वात्म अनुभूति की शैली में रचित ये दोहे भागवत शक्ति का पता देते हैं ।

1. बाम काम धन धाम स ब, तजि भजिहो सियराम ।
प्रेमलता साँची कहत, प्रभु कृपाल सुखधाम ।। --- पृष्ठ-163

2. युगल किशोर उपासना, कनक भवन संयोग ।
कहेउ ध्यान सियराम कर, प्रेमलता अरोग ।।
अष्ट कुंज की भावना, वरणि कही बहु भाँति ।
प्रेमलता सियराम भ जु, तजि जग बगुला पाँति ।। -- पृष्ठ-167

3. कबहुँ झूलनि डोलने, हँसि दोउ गर भुज मेलि ।
प्रेमलता सियराम के, अकथ अनूपम केलि ।। --- पृष्ठ-172

4. श्रद्धा श्री सियराम लखि, सियाराम विश्वास ।

श्री सियराम सुधारणा, प्रेमलता मुद बास ।।

श्री सियराम कृपालु अति, श्री सियराम उदार ।

श्री सियराम सु धर्म के, प्रेमलता लखि तार ।। -- पृष्ठ-176

5. चाह बड़ाई मान्यता, सुख दुख भोग विलास ।

प्रेमलता तजि एकरस, भजु सियराम निरास ।। 131

प्रेमलता सियराम रटि, उपजै आत्मबोध ।। 184

विधि निषेध बन्धन कटै, रटै नाम सियराम ।

प्रेमलता मुद मंगल, दिशि दश आठोयाम ।। 190 -- पृष्ठ-182

अभय अमायक अनघ जो, अचल सकल गुण धाम ।

प्रेमलता धन धाम तजि, रटहिं सदा सियराम ।। -- पृष्ठ-189

कवि ने संतों के स्वरूप और उनकी महत्ता को भक्ति में श्रेष्ठ स्थान दिया है --

1. सन्तन के गुण शेष, श्रुति, ब्रह्मा विष्णु महेश ।

प्रेमलता नहि कहि सकै, श्री सियराम परेश ।। 257

सन्तन के वश । में सदा प्रेमलता सियराम ।

तिन्ह कें गुण को कहि सकै, अखिल लोक अभिराम ।। 258

--- पृष्ठ-190

2. ज्ञान विवेक विराग वर, भक्ति भाव सतसंग ।

प्रेमलतहि सियराम कर, ध्यान दृढ़ाइ अभंग ।

संतन के कछु दिव्य गुण, प्रेमलतहि समुझाय ।

अपेल सिद्धांत प्रकाश --

"अपेल सिद्धांत प्रकाश" नामक ग्रंथ की रचना मिथिला के ज्ञान कूप पर हुई है । इसमें कुल 102 दोहे हैं । अपेल सिद्धांत नाम परत्व सिद्धांत है । कवि ने अंतिम दोहे में इसे स्पष्ट करते हुए कहा है --

सत सिद्धांत समेत यह, नाम परत्व अपेल ।
प्रेमलता पढ़ि सुनि समुझि, परहिं न जन भव जेल ।।

--- पृष्ठ-207

कवि ने सियराम नाम के महत्व को अनेक दृष्टान्तों से स्पष्ट किया है । गुरू, ज्ञान और नाम को भी विचार का विषय बनाया गया है --

गुरू बिनु ज्ञान न लहत कोउ, ज्ञान बिना गति दूरि ।
प्रेमलता तिमि नाम बिनु, अगम रूप सुख मूरि ।। -- पृष्ठ-196

दोहा संख्या 21 से दोहा संख्या 100 तक "प्रेमलता पै नाम बिनु" अर्द्धाली से दोहे की रचना की गई है और नाम परत्व की भावना को पुष्ट किया गया है ।

युगल नाम संबंध अष्टोत्तरी --

"युगल नाम संबंध अष्टोत्तरी" में कुल 116 दोहे हैं और इसकी रचना मिथिला की दुग्धवती नदी के तट पर हुई है । यह ग्रंथ नाम-प्रभाव को स्पष्ट करता है । राम नाम के प्रति भक्ति, सेवा, निष्ठा और परत्व भाव का संकेत हुआ है । कवि ने एक मुख्य और केन्द्रीय भाव को सभी रचनाओं में भाँति-भाँति रूपों में कहना चाहा है । सियाराम की नाम-भावना

को रूपकात्मक भाषा में अभिव्यक्ति दी गई है --

1. राम नाम पूरण शशी, राका श्री सियनाम ।
प्रेमलता सु चकोर मन, अवलोकत सुखधाम ।।
राम नाम सुन्दर जलद, श्री सियनाम सुनीर ।
प्रेमलता मन मोर लखि, कूकत पुलकि शरीर ।। -- पृष्ठ-208

2. राम सु नाम अनंत धन, श्री सियनाम सुकोष ।
प्रेमलता सु खजानची, भोगत जन निर्दोष ।।
राम नाम बोहित सुदृढ, श्री सियनाम सु पाल ।
प्रेमलता रट पवन गुरु, खेवट परम दयाल ।। -- पृष्ठ-211

कवि ने लौकिक और सामयिक उदाहरणों से भी सियराम नाम की महत्ता समझाई है --

1. राम नाम ताला विकट, कुंजी श्री सियनाम ।
प्रेमलता खोलब रटन, मर्मी गुरु सुखधाम ।।
राम नाम गोला प्रबल, श्री सियनाम सु तोप ।
प्रेमलता बारूद रट, फैटी सुगुरु सकोप ।।
राम नाम की रेल सिय, नाम सु अंजन ठाट ।
प्रेमलता पटरी रटन, मन अंजन गुरु गाट ।।

नेही अष्टक --

नेही अष्टक लघु रचना है जिसमें नौ दोहों में नेही सद संतों की परिभाषा और विशेषताएं प्रस्तुत हुई हैं --

1· समदरसी अनिकेत कर, पात्र दक्ष निष्प्रेह ।

संत संग प्रभु चरित प्रिय, गुरुपद कमल सुनेह ।।

--- दोहा संख्या-3, पृष्ठ-223

2· नेही नम्र सु सरल गति भाविक परम प्रवीन ।

बोलहिं प्रिय नित मधुर वच, सब सन रहहिं अधीन ।।

नेही संतों के लक्षण में तिलक, माल, कंठी पंचामुध, सजगता, विनम्रता आदि को भी परिगणित किया गया है ।

षोडश प्रकार की भक्ति --

"षोडस प्रकार की भक्ति" भी लघु रचना है जिसमें कुल 17 दोहों और 1 सोरठा का विधान हुआ है । षोडश प्रकार की भक्ति के निर्देश में मुख्य हैं -- सियराम रटन, संत जन सेवा, इष्टधाम में वास, युगल मंत्र का जप, प्रभु चरित्र में विश्वास, इष्ट की भक्ति और पूजा, नृत्य गान, कुल-लज्जा का त्याग, परिक्रमा आदि ।

प्रभु महं कोनउ भाव दृढ़, करै त्यागि जग आशा ।

प्रेमलता सो पंचदश, भक्ति हरण भ्रम त्राश ।।

गुरु पद पद्म पराग रति, गति मति अमल अमान ।

प्रेमलता सो सर्व पर, षोडस भक्ति प्रधान ।। -- पृष्ठ-226

सन्तमहिमा वीसिका --

"सन्त महिमा वीसिका" में 22 दोहों का संग्रह मिलता है । अंतिम दो दोहों में ग्रंथ-फल वर्णित है । यह लघु रचना है जिसमें

हुआ है । मूलतः सन्त-महिमा के व्याज से राम के चरित की महिमा का ही उद्घोष कवि का लक्ष्य प्रतीत होता है । कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं --

सन्त-महिमा --

सन्तन के संग रहत नित, भक्ति विवश रघुबीर ।
करत चरित बहुभाँति प्रभु, धरि धनु तरकस तीर ।।

--- दोहा संख्या-6, पृष्ठ-227

सन्तन हित वन वन फिरे, छाया विनु पदत्रान ।
श्री सिय अनुज समेत प्रभु, दीन बन्धु भगवान ।।

--- दोहा संख्या-10, पृष्ठ-228

नाम और भक्ति --

नाम सरिस नहिं भजन जग, सतगुरु सम न सुदेव ।
सियवर सरिस न ब्रह्म कोउ, प्रेमलता जेहि सेव ।।
दया सरिस नहिं धर्मजग, साधु सरिस नहिं मित्र ।
सुख न अपर संतोष सम, भक्ती सम न पवित्र ।।   -- पृष्ठ-227

उपदेश पेटिका --

"उपदेश पेटिका" एक दीर्घ रचना है, जिसमें 426 दोहों का एकत्र संकलन हुआ है । स्वानुभूति मूलक शैली में भक्ति और नाम रट की व्याख्या इसमें प्रस्तुत की गई है । इस ग्रंथ में उपास्य प्रभु, सतगुरु, मंत्रोपासना, तिलक माल कंठी, नाम रटन, संसार-त्याग, नामरटन की संख्या का निर्देश, एकाग्रता, दशनाम अपराध-वर्णन, कलियुग-प्रभाव, संत-सेवा, नाम स्मरण सन्त गुण, युगल भाव, अष्टविकार-वर्णन, अष्ट भकारों (भक्ति, भलाई, भागवत,

भजन, भाव, निज भाग, प्रभु भरोस और भगवान ॄ का ग्रहण, रामरूप, भक्ति, मिथिला-महिमा, कामिनी-निन्दा, प्रभु-प्रेम आदि तत्त्वों की विस्तृत चर्चा हुई है । कतिपय उदाहरण द्रष्टव्य हैं --

नाम रटन की संख्या --

साढ़े तीन करोड़ जो रोम जानि निज अंग ।
चारि नाम प्रति लोम रटि, प्रेमलता अलंग ।। -- पृष्ठ-234
द्वादश दून हजार नित प्रतिश्वासा क्षण नाम ।
प्रेमलता सो पुरइ पुनि, रटै सो आवै काम ।। -- पृष्ठ-235

सियाराम का नाम और रूप-वर्णन --

1. सर्वेश्वर सियराम प्रभु, सर्व उपास्य किशोर ।
सुन्दर श्याम सु गोर तनु, प्रेमलता चितचोर ।। -- पृष्ठ-230

2. सर्वोपरि सियराम कर, नाम रूप गुण धाम ।
प्रेमलता अभेद अति, कारण नाम ललाम ।।
पार ब्रह्म सियराम जिमि, अवतारनि के ईश ।
प्रेमलता तिमि नाम के, आखर वर्णाधीश ।। -- पृष्ठ-247

3. चलत फिरत बैठत उठत, खात पियत बतरात ।
प्रेमलता सोवत जगत, सीतैराम सुहात ।।
मंत्र शिरोमणि सर्व हित नाम गरीब निवाज ।
प्रेमलता सो सुलभ अति, निकटसु सहित समाज ।। -- पृष्ठ-248

सन्तों के चार गुण --

लघु भोजन, हिंसा रहित, बोलहिं वचन सम्हारि ।

प्रेमलता सियराम रत, सन्तन के गुण चारि ।। -- पृष्ठ-249

युगल नाम और मधुर भाव --

जय मेरी सिय स्वामिनी, जय जग जननि उदार ।
प्रेमलता कहँ दीजिये, युगल नाम आधार ।।
जय स्वामिनि सर्वेश्वरी, जय मिथिलेश कुमारि ।
नाम रटन दृढ़ कीजिये, निज किंकरी निहारि ।। -- पृष्ठ-261

सियाराम नामाष्टक --

"सियाराम नामाष्टक एक लघु रचना है जिसमें मात्र आठ छंदों का संग्रह है । "सब ते अच्छे जय सियराम" की टेक पर तुलनात्मक रीति से कवि ने सियाराम के नाम और चरित्र की महिमा का प्रतिपादन किया है । आठ छंदों के बाद रचना के फल के रूप में एक दोहे की भी रचना हुई है । इस रचना का संकलन "वृहद् उपासना रहस्य" के अंत में भी किया गया है ।

नास्तिकी प्रश्न आस्तिकी उत्तर --

"नास्तिकी प्रश्न और आस्तिकी उत्तर" श्री सद्गुरु रामशरण "मधुरलता" द्वारा श्री प्रेमलता जी के उत्तरों और उपदेशों का गद्यात्मक संकलन है जो किसी कलकत्ता निवासी मनसाराय नामक आर्य समाजी ब्राह्मण द्वारा पूछे गए नास्तिकी प्रश्नों के उत्तर में कहे गए हैं । इन प्रश्नों का संबंध ~~केउत्तसंबंधी~~ कंठी, तिलक, विशिष्टाद्वैत आदि से है । प्रेमलता जी ने लौकिक, अलौकिक उदाहरणों और प्रमाणों द्वारा अपने कथ्य को पुष्ट करते हुए अपनी समर्थ तार्किक बुद्धि और दृढ़ भक्ति का परिचय दिया है ।

नाम रहस्यत्रयी --

"नाम रहस्य त्रयी" प्रेमलता जी के तीन ग्रंथों का संग्रह है जिसका प्रकाशन भार्गव पुस्तकालय बनारस से हुआ है । इसके ती ग्रंथ निम्नलिखित हैं --

1. सीताराम नाम संबंध बहत्तरी

2. नाम महत्व वर्णन

3. नाम वैभव प्रकाश चालीसा

ग्रंथ के परिशिष्ट रूप में सीताराम नामाष्टक, विशिष्टाद्वैत ध्यान वर्णन, जानकी जन्मस्तुति का संग्रह किया गया है । सिया रघुनाथ शरण रचित श्री सतगुरू सुयश कव्वाली इस ग्रंथ में भी संगृहीत मिलती है ।

सीताराम नाम संबंध बहत्तरी --

"सीताराम नाम संबंध बहत्तरी" 72 कवित्तों और दोहों की रचना है । ग्रंथ के अंत में 3 दोहे, एक सोरठा और 2 कवित्त भी जोड़े गए हैं । कवि प्रेमलता जी ने युगल नाम संबंध पर विचार किया है । नामोपासना की दृष्टि से इस ग्रंथ की विशेषता "सीताराम" शब्द का प्रयोग है । सामान्यतः अन्य ग्रंथों में नाम-परत्व-विवेचन के क्रम में सियाराम का ही प्रयोग हुआ है पर "सीताराम नाम संबंध बहत्तरी" में शीर्षक के अनुकूल सीताराम शब्द को ही महत्व मिला है । रचना की आधार भूमि "सीताराम रटन" है । कवि ने युगलोपासना को विभिन्न भावभूमियों में अभिव्यक्त किया है । सीताराम नाम संबंध विषयक प्रमुख उदाहरण इस प्रकार हैं --

1. सीताराम रटत कटत मोह जाल जू । -- छंद संख्या-8, पृष्ठ-7

2• सीता, बिनु राम नाम भूलि न भजत जू ।

सीय जू विहीन राम रूप कौ न बोध होत

सीय जू विहीन राम अवगुण बजत जू ।

सीय जू विहीन राम दुखित रहहिं

अति सीय जू सु नाम सुनि मुख उपज तजू ।।

सीय जू विहीन राम कारज के समान जानि

सीय जू कौ राम इक क्षण न तजतजू ।।

रटत युगल नाम मुदित सुजान जौन

सीताबिनु राम नाम भूलि न भजत जू ।।

दोहा -- राम प्राण के प्राण सिय, सिय जू वल्लभ राम ।

रहत न क्षण इक एक विनु प्रेमलता वशु याम ।।

--- छंद संख्या-53, पृष्ठ-32

नाम महत्व वर्णन --

नाम महत्व वर्णन में प्रारम्भिक दो दोहों के बाद कवित्त के 19 छंद और पुनः तीन कवित्त हैं जिनमें क्रमशः 8-8 और 9 छंद हैं, अंत में सवैया है जिसमें 26 छंद हैं । ग्रंथ का समापन एक दोहे से हुआ है ।

प्रस्तुत ग्रंथ में सियाराम नाम रटन को सर्वाधिक महत्व देकर नाम-रटन से विमुख प्राणियों को हीन भाव से देखा गया है और कवि ने आक्रामक मुद्रा में ऐसे व्यक्तियों को नीच, खल, ठग, दुष्ट, चोर, खर, बद, डोम, लठ, बंग, कूर कहा है ।

अंतिम कवित्तों और सवैये में कलात्मक दृष्टि से श्रेष्ठ पद मिलते हैं --

कवित्त --

1. सीताराम नाम की अपार प्रभुताई है । -- पृष्ठ-56-58

2. नाम महाराज की ~~बैजाऊं~~ मैं जाऊ बलिहारियाँ । -- पृष्ठ-59

सवैया --

3. श्री सियराम सु नाम बिहाई

रचे जेहि काम कुभोग विकारा । -- पृष्ठ : 62-68

नाम वैभव प्रकाश चालीसा --

"नाम वैभव प्रकाश चालीसा" में चालीस सवैयों का संकलन है, अंत में सवैयों के अतिरिक्त एक दोहा भी संकलित है । ग्रंथ समाप्ति के पश्चात् श्री सियारघुनाथ शरण द्वारा दोहों में की गई गुरु स्तुति भी वर्णित है । कवि ने रामचरित और राम नाम को वर्ण्य विषय घोषित किया है ।

1. नाम समाम सु यंत्र न मंत्र न तंत्र न पाठ न पूजन ध्याना ।
   नाम समान न प्रेमलता कोउ तीरथ वर्त न यज्ञ न दाना ।

   --- पृष्ठ-71

2. रटिये रटिये सियराम सु नामहिं वेगि न लावहु रे मनवारा ।
   सटिये सटिये गुरु पायनि ते जो रटावहिं नाम छुड़ाईं विकारा ।।
   अटिये अटिये मिथिलापुर धामहिं ठाटि सु वैष्णव वेष उदारा ।
   कटिये कटिये दुरवासना अंकुर प्रेमलता उर होइ उजारा ।।

   --- पृष्ठ-77

सीताराम नामाष्टक --

"नाम तत्त्व सिद्धांत दोहावली" में दोहों के संग्रह रूप "सियाराम नामाष्टक" की भाँति श्री नामरहस्यत्रयी में भी "सीताराम नामाष्टक" का संकलन मिलता है जिसमें आठ कवित्तों की रचना की गई है। मुख्य कवित्त का शीर्षक "मेरे तो अधार एक सीताराम नाम है" है। रचना का एक उदाहरण द्रष्टव्य है --

मेरे तो अधार एक सीताराम नाम है।
काहू के अधार ज्ञान भाति विराग योग
काहू के अधार जप दान तप धाम हैं।
काहू के अधार पाठ पूजन रसोई केर
काहू के अधार रूप चरित ललाम हैं।
काहू के अधार व्रत नेम नृत्य गान तान,
काहू के अधार ध्यान भजन अकाम है।
काहू के अधार बुधि विरति विवेक बल,
मेरे तो अधार एक सीताराम नाम हैं।

--- पृष्ठ-81, कवित्त संख्या-1

चैतन्य चालीसा --

कवि श्री प्रेमलता जी के अन्य ग्रंथों की भाँति यह चालीसा भी भक्ति परक ग्रंथ है जिसमें भक्ति नाम और साधक की पात्रता का विचार किया गया है। भक्ति भाव की अनूठी व्यंजना इसमें की गई है।

नित्य प्रार्थना --

"नित्य प्रार्थना" का प्रकाशन श्री सतगुरु रामशरण मधुरलता द्वारा सम्वत् 1987 में प्रथमवार हुआ था । यह रचना एक संकलन ग्रंथ है । सम्पादक ने अपनी भूमिका में लिखा है कि "इस पुस्तिका के करता श्रीमान् जी की कई पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी है । जो अति पवित्र और भक्ति-भावों के रस से परिपूर्ण होने के कारण सुहृद् सुजनों ने अति आदर संयुक्त अपनाय ग्रंथकार जी को भूरि भूरि धन्यवाद दे रहे हैं । अतः उन्हीं ग्रंथों में से इस दीन ने भक्त जनों के सुविधार्थ यह लघु [नित्य प्रार्थना] नाम की पुस्तिका संग्रह किया है ।

[नित्य प्रार्थना भूमिका]

नित्य प्रार्थना में गुरु प्रार्थना, नाम-प्रार्थना, रूप-प्रार्थना, लीला-प्रार्थना, धाम-प्रार्थना, मिथिला-धाम-प्रार्थना, हनुमत्-प्रार्थना सज्जन-प्रार्थना, श्री राम जी की प्रार्थना, श्री जानकी जी की प्रार्थना, श्री नामाष्टक, सियाराम नामाष्टक, लाख बात की एक बात एवं सियाराम नाम हजारा माला का संकलन हुआ है । अंत में मधुरलता जी द्वारा ग्रंथकार की प्रार्थना और परिचय भी प्रस्तुत है ।

जानकी बधाई --

"जानकी बधाई" का प्रकाशन काल सं0 1978 है "जिसमें परम आह्लादिनी शक्ति श्री जानकी जी के प्रादुर्भाव से लेकर पाँच वर्ष तक की बाल लीला पर्यंत अति विचित्र चरित्र वर्णन किया गया है "। इस ग्रंथ में 36 छंदों में जन्म बधाई और 25 छंदों में बाल लीला वर्णित है.। इस रचना

का प्रथम पद "जानकी जन्म स्तुति" अन्य ग्रंथों में भी संकलित हुआ है । जानकी के लीला-वर्णन द्वारा कवि ने वात्सल्य एवं दास्य भाव का सम्मिलित रूप व्यक्त किया है । कुछ प्रमुख उदाहरण निम्नलिखित हैं --

1. जय जानकी जग जननि स्वामिनि,
प्रणत जन सुखदायिनि ।
गुण रूप शोभा खानि सीता
राम पिय मन भायिनि ।।
जय जनक जाया वन निकाया
शरण आये स्वामिनि ।
अपराध क्षमि सियापाल देवि
कृपालु राम सु भामिनि ।। --- छंद संख्या-3

2. नृपरानी परम धन पायो री ।
अजा अनादि अनूप नाम वह,
वेद संत गुण गायोरी ।
सगुण ब्रह्म जगदम्ब सिया सोई
लीला तनु प्रगटायो री ।। --- छंद संख्या-9

जानकी बधाई में गजल, लावनी, पद, राग कजरी आदि छंदों और पदों का प्रयोग हुआ है । बधाई के अनेक चित्र बड़े आकर्षक बन पड़े हैं । यथा --

1. सिया जू मेरी स्वामिनि सब सुख मूल ।
प्रगट भई मिथिलेश भवन में, नाश्यो कठिन कुशूल ।। -- पद संख्या-30

2· हाँ, नीकी लागे लली की बधाई । -- पद संख्या-31

3· जनकपुर आज भयो गुलजार । -- पद संख्या-33

बाल लीला के चित्रों में पालना, सिया-छवि, केलि, अंग शोभा, रूप-शोभा, पतंग-क्रीड़ा, स्नान-लीला, अंग-शृंगार, खेल आदि प्रमुख हैं । कुछ उदाहरण इस प्रकार है --

1· सिया जू को रूप निरखि दुख भाजे ।

गोर वदन सुख सदन सकल अंग, लखि अगणित रति लाजे ।।

-- पद संख्या-6

2· सुनैना माई सियहिं सु लाड़ लड़ावै ।

विहसि उठाय गोद मुख भूपति, अति हित कंठ लग ावै ।

-- पद संख्या-10

3· सिया जू अब कछुक सयान भई ।

खेलति फिरति सखिन संग प्रमुदित बढ़ति कला नित नई ।।

-- पद संख्या-12

4· सिया जू को रूप अनूप अपार । -- पद संख्या-18

5· सिया जू को आज बनी छवि नीकी ।

उमा रमा रति शची शारदा, उपमा जोग न फीकी ।

-- पद संख्या-20

श्री रामानंदी अवधूतामार्ग [मुख्य श्री वैष्णव धर्म सिद्धान्त] --

श्री रामानंदी अवधूता मार्ग एक काव्य-संकलन है । जिसमें इस ग्रंथ के अतिरिक्त दो अन्य ग्रंथ भी हैं -- असली नकली परमहंसनि

की पहिचान और परमहंस ज्ञान प्रबोधक पचीसी । सभी ग्रंथों की रचना मंजु छन्द में हुई है । प्रथम में 42 छँद हैं । नाम-रटन सतगुरू, अन्य मतवादों और पाखंडियों का विरोध, आडंबर-निन्दा, वैष्णवों के वास्तविक धर्म आदि इसके प्रकृत विषय हैं ।

अवधूता मारग यह हमरा लोक वेद से न्यारा है ।
विधि निषेध कर काम नैं इसमें सत रज तम से पारा है ।।
राम उपासक संप्रदाय श्री सीता इष्ट हमारा है ।
युगल ध्यान युग मंत्र नाम युग मुख्य सु रस शृंगारा है ।। 16

श्री रामानंदी अवधूता मार्ग -- पृष्ठ-5

असली नकली परमहंसनि की पहिचान --

मंजु छन्द में इस ग्रंथ की रचना की गई है । इस संकलन का प्रकाशन संवत् 1979 में सतगुरू रामशरण एवं बाबू काशी प्रसाद भार्गव द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, त्रिलोचन काशी से हुआ । यह ग्रंथ मूलतः श्री सतगुरू कृपा प्रकाश ग्रंथ का एक भाग घोषित किया गया है ।

"असली नकली परमहंसनि की पहचान में असली नकली साधुओं के गुण-दोषों का प्रत्याख्यान हुआ है इसमें । 16 छंदों तथा दो दोहों का प्रयोग हुआ है ।

समझि बूझि संग करिय सुरिय बहु परमहंस मतवालों से
असली नकली उभय परखिये जानि पकी हालों से ।।
असली सहज स्वभाव बोलते नकली मन मुख वालों से ।
प्रेमबता ठगते तन मन धन नकली नाना जालों से ।। -- पृष्ठ-30

परमहंस ज्ञान प्रबोधक पचीसी --

मंजु छन्द में रचित इस ग्रंथ में 26 छन्द हैं जिसमें कवि ने आत्म परिचय के साथ-साथ सच्चे साधुत्व की ओर भी संकेत किया गया है । परमहंस उच्च मानवीय गुणों के साथ भक्ति का श्रेष्ठ स्वरूप है । कुछ उदाहरण द्रष्टव्य है --

1. टोप गूदरी वारे साधु खास जानकी जी के हैं ।
आन देव की आश न स्वप्नेउ परिकर प्रिय सिय पी के हैं ।।
विधि निषेध बन्धन ते न्यारे फीके कह कोउ नीके हैं ।
प्रेमलता रत नाम निरन्तर शत्रु न मीत किसी के हैं ।। --पृष्ठ-38

2. युगल नाम रस रसिक शृंगारी सिय पिय धाम निवासी हैं ।
अधिकारी श्री कनक भवन के करत सु खास खवासी हैं ।।
अष्टकुंज मुद मोद पुंज प्रद जहं विहरैं सुख रासी हैं ।
प्रेमलता दम्पति सम्पति संग जगत प्रपंच उदासी हैं ।। -- पृष्ठ-41

सत्य सिद्धान्त रहस्य प्रकाश (आत्म अनात्म ज्ञान) --

प्रस्तुत ग्रंथ का प्रकाशन श्री सिया रघुनाथ शरण "प्रेममंजरी", संकटमोचन हनुमान मंदिर, बनारस से कुछ वर्षों पूर्व हुआ है । ग्रंथ में प्रकाशन काल नहीं है । ग्रंथ के प्रथम और द्वितीय प्रकरण में नाम भक्ति एवं दर्शन विषयक 212 दोहे हैं । तृतीय प्रकरण में 555 दोहों में सीतामढ़ी का माहात्म्य वर्णित हुआ है ।

1· पुरुष जगत पति राम हैं, जड़ चेतन जिउ नारि ।
रमत सदा सो सबनि संग, विविध स्वरूप सुधारि ।।
-- आत्म अनात्म ज्ञान, पृष्ठ-1

2· महारानि अह्लादिनी, भक्ति शक्ति शिरमौर ।
तिन्हि के वश श्री राम नित, रहत न जानति और ।।
-- पृष्ठ-7

श्री धाम श्री सीतामढ़ी माहात्म्य --

यह ग्रंथ "सत्य सिद्धान्त रहस्य प्रकाश" के तृतीय प्रकरण में समाविष्ट है । इसका अलग से 1945 श्री सिया सहचरी, मुजफ्फरपुर द्वारा प्रकाशन हुआ है । इसमें 555 दोहे संकलित हैं जिनमें सीतामढ़ी की दिव्यभूमि का माहात्म्य और उसके प्रभावशाली परिवेश का जीवंत चित्रण हुआ है ।

1· मध्य सु पुरी सुलक्षणा, सीतामढ़ी सुनाम ।
राजति अनुपम अवल जहँ, निवसत श्री सियराम ।।
-- दोहा संख्या-26, पृष्ठ-3

2· उर्विजा-कुण्ड-वर्णन --
गौर श्याम आभा परत, हरित कुंड को नीर ।
भयेउ न जानत भेद कोउ, प्रभु गति मति गंभीर ।
-- दोहा सं0-50, पृष्ठ-5

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि कवि श्री सियालाल शरण प्रेमलता जी का काव्य-वैभव अत्यंत समृद्ध और नाना रूपकात्मक है । इनके ग्रंथों की संख्या का निर्धारण "श्री प्रेमलता जी के वृहद् जीवन चरित्र,

रामभक्ति में रसिक संप्रदाय [डॉ0 भगवती प्रसाद सिंह] तथा हिन्दी साहित्य : उद्भव और विकास [डॉ0 हजारी प्रसाद द्विवेदी] तथा प्रचलित मान्यताओं के अनुसार यद्यपि 33 है परन्तु उपर्युक्त विवेचित ग्रंथों के वैशिष्ट्य और विषय वस्तु-विवेचन के आधार पर उनके ग्रंथों की संख्या अधिक हो जाती है । सामान्यत: उनके ग्रंथों को संकलन-ग्रंथ, ग्रंथ और लघु रचना की कोटियों में विभक्त किया जा सकता है । इस दृष्टि से प्रेमलता जी के ग्रंथों की वास्तविक संख्या निम्नलिखित ठहरती है --

संकलन-ग्रंथ --

1. वृहद् उपासना रहस्य में संकलित रचनाएं --

    1. सतगुरू प्रसंग
    2. सियाराम नाम प्रसंग
    3. रूप-प्रसंग
    4. लीला प्रसंग
    5. धाम प्रसंग
    6. उपासना प्रसंग
    7. उपासक-प्रसंग
    8. पंच संस्कार प्रसंग
    9. अष्टयाम प्रसंग
    10. षट् शरणागत प्रसंग
    11. षट् सम्पत्ति प्रसंग

12. प्रेमभक्ति प्रार्थना प्रसंग

13. प्रश्नोत्तर प्रसंग

14. अन्तिम ज्ञान प्रसंग

15. उत्तम वैष्णवों की शुभ लक्षणावली [गद्य-रचना]

16. शिव-पार्वती-संवाद [गद्य-रचना]

17. प्रभु सेवा में बत्तीस अपराध [लघु रचना]

18. सत्संग के बयासी अपराध वर्णन [लघु रचना]

19. दशनामापराध वर्णन [लघु रचना]

2. सीताराम रहस्य-दर्पण में संकलित रचनाएँ --

20. षट् ऋतु विमल विहार

21. जानकी विनय नामादि महत्त्व

22. मिथिला विभूति प्रकाश चालीसा

23. वैराग प्रबोधक बहित्तरी

24. हितोपदेश शतक

25. सीताराम नाम रूप अनन्यता वर्णन

26. सीताराम नाम जापक महत्त्व

27. ज्ञान पचासा

28. भक्ति महारानी जू के अड़सठ अंग [लघु रचना]

29. जानकी जन्मस्तुति [लघु रचना]

30. प्रेमलता बाराखरी

3• नाम तत्व सिद्धांत दोहावली में संकलित रचनाएं --

31• नाम महिमा दृष्टान्तावली

32• सतगुरू शब्द यथार्थ ज्ञान वर्णन

33• गुरू पदार्थ प्रबोधिका

34• संत सीथ प्रसादी माहात्म्य

35• अनन्य शतक

36• नामस्तुति

37• निजात्मबोध दर्पण

38• अपेल सिद्धांत प्रकाश

39• युगल नाम संबंध अष्टोत्तरी

40• जोखी नही अष्टक [लघु रचना]

41• षोडश प्रकार की भक्ति [लघु रचना]

42• संत महिमा वीसिका [लघु रचना]

43• उपदेश पेटिका

44• सियाराम नामाष्टक [लघु रचना]

45• नास्तिकी प्रश्न आस्तिकी उत्तर [गद्य रचना]

4• जानकी जन्मस्तुति में संकलित रचनाएं --

46• जानकी जन्मस्तुति [छंद]

5• प्रेमलता पदावली --

47• प्रेमलता पदावली

6· सार सिद्धांत प्रकाश --

48· सार सिद्धांत प्रकाश

7· नित्य प्रार्थना में संकलित रचनाएं --

49· नित्य प्रार्थना

8· जानकी बधाई में संकलित रचनाएं--

50· श्री जानकी बधाई

51· बाल-लीला

9. 52· चैतन्य चालीसा

10 53· विश्व विलास वीसिका

~~9·~~ 11 नाम रहस्यमयी में संकलित रचनाएं --

54· सीताराम नाम संबंध बहत्तरी

55· नाम महत्व वर्णन

56· नाम वैभव प्रकाश चालीसा

57· सीताराम नामाष्टक {लघु रचना}

58· विशिष्टा द्वैत ध्यान वर्णन {लघु रचना}

इस प्रकार स्पष्ट है कि प्रेमलता जी की कुल छोटी-बड़ी रचनाएं 63 हैं, जिनमें ग्रंथों की संख्या 49, लघु रचनाओं की संख्या 11, गद्य रचनाओं की संख्या 3 है । संपादित संकलन ग्रंथों की संख्या 12 मिलती है । उक्त सभी रचनाएं रामभक्ति की मधुर भक्ति काव्य धारा के विकास के सोपानों को प्रस्तुत करने में सहायक हुई हैं ।

-------- 0 --------

चतुर्थ अध्याय

श्री सियालाल शरण जी "प्रेमलता" के काव्य में भक्ति और दार्शनिकता

चतुर्थ अध्याय

श्री सियालाल शरण जी "प्रेमलता" के काव्य में भक्ति और दार्शनिकता

संत कवि स्वामी श्री सियालाल शरण जी "प्रेमलता" सांप्रदायिक रसिक कवि आचार्य होने के साथ-साथ विशुद्ध भावावेशी भक्त संत थे जिनमें "सियाराम" नाम के प्रति अनन्य अनुराग और गंभीर निष्ठा का भाव था माधुर्यमूला भक्ति और दार्शनिक तत्वों का सैद्धान्तिक और व्यावहारिक चिंतन प्रेमलता जी के काव्य में मिलता है ।

भक्ति और ज्ञान निःश्रेयस प्राप्ति के दो प्रमुख मार्ग है, ये परमार्थ के साधन ही नहीं, स्वयं परमार्थ रूप हैं । श्रीमद्भागवत के एकादश स्कंध में मानव के परम कल्याण के साधन रूप में ज्ञानयोग, कर्मयोग और भक्तियोग की चर्चा मिलती है । वहाँ स्पष्ट कहा गया है कि इनके अतिरिक्त कोई चौथा उपाय नहीं है ।[1] वस्तुतः भक्ति और भाग दोनों शब्द एक ही धातु से निष्पन्न

---

1. योगास्त्रयो मया प्रोक्ता नृणां श्रेयोविधित्सया ।
ज्ञानं कर्म च भक्तिश्च नोपायो न्योऽस्ति कुत्रचित् ।।
--- श्रीमद्भागवत, 11/20/6

होते हैं । ऋग्वेद संहिता 8/27/11 में "भक्तये" यह चतुर्थी विभक्ति का रूप आया है । उसका अर्थ भाष्यकारों ने सम्भजनाय = लाभाय अर्थात् विभागजनित लाभ के लिए -- किया है । ब्राह्मणों में भी ऐतरेय ब्राह्मण की तृतीय पंचिका के 20 वें खण्ड में और सप्तम पंचिका के चतुर्थ खण्ड में एवं दैवत् ब्राह्मण के तृतीय अध्याय की 22 वीं कण्डिका में भक्ति शब्द प्रयोग मिलता है । वहाँ भक्ति का अर्थ भाग ही है । वैदिक वाङ्मय में केवल श्वेताश्वतर उपनिषद् में वर्तमान प्रचलित अर्थ में भक्ति[2] शब्द आया है । वहाँ भक्ति शब्द श्रद्धा और प्रेम के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है

ईश्वर की प्राप्ति के साधनों में भक्ति श्रेष्ठतम साधन है । ईश्वर के साथ रागात्मक संबंध को शास्त्रों में विविध प्रकार से व्याख्या कर भक्ति संज्ञा दी गई है । वैधी और रागात्मिका ये भक्ति के दो मुख्य भेद हैं । रसिक संप्रदाय या मधुरोपासक भक्तों का संप्रदाय भी गोपियों की प्रेमा भक्ति के अनुसार रसिक हृदयों की दिव्यानुभूति का परिणाम है । इस भावना में रसिक या शृंगारिक प्रवृत्ति की प्रधानता होती है ।

रसिक भाव की भक्ति में नाम और रूप की प्रधानता मिलती है । विशेषकर आलोच्य कवि प्रेमलताजी के काव्य में नाम तत्त्व और रूप-तत्त्व का बड़ा ही मनोहारी चित्रण मिलता है । विरक्त कवि-चित्त द्वारा

---

2. यस्य देवे परा भक्तिर्यथा देवे तथा गुरौ ।
तस्यैते कथिता ह्यर्थाः प्रकाशन्ते महात्मनः ।।
--- श्वेताश्वतर उपनिषद् -- 6/23

सर्वस्व समर्पण कर देने की दुर्दम लालसा, अखंड भाव से नाम रटन की एकमात्र इच्छा जड़-चेतन सम्पूर्ण सृष्टि के कण-कण में अपने अराध्य सियाराम नाम की ध्वनित रस माधुरी का अद्भुत संश्लेषण उनके काव्य में उपलब्ध होता है । यह नाम रटन कीर्तन ही है । श्रीमद्भागवत् में कहा है कि "सत्ययुग में ध्यान के द्वारा त्रेतायुग में यज्ञ के द्वारा, द्वापर में पूजार्चना के द्वारा जो फल प्राप्त होता है, कलियुग में वही केवल हरिकीर्तन के द्वारा प्राप्त होता है ।[3] वृहन्नारदीय पुराण (1/41/15) में हरिनाम को एकमात्र गति का कारण सिद्ध किया गया है । श्री चैतन्य शिक्षाष्टक में कहा गया है "प्रभो ! आपने अपने नाम में अपनी समस्त शक्ति निहित कर दी है और आपकी दयालुता इतनी है कि अपने नाम-स्मरण के लिए आपने कोई समय भी निश्चित नहीं किया है । आपकी मुझ पर इतनी असीम कृपा है, पर मेरा यह दुर्भाग्य है कि अभी तक आपके नाम में मुझे अनुराग उत्पन्न नहीं हुआ ।"[4]

---

3. कृते यद् ध्यायतो विष्णुं त्रेतायां य जतो मखैः ।
द्वापरे परिचर्यायां कलौ तद् हरि कीर्तनात् ।।

---- श्रीमद्भागवत, 12/5/52

4. नाम्नामकारि बहुधा निज सर्वशक्ति
स्तत्रार्पिता नियमितः स्मरणे च कालः ।
एतादृशी तव कृपा भगवन् ममापि
दुर्दैवमीदृशमिहाजनि नानुरागः ।।

--- श्री चैतन्य शिक्षाष्टक-2

नाम प्रेमी तुलसी ने भी नाम-महत्व की बारम्बार चर्चा की है --

कहौं कहाँ लगि नाम बड़ाई । रामु न सकहिं नाम गुन गाई ।।
सियराम सरूप अगाध अनूप विलोचन मीनन को जलु हैं ।
श्रुति राम कथा मुख राम को नामु हिए पुनि रामहिं को थलु है
मति रामहि सों, गति रामहिं सो, रति राम सों,रामहि को बलु
सब की न कहै तुलसी के मतें इतनो जग जीवन को फलु है ।।

---- कवितावली, उत्तरकाण्ड/37

संत कवि श्री सियालाल शरण जी"प्रेमलता" के काव्य में भक्ति और दार्शनिकता के विविध सोपान और सूत्र प्राप्त होते हैं, उनमें सद्गुरु-महत्व, नाम-महत्व, रूप-प्रसंग, उपासना और उपासक प्रसंग, पंच संस्कार, अष्टयाम, प्रेम भक्ति प्रार्थना प्रसंग, सत्संग, धाम-महत्व, दार्शनिक मत, तिलक-विचार, सखी रूप और भावपरक "महली" नाम आदि का समुचित विवेचन हुआ है । प्रेमलताजी का कवित्व साधनामय व्यक्ति से एकाकार हो गया प्रतीत होता है ।

सद्गुरु-महत्व --

प्रेमलताजी ने "वृहद् उपासना रहस्य" में सद्गुरु को दम्पति {सियाराम} के* अंश से ही उत्पन्न, साकेतधाम की नित्य लीलानुरक्त सखियों का अवतार माना है :-

पुरुष भाव सबकर करि दूरी । सखी भावना दीजै रूरी ।।
सखी भाव विनु मम अंग सेवा । लहहिं न जीव होय वड़देवा ।।

भयेउ अहहिं आचार्य बहु, सिय सु संप्रदा माहिं ।

सखिनि के सु अवतार सब, नारि पुरूष जग आहिं ।।

--- पृष्ठ : 121-122

वृहद् उपासना रहस्य, तृतीय संस्करण, 1986 संवत्

सद्गुरू अपनी दिव्य क्षमता से चित देह से परम पुरूष के संबंध का स्वरूप निश्चित कर साधक को तदनुकूल सेवा का उपदेश प्रदान करता है । सद्गुरू ही लौकिक संबंध भावना को अलौकिक संबंध में परिणत कर भाव परिष्कार की उच्च स्थिति में प्रवेश कराता है । सांसारिक संबंधों की तरह भक्त और भगवान के बीच भी पाँच प्रकार के भाव-संबंध होते हैं -- मधुर, सख्य, दास्य, वात्सल्य और शान्त ।[5] प्रेमलता जी ने भी "सियराम" की प्राप्ति में सतगुरू को आवश्यक माना है ।[6] उन्होंने गुरू को "समदर्शी" माना है, उसका भीतर बाहर एक समान होता

---

5. सम्बन्धाख्यं परं तत्त्वं सहजानन्ददायकम् ।

तत्प्राप्त्यैवहि जीवानां प्रीतिर्भवति चाचला ।।

पंचधा भेदमस्तीह तच्छृणुष्व महामुने ।

शांतो दास्यस्तथा सख्यः वात्सल्यश्च शृंगारकः ।।

--- हनुमत्संहिता, पृष्ठ-23

6. श्री सतगुरू विनु द्रवत नहिं, श्री सियराम न राम ।

श्री सियराम सु नाम विनु, लहहिं न जन विश्राम ।।6।।

तन मन धन ते वचन ते, गुरुहिं करै सन्तुष्ट

सीखै युगल उपासना, सियाराम को पुष्ट ।।8

--- व० उ० र०, पृष्ठ : 1-2

है --

भीतर बाहर येक सुरंगा । रंगी रटहिं सियराम अभंगा ।।

दंभ कपट उर मान न मोह । पदमत्सर छल काम न कोहा ।

समदरसी सुचि अचल अचाही । नाम रसिक गुरू की जिय ताही ।

--- वृ0 उ0 र0, पृष्ठ-12

वृहद् उपासना रहस्य में गुरू महिमा के अनेक चित्र मिलते हैं और उनमें कवि के सर्वस्व समर्पण तथा श्रद्धा भाव का संयोग मिलता है --

1· सतगुरू दीन दयाल प्रभु, छमि कृपाल वर देहु ।

संत संग तव चरन रति, युगल नाम अस नेहु ।।

सतगुरू जूठनि खाइये, सुनिये सतगुरू बैन ।

चरण धोइ पीजै सुनित, अवसि खुलैं हिय नैन ।। --- पृष्ठ-22

2· गुरुहिं समर्पै आतमा, रंच न राखै भेद ।

रटै नाम सेवै सदा, होइ सुशिष्य अखेद ।।

तन मन धन गुरू देव कहँ, अरपन करै सप्रेम ।

पूजै गुरू मूरति सदा, पावै शिष्य सुक्षेम ।। ---- पृष्ठ-23

"सतगुरू शब्द यथार्थ ज्ञान वर्णन" नामक ग्रंथ में कवि ने सतगुरू के व्यवहार की सार्थकता और उसकी मार-फटकार का वर्णन कर गुरू-शिष्य संबंध पर प्रकाश डाला है --

गार मार फटकार अरु, तिरस्कार सविचार ।

करै भरै आनंद उर, प्रेमलता सुकुमार ।। ।

सतगुरू मार कुम्हार जिमि, गदि गदि करत सुढार ।
भीतर से रक्षा करत, बाहिर ते फटकार ।। 3
गुरू दरजी शिष्य कापड़ा, काटि करै सतखण्ड ।
पुनि तेहिं सीं जामा करै, प्रेमलता दै दण्ड ।। 4
सतगुरू देव किशान शिषि, खेत जोति बहुबार ।
उपजावत वर भजन अन, रक्षा करि सविचार ।। 7
गुरू धोबी शिषि मलिन पट, अमल करत अति धोय ।
कूटि मोगरिनि पटकि शिल, सबहिं सुखद तब होय ।। ।।
गुरू बढ़ई शिषि लाकरी, काटि छाँटि गदि छोलि ।
प्रेमलता प्रगटावहीं, पुतरी अति अनमोलि ।। 15

इसी ग्रंथ के गुरू ज्ञान प्रसंग में सच्चे गुरू की परिभाषा बताई गई है --

साँचे श्री सतगुरूनि के, कहौं कछुक गुण भाखि ।
बचि हैं गुरूनि ते सुजन, प्रेमलता उर राखि ।।
श्री सियनाम सु नाम रस, रटि रटि पियत सप्रेम ।
प्रेमलता त्र्यकाण्ड तजि, विपुल साधना नेम ।।

--- नाम तत्त्व सिद्धांत दोहावली, पृष्ठ-63

श्री गुरू पदार्थ प्रबोधिका नामक ग्रंथ में भी सतगुरू की महत्ता का संकेत हुआ है तथा उसे उपासना का प्रमुख हेतु सिद्ध किया गया है --

1. सतगुरू बिनु न उपासना, सतगुरू बिनु नहिं ज्ञान ।
सतगुरू बिनु नहिं मिलत प्रभु, जिन्हि बिनु नहिं कल्यान ।। --पृष्ठ-82

2• सांचे गुरू के वचन शर, वेधे उर जब आय ।

प्रेमलता भागे भभरि, कामादिक दुख दाय ।।

सांचे गुरू के शब्द की चोट वज्र की मार ।

प्रेमलता जेहि उर लगी, चूर चूर करि डार ।।

सतगुरू मारा सो जिया, युगयुग रहित कलेश ।

प्रेमलता प्रमुदित सदा, पाइ सु नाम परेश ।। ---- पृष्ठ-92

"सार सिद्धांत प्रकाश" नामक ग्रंथ में सद्गुरू का लक्षण-निर्देशकर पंडा, पुरोहितों से सावधान किया गया है --

1• अस विचारि गुरू करिय भूलि जनि प्रोहित पंडा ।

प्रोहित पंडा याचकी, दान मान तिहि देउ ।

दिक्षा वैष्णव सन्त से, प्रभु संबंधी लेउ ।। ---- पृष्ठ : 110-111

2• पूजा गुरू की कीजिये, तन मन धन सब देइ ।

सब देवन के देव लखि, तरो भवहिं पद सेइ ।।

तरो भवहिं पद सेइ जानि गुरू राम सरूपा ।

जिन्ह श्री वैष्णव वेष मंत्रमणि दीन्ह अनूपा ।।

श्री सियराम रटाय हरेउ सब भ्रम भव रुजा ।

प्रेमलता अस समुझि करो नित गुरू की पूजा ।। ---- पृष्ठ-96

"षट्ऋतु विमल विहार" में गुरुकृपा को स्वात्म अनुभूति के रूप में कवि ने चित्रित किया है --

1• सुखनिधान गुरुदेव मिले मोहिं सोइ मेरे उर बसते हैं ।

रटवावहिं सियराम कृपा करि रोकहिं जात कुरस्ते हैं ।।

तेहि लगि कठिन विषय कामादिक जन मन अधि कन धस्ते हैं

प्रेमलता जे लाल गुरू के रहिहिं सदा अलमस्ते हैं ।   --- पृष्ठ-122

2• कितनेउ करै योग जप तप ब्रत गुरू विनु ज्ञान विराग T है ।

होइहै सबकृत राख होम ज्यों जो भोगनि मन पागा है ।।

कोटि न कर्म धर्म साधन सिधि साधै विधिवत जागा है ।

प्रेमलता गुरू विमुख व्यर्थ सब मकरी कर जिमि तागा है ।।

--- पृष्ठ-122

प्रेमलताजी ने गुरूशिष्य को परीक्षोपरांत ही चुनाव के योग्य माना है । नकली गुरूओं को गुरूआ कहकर उनके प्रति तीव्र आक्रमण का भाव प्रदर्शित हुआ है --

1• नकली गुरूअनि के सिषि जोई । वेश्या सुत समजान हुसोई ।

लघु वरनी गुरू साधु वेष धरि । उत्तम वरनिहिं लेत सिष्य करि ।।

छल करि अथवा क्वनिहु भांती । मूंडत ऊंचनि गुरू लघु जाती ।।

नीति विचारि न जे गुरू करहीं । ते सिषि गुरू दोउ भवनिधि परहीं ।।

--- वृहद् उपासना रहस्य, पृष्ठ-11

2• परमहंस का वेष बनाकर दुनियाँ ठगि ठगि खाते है ।

सोवत टाँग पसारि जागि कै मूरख गाल बजाते हैं ।।

लोभी लंपट लोल मोल बिनु विषयनि हाथ बिकाते हैं ।

प्रेमलता अ ज्ञान अभागी श्री सियराम न गाते हैं ।।

--- हितोपदेश शतक, पृष्ठ-132

3. विष विलोकि न भूलिये, समझि करिय संत संग ।
वादन में नहिं सार प्रिय, होत भजन में भंग ।।
वैष्णव वेष बनाइ बहु, वंचक विषयी लोग ।
तनु पोषहिं ठगि ठगि जगत, करि करि विविधि प्रयोग ।।
--- श्री सीथ प्रसादी माहात्म्य, पृष्ठ-13।

4. कंठी तिलक रमाय अंग, चिचियावत सियराम ।
घर घर डोलत उदर लगि, माँगि बटोरत दाम ।।
कथनी करतब हीन सब, गुरुआनि की जिय जानि ।
परिये न तिन्हि के फन्द प्रिय, प्रेमलता सिख मानि ।।
बकत नपुंसक भाँड़ इव, गुरुआ महा मलीन ।
सने विषय सुख नख शिख, परमारथ पद दीन ।।
जानत नहिं अज्ञान दोउ, वर्तमान युगधर्म ।
कर्मी ज्ञानी स्वारथी, नालायक बेशर्म ।।
--- सतगुरु शब्दयथार्थ ज्ञान, पृष्ठ : 44-47

नाम-महत्व --

प्रेमलताजी के काव्य एवं जीवन में नाम महत्व श्री का सर्वाधिक अंकन मिलता है । युगल उपासना के साक्षात् विग्रह श्री सीताराम या सियाराम हैं । सियाराम के परत्व की चर्चा ही कवि का उद्देश्य है । महात्मा युगलानन्द शरण ने भी माना है कि अर्थ पंचक, तत्त्व त्रय और प्रपत्ति का सारा तत्त्व सीताराम के नाम में ही पुंजीभूत है । इसके जप से युगल

भावना की पुष्टि और परमानन्द की प्राप्ति होती है तथा दम्पति की रस क्रीड़ा का रहस्य भी ज्ञात होता है।[7] नाम का अर्थ है पुकार या आह्वान करना। गुरू द्वारा प्राप्त राम नाम से साधक अज्ञात, अचिन्त्य परात्पर ब्रह्म का स्मरण करता है। यह नामस्मरण देशकाल और भक्त की किसी भी जागतिक सीमाओं से मुक्त है। समय और सीमा का बंधन से रहित यह मोक्ष प्रदाताहैं।

स्वामी श्री सियालाल शरण जी प्रेमलता ने "नाम प्रसंग सु अकथ अति" कहकर "निज बोध हित" वर्ण्य माना है। "श्री वृहद् उपासना रहस्य" में ब्रह्म के सभी नामों में राम नाम की श्रेष्ठता[8] निर्धारित

---

7. (क) सीताराम सु नाम मधि युगल भाव प्रिय पुष्ट।
जग जोग सं जोग नहि, सुमिरत सब सुख सुष्ट ।।
--- श्री जानकी सनेह हुलास शतक, पृष्ठ-18

(ख) ललित लाड़िली रस रहस, अगम सुगम सुठि होय।
रटे निरन्तर नाम श्री, सकल विकल मत खोय ।। -- वही, पृष्ठ-3

8. प्रभु के सुन्दर नाम अपारा। अधिक एक ते एक उदारा ।।
प्रगटे जगत करन कल्याना। प्रभु के कर्म गुननि ते नाना ।।
सब नामनि में राम सुनाया। सब विधि बड़े सकल गुराधाया।
एक अखंड अनादि अमाया। त्रिगुणातीता तीत सु गाया ।।
जितने नाम रूप प्रभु केरे। राम नाम ते होईं घनेरे ।।
सब नामनि बिच तेज प्रभावा। लखहु राम नामहिं कर छावा ।।
सात करोर मंत्र श्रुति गाये। सर्व सिद्धि नामहिं रटि पाये ।।
--- वृ० उ० र०, पृष्ठ-25

कर उसके प्रभाव फल का निर्देश किया गया है । राम के साथ सिय नाम का उच्चारण श्रमरहित है तथा यह भवबंध निवारक है ।[1]

श्री सीताराम रहस्य दर्पण में संकलित श्री जानकी विनय नामादि महत्व में सियाराम नाम की महिमा का विस्तृत विचार किया गया है और उसके प्रभाव का वर्णन करते हुए जीवन के सभी कर्म कांडों, क्रिया कलापों, पदार्थों, देवताओं, भोज्य पदार्थों, स्थान काल आदि से संबंधित तत्त्वों से जोड़कर उसे अखिल ब्रह्मांड तक व्याप्त बना दिया गया है --

1. नामयोग जप यज्ञ सुसमदम विमल विवेक विरागा है ।
नाम ज्ञान ध्रुव ध्यान धारणा साधन सिद्धि सुभागा है ।।
नामसुभगति विचार अनूपम प्रीति प्रतीति सुहाग है ।
प्रेमलता ते धन्य जासुमन नाम रटन में लागा है ।। -- पृष्ठ-73

2. नाम विमल महि व्योम नखत ग्रह नाम सुसूरज चंदा है ।
नामहिं माया ब्रह्म जीव पर नाम संत सुख कंदा है ।
नाम दिशा दश दिशिपालक सुर दिग्गज चतुर विलंदा है ।
प्रेमलता सब सृष्टि नाम मय जानहिं संत न मंदा है । -- पृष्ठ-74

---

1. राम नाम सिय नाम सु संग । रटत देत सब सुख सु अभंगा ।
गूढ़ अर्थ निज नाम प्रतापू । सिय संग रटत लखावत आपू ।।
सिय संग विनु श्रम होत उचारण । राम नाम बन्ध निवारण ।।

--- वही, पृष्ठ-38

3. नामहिं ब्रह्मा विष्णु सदाशिव नारायण पर भगवंता

जगन्नाथ श्री कृष्ण नामहीं वासुदेव हरि अन अन्ता ।।

नामहिं सालिग्राम विश्वम्भर रघुनायक गावहिं सन्ता ।

प्रेमलता जन संकटमोचन नामक नामहिं हनुमन्ता ।। ---- पृष्ठ-74

कवि ने नाम-रटन से पच्चीस प्रकार के दोषों[10] §पचीस परदा§ का नाश बताया है ।

सीताराम नाम जापक महत्व शीर्षक ग्रंथ में भी अनेकत्र नाम महिमा का संकेत हुआ है ।

बलिहारी सियराम नाम की रूप धाम गुण की बलि है ।

नाम रूप गुण धाम अनूपम वर्णत श्रुति महिमा भलि है ।।

जिन्हके आश्रित भये जीव जे छत्म तन तिन्हिं कहं पिरिकलि है ।

पायेउ परमानंद प्रगट रटि नाम सु प्रेमलता अलि है ।। --- पृष्ठ-163

श्री सियराम नाम रसिकन के निर्मल उर प्रभु बासा है ।

बिहरहिं तहाँ सदा सह परिकर सिय रघुबर अभिरामा हैं ।।

--- पृष्ठ-164

---

10. लोक लाज कुलकानि का जग्रह धन विद्या बहु चतुराई ।

कर्म-ज्ञान-युवती-सुत-इच्छा-भोगन की सुन्दरताई ।।

बहु सनेह-स्वारथ तनुपोषक-आलस-बल अति दुखदाई ।

प्रेमलता छल-कपट-दम्भ-हठ-मिथ्या-मद-हिन्सा भाई ।।

रटै रटावै नाम निरन्तर सब प्रकार निर्भय होई ।।

नसौं तुरत पच्चीस दोष ये अपरह जे जाइ न जोई ।

परम अनन्य भाव धरि दृढ़ उर सेवहिं दम्पति सियरामहिं ।
अन्तरंग बहिरंग एकरस रटैं सदा सिय वर नामहिं ।। --- पृष्ठ-165

"नाम तत्त्व सिद्धांत दोहावली" में संकलित नाम महिमा दृष्टान्तावली में नाम रटन को क्रमशः उद्बुद्ध चेतना का प्रतीक माना गया है तथा नाम हीन व्यक्तियों को तुच्छ दृष्टि से देखा गया है --

नाम रटत मिलिहहिं अवसि, प्रेमलता सियराम ।
सनइ सनइ चलि पथिक जिमि करि आवत चहुँधाम ।।
पढ़े बड़े पंडित बने, नाम हीन रत मोह ।
प्रेमलता ते पुरुष जिमि, भार लद्यो खर लोह ।।
रटत न नामहिं गेह तजि, बनि योगी अवधूत ।
प्रेमलता ते पुरुष जिमि, जग गणिका को पूत ।।
नाम रटन जेहि प्रिय लगै, तेहि पर श्री सियराम ।
प्रेमलता रीझत सु जिमि तिय लखि पुरुष ललाम ।। -- पृष्ठ : 4-7

प्रेमलता जी "नाम ध्वनि प्रचारक" संत थे उन्होंने अपने उपदेशों द्वारा जन साधारण में सियाराम नाम की भक्ति का प्रचार प्रसार किया और नाम में अनुराग उत्पन्न कराने की चेष्टा की । उनके दोहों और कथ्यों में यह प्रवृत्ति स्पष्टतया झलकती है --

सुधरेउ श्री सियराम रटि, मोसे अधम अपार ।
प्रेमलता की विनय सुनि, रटिये नाम उदार ।।
हाथ जोरि पायनि परौं, पुनि पुनि करौं निहोर ।
प्रेमलता पर करि कृपा, नाम रटिय निशि भोर ।।
हा ! हा ! करि वर माग हूँ, दीजिये सब नर नारि ।

प्रेमलता पर छोह करि, नामहि रटिय पुकारि ।। -- पृष्ठ-29

बार बार बर माग हूं, सब सन परि परि पांय ।

नाम रटन मोहि दीजिये, जेहि भ्र दोष नसांय ।। -- पृष्ठ-31

"गुरू पदार्थ प्रबोधिका" में नामप्रेमी संतों को महत्व दिया गया है --

जेन केन विधि शिष्य ते, रटवावै सियराम ।
प्रेमलता सोइ सतुगुरू, अपर न जाके काम ।।
नामैं कहं गावैं सुनैं, रटैं रटावैं नाम ।
प्रेमलता नामैं चरित, कहहिं श्रवण अभिराम ।। -- पृष्ठ-114
नाम झड़ी भावै जिन्हैं, ज्यों भादो को मेह ।
प्रेमलता श्री नाम पर, बारै सकल शनेह ।। -- पृष्ठ-115
नाम रटन लगै, जगत मिठाई फीक ।
प्रेमलता अस सन्त की, सेवा संगति नीक ।।
नाम रटैं ललकारि नित, ललकि ललकि लय लाय ।
प्रेमलता अस सन्त की, सेवा सब सुखदाय ।। -- पृष्ठ-116

"उपदेश पेटिका" नामक ग्रंथ में नाम-जप और नाम-रटन की संख्या भी बताई गई है । सर्वाधिक नाम की संख्या 14 करोड़ कही गई है ।

सादे तीन करोड़ जो, रोम जानि निज अंग ।
चारि नाम प्रति लोम रटि, प्रेम सु लता असंग ।।
एक बार जो लोम प्रति, रटै नाम लय लाय ।

प्रेमलता भव जाल ते, मुक्त होय भ्रम जाय ।।

उभय बार प्रति लोम रटि, मन बुधि चित्त थिराय ।

प्रेमलता निज रूप कर, बोध पाय हरषाय ।।

रटै तीसरी बार बर, नाम लोभ प्रति जोइ ।

भासत युगल विहार उर, प्रेमलता जो गोइ ।।

चारि बार प्रति लोम जो, रटै नाम जन कोय ।

श्री सियराम स्वरूप उर, प्रेमलता थिर होय ।।

रटै नाम यहि भाँति बर, कोटि चतुर्दश जीव ।

प्रेमलता तनु अछत कलि, निश्चै पावै पीव ।।

--- पृष्ठ : 234-235

"श्री नाम रहस्य त्रयी" में संकलित "श्रीसीताराम नाम संबंध बहत्तरी", श्री नाम महत्व वर्णन तथा श्रीनाम वैभव प्रकाश चालीसा में नाम तत्त्व का भाव पूर्ण विवेचन हुआ है । सीताराम नाम संबंध बहत्तरी में विशेषकर "सीताराम" नाम से संबद्ध कवित्त मिलते हैं । अधिकांश कवित्तों की शीर्ष पंक्ति सीताराम रटन से संबंधित है । कुछ उदाहरण द्रष्टव्य हैं --

1. सीताराम रटत सु मुदित रहत जू । -- पृष्ठ-5

2. सीताराम सीताराम रटत सु चैन जू । -- पृष्ठ-वही

3. सीताराम रटि भव सागर तरत जू । -- पृष्ठ-6

4. सीताराम रटत कटत मोह जाल जू । -- पृष्ठ-7

5. सीताराम सीताराम रटत सरस जू । -- पृष्ठ-8

6. सीताराम सीताराम रटत अखंड जू । -- पृष्ठ-9

7. सीताराम रटत रटत सुख होइ जू । -- पृष्ठ-13

"नाम महत्व वर्णन ग्रंथ में नामरटन से विमुख प्राणियों को हीन दृष्टि से देखा गया है तथा उन्हें भूत, दुष्ट, चोर आदि विशेषणों से पुकारा गया है --

1. रटत न नाम सियाराम सोई भूत है । -- पृष्ठ-45
2. रटत न नाम सियाराम सोई नीच है । -- पृष्ठ-46
3. रटत न नाम सियाराम सोई दुष्ट है । -- पृष्ठ-47
4. रटत न नाम सियाराम सोई चोर है । -- पृष्ठ-वही

"नाम वैभव प्रकाश चालीसा" नामक ग्रंथ में प्रेमलताजी ने चालीस सवैयों में नाम महत्व कथित है ।

रटिये रटिये सियराम सु नामहिं
बेगि न लावहु रे मन वारा ।।
सटिये सटिये गुरु पाँयनि ते
जो रटावहिं नाम छुड़ाइ विकारा ।।
अटिये अटिये मिथिलापुर धामहिं
ठाटि सु वैष्णव वेष उदारा ।
कटिये कटिये दुरवासना अंकुर
प्रेमलता उर होइ उजारा ।।

--- नाम रहस्य त्रयी, पृष्ठ-77

कौटिन भोग में योग में कौटिन
ज्ञान में कौटिन ध्यान में भूले ।
कौटिन पूजन पाठ में कौटिन
भक्ति सु भाव में कौटिन झूले ।।

कोटिन कर्म सु धर्म में कोटिन,

जीव सहैं नित नूतन शूले ।

प्रेमलता रटैं नाम सुखी

सोइ जीवन मुक्त फिरैं जग फूले ।।

--- वही, पृष्ठ-79

"सार सिद्धांत प्रकाश" की कुंडलिया में कवि ने नाम तत्त्व का विशद वर्णन किया है । नाम-रटन में एकाग्रता को प्रमुखता दी गई है-

सीताराम सु नाम सन, करिये केवल प्रेम ।

रटिये खूब इकाग्र ह्वै, सदा धारि दृढ़ नेम ।।

सदा धारि दृढ़ नेम छेम मन मानी पै हौ ।

भइहौ श्री सियराम धाम सोकेत सिधइहौ ।। --- पृष्ठ-18

शिव द्वारा राम नाम रटन को रूपक के माध्यम से व्यक्त कर नाम महत्त्व का प्रतिपादन हुआ है --

काया काशी क्षेत्र है, शिव स्वरूप विश्वास ।

श्रद्धा गिरिजा तत्त्व गुण, प्रकृती दासी दास ।।

प्रकृती दासी दास भाव भैरव बलवाना ।

भक्ति देवसरि धार भजन गणपती सुजाना ।।

राम नाम ऐश्वर्य प्राण जीवन प्रण छाया ।

प्रेमलता आधार जानि शिव रटहिं निकाया ।।

--- पृष्ठ-40

प्रेमलताजी के नाम-महत्व विषय क धारणाओं का आधार स्वानुभूत भाव और साधना तो मुख्य है पर नाम महत्व की चर्चा राम रहस्योपनिषद्, रामोत्तर तापिनी उपनिषद् आदि ग्रंथों में भी उपलब्ध है "रामरहस्योपनिषद्" में कहा गया है कि जो मनुष्य पितृघाती, मातृहन्ता, ब्रह्मघाती, गुरुहन्ता, कोटियति विनाशक तथा अन्य पापों का कर्ता है, वह मेरे 96 करोड़ नाम का जप करके उन सब पापों से मुक्त होकर सच्चिदानंद स्वरूप हो जाता है।[11] "हारीत स्मृति"[12] में "श्री रामाय नमः" नामक तारक ब्रह्म का संकेत हुआ है। श्री राम की भाँति सीता को भी आद्यशक्ति के रूप में देखा गया है। रामोत्तरतापनीयोपनिषद् में कहा गया है कि समस्त देहधारियों की उत्पत्ति, पालन तथा संहार करनेवाली आद्या शक्ति मूल प्रकृति संज्ञक श्री सीता ही हैं।[13] ऋग्वेद में सीता की वन्दना कल्याण करनेवाली शक्ति के रूप में हुई है।[14] इस प्रकार शास्त्रों में सीता के आद्याशक्ति,

---

11. रामरहस्योपनिषद्, 1/9
12. हारीत स्मृति, 3/234, 35, 39
13. उत्पत्ति स्थिति संहार कारिणी सर्वदेहिनाद।
    सा सीता भवति ज्ञेया मूल प्रकृति संज्ञिता ॥
    --- रामोत्तरतापनीयोपनिषद्
14. अर्वाची सुभगे भव सीते। वन्दामहे त्वा।
    यथा नः सुभगाससि यथा नः सुफला ससि ॥
    --- ऋग्वेद, 4/57/6

परात्परा शक्ति तथा सर्वशक्ति शिरोमणि कहा गया है । सीताराम नाम के परत्व को प्रेमलताजी ने सियाराम के रूप में कोमल, श्रुतिमधुर एवं सहज रूप प्रदान किया है । सीता और सिया दोनों ही अभिन्न हैं । उन्होंने सीताराम विषयक युगल रूप का परत्व घोषित करते हुए "सियस्वामिनी" शब्द का बहुशः प्रयोग कर भक्ति के समर्पण-भाव का द्योतन किया है --

अगुन सगुन औतार पति अवतार नि पति श्री राम ।
प्रेमलता सिय स्वामिनी, शक्तिन पति छवि धाम ।।

सीता और राम पूर्णावतार के प्रतीक हैं । भारद्वाज संहिता में कहा गया है कि कला और अंश भेद से विभूति पूर्ण बहुत से भगवद् अवतार हैं पर सभी अवतारों में अवतारी परब्रह्म नित्य सच्चिदानंद स्वरूप एक श्री रामचन्द्र ही हैं ।[15] हनुमत्संहिता में सीताराम की वन्दना के प्रसंग में सविस्तार सीताराम स्वरूप की दिव्यता पर प्रकाश डाला गया है ।[16]

---

15. अवतारा बहवः सन्ति कलाश्चांश विभूतयः ।
राम एक परं ब्रह्म सच्चिदानन्द मव्ययम् ।।
सर्वेसामवताराणामवतारी रघूत्तमः ।

---- भरद्वाज संहिता

-- उद्धृत पराशक्ति श्री सीता और अवतरणभूमि सीतामही

- उपेन्द्रनाथ मिश्र मंजुल, पृष्ठ-34

16. द्रष्टव्य वही, पृष्ठ-35

प्रेमलताजी का संपूर्ण काव्य सीताराम नाम की महिमा को ही भक्ति के विविध रूपों में प्रत्यक्ष कराता है । प्रतीत होता है कि कवि ने नाम-स्मरण को भक्ति का मूल तत्त्व स्थिर करना चाहा है ।

रूप-प्रसंग --

श्री प्रेमलताजी ने रूप-प्रसंग में अवतार-तत्त्व के साथ युगल स्वरूप की छवि का वर्णन किया है ।[17] श्री उपेन्द्रनाथमिश्र "मंजुल" के मतानुसार पूर्ण अंश और कला में अवतार के तीन प्रकार माने गए हैं । भगवान् श्री राम और श्री कृष्ण भगवत्ता [समग्र ऐश्वर्य, वीर्य [बल], यश, श्री [शोभा], ज्ञान और विज्ञान की एकत्र पूर्ण समन्विति होने से पूर्णावतार माने गए । वेदों में जिनका "पुरुष" कहकर स्तवन किया गया वे अपने लोकोत्तर --लोक पावनकारी चरितों से पुरुषोत्तम और महापुरुष नाम से सर्वत्र संस्तुत हुए । एक मर्यादा पुरुषोत्तम हुए तो दूसरे लीला पुरुषोत्तम् । ... यही हेतु है कि अन्यान्य ऋषि-मुनियों ने भी अपनी संहिताओं और रामायणों में श्री राम को "अवतारी रघूत्तम:" कहकर भूरि-भूरि प्रशंसा की है ।[18]

17· तदपि सियाराम अवतारा । भयेउ विलक्षण करहु विचारा ।।
जेहि कारण साकेत विहारी । अवतार नि मति पर अवतारी ।।
वेदहु जान न तिन्हि कर भेदा । प्रगटेउ सोइ नाशन जन खेदा ।।
श्रीसियि सहित राम अखिलेश्वर । प्रगटि किये सब सुखी चराचर ।।
--- वृहद् उपासना रहस्य - रूप प्रसंग, पृष्ठ-49

18· पराशक्ति श्री सीता और अवतरण-भूमि सीतामढी -- उपेन्दनाथ मिश्र मंजुल -- संपादक- डॉ0 महेन्द्र मधुकर, पृष्ठ : 119-120

वस्तुतः सीता और राम का अवतार रूप तत्त्व की दृष्टि से लीला-भाव तथा शक्ति तत्त्व और परत्व भाव का सूचक है । शिव संहिता में श्री रामार्चा पद्धति के प्रारंभिक ध्यान में राम की वन्दना महत्वपूर्ण है । लाल कमलदल के समान रमणीय नेत्रवान पीताम्बर से विराजित, सुन्दर श्याम शरीर, द्विभुज, प्रसन्नमुख, सीता से सुशोभित, करुणावरुणालय, प्रियजनों एवं विष्णु शिवादि से भी सेव्य और भक्तों की कामना पूर्ण करनेवाले राम वन्दनीय हैं ।[19] वहाँ "सीतया शोभित" विशेषण से "सुन्दरता कह सुन्दर करई" सीताजी से ही शोभाधाम श्री राम की शोभा सूचित की गई है ।

प्रेमलता जी ने "पुरुष भावना" का विरोध कर सखी भाव से सियाराम की उपासना पर बल दिया है । वहाँ मुख्यता सीता तत्त्व को ही मिली है ।[20] हनुमत्संहिता सदाशिव संहिता और मानस रामायण से प्रभावित धारणाओं के आधार पर कवि ने सगुण राम को सभी अवतारों में श्रेष्ठ पुरुष और सभी भक्त साधकों को शक्ति स्वरूपा नारी रूप में स्वीकार किया है --

---

19. वृहद् उपासना रहस्य, पृष्ठ-50

20. द्रष्टा द्रष्ट सु ब्रह्म सुर, अवतारी अवतार ।
सब कर प्रेरक कर्म सिय श्रष्टा शृष्टि अधार ।।
अवतारी अवतार अनेका । सिय आयसु सिर धरि सविवेका ।
करहिं काज सब सिय रूख जोई । करै अवज्ञा अस नहिं कोई ।।
जग कर्ता भर्ता संहरता । केवल सिया समुझि अस परता ।।
--- वही, पृष्ठ-58

अवतारिनि पति पुरुष पर, सगुन राम तेहि नाम ।

जासु चरित गावहिं सकल, श्रुति पुरान वसुयाम ।।

सिय सनेह रजु बाँधे रहहीं । जदपि विश्व नायक प्रभु अहहीं ।।

एक पुरुष सोइ जग सब नारी । जहँ लगि दृष्टि परै तनु धारी ।।

सब महँ करै रमन सोइ रामा । आतम राम पर्यो तेहि नामा ।।

हम सब सिय की शक्ति स्वरूपा । सबके पति सोइ राम अनूपा ।।

मिथ्या पुरुष सकल हम भाई । भीतर सिय की शक्ति समाई ।।

--- वृहद् उपासना रहस्य, पृष्ठ : 60-61

इसी ग्रंथ में सीता को "सिय स्वामिनी", "सर्वेश्वरी "जन रक्षक सुखदानि", "समर्थ अह्लादिनी", "शक्तिसील गुनखानि", "आनंद दैनी {पृष्ठ-68} आदि रूपों में संबोधित किया गया है ।

लीला माधुर्य का रस बोध --

"वृहद् उपासना रहस्य" में लीला प्रसंग के अंतर्गत वात्सल्य, शृंगार, शान्त, सख्य और दास्य इन पाँच रसों के रूप में रामचरित का प्रकाशन हुआ है । वस्तुतः रसिक भक्तों की रस-साधना का यह वैशिष्ट्य है कि उनकी भाव-भक्ति में पाँचों भक्तिरस स्वयं में पूर्ण एवं परस्पर समान हैं ।[21]

---

21. शांत दास्य वात्सल्य कहि, तिमि शृंगार सुसख्य ।

ये पाँचों रस भक्ति के, मणि रस रंग सुमुख्य ।।

काव्यन में शृंगार को, कहे जदपि रसराज ।

पै भक्तिन में सम अहै, पाँचौ रस सुखराज ।।

--- रामरसरंग दोहावली, पृष्ठ-10

साधक किसी एक रस को अंगी रूप में ग्रहण कर अन्य रसों का अंग रूप में स्वीकार कर साधना में लीन होते हैं। रसिक भक्तों के आलंबन सीताराम हैं जिनकी बाल, पौगण्ड और कैशोर लीलाओं से दिव्य मधुर रस की अभिव्यक्ति होती है। हनुमत्संहिता [पृष्ठ-10] में कहा गया है कि श्री राम की नित्य रास-लीला में श्री सीता के साथ उनकी अंगभूता 18108 सखियाँ ही सम्मिलित होने की एकमात्र अधिकारिणी हैं। श्री राम की ये स्वकीयाएँ प्रोषित भर्तृका, खंडिता, कलहांतरिता, विप्रलब्धा, उत्कंठिता, वासकसज्जा, स्वाधीन भर्तृका, अभिसारिका और मानवती इन नौ रूपों में लीला-माधुर्य के विस्तार में सहायक होती हैं।

दिव्य दम्पति श्री सीताराम के प्रति अनन्य प्रीति स्थायी भाव, युगल सरकार के षोडश शृंगार, द्वादश आभूषण, शील माधुर्य आदि आत्मगुण रस परिपाक में सहायक उद्दीपन विभाव हैं। प्रीति भावापन्न रसिक भक्तों की भावभीनी नृत्यादि चेष्टाएँ अनुभाव हैं। अष्ट सात्त्विक भाव और तैंतीस संचारी भावों से पुष्ट होकर रसिक भक्तों का माधुर्य भाव श्री राम के साथ अनेक माधुर्य मूलक संबंधों का भावन कराने में समर्थ होता है।

कवि ने सियराम नाम रटन को ही भजन और भक्ति का पर्याय मानकर सवालाख रटन का संकेत किया है।[22]

---

22. भजन विपुल पर भजन यह, रटन नाम सियराम।
यहि सम भजन न भक्ति वर, सरल सुलभ सुखधाम॥
सवालाख सियराम नित, रटन करै जो कोय।
रामचरित कर मर्म तब, पावै सब विधि सोय॥

--- वृहद् उपासना रहस्य, पृष्ठ : 82-83

"सार सिद्धांत प्रकाश" नामक अपने ग्रंथ में प्रेमलताजी ने रस तत्व पर सूक्ष्मता से विचार किया है और शृंगार को "सकल रस की खानि" बताया है --

1. पाँचो रस प्रिय राम के कारण श्री श्रीगार ।
सकल रसन की खानि जो, वैष्णव कुल महँ सार ।।
वैष्णव कुल महँ सार निजातम बोध कराई ।
जीवनि देइँ मिलाइ यथा विधि प्रभु मन भाई ।।
पति पतनी संबंध यथारथ जिनको साँचो ।
प्रेमलता जेहि माँहि विराजत प्रिय रस पाँचो ।। -- पृष्ठ-87

शृंगार रस ही आत्म रूप का विधायक है, वहाँ प्रभु को पुरुष मानकर सभी आत्मा को नारी रूप में व्यक्त किया गया है --

1. आतम रूप अनूप जो, गावत वेद पुरान ।
सो शृंगार सु रस विना, लखिन सकैं विद्वान ।। -- पृष्ठ-87

2. आतम बोध कराय मिलावैं प्रभु परमातम ।
प्रेमलता सुख लहै परम तब रूप सु आतम ।।
नारी रूप सु आतमा, परमातम की शक्ति ।
रिझवति निज स्वामिहिं सदा, करि विधि नाना भक्ति ।।
करि विधि नाना भक्ति धारि जड़ चेतन रूपा ।
प्रभुहिं दिखावति खेल विरचि ब्रह्मांड अनूपा ।। -- पृष्ठ-88

3. नारी आतम रूप सब, सकल भाव गुण खानि ।
प्रगटत तेहि महँ समय पर, दासादिक रस आनि ।। .

दासादिक रस आनि सख्य वात्सल्य अनूपा

रौद्र सु वीर विभत्स होत कहु शान्त सरूपा ।।

सिय सिय पिय अनुकूल परम दोउनि कह प्यारी ।

प्रेमलता प्रभु पुरुष एक सब आतम नारी ।। -- पृष्ठ-88

"श्री नाम तत्व सिद्धांत दोहावली" में संकलित गुरू पदार्थ प्रबोधिका में भी लीलादर्शन और रूपदर्शन का संकेत हुआ है --

श्री सियराम सु नाम रटि, जो सुख देखत नैन ।

प्रेमलता सो अकथ अति, कहि न सकै विधि बैन ।।

मन गुण बानी से परे, श्री साकेत सुधाम ।

प्रेमलता तह बिहरहीं, दम्पति श्री सियराम ।।

अगुन सगुन औतारपति, औतारी श्री राम ।

प्रेमलता सिय स्वामिनी, शक्तिनपति छविधाम ।। -- पृष्ठ-93

श्री सीताराम नाम जापक महत्व में युगल रूप का मनोहारी वर्णन मिलता है --

सियमोहिनि प्यारी पुरुषोत्तम हिलि मिलि दोउ गर भुज डारी ।

बैठे मुदित रतन सिंहासन शरण पाल भव भयहारी ।।

वय किशोर वपु अमल अनूपम अंग अंग शोभा न्यारी ।

छाय रही अति अकथ कहौं किमि लखत बनें सुखमा भारी ।।

दम्पति भोग विलास हास रस रंग संग की बलिहारी ।

सतगुरू कृपा प्रसाद पाय अलि भाव बिलोकहिं शृंगारी ।।

--- पृष्ठ-158

"नाम रहस्य त्रयी" में संकलित श्री विशिष्टा द्वैत ध्यान वर्णन में मंजु छंद में सीताराम का रूप माधुर्य चित्रित हुआ है --

राम-सौन्दर्य --

1. कमल नयन दिलदार यार के कतल कलेजा करते हैं ।
कजरारे अनियारे प्यारे बरबस तन मन हरते हैं ।
घायल पड़े विचारे कितने आह के नाले भरते हैं ।
प्रेमलता लखि नैन लाल के त्रिभुवन नयन निदरते हैं ।। -- पृष्ठ-87

2. अधर लाल मृदु मंजु विशद वर सुधा भरे मन भाते हैं ।
मन्द हँसनि चित फँसनि दशन लखि दाड़िम भी सरमाते हैं ।।
मधुर मधुर वर वचन रचन प्रिय गजबी पान चबाते हैं ।
प्रेमलता शुचि सुभद चिबुक पर पीत विन्दु झलकाते हैं ।। -- पृष्ठ-88

सीता-सौन्दर्य --

3. सिंहासन आशीन सिया जू बाम भाग गुण खानी हैं ।
पराशक्ति सुख मूल सु स्वामिनि रामिन की महरानी हैं ।।
सेवत जिन्हि के चरण सदा शुचि उमा रमा ब्रह्मानी हैं ।
प्रेमलता की प्राण सजीवनि जनकलली मुददानी हैं ।। -- पृष्ठ-89

उपासना और उपासक प्रसंग --

उपासना शब्द में उप, आस और अन ये तीन अंश हैं । इनमें उप उपसर्ग, "आस उपवेशने" धातु और भाव अर्थ में युच् {अन} प्रत्यय है । इसके समानार्थक शब्द हैं -- सेवा, परिचर्या, शुश्रूषा, उपासना आदि । उपास्य के स्वरूपगुण आदि में दीर्घकाल तक चित्त वृत्ति का सतत प्रवाह करनेवाला

उपासक होता है । उपासना भक्तिमूलक होती है । भक्ति से हृदय में भजनीय अर्थात् परमात्मा का साक्षात्कार होता है । भगवान् के प्रति प्रगाढ प्रेम ही भक्त्युपासना है और यह वही तत्त्व है जिसे उपनिषदों में वेदना, ध्यान या उपासना कहा गया है । नाम रूप, लीला और धाम के रूप में श्री राम की उपासना कही गई है । मधुर भावोपासना में उपास्य राम और सीता हैं । दोनों अद्वैत रूप होकर भी लीला-विस्तार हेतु द्वैत रूप में व्यक्त होते हैं । राम और सीता का अन्योन्याश्रय भाव रसिक भक्त कवियों में दिखाई देता है । विचारकों का मत है कि "रसिक संप्रदाय की मधुरोपासना की सर्वप्रथम विशेषता उसकी ऐश्वर्य, माधुर्य मिश्रित मधुर भाव साधना है । ऐश्वर्य-माधुर्य, संयोग-वियोग वैधी भक्ति और रागानुगाभक्ति के द्विकूलों के मध्य माधुर्य रति अथवा नित्य, दिव्य सुख-भोग की मधुर रस-धारा प्रवाहित होती रहती है । ऐश्वर्य और माधुर्य इन दोनों में से किसी एक का अवलंबन कर कोई रसिक भाव-साधना में प्रवृत्त नहीं हो सकता । रसिक भाव-साधना की प्रारंभिक अवस्था में ऐश्वर्याश्रित वैधी भक्ति और तदुपरान्त माधुर्याश्रित प्रेमा भक्ति की स्थिति मानी गई है । रसिक भाव-साधना में ऐश्वर्य-माधुर्य के समन्वय के कारण ही शील और मर्यादा का अतिक्रमण नहीं किया गया है ।"[23]

राम भक्ति की रसिकोपासना में उपास्य युगल रूप श्री सीताराम की मधुर प्रेम लीलाओं का चिन्तन और रसभावन मुख्य है ।

---

23. मधुर रस : स्वरूप और विकास [भाग-2],

--- डॉ० रामस्वार्थ चौधरी "अभिनव", पृष्ठ : 196-197

प्रेमलताजी ने उपासना के तीनप्रकार[24] बताए हैं --

1. अद्वैत उपासना
2. द्वैता द्वैत उपासना
3. विशिष्टाद्वैत उपासना

उपासना प्रसंग में प्रेमलताजी ने विशिष्टाद्वैत उपासना को अधिक महत्व दिया है। उन्होंने सिया को पराशक्ति माया लखन को जीव और राम को परात्पर शिव कहा है[25] तथा लक्ष्मण के सेवा-भाव की विविधता को महत्व दिया है।[26] इस श्री संप्रदाय में उन्होंने पुरुष भाव के त्याग का संकेत किया है। सखी भावना से ही यह दिव्यानुभव प्राप्त हो सकता है --

उपास्य-वचन --

मोर सम्प्रदा महँ जो अइहैं। पुरुष भाव तजि सो मोहि पइहैं ।।
पुरुष एक मम पति सब नारी। जहँ लगि जीव सकल तनुधारी ।।
पुरुष भाव उर धरि विमुखानी। आतम सहज स्वरूप भुलानी ।।
पुरुष भाव सब कर कहि दूरी। सखी भावना दीजै रूरी ।। -पृष्ठ-12

---

24. त्रय उपासना केर सु भेदा। समुझो तीन होय उर खेदा ।।
--- वृहद् उपासना रहस्य, पृष्ठ-108

25. परा शक्ति माया सिया, लखन लाड़िले जीव।
तिन्हि के संग विहरहिं सदा, राम परात्पर सीव ।। --- पृष्ठ-115

26. वही, पृष्ठ-117

जीवातम, मम, मैं, पति मोरे । ये तिहु नित्य लखहिं जन थोरे ।।
इन्हते प्रगटेउ अमित स्वरूपा । विरचन विश्व सु खेल अनूपा ।।
सोइ जीवातम पति प्रतिकूली । भयेउ विश्व नाटक महँ भूली ।।
तुम्ह सब मोर अन्श अवतारा । मम समान पठवहु संसारा ।।
तुम्हहिं न व्यापहि मोर सुमाया । मोहे उ जेहि जग जीव निकाया ।।
ब्रह्म, जीव; मैं, ये तिहु रूपा । एक अनादि अखंड अनूपा ।।
यही विशिष्टाद्वैत कहावत । त्रिधा रूप नित सत श्रुति गावत ।
द्वैताद्वैत अरूप बखानत । ब्रह्महिं ते न यथारथ जानत ।।

---- पृष्ठ-122

प्रेमलताजी ने सियाराम को उपास्य और जीवन को उपासक कहा है --

श्री सियराम उपास्य दोउ, जीव उपासक रूप ।
यहि कहँ कहत उपासना, अचल अनादि अनूप ।। --- पृष्ठ-122

कवि ने उपासना क्रम में जीवात्मा के भ्रमित रूप का भी वर्णन किया है ।[27]

उपासक-प्रसंग में सम्प्रदाय के आचार्यों की चर्चा करते हुए उन्हे "सिय प्रेरित" कहा गया है । "सियकृत सम्प्रदा" को ही आचार्यों ने विस्तृत किया है । उनकी दृष्टि में "रसमय मूर्ति राम" "सुखरासी" हैं, वे सबके "उपास्य" हैं । जड़ माया ही नाना रूप शरीर धारण करती है जिसके भीतर

---

27. वृहद् उपासना रहस्य -- उपासना-प्रसंग, पृष्ठ-123 .

चेतन का निवास होता है । जड़ चेतन दोनों ही सीताराम के माया रूप हैं ।[28]

युगल उपासना के "रसिक शृंगारी" [पृष्ठ-140]

भक्ति से मत्त होते हैं उनका इष्ट संबंधी नाम उन्हें अभय रखता है ।[29]

कवि ने युगलोपासना पर सविस्तार विचार किया है । युगल तत्त्व विषयक कुछ कथन द्रष्टव्य हैं --

युगल उपासक जो सियवर के । मुकुटमनी सो सुर मुनिवर के ।
युगलहिं भजै उपासक सोई । उर ते पुरुष भावना खोई ।।
युगल मंत्र गायत्री धामा । युगल धाम युग नाम ललामा ।।
युगल भावना युग शरणागति । युगल कृपा अभिलाष युगल नति ।।
युगल माधुरी के रस रंगा । रंगै करिय तिन्हि केर सु संगा ।।
जिन्हि के उर सियराम सुदोई । बसत उपासक साँचे सोई ।।

--- पृष्ठ-132

संक्षिप्त: प्रेमलताजी के "उपासना-तत्त्व निम्नलिखित हैं --

1. यह संप्रदाय श्रीसिया प्रेरित है ।

---

28. आत्मसक्ति सोइ अरु जड़ माया । दोउ मिलि जग नाटक निर्माया ।।
जड़ माया नाना तन धरई । चेतन तिहिं महँ वास सुकरई ।
जड़ चेतन दोउ माया रूपा । सिय सियवर की सक्ति अनूपा ।।

--- पृष्ठ-128

29. धरहिं इष्ट संबंधी नामा । शरण सहित तनकर अभिरामा । - पृष्ठ140

2· इसकी आचार्या श्री रमा और देवी कमला हैं ।

3· इसका शरणागत पुरुष भाव का त्याग कर देता है ।

4· इसमें सखी भाव की प्रधानता होती है । अतः स्त्री-भाव ग्रहण करके ही इष्ट सुख प्राप्त हो सकता है ।

5· नाम-रटन,[30] पंच-संस्कार, सद्गुरू में दृढ़ भाव, तत्सुखी भाव, सेवा-भाव,

---

30· उपासक सोइ जो नाम रटै ।।
प्रथम तजै जग जाल जहाँ लगि, गुरू पद कमल सटै ।
कंठी तिलक मंत्र माला दृढ़, वैश्नव ठाट ठटै ।।
जो गुरू कहैं करै सोइ सोइ सिधि, सपनेउ नाहिं नटै ।
करि सेवा संबंध लिखावै, प्रण करि गुरू ढिग डटै ।।
सीखै भेद भाव वर नाना, जैहि फिरि मन न हटै ।
श्री सियराम विहार भक्ति रस, तन मन वच लपटै ।।
अनायास गुरू कृपा अनूपम, अनुभव सुख प्रगटै ।
होय अनन्य उपासक साँचौ, भ्रम तम तोम फटै ।।
ममता मोह कोह कामादिक, तहि उर पुनि न खटै ।
परमानन्द रूप निसि बासर प्रमुदित अवनि अटै ।।
दम्पति विमल विनोद पयोनित, तत्सुख द्रिगनि चटै ।
तारन तरन भयेउ तेहि सेवत, प्रेमलता दुख कटै ।।

--- पृष्ठ-148

दम्पति के भक्तिरस में विहार महली-सेवा और अनन्यता की उपासना में महत्वपूर्ण तत्त्व हैं ।

श्रीसीताराम नाम जापक महत्व में सियराम उपासक को निर्भयचित्तवाला, नाम जापक और सियराम रूप रंग में रंगा बताया गया है-

श्री सियराम उपासक सांचे ते न किसी से डरते हैं ।
रटहिं रटावहिं नाम याम वसु निज प्रभु धाम विचरते हैं ।।
रंगे रहत सियराम रूप रंग चरण कुसुम धरते हैं ।
प्रेमलता तजि आश त्राश सब महा मोद मन भरते हैं ।

--- सीताराम रहस्य दर्पण {संकलन}, पृष्ठ-163

पंचसंस्कार --

पंच संस्कारों से मंडित साधक विधिवत् रामभक्ति की दीक्षा का अधिकारी बनता है । ये पंच संस्कार माया के पांच अंगों से साधक की रक्षा करते हैं । ये पंच संस्कार हैं -- मुद्रा, तिलक, नाम, मंत्र और माला {कंठी} । प्रेमलताजी ने वृहद् उपासना रहस्य में संग्रहीत पंच संस्कार {अष्टम प्रसंग} नामक ग्रंथ में पंच संस्कारों को "प्रभु अंगत प्रकटित माना है और उसका महद् फल बताया है --

पांचउ संसकार प्रभु अंगा । चेतन अमल अखेद अभंगा ।।
सकल सिद्धि प्रद आनंद दायक । सबहिं सुलभ सब विधि सब लायक ।।
त्रिविध ताप मन वच क्रम पापा । हरण विषाद अलाप कलापा ।।
तीनि काल के कर्म कठोरा । अनमिटहू जो पातक घोरा ।।
नाशहिं सकल विकार अपारा । संसकार ये पांचहु सारा ।।

संसकार पाँचौ सुभग, हेतु रहित हितकार ।

भुक्ति मुक्ति रति भगति प्रद, साँचे सरल उदार ।।

--- पृष्ठ-157-158

प्रेमलताजी ने पंच संस्कारों का साधकों का परम लक्षण माना है । इसी कारण साधक "पूजनीय" और "प्रभु के प्यारे" [पृष्ठ-159] बनते हैं । पंच संस्कार प्रसंग में कवि ने राम भक्ति में पंच संस्कार युक्त श्वपच [चांडाल] को भी श्रेष्ठ माना है । यह जाति भाव रहित औदार्य वैष्णव-भाव का निजी वैशिष्ट्य और प्रेमलताजी की महत्ता को सिद्ध करता है --

संसकार युत स्वपचौ अंबा । होत कहहिं प्रभु भक्त समूवा ।।

प्रभु भक्तनि महँ जाति विभेदा । राखत ते पावहिं बहु खेदा ।।

भक्तिनि क हँ जो जानहिं नीचा । ते जन परहिं घोर भव कीचा ।।

--- पृष्ठ-159

पंच संस्कारों से रहित खंड संस्कारों से युक्त वैष्णव वेश को कवि ने त्याज्य और निन्द्य माना है --

संसकार पाँचौनि में, खण्डन करै जु कोय ।

दुख पावै यहि लोक पुनि, प्रभु पद विमुखी होय ।। -- पृष्ठ-162

प्रेमलताजी ने पंच संस्कारों में क्रमशः तिलक, छाप, कंठी [तुलसी-माला], युगल मंत्र, आत्मनाम को परिगणित किया है ।

तिलक --

प्रथम तिलक श्री बिन्दु समेता । देत सु सतगुरु कृपा निकेता ।।

सिंहासन सह ऊर्ध्वसु पुण्डहिं । सुर नर मुनि लखि नावत मुण्डहिं ।

राम लखन दोउ तिलक अनूपा । सिंहासन हनुमान सरूपा ।।
तिलक रूप भे जब दोउ भाई । बिन्दु बनी सिय परम सुहाई ।।

--- पृष्ठ : 168-169

छाप --

मुद्रा, बाण, चद्रिका, चापा । युगल नाम ये पाँच सु छापा ।।
तजहिं न वैश्नव जन विग्यानी । पाँचहु छाप प्राण सम जानी ।।

--- पृष्ठ-175

कण्ठीमाला --

तीसर कण्ठी माल सुहावा । संसकार चहुं वेदनि गावा ।।
दुइ छर क ी कण्ठी गर पूरी । लगी रहे मुद मंगल मूरी ।।
तिलक छाप कंठी विनु दोऊ । नाक हीन जिमि सुन्दर कोऊ
बिनु युवती जिमि भूपति गेहा । भजन भाव जिमि विनु असनेहा

--- पृष्ठ-176

गुलुख कंठी नाव समाना । बैठिन बूड़हिं चतुर सुजाना ।।
केवट ज्ञान विचार खिवैया । जीवन भव निधि पार लगैया ।।

--- पृष्ठ-179

युगल मंत्र --

प्रेमलताजी ने दाहिने कान में सतगुरू द्वारा प्रदत्त युगल मंत्र का ही विधान बताया है । "शरणागत युत युगल मंत्र के अंग भी वर्णित

हैं । यह युगल मंत्र "मंत्रराज"[31] कहा गया है ।

युगल मंत्र विधिवत जप करहीं । ते जन अवसि घोर भव तरहीं ।।
युगल मंत्र बिनु मोक्ष न होई । कोटि न मंत्र जपै किन कोई ।।
युगल मंत्र विनु युगल उपासी । होत न होय सकल गुण रासी ।।
युगल मंत्र जब लगि नहिं पासा । तब लगि लागत वेष उदासा ।।
युगल मंत्र भावना विहीना । श्री वैष्णव पद पाव न दीना ।।

--- पृष्ठ-184

आत्मनाम --

सद्गुरू प्रदत्त नाम "महलीनाम" है जो पंचम संस्कार कहलाता है । शरण नाम शरणागति भाव को व्यक्त करता है ।

तेहि लगि शरण नाम भल जोई । लागेउ लेन देन सब कोई ।।
दास धर्म नहिं जाय सु साधा । शरण नाम सब विधि निर्बाधा ।।
शरणागत वत्सल प्रणधारी । तजत न शरणहिं विरद विचारी ।।
शरण दास कौनेउ यक नामू । देइ अवसि संबंधी नामू ।।
पँचम संसकार यह नामा । तेहिकर वरणेउँ भेद ललामा ।।

--- पृष्ठ-190

कवि ने वैष्णव धर्म और तत्सुखी शाखा के भाव तत्त्व के साथ-साथ वैष्णव वेश को भी साधना का एक व्यावहारिक पक्ष स्थिर करते हुए पंचसंस्कारों की व्याख्या की है । पंच संस्कारों का मुख्य उपयोग वैष्णव धर्म

31• वृहद् उपासना रहस्य, पृष्ठ-182

और वैष्णव भाव के प्रवर्त्तन[32] में किया गया है ।

अष्टयाम --

अष्टयाम-प्रसंग का भावन मानसी पूजा या युगल रूप के रसात्मक चिन्तन हेतु किया जाता है । अष्टयाम लीला द्वारा साधक अपने उपास्य से सीधा संबंध स्थिर करने में समर्थ होता है । सांसारिक प्रपंचों से उठकर कुंजलीला में अभिरूचि रखक र वह रसभोग को प्राप्त करता है । अष्टयाम भावना में साकेत लोक के अन्तर्गत दिव्यदम्पति की नित्यलीला में पंच काल एवं अष्ट कुंज की सेवा का मानस ध्यान होता है । अष्ट कुंज हैं -- स्नानकुंज, शृंगार कुंज, कलेऊ कुंज, भोजन कुंज, शयन कुंज, केलि कुंज, झूलन कुंज और रासकुंज । राम की ऐश्वर्य संबंधी लीलाओं में शृंगारिक लीलाओं में ही उपासक का चित्त रमता है ।

मानसिक अष्टयाम-पूजा की सेवा मन से होती है । इसमें सियाराम के ध्यान से पवित्र होता हुआ मन क्रमशः शान्त होता है । गीता 6/35 में भगवान् ने चंचल और दुर्निग्रह मन को वश में करने के लिए दो उपाय निर्दिष्ट किए हैं, वे हैं अभ्यास और वैराग्य । ये दोनों इस मानसी सेवा में गृहीत होते हैं । अन्य विषयों से खींचकर मन को प्रभु सेवा में लगाना यहाँ आवश्यक होता है । यह अष्टयाम-सेवा श्री अयोध्या एवं श्री वृन्दावन के ऐकान्तिक संतों में प्रचलित है । पंच संस्कारात्मक दीक्षा-विधान द्वारा सतगुरू रस की उपासना के अनुसार नियत संबंध प्रदान करता है । यह सेवा सख्य, दास्य,

---

32. द्रष्टव्य -- वृहद् उपासना रहस्य, पृष्ठ : 200-202.

शान्त एवं वात्सल्य रसों में भी होती है पर विशेषतया यह शृंगार रस में गृहीत है । प्रेमलता जी ने इस महली सेवा को पर्याप्त महत्व दिया है --

महल की टहल करिय चित लाय ।
सुर दुर्लभ मानुष तनु पायेउ, कहत सन्त श्रुति गाय ।।
सेवत जो दंपति पद प्रमुदित, अलिगन संग सुखदाय ।
कंचन भावन सु दिव्य मणिन मय, रचना अनुप निकाय ।।
विहरहिं जहाँ सदा सिय पिय संग, बन उपवन बहुताय ।।
नित नूतन मुद मोद प्रकाशत, चहुँ दिशि सुख रह छाय ।।

--- प्रेमलता पदावली, पद संख्या-48, पृष्ठ-47

वृहद् उपासना रहस्य में प्रेमलताजी ने अष्टयाम भावना प्रसंग विषयक "गुप्त रहस्य" को प्रकाशित करना चाहा है । वैष्णव संबंध ही प्रभु सेवा का अधिकार प्रदान करता है । बिना संबंध के व्यक्ति महत्वहीन है, इसे अनेक उदाहरणों से पुष्ट किया गया है ।[33] प्रिय-प्रिया के साकेत महल में पुरुष भाव से प्रवेश नहीं मिलता । सखी भाव ही अधिकृत है ।

सखी भाव बारे शृंगारी । बसि महलनि सेवहिं पिय प्यारी ।।
पुरुष न तहाँ करहिं परवेशा । विहरहिं जहँ सिय संग अवधेशा ।।
जे शृंगार रसेश उपासी । संबंधी उर भाव सुदासी ।।
निरखहिं ते यह रहस अनूपा । सेवहिं दम्पति युगल सरूपा ।।

अष्टयाम सीताराम की सहभाव प्रतीति होती है ।

---

33. द्रष्टव्य -- वृहद् उपासना रहस्य, पृष्ठ-208

युगल दम्पति का यह रहस्य संबंध आत्म ज्ञान और तत्सुखी भाव द्वारा ही संभव होता है ।[34]

कवि ने "कुंज-निकुंज", लीला में गंभीर रुचि ली है । कुंज की सज्जा,[35] यूथेश्वरी और अलि समुदाय,[36] सियाराम-विहार और लीला विहार,[37] तत्सुख-महिमा,[38] शयन और जागरण {पृष्ठ-214-215}, नित्यक्रिया {पृष्ठ-215}, वस्त्राभूषण और आरती {पृष्ठ-216}, कलेवा {पृष्ठ-217}, केलि कुंज लीला, षट्ऋतु प्रसंग लीला-भाव {पृष्ठ-280}, क्रीड़ा-कौतुक {पृष्ठ : 220-221}, झूलन {पृष्ठ : 222-223}, रासकुंज लीला, नृत्यलीला {पृष्ठ:224-226}, सखी-भाव महिमा के साथ अष्टयाम-भावना-प्रसंग का विचार हुआ है । प्रेमलताजी

---

34. आठौ याम राम सिय संगा । निवसिविलोकहिं बहु रसरंगा ।।
अष्टयाम कर सुख संबंधी । जानहिं अपर न जो वहुधंधी ।।
बिनु संबंध सु आतम ज्ञाना । तत्सुख दुरलभ कहहिं सुजाना ।।
--- वही, पृष्ठ-209

35. वही, पृष्ठ-210

36. वही, पृष्ठ-211

37. वही, पृष्ठ-212

38. तत्सुख कहत प्रधान बुध, निज सुख धूरि समान ।
सो फुर पै प्रभु रूप लखि, होत आन की आन ।।
--- वही, पृष्ठ-212

ने स्पष्टतः सखी भाव की श्रेष्ठता प्रतिपादित की है --

सखी रूप सु आतम केरा । यह सिद्धांत सु दृढ निरबेरा ।।
जिन्हि उर सखी भावना रुही । निवसति प्रणवौं तिन्हि पद धूरी ।।
यद्यपि सब मम प्रिय प्रभु प्यारे । रसिक नाम जापक मतवारे ।।
सखी भाव जिन्हि के मन माहीं । तिन्हि सम प्रिय सिय कहँ कोउ ना
जेहि पर सिय की कृपा सु देखी । तेहि पर द्रवत सु प्रभुहु विशेखी ।।
दम्पति कृपा पात्र शृंगारी । सखी भावना जो दृढ धारी ।

--- वही, पृष्ठ-23।

"सीताराम रहस्य दर्पण" में संगृहीत "षट्ऋतु विमल विहार" में भी कवि ने अष्टयाम की माधुर्य भावना का प्रतिपादन किया है ।

धाम-महत्व --

प्रेमलताजी ने अयोध्या और मिथिला को सियाराम के धाम के रूप में महत्व दिया है । भू लोक में जो अयोध्या है दिव्य लोक में वह साकेत है । शास्त्रों में दिव्य लोक की कल्पना "लीलाभूमि"[39] के रूप में की गई है । प्रेमलताजी की मुख्य साधना स्थली अयोध्या, जानकी जन्मभूमि सीतामढ़ी, जनकपुर और काशी रही है । उनके काव्य में मिथिला के प्रति अत्यंत संवेदनशील और कोमल भावनाओं का प्रकाशन हुआ है । विशेषकर सीता की जन्मस्थली सीतामही ॥सीतामढ़ी॥ के प्रति उनके मन में तीव्र अनुराग और भावावेश

---

39. तद् विष्णोः परमं पदं सदा पश्यन्ति सूरयः ।

--- ऋग्वेद, 1/22/20

परिलक्षित होता है । श्री उपेन्द्रनाथ मिश्र मंजुल ने लिखा है -- "परमसिद्ध स्वामी श्री सियालाल शरणजी प्रेमलता का 1930 ई0 में लिखित 555 दोहों से युक्त "सत्य सिद्धांत प्रकाश" सीतामढ़ी-महिमा एवं उपासना के गुह्य तत्वों का रसमय पिटक है जिसके 205 दोहे "श्री सीतामढ़ी माहात्म्य" नाम से सर्वप्रथम 1945 ई0 में संकलित होकर प्रकाशित हुए थे । सम्पूर्ण ग्रंथ सीतामढ़ी की रमणीय परिक्रमा है जिसमें मधुर भाव से श्री सीता जन्मस्थली की महिमा का उद्घोष हुआ है । नगर-ग्राम का इतना सूक्ष्म वर्णन इस काव्य को एक महाकाव्यात्मक स्वरूप प्रदान करता है । संस्कृति, इतिहास, परम्परा, भूगोल, धर्म, जाति, रीति-रिवाज, तत्कालीन जन-जीवन, सीतामढ़ी का संपूर्ण कलेवर दर्पण की तरह उसमें प्रतिबिम्बित होता हुआ जान पड़ता है ।"[40]

सीतामढ़ी विषयक वर्णन माधुर्य भाव और भक्तिभाव की एकता को प्रदर्शित करते हैं । सीता की जन्मभूमि का वास "सब प्रकार की भूख" मिटाकर मनोवांछित फल प्रदान करता है ।[41] सीतामढ़ी को "सुवास" श्री सीताराम की प्राप्ति में सहायक है, उसकी नदी लक्ष्मणा का जल-पान तथा

---

40. पराशक्ति श्री सीता और अवतरण भूमि - सीतामढ़ी

-- उपेन्द्रनाथ मिश्र मंजुल, संपादक - डॉ0 महेन्द्र मधुकर

पृष्ठ-147-48

41. महितल महँ सीतामढ़ी, कामधेनु सुर रूख ।

सेवत नासत जानकी सब प्रकार की भूख ।।

--- सत्सिद्धांत रहस्य प्रकाश, दोहा संख्या-336

नाम-रटन जन्म मरण की पीर का नाशक है ।[42] बिना सीतामढ़ी की सेवा और उसके दर्शनों के यह मानव-जीवन निःसार तथा व्यर्थ है ।[43]

श्री प्रेमलता विरचित "श्री सीतामढ़ी धाम माहात्म्य" मूलतः सीतामढ़ी का वाह्य और आन्तरिक परिचय है । इस ग्रंथ के विषय में "पराशक्ति श्री सीता और अवतरण भूमि सीतामढ़ी" के लेखक उपेन्द्रनाथ मिश्र मंजुल के उद्‌गार उल्लेख्य हैं कि "स्थूल और सूक्ष्म दोनों ही विधियों से कवि ने संपूर्ण सीता प्राकट्य स्थली सीतामढ़ी नगरी की काव्यात्मक एवं भावात्मक मनः यात्रा प्रस्तुत की है । इसके सभी छन्द एक विशिष्ट भावाविष्ट दशा में स्वतः स्फुरित किसी दिव्य प्रेरणा के परिणाम प्रतीत होते हैं, रचना-तंत्र में भावावेग, साधना-फल और प्रतीति का अद्‌भुत स्पर्श मिलता है । सहृदय पाठ क यह देखकर चकित हो जाता है कि एक श्री सीताराम चरणानुरागी भक्त को जगन्माता श्री सीता की दिव्यभूमि के कण-कण से कितना अनुराग है । क्या जड़, क्या चेतन सभी अनुराग के तार में बंधकर एक ही सुर में बज रहे हैं, लता, वृक्ष, पुष्प, नदी,

---

42. श्री सीतामढ़ी सुवास दृढ़ करहि लक्ष्मणा तीर ।
प्रेमलता सियराम रटि, लहहि ते सिय रघुवीर ।।
सेवत श्री सीतामढ़ी, पियत लक्ष्मणा नीर ।
रटत नाम तिन्हि फिर कहाँ जन्म मरन की पीर ।।

--- वही, पृष्ठ-4

43. मानुष तनु धरि जगत में, जग जननी को धाम ।
लखेउ न सेयेउ जियत सो, वृथा भूमिताम बाम । --- वही

मिट्टी, मनुष्य सब में एक ही सियराम ध्वनित-प्रतिध्वनित हो रहे हैं -- "सियाराम मैं सब जग जानी" का आदर्श सूत्र सबमें जैसे समान रूप से प्रतिफलित हो रहा है।"[44] प्रेमलताजी की दृढ़ता और अनन्यता का कारण है सीतामढ़ी में सियाराम के अचल भाव से स्थित होने का भाव।[45] उन्होंने सीतामढ़ी स्थित उर्विजा कुण्ड के अमोघ प्रभाव का वर्णन करते हुए सखियों के साथ श्री सीता के अवतरण की पुष्टि की है।[46]

प्रेमलताजी ने समान्यत: मिथिला मही के माहात्म्य को महत्व दिया है। मिथिला-माहात्म्य विषयक उनके कतिपय प्रमुख छन्द निम्नलिखित हैं --

---

44. पराशक्ति श्री सीता और अवतरण-भूमि : सीतामढ़ी, पृष्ठ-148

45. मध्य सु पुरी सुलक्षणा, सीतामढ़ी सुनाम।
राजति अनुपम अचल जहँ, निवसत श्री सियराम ।।
---- श्री धाम-सीतामढ़ी माहात्म्य, पृष्ठ-3, दोहा संख्या-

46. तेहि स्थान समीप अति, उत्तर त्रेता केर।
लसत उर्विजा कुंड इक, तासु प्रभाव घनेर ।।
जगत जननि श्री जानकी, हरन हेतु महिभार।
सखिन सहित तेहि कुंड ते, प्रगटेउ परम उदार ।।
रवि सत कोटि प्रकाश मय, सिंहासन तेहि माहि।
बैठी कोटिनि चन्द्र सम, सीतल सिया सोहाहीं ।।
-- श्री सीतामढ़ी माहात्म्य, दोहा संख्या : 35-37, पृष्ठ:3-4

1. मिथिला मायापुरी परम शुचि महिमा कही न जाती है ।
श्री सियराम विहार थली नित नव आनंद प्रगटाती है ।।
जन्मभूमि श्री सिय स्वामिनि की जन अघ ओघ नशाती है ।
प्रेमलता हतभाग जीव ते जिन्हें न मिथिला भाती है ।।

-- सीताराम रहस्य दर्पण [षट्ऋतु विमल विहार],

--- पृष्ठ-8

2. बिनु सेये सियराम सु मिथिला जन्म मरण दुख कौन हरै ।
प्रेमलता अस जानि ठानि प्रण बसि मिथिला सियराम रटै ।।

--- वही, पृष्ठ-9

3. श्री सियराम समान सु ब्रह्म न मिथिला सम नहिं कोउ धामा ।

--- वही, पृष्ठ : वही

4. नहिं सियराम नाम से नाम सु ईश न श्री सिय रघुबर से ।
लीलाललित न रामायण सम लिखी जैान तुलसी कर से ।
धामन मिथिला अवध सरिस कोउ अनुग न हनुमत अनुवर से ।
प्रेमलता सुर असुर चराचर डरहिं काल यम जेहि डर से ।।

-- सीताराम नाम जापक महत्व, पृष्ठ-162

5. अटिये अटिये मिथिला पुर धामहिं ठाटि सु वैष्णव वेष उदारा ।

-- नाम वैभव प्रकाश चालीसा, छन्द-3।

6. मन भावै हमैं मिथिला की गली ।।
अलिनि संग विहरत जहँ निशिदिन, प्रमुदित श्री मिथिलेश लली ।

-- प्रेमलता पदावली, पद संख्या-14, पृष्ठ-17

7· जय जय मिथिलेश पुरी मिथिला सुखदाई ।।

सप्तपुरी तीर्थधाम सकल सुखद पुन्यठाम,

सेइ तव सुपद ललाम, सकल सिद्धि पाई ।।

तीनि लोक तीनि काल तो समान तु कृपाल,

निरखि राम भे निहाल, सहित लखन भाई ।।

---- प्रेमलता पदावली, पद संख्या-316, पृष्ठ-275

8· सीतामढ़ी सु धाम ते, मि थिला द्वादश कोश ।

राजत पूरब हरन अघ, दायक सुख संतोष ।।

दायक सुख संतोष भयेउ जहँ राम विवाहू ।

घर घर मंगल मोद नवल आनंद उछाहू ।।

श्री सिय जन्म सु भूमि तथा मिथिला सु पुनीता ।

प्रेमलता दोउ सेउ जनकपुर मढ़ी सुसीता ।।

--- सार सिद्धांत प्रकाश, छंद-401, पृष्ठ-143

9· सीता जन्म सु भूमि अरू रघुनंदन ससुरारि ।

उभय भाँति आनन्दप्रद, मिथिला पुरी विचारि ।।

मिथिला पुरी विचारि युगल उर अतिशय प्यारी ।

परम रम्य मन हरन सुखद महि न्यारी न्यारी ।।

---- वही, पृष्ठ-148

10· मिथिला भूमि सकल सुखदाई । जहँ देखौ तहँ परम सुहाई ।।

सिय जननी किमि कहौं बखानी । मिथिला महि सब महि की रानी ।

राम मातु पर धाम सिधाई । अवध बहुरि विक्रमा बसाई ।।

सिय जननी महि मिथिला सोई । राजहिं अवध जान सब कोई ।।
मिथिलापुरी बिस्व ते न्यारी । नित्य विहार थली सुखकारी ।।
जो साकेत धाम परलोका । सोइ श्री मिथिला अवध असोका ।।

-- वृहद् उपासना रहस्य - श्री धाम प्रसंग, पृष्ठ-103

प्रेमलताजी ने मिथिला और अवध को सियाराम का "नित्यधाम" कहा है ।[47] धाम-प्रसंग को अति अनूप और गुह्य माना गया है । राम को सब ईशों का ईश कहा गया है (राम ईस सब ईसनि केरे - पृष्ठ-87) । दिव्यलोक रूप उन्होंने साकेत और भू लोक के रूप में अवध की चर्चा की है । नाम रूप लीला और धाम के रूप में ही सियाराम की प्राप्ति होती है । सिया स्वामिनी की अली के रूप में श्री प्रीतिलता और श्री युगलविहारिनी जी का नामोल्लेख हुआ है ।

"सार सिद्धांत प्रकाश" में छन्द संख्या 342 से 358 छंदों तक "सरयू षोडसी" की रचना द्वारा प्रेमलताजी ने सरयू की वन्दना की है । इसके द्वारा अवध या साकेत धाम का तत्त्व प्रकाशन भी कवि का उद्देश्य

---

47. नित्यधाम मिथिला अवध, नित्य विभूति विहार ।
मृत्युलोक राजत सदा, माया मन गुन पार ।।

-- वृहद् उपासना रहस्य (श्री धाम प्रसंग), पृष्ठ-104

प्रतीत होता है। माधुर्य भाव के लीला रस में भी कवि सरयू का उपयोग किया है।[48]

अन्य भक्तिपरक दार्शनिक मत --

प्रेमलताजी का काव्य भक्ति और दर्शन का अपूर्व सम्मिलन है जिसमें संप्रदाय और साधनागत दिव्य भावावेश परक अनुभवों का अद्भुत सम्मिश्रण परिलक्षित होता है। कवि के भक्तिपरक दार्शनिक विचारधाराओं का संक्षिप्त: परिचय इस प्रकार है --

षट् शरणागति प्रसंग --

प्रेमलताजी ने षट् शरणागति प्रसंग में अनुकूलता-ग्रहण, प्रभु-प्रतिकूल का परित्याग, कार्पण्यता, गोपत्रत्व, प्रभु रक्षण में विश्वास और आत्मनिवेदन का विवेचन किया है। षट् शरणागति या ~~प्रपत्ति~~ प्रपत्ति का उद्देश्य है;

---

48. (क) सरजू तट इक कदम तरु, सुन्दर सुखद विशाल।
षटरितु रहत सु एक रस, तहाँ हिंडोल सु चाल ।।
तहाँ हिंडोल सुचाल लाल संग झूलहिं प्यारी।
साज समाज अनूप युगल छवि की बलिहारी ।।
प्रेमलता सु मलार अली गावहिं मनहर जू।
दम्पति विमल विहार विलोकहिं प्रमुदित सरजू ।।
-- सार सिद्धांत प्रकाश, कुण्डलिया संख्या-352, पृष्ठ-126

(ख) पावन सरयू तीर लखि, दिव्य अवधपुर धाम।
प्रेमलता सियराम जहँ, विहरहिं मन अभिराम ।।
-- निजात्म बोध दर्पण, पृष्ठ-169

साधक के हृदय में उपास्य के प्रति अनन्य श्रद्धा एवं विश्वास युक्त आत्मनिवेदन की भावना जाग्रत करना ।

अनुकूलता ग्रहण --

प्रभु अनुकूलनि ते जो प्रीति । करत होय तिन्हि की जगजीति ।।
यह अनुकूल ग्रहण शरणागति । प्रथम कही मैं कछुक यथामति ।।

--- वृहद् उपासना रहस्य, पृष्ठ-238

प्रभु प्रतिकूल का परित्याग --

प्रभु प्रतिकूल वस्तु जो होई । अतिशय प्रिय तउ त्यागिहु सोई ।।
प्रभु प्रतिकूल पदारथ जेते । त्यागहिं राम उपासक तेते ।।

--- वही, पृष्ठ : वही

कार्पण्य ता --

कारमन्यता तीसरी, कहौं सुनहु धरि ध्यान ।
जेहि बिनु द्रवत न कबहुँ प्रभु, श्री सियवर भगवान ।।
जो प्रभु प्रिय वैष्णव विज्ञानी । षट शरणागत ख्याता प्रानी ।।
ते निज दोष विचारि विचारी । रोवहिं ब हु बिधि आँसू ढारी ।।
प्रभु सन्मुख वा बैठि इकन्ता । निज अघ प्रभु गुण गावहिं संता ।।
आपुहिं अवगुन मूरति मानहिं । मन वच कर्म भजहिं भगवानहिं ।।

--- वही, पृष्ठ-242

गोपत्रत्व --

गोपत्रत्व शरणागत भासी । उर महँ द्वैत भावना नासी ।
जहाँ जाय तहँ प्रभु सुखरासी । व्यापेउ जिन्हि की माया दासी ।।

प्रभु रक्षण में विश्वास --

प्रभु रक्षक मम दृढ़ विश्वासी । यह पंचम शरणागति खासी ।
तेहि कर कहौं कछुक गुण गाई । पढ़ि सुनि आश तजहु पर भाई ।।
रक्षक जानि प्रभुहि वर आसा । करत न पावहिं ते पद खासा ।

--- पृष्ठ-246

लय लगाय तजि जग की आसा । धारि हिये निज प्रभु विश्वासा ।।

--- पृष्ठ-248

रक्षा में विश्वास दृढ़, धारि रटै सियराम ।
पंचम शरणागति सु यह, समुझहिं संत अकाम ।।

--- पृष्ठ-249

आत्म निवेदन --

आत्म निवेदन खेल न होई । वातनि तेउ प्रभु मिलत न सोई ।।
आत्म स्वरूप दृष्टि जब आवत । तव सब चटक मटक विनशावत ।।
प्रेमा भक्ति तरूणता छाई । नलेउ लरिकपन जड़ नर ताई ।।
दुलहिनि बनी आतमा नीकी । तब कीन्हीं सुधि राम सु पीकी ।।

--- पृष्ठ-253

षट् संपत्ति --

प्रेमलताजी ने प्रभु-भक्ति और नामस्मरण में षट् संपत्ति की चर्चा की है, वे हैं -- शम, दम, उपरति, तितिक्षा, श्रद्धा और विश्वास । उनके अनुसार षट् संपत्ति और षट् शरणागति तत्त्वों का ज्ञाता सच्चा शृंगारी और दृढ़व्रती होकर नाम रटने में समर्थ होता है --

षट् संपति शरणागती, मानकार सब भेद ।

शृंगारी दृढ़ व्रत सदा, रटै सु नाम अभेद ।।

--- वृ0 उ0 ब0, पृष्ठ-256

प्रेमभक्ति प्रार्थना --

प्रेमलताजी ने द्वादश प्रकार की वैष्णव भक्ति का विवेचन किया है । उनके प्रकार भेद निम्नलिखित हैं --

1. पंच संस्कार युक्त वैष्णवी भक्ति
2. गुरु-सेवा
3. संत-सत्संग
4. भक्त-गाथा-स्मरण
5. षट् संपत्ति युक्त षट् शरणागति
6. सियाराम-रटन
7. बत्तीस दोषों को मिटाकर प्रभु स्वरूप-चिन्तन
8. प्रभु का गुण गान
9. धाम में अखण्ड निवास
10. मानस पूजा
11. सखी रूप में आत्म समर्पण- अष्टकुंज भावरूपा प्रेम भक्ति
12. आत्मज्ञान मूलक प्रेमाभक्ति -- सखीभाव

कवि ने सखी भाव की प्रेमाभक्ति का विशद वर्णन किया है --

।॰ सखी भाव उर धरहु अनूपा । प्रेम भक्ति कर यही स्वरूपा ।।

सखी भावना मोहिं अति प्यारी । सब भावनि ते मुनि सुखकारी ।।

यही भावना उर दृढ़ धरहीं । प्रेमी भक्त स्ववश मोहि करहीं ।

सखी भाव विनु नित्य विहारा । मिलत न उद्य करहु अपारा ।।

श्री सियराम विहार अनूपा । लखहिं रसिक धरि सखी अनूपा ।।

प्रेमा भक्ति विना सखि भाऊ । आवत हृदय न कोटि उपाऊ ।।

प्रेम भक्ति कर अद्भुत धर्मा । आवत हृदय नाशत सब कर्मा ।।

--- वृहद् उपासना रहस्य, पृष्ठ-293

युगल-उपासक और अष्टकुंज की भावना --

युगल उपासना और अष्टकुंज की भावना पर भी यथेष्ट बल दिया गया है --

युगल मंत्र कंठी तिलक नाम छाप सम्बन्ध ।

दीन कहेउ सियराम भजु, प्रेमलता निरबन्ध

युगल किशोर उपासना, कनक भवन संयोग ।

कहेउ ध्यान सियराम कर, प्रेमसु लता असोग ।।

--- निजात्म बोध दर्पण, पृष्ठ-167

तत्सुख भाव --

प्रेमलताजी ने तत्सुख भाव को प्रधानता दी है । तत्सुख का अर्थ है -- इष्ट के सुख में सुख मानना ।

तत्सुख सीताराम ते, निज सुख मायिक मानि ।

प्रेमलता निज सुख गहे, दोनो सुख की हानि ।।

निज सुख तो गोचर सदा, तत्सुख सुनु मनलाय ।
प्रेमलता सियराम कर, नाम रटे दरशाय ।।

--- निजात्म बोध दर्पण, पृष्ठ-168

हनुमत्भक्ति --

प्रेमलताजी के काव्य और जीवन में हनुमत् भक्ति का एक दृढ़ स्वरूप दिखाई पड़ता है । हिन्दी साहित्य का वृहद् इतिहास में प्रेमलता जी हनुमत्भक्ति काव्य की चर्चा करते हुए कहा गया है "सियालाल शरण प्रेमलता द्वारा रचित "संकटमोचन हनुमन्नाष्टक" साहित्यिक दृष्टि से एक सुन्दर और कलापूर्ण कृति है जिसमें हनुमान के रूप-सौन्दर्य का बड़ा ही सजीव चित्र अंकित हुआ है ।"[49] हिन्दी साहित्य के वृहद् इतिहास (पंचम भाग) में भ्रमवश सियालाल शरण के स्थान पर सियाराम शरण अंकित हो गया है ।

कंचन केरि किरीट लसै सरछत्र छटा कछु जाति न गाई
उर्ध सुपुंड्र सविन्दु शिरो शुभ भाल विशाल हियो झलकाई
कुंडल कान सु भौंहैं मनो हर नयन अनूपम प्राण सुहाई
प्रेमलता बलि जाए द्रवौं प्रभु संकटमोचन हे कपिराई ।।

--- संकटमोचन हनुमन्नाष्टक, छंद संख्या-1

"नित्य प्रार्थना" नामक ग्रंथ में संकलित हनुमत्प्रार्थना में भी कवि के भक्त चित्त और आर्त्त भाव का प्रकाशन हुआ है --

---

49. हिन्दी साहित्य का वृहद् इतिहास (पंचम भाग), पृष्ठ-409
सं0-देवेन्द्रनाथ शर्मा, विजयेन्द्र स्नातक, काशी नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी

1. जय जय कपि नायक जन सुखदायक महावीर बल वन्ता ।
जय संकट मोचन पिंगल लोचन संकट सहहिं सु सन्ता ।।
जय जय जगदीश करि दुख खीसा राम दास हनुमन्ता ।
जय जय अविनाशी आनंदराशी भय भय हरन अनन्ता ।।

--- नित्य प्रार्थना, पृष्ठ-42

2. जय जयति श्री हनुमंत करुणा सिन्धु जन सुख दायकम् ।
महिमा उदार अपार गुण प्रभु पाहि अब सब लायकम् ।
त्रयलोक पावन विदित तब कपि सुयश सुरमुनि गावहीं ।
जपि नाम सीताराम विहरहिं अवनि तब सुख पावहीं ।।

--- वही, पृष्ठ-43

3. प्रगट जग संकटमोचन नाम ।
मैं सुनि श्रवण विरद तब बाँकुर, शरण लीन सुख धाम ।
राखहु प्रभु निज नाम लाज अब, जन मन पूरणकाम ।
शरणागत जन तपत ताय तिहु, तुमहिं अक्षत वसुयाम ।
जप तप योग जाग व्रत साधन, भये सकल जनु वाम ।।

--- वही, पृष्ठ-45

भजन और सत्संग --

कवि ने भजन-भाव को नाम रटन से संयुक्त कर उसे मानव-जीवन का परम फल घोषित किया है तथा संतों की सेवा तथा उनके सत्संग को श्रेष्ठ बताया है ।

सीताराम उपासक श्री सियाराम नाम अनुरागी हैं ।
कंठी तिलक माल दृढ़ धारैं मारैं मनहिं अदागी हैं ।
संत संग हरि चरित निरंतर सुनैं भक्ति मति पागी हैं ।
प्रेमलता सो धन्य जीव जगजाके प्रभु लय लागी हैं ।।

-- सीताराम रहस्य दर्पण {ज्ञान पचासा}, पृष्ठ-195

नामरसिक संतों की सेवा को भी भक्ति और साधना का एक प्रमुख रूप माना गया है --

नाम रसिक सन्तन की सेवा करन चहै जब कोउ मन में ।
निकसि निकसि तेहि पितर निरय ते होवैं सुखी अति तेहि छन में ।।
कोटिन पातक नाशहिं होय जब प्रीति प्रतीति सुहरि जनमे ।
प्रेमलता सुचि साधु सु महिमा लखहिं न जे रत तन धन में ।।

-- वही, {सीताराम नाम जापक महत्व}, पृष्ठ-168

सन्तन के सेवक के सेवक होत राम रणधीरा हैं ।
रक्षा करहिं संग रहि निशिदिन दश दिशि धरि धनुतीरा हैं ।।
सन्मुख खडे रहैं रुख जुगवत हनुमान बल बीरा हैं ।
प्रेमलता पालहिं सिय स्वामिनि नाशि त्रिविध भव पीरा हैं ।।

--- वही, पृष्ठ : वही

अतः स्पष्ट है कि कवि संत श्री सियालाल शरण जी "प्रेमलता" के काव्य में भक्ति और दार्शनिकता के परंपरागत और साम्प्रदायिक

विवेचन के साथ भक्तिभावमूलक स्वार्जित अनुभूतियों का भी मौलिक प्रभाव दिखाई पड़ता है । नाम स्मरण, भक्ति और संसार के माया-प्रपंच के प्रति कवि की सावधान बुद्धि का अनुभव प्रतिक्षण होता है । उनकी तत्सुखी भावभक्ति रसिकों के साध्य तत्व के रूप में व्यक्त हुई है । प्रेमलताजी का सिद्धांत विवेचन श्री सीताराम की विहार-लीला और उनके नाम-रटन में प्रेरक सिद्ध होता है एवं रामभक्ति की मर्यादा से पुष्ट मधुर उपासना की ओर जन साधारण की शृंगारी प्रवृत्ति को आध्यात्मिक रूप में उदबुद्ध कर प्रवृत्त करता है ।

------- 0 -------

पंचम अध्याय

प्रेमलता जी के काव्य में माधुर्य-भाव

पंचम अध्याय

प्रेमलता जी के काव्य में माधुर्य-भाव

कवि संत श्री सियालाल शरण जी "प्रेमलता" का काव्य मधुरोपासना या रसिकोपासना की परंपरा में तत्सुखी शाखा के अंतर्गत माधुर्य भाव की श्रेष्ठता और दिव्यता का अपूर्व निदर्शन है ।

मधुररस मात्र भाव या अलौकिक शृंगार नहीं अपितु साधकों सन्तों और कवियों द्वारा अनुभूत प्रकृति पुरुष की प्रणय लीला, जीवात्मा-परमात्मा के आध्यात्मिक परिणय और लीला विलास का माधुर्यमूलक आनंद रस है । इसमें आनंद स्वरूप, प्रेमस्वरूप और रसस्वरूप भगवान् की लीला अर्थात् रमणेच्छा की सुन्दर अभिव्यक्ति होती है । भारतीय साधकों ने इसी रूप में रूपोपासना, लीलादर्शन एवं राग-साधना का अनुभव किया है । डॉ० हजारी प्रसाद द्विवेदी का मत है कि साधक रूप और सीमा की सहायता से उस शाश्वत अरूप और परिव्याप्त असीम को देखता है, जो उसका चरम प्राप्तव्य है । कवि शब्द और अर्थ का सहारा लेकर अरूप रस की ओर उन्मुख होता है, कलाकार रेखा और रंग की सहायता से रूपातीत भाव की अभिव्यंजना करता है और भक्त भी नाम और रूप की सीढ़ियों से ही उठकर अनाम और अरूप परमतत्त्व की

झाँकी पाता है ।"[1] विचारकों ने माना है कि "जीवात्मा और परमात्मा का सहज विलास, ब्रह्म और उसकी शक्तियों की आनंद-केलि, भक्त-प्रेयसी और भगवान्-प्रियतम की शाश्वत प्रेम-लीला ही मधुर रस का संस्थान है । ... प्रेम लौकिक प्रीति का विषय बन जाने पर जड़ोन्मुख हो जाता है । फलतः कान्ताभाव की रति में जड़ासक्ति का ही चरमोत्कर्ष होता है । किन्तु वही प्रेम जब चिन्मुख होकर भगवत्-प्रीति का विषय बन जाता है तब वह सर्वश्रेष्ठ उज्ज्वल रस किंवा मधुर रस के नाम से प्रतिष्ठित होता है ।"[2]

पं0 गोपीनाथ कविराज ने रसिक भक्त और रसिक संप्रदाय का संबंध स्थिर करते हुए कहा है कि "भारतीय भक्ति-साधना के अत्यंत निगूढ़ प्रदेश में इस भागवती लीला का संधान मिलता है । जो भक्ति को केवल भाव रूप से नहीं पहचानते हैं किन्तु रसरूप से उसका साक्षात्कार कर सकते हैं, भक्ति रस के आस्वादन के अधिकारी वे ही हैं । जिनके चित्त में इस प्रकार की योग्यता उत्पन्न होती है, वे ही रसिक भक्त हैं । अन्य भक्त, भक्ति संपन्न होते हुए भी "रसिक" पद वाच्य नहीं होते । अतएव "रसिक संप्रदाय" शब्द से हम उस संप्रदाय को समझते हैं जो भक्ति को केवलमात्र भाव रूप में नहीं किन्तु

---

1. कबीर --- डॉ0 हजारी प्रसाद द्विवेदी, पृष्ठ-210
   राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, तीसरा संस्करण, 1976
2. मधुर रस स्वरूप और विकार [भाग-1]
   -- डॉ0 रामस्वार्थ चौधरी "अभिनव", पृष्ठ : 12-13

स्वरूप में ग्रहण करने में समर्थ हैं ।"[3] रसिक संप्रदाय में दम्पति के लिए प्रचलित नाम "युगल सरकार श्री सीताराम" की मधुर लीलाओं के गायक संत "रसिक" और "भाविक" नाम से कहे गए हैं ।[4]

मधुर भाव में उपासना का लक्ष्य है भगवद् सान्निध्य प्राप्त करना, उनका प्रेमपात्र बनना । साधक प्रेम स्वरूपा भक्ति[5] को अपनाकर लौकिक संबंधों के माध्यम से परमात्मा से संबंध-स्थापन कर उनकी लीला-माधुरी का पान करता है । भाव योग द्वारा साधक का अपने इष्ट से आन्तर मिलन लक्ष्य होता है । भाव-भेद के अनुसार रागानुगा भक्ति में क्रमशः शान्त दास्य में, दास्य सख्य में, सख्य वात्सल्य में परिणत होता है । पुनः प्रेमा, परा और प्रौढ़ा इन तीन रूपों में रागानुगा भक्ति के भेद किए गए हैं । प्रेमा भक्ति में इष्ट के प्रति स्नेह भाव का जागरण होता है, परा में आत्मविस्मरण और रति स्थिरता होती है और प्रौढ़ा में प्रियतम परमात्मा का साक्षात्कार संभव होता है । यह रागानुग T भक्ति मधुर रसमयी रागात्मिका भक्ति में प्रकट होती है ।

---

3. रामभक्ति में रसिक संप्रदाय की भूमिका, पृष्ठ-2

4. दंपति मधुर छवि छाके सख्य भाव बाँके
   श्री मन्नृत्य राघव की कला भरे गात हैं ।
   भाविक सभा में गुण आगर रसिक प्रेम
   सागर समान प्रेम साग र लखात हैं ।।
   --- रसिक प्रकाश भक्तमाल, पृष्ठ-48

5. तत्त्ववस्तु कृष्ण, कृष्णभक्ति प्रेमरूप ।
   --- चैतन्य चरित, आदिलीला, परि0-2,पृ0

इस गुह्य भक्ति लीला में स्त्री भाव से ही प्रवेश संभव है । यह भक्ति औपनिषदिक चिन्तन में आत्मरति, आत्ममिथुन और आत्माराम रूप में विचारित हुई है । अतः प्रेम तत्त्व ही भगवत्साधना का प्रयोजन सिद्ध होता है यही ईश्वर-भक्ति में परिवर्त्तित होकर मधुर रस में व्यक्त होता है ।

प्रेम की पूर्वावस्था भाव या रति के रूप में व्यक्त होती है । साधन भक्ति के परिपाक या भगवद् कृपा से भावभक्ति का जागरण होता है । प्रीति भाव से मन का इष्ट देव में अनुरक्त रहना रति है । भावाविष्ट चित्त कोमल और रसार्द्र होता है । इस स्थिति में प्रेमांकुर उत्पन्न होता है । यह रति पुष्ट होकर प्रेम कहलाती है और यह प्रेम वर्द्धमान होकर प्रणय, मान, स्नेह, अनुराग, महाभाव आदि के रूप में प्रकट होता है । वस्तुतः कामवृत्ति का स्थायी भाव रति है तथा उसका व्यावहारिक रूप प्रेम कहलाता है । प्रेम एक स्थिर मनोदशा है, जिसमें वात्सल्य भाव (टेन्डर फीलिंग), काम भाव (लस्ट), आत्मसमर्पण (सबमिशन) तथा आत्म प्रतिष्ठ (सेल्फ एसर्शन) का मधुर सम्मिश्रण रहता है । काम-भाव में आत्म समर्पण आदि सुकुमार भावों के मधुर संयोग से ही प्रेम का निर्माण होता है । जिस प्रकार समुद्र में अगणित तरंगें उठती एवं लीन होती रहती हैं, उसी प्रकार जहाँ सभी रस एवं भाव उन्मज्जित-निमज्जित होते रहते हैं, उसी को प्रेम कहते हैं ।[6]

---

6. सर्वे रसाश्च भावाश्च तरंगा इव वारिधौ ।
उन्मज्जन्ति निमज्जन्ति यत्र स प्रेमसंज्ञकः ।।

उद्धृत -- रीति कविता और शृंगार रस का विवेचन
--- डॉ० राजेश्वर प्रसाद चतुर्वेदी, पृष्ठ-8

माधुर्य रस और उज्ज्वल रस को परस्पर पर्यायवत् माना गया है। "माधुर्य को "उज्ज्वल नीलमणि" में रूपगोस्वामी ने भक्ति का सर्वश्रेष्ठ भाव माना है। उनकी दृष्टि से मधुर ही वास्तविक भक्तिरस है -- ‡मधुराख्यो भक्ति रस: 1/3, राधाकृष्ण की अलौकिक पारस्परिक प्रीति ही माधुर्य रस का मूल है। उसे "भक्तिरसराट्" की पदवी दी गई है।"[7]

फ्रॉयड ने भी काम तत्त्व को जीवन की प्रमुख शक्ति के रूप में स्वीकार किया है। वाह्य सामाजिक परिस्थितियों के कारण सहज कामवृत्तियों का दमन भी होता है, फलत: अनेक मानसिक ग्रंथियाँ भी उत्पन्न हो जाती हैं। कामतत्त्व को समाज सम्मत बनाने तथा मानसिक विकारों एवं ग्रंथियों से परित्राण के लिए उसके स्वरूप में परिवर्तन की आवश्यकता होती है यह परिवर्तन काम-भाव के उदात्तीकरण का रूप ग्रहण कर लेता है।[8] मनोवैज्ञानिकों ने इसे रूपान्तरण (कन्वर्शन) कहा है। इस स्थिति में दुःखी और खंडित चित्त आनंदमग्न और भक्ति के भावों से परिपूर्ण हो जाता है।[9]

---

7. हिन्दी साहित्य कोश (भाग-1), पृष्ठ-640
   ज्ञानमण्डल लिमिटेड, वाराणसी, प्रथम संस्करण

8. The energy of the enstinetal sexual forces is turned aside from its Sexual goal and diverted towards other ends no longer sexual though psychologically related and socially more valuable.
   -- Introductory lectures Freud, Pg.290

9. Conversion may be described as the process by which the self hither to divided and unhappy, becomes unified and satisfied ideas and motives.
   -- The Psychology of Religion
   - W.B.Selbie, Pg.187

मधुरोपासना भक्ति में मनोवैज्ञानिक दृष्टि से काम का उदात्त रूप दाम्पत्य भाव के रूप में दिखाई देता है । दाम्पत्य प्रेम आध्यात्मिक अनुभवों के अधिक निकट ले जाने में सर्वाधिक समर्थ होता है । इसलिए भक्तों, एवं शृंगारी रसिक सन्तों तथा कवियों ने प्रिया-प्रियतम की रसकेलि को महत्व दिया है । सखी-भाव की उपासना यह तत्त्व द्रष्टा भाव के रूप में नियोजित हुआ है जिसमें सखी रूप में कैंकर्य द्वारा प्रिया-प्रियतम अर्थात् आराध्य युगल सरकार श्री सीताराम की माधुर्य क्रीड़ाओं का रसबोध किया जाता है । विचारकों की दृष्टि में भी "दाम्पत्य प्रेम ही आध्यात्मिक अनुभवों के अधिक निकट पहुँचता है । दो हृदयों की अभिन्नता अखिल विश्व-जीवन की एकता के अनुभव-पथ का द्वार है । प्रकृति के समस्त महाभूत प्रेम के परमधाम को प्राप्त करने का निरन्तर प्रयत्न करते रहते हैं । प्रकृति और पुरुष के इस चिर वियोग का अनुभव ही मानव-जीवन और उसकी अनेक साधनाओं का सर्वोपरि फल है ।"[10]

मधुर रस का आस्वादन अनेक भावभूमियों पर होता है । उसके भाव-सम्मिश्रण पर विचार करते हुए कहा गया है कि "मधुर भक्ति रस में अनेकानेक भावनाओं का जितना अधिक सम्मिश्रण दिखलाई पड़ता है, उतना अन्य किसी दूसरे रस में नहीं । जिस रस में भावनाओं का जितना ही आधिक्य रहता है वह उतना ही अधिक प्रभावशाली और आस्वाद्य माना जाता

---

10. रीतिकालीन कविता और शृंगार रस का विवेचन

-- डॉ० राजेश्वर प्रसाद चतुर्वेदी, पृष्ठ-11.

है । शृंगार और करुण रस भयानक और वीभत्स रस से इसीलिए अधिक महत्वपूर्ण माने जाते हैं । वस्तुतः भागवत-संस्पर्श को पाकर सभी भाव नवीन प्रकार के दिव्य भावालोक से चमत्कृत हो उठते हैं और उत्कृष्ट आस्वाद्यता से परिपूर्ण हो जाते हैं । ... आकर्षण और विकर्षण अथवा राग और द्वेष की दो विशिष्ट वृत्तियाँ मनुष्य में होती हैं । राग द्वारा मनुष्य की अनेकानेक अभिमुख {आकर्षण} वृत्तियों की अभिव्यंजना होती है । मधुर प्रेम-रस की कल्पना का यही रहस्य है । मनुष्य की यह शाश्वत वृत्ति प्रेम या रति कान्ता विषयक, देवतादिविषय और अपत्यविषयक होने से क्रमशः यदि शृंगार रस, मधुर भक्ति रस और वात्सल रस के नाम से अभिहित की जाती है तो इसमें कोई आपत्ति नहीं है ।"[11]

रसिक सन्तों की मधुर भावना में साकेत लीला अर्थात् युगल दम्पति श्री सीताराम के नित्य विहार का रस-चिन्तन प्रमुख तत्त्व है । संत अपने भावानुसार परिकर रूप में उस लीला में सहयोगी बनते हैं ।

अग्रदास ने रसिक रामभक्तों को "पंचभावोपासक" मानकर अष्टयाम-भावना में भक्ति के पाँच रसों के अनुसार सेवा का विधान निर्दिष्ट किया है । श्री सीताराम चौदह रसों का आश्रय[12] कहे गए हैं और

---

11. मधुर रस स्वरूप और विकास {भाग-1}, डॉ० रामस्वार्थ चौधरी "अभिनव", पृष्ठ : 373-374

12. चतुर्दशरसाभोगी नागराणां शिरोमणिः ।
नानावर्ण समायुक्ते मोदते वन कानने ।।
--- अष्टयाम {अग्रदास}, पृष्ठ-63

इस दृष्टि से मधुरोपासक संत "चतुर्दशरसभोगी" कहे गए हैं । भक्ति के पंच रसों अर्थात् शृंगार, सख्य, दास्य, वात्सल्य और शांत के साथ काव्य के नवरसों को भी रस साधना में यथावश्यक स्थान प्रदान किया गया है । संत रसिक अन्य रसों की उपेक्षा नहीं करते । उनमें समन्वय वृत्ति या मध्यम मार्गी प्रवृत्ति मिलती है । वे अपने इष्ट रस को प्रधान और अन्य रसों को उसका अंग मानते हैं । "राघवेन्द्र रहस्य रत्नाकर" में कहा गया है कि साधक गुरुमुख से भक्ति रसों का संबंध प्राप्त करके ही युगल सरकार [दम्पति सुख] के रसास्वादन का अधिकारी बनता है ।[13]

भगवद् विग्रह में पंचरसों की स्थिति और उनका वर्ण[14] इस प्रकार निर्धारित किया गया है --

रस	उपास्य के अंगों में निवास	वर्ण
शृंगार	मुख	श्याम
सख्य	बाहु	अरुण
दास्य	चरण	पीत

---

13. प्रभुता नाम स्वरूप, लीलाधाम बखान करि ।
निजमति के अनुरूप, भक्ति सुरस बरनन करौं ।।
सोइ सम्बन्धहि पाय, राम रिझावत सहज नर ।
उर अनुराग बढ़ाय, दम्पति-सुख-सम्पति लहत ।।

--- राघवेन्द्र रहस्य रत्नाकर - कामेन्द्रमणि, पत्र-12

उद्धृत - रा० भ० में र० सं०, पृष्ठ--254

14. द्रष्टव्य -- रामभक्ति में रसिक संप्रदाय, पृष्ठ--254

वात्सल्य	उदर	श्वेत
शांत	सर्वांग	पीत

यद्यपि भक्ति के पाँचों रस स्वतः पूर्ण हैं पर भक्त साधक सद्गुरू से उपदिष्ट होकर किसी एक रस को लेकर साधना करता है। इससे उसकी अनन्यता और एकनिष्ठता सिद्ध होती है।

शृंगारी भक्त माधुर्य को मुख्य और शेष तीनों रसों को उसका अंग मानते हैं। दांपत्य भाव में शांत रस अपनी रूक्षता के कारण ग्राह्य नहीं होता। पत्नी द्वारा पति को भोजन कराना वात्सल्य, गृहकार्य में सहायता देना सख्य, परिचर्या के समय दास्य और शयन के समय शृंगार भाव को धारण करना शृंगार है। इस प्रकार वह सभी रसों की अधिकारिणी होती है। हमारे आलोच्य कवि संत श्री सियालाल शरण जी प्रेमलता ने "वृहद् उपासना रहस्य"[15] में इस तत्त्व को स्पष्ट किया है।

---

15. वात्सल्य सख्यादिक दासा। पत्नी महँ सब करत निवासा।
जब तिय पतिहिं सुअसन पावै। निज कर परसि सु प्रेम बढ़ावै।।
मृदुल वचन कहि पुनि पुनि परसै। वात्सल्य रस तेहि क्षण सरसै।।
जब कछु करै साहिता नारी। सख्य भाव प्रगटित सुखकारी।।
सेवा समय सुखद रस दासा। शयन समय शृंगार सु खासा।।
यहि विधि सब रस की अधिकारिनि। पतिहिं सुखद पतनी व्रतधारिनि
--- वृहद् उपासना रहस्य, पृष्ठ-134

मधुरोपासना-परंपरा में भक्ति को देवसंबंधी रति माना गया है । काव्य शास्त्रीय दृष्टि से वह भाव की स्थिति है, देव विषयक रति होने के कारण वह साधारण मनुष्यों की पहुंच से परे है । यद्यपि उसमें साधारणीकरण मूलक रस-निष्पत्ति नहीं होती पर परब्रह्म की भक्ति से संबद्ध होकर यह नियम भावाधीन हो जाता है । "समस्त विश्व की उत्पत्ति, स्थिति और लय का कारण होने से वह प्राणिमात्र की भावना का केन्द्र और उनके हृदय का आधेय है । उसके नाम, रूप लीला और धाम के ध्यान और गान में सभी लो कभी-न-कभी समान रूप से आत्मविभोर हो सकते हैं और यह आत्मविभोरता अथवा तन्मयता ही रसो द्रेक की चरम स्थिति है । रसिक रामभक्त इसी सिद्धांत के समर्थक हैं । उनका मत है कि सखी, सखा, स्नेही, दास तथा ध्याता भाव से "युगल सरकार" की उपासना करनेवाले परिकर रूपेण लीला रस का विविध रूपों में आस्वादन करते हैं"।[16]

दिव्य दम्पति श्री सीताराम का लीला भाव ऐश्वर्य और माधुर्य रूपों में व्यक्त होता है । रस दृष्टि से "युगल सरकार" के प्रति अनन्य प्रीति ही रसिक संतों का स्थायी भाव है । दिव्य दम्पति के षोडश शृंगार, द्वादश आभूषण, शीलमाधुर्यादि आत्मगुण ही रस-परिपाक करने वाले उद्दीपन विभाव हैं । प्रीति-भावापन्न रसिक भक्तों की नृत्यादि चेष्टाएं ही इसके अनुभाव हैं । परंपरागत अष्ट सात्त्विक भाव एवं तैंतीस संचारी भाव रसिक भक्तों की मधुर रस-साधना में परब्रह्म राम को कान्त, पति, प्राणनाथ,

---

16. रामभक्ति में रसिक संप्रदाय-- डॉ0 भगवती प्रसाद सिंह, पृष्ठ-259

रसिकेश्वर, बहनोई, ननदोई, नित्य किशोर, रसिया आदि तथा जीवात्मा ‖उपासक‖ को कान्ता, पत्नी, साली, रसीली, अली, सहेली, सुन्दरी, मंजरी, सरहज, दासी, किंकरी आदि रूपों में भावित कर भगवान् की अंतरंग माधुर्य लीला के प्रसंगों में मधुर भाव की व्यंजना मिलती है।

रसिक भावधारा की शृंगार-भावना में सामंजस्य-भावना मिलती है। शील और मर्यादा से विरहित प्रेम उसका काम्य नहीं है। उसमें व्यक्तिगत भाव-साधना के साथ लोक धर्म को भी समुचित महत्व प्रदान किया गया है। सामान्यत: इनकी भक्ति का आदर्श रूप ऐश्वर्य तथा माधुर्य मिश्रित भावभक्ति के रूप में दिखाई पड़ता है। श्री रामचरण दास जी ने अपने शिष्य "युगलप्रिया" जी को रसिक भक्ति के उपदेश-क्रम में जिन 64 तत्त्वों का उपदेश दिया है उनमें भी भाव साधना और लोक धर्म का पालन हुआ है। साधकों की गुरू शरणागति, दिनचर्या, पंचसंस्कारा, आचार-विचार के साथ 32 सेवापराधों तथा 10 नामापराधों की व्याख्या हुई है। श्री सियालाल शरण जी प्रेमलता के ग्रंथों विशेषकर वृहद् उपासना रहस्य, नाम तत्त्व सिद्धांत दोहावली सीताराम रहस्य दर्पण आदि में उक्त तत्त्वों का निदर्शन हुआ है। वृहद् उपासना रहस्य में सत्संग के 82 अपराधों का वर्णन प्रेमलता जी के मौलिक चिन्तन का प्रमाण प्रतीत होता है।

"उज्ज्वल नीलमणि" नामक ग्रंथ में श्री रूपगोस्वामी[17] ने उपास्य और उपासक के भाव-संबंधों की चर्चा कृष्णभक्ति के संदर्भ में की है।

---

17. उज्ज्वल नीलमणि, पृष्ठ : 41-47, यूथेश्वरी भेद‖पृष्ठ-147-154‖ द्रष्टव्य

रसिक रामभक्तों के संबंध भेद पर इस धारणा का प्रभाव देखा गया है । "सखी भाव के उपासक सन्तों ने अपने आचार्यों को युगल सरकार की उन षोडश मुख्य सखियों का अवतार माना है, जो सीताजी की बाल सखियाँ और महाराज जनक तथा उनके भाइयों की पुत्रियाँ थीं । वे अपने आत्म स्वरूप को यूथेश्वरियों की बहनों अथवा निमिवंशी कुमारियों से अभिन्न मानते हैं और सीताजी के साथ स्वयं को राम की परिणीता समझते हैं, किन्तु स्वामी से उनका संबंध सीधा न होकर सीताजी के माध्यम से होता है । कारण कि, उनका सीता से अलग कोई स्वतंत्र अस्तित्व ही नहीं है । दार्शनिक दृष्टि से वे सीता जी की अंशभूता तथा अंगभूता हैं, अतएव जार, परकीया तथा सपत्नी भाव की कल्पना रामभक्ति की इस रागात्मिका धारा में न हो सकी ॥[18]

स्वामी श्री सियालाल शरण जी प्रेमलता के काव्य में रसिक भाव की मधुरोपासना भक्ति का अन्यतम स्वरूप प्राप्त होता है । प्रेमलता जी ने पूर्व वैष्णवी परंपरा का भरपूर उपयोग करते हुए मौलिक रसानुभवों का भी साक्षात्कार किया है । सियाराम की मधुर कुंज क्रीड़ाओं, अष्टयाम प्रसंग षट् ऋतु विहार तथा सौन्दर्य रूप संयुक्त युगल रूप की छविच्छटा का अत्यंत भावमय चित्रांकन उनकी रचनाओं में परिलक्षित होता है ।

अष्टयाम-प्रसंग का माधुर्य --

अव्यक्त परमात्मा का व्यक्त क्रीड़ा प्रधान लीला रूप का अनुसंधान रसिक भक्तों के लिए आदर्श रहा है । भक्त जन इस लीलानुसंधान

---

18. रामभक्ति में रसिक संप्रदाय, पृष्ठ : 151-152

में जीवन अर्पण कर प्रेमोन्माद में उन्मत्त हो आनंदानुभव करते रहे हैं । सद्गुरु अपने साधक शिष्य को संबंध के बोध एवं भोग के लिए अपने सम्पूर्ण संबंधों के चिंतन का उपदेश करता है । उस संबंध की दृढ़ता के लिए रसिक संप्रदाय में अष्टयाम भावना, मानसी पूजा या अष्टयाम लीला-चिन्तन का विधान मिलता है । इस लीला-चिन्तन से साधक उपास्य से अधिक आत्मीयता का अनुभव करता है । प्रिय की नित्यकेलि भावना में तदाकार होकर वह अखण्ड आनंदानुभव करने में समर्थ होता है ।

कहा जाता है कि दिव्य अवध धाम-साकेत के मध्य में सप्तावरणयुक्त श्री प्रिया-प्रियतम प्रभु श्री सीताराम का मणिमय विशाल दिव्य भवन है इसी में अष्ट कुंजों सहित शयनकुंज भी है । अष्टयाम का आरंभ ब्रह्ममुहूर्त से होता है । प्रेमी भक्त प्रातःकाल अनेक मांगलिक वस्तुओं के साथ शयनकुंज में भगवान श्री शयन झांकी का बोध करता है कि मणिमंडित दिव्य पर्यंक पर श्री सीताराम शयन कर रहे हैं । नेत्र बंद हैं । मुखारविन्द पर मन्द मुसकान और भोलापन है । केश विलुलित हैं और श्वासन एवं दिव्य अंगों की गंध से कुंज व्याप्त है । शयन कुंज के चारों ओर विविध सेवाओं के लिए सज्जित दासियाँ जागरण गान कर रही हैं । प्रेमी भक्त प्रेमोन्माद में भैरवी राग में गायन करता है । दिव्य दम्पति जब आँखें खोलते हैं तब सखियाँ उनका वेश विन्यास ठीक करती हैं । मुख-प्रक्षालन, पाद-कर प्रक्षालन के पश्चात् सखियाँ उनका शृंगार करती हैं । दिव्य वस्त्रों को धारण करा कर धूप-दीप देकर भोजन कुंज में ले जाती हैं । सर्वतोभ कुंज में प्रिया प्रियतम सभी भक्तों को दर्शन देते हैं । भोजन कुंज में मधुपर्क तथा जलपान कराके पान का बीड़ा खिलाती तथा मंगल आरती करती हैं ।

कलेऊ के बाद दम्पति का सरयू जल में स्नान होता है । तत्पश्चात् वस्त्र धारण, केशर आदि सुगंधित द्रव्यों का लेपन, महावर, आभूषण-अलंकरण का विधान होता है । स्नान कुंज में जल मंत्र तथा प्रफुल्लित कमलों से युक्त पुष्करियाँ निर्मित होती हैं । शृंगार करके सखियाँ उन्हें सिंहासन पर बैठाती हैं, मंगल आरती करती हैं । सोने के कटोरे में बालभोग खिलाकर मुँह पोंछकर कलेऊ कुंज की आरती करती हैं । तत्पश्चात् सखियाँ नृत्यगानादि सेवायें कर षड्रसयुक्त भोजन कराती हैं । ताम्बूल सेवन के बाद विश्राम कुंज में शयन, विनोदन की व्यवस्था रहती है । शयन काल में नियुक्त सखियाँ चरण पलोटतीं, पीकदान देती, पानीभर कर लाती, मन्द स्वर में गाती हुई विविध सेवाएं करती हैं । मध्याह्नोत्तर भगवान् विनोद हेतु सरयू-तट, प्रमोद-वन आदि विहार-स्थलों पर पधारते हैं । तदनन्तर रास कुंज की आरती होती है । सखियाँ का नृत्य संगीत आरम्भ होता है । रासलीला होती है । भोजनोत्तर संगीत-वाद्य के साथ आरती होती है । तब सोने की तैयारी होती है । सखियाँ रासकालीन वस्त्राभूषणों को उतार कर शयनकालीन वस्त्र पहनाती हैं । दम्पति के विश्राम काल में सखियाँ पाद संवाहन करती हैं । वाद्य संगीत भी चलता है । आराध्य युगल के सो जाने पर सखियाँ अपने-अपने कुंजों में जाकर विश्राम करती हैं ।

वस्तुतः अष्टयाम-सेवा मानसिक रूप से अपने-अपने गुरू के द्वारा उपदिष्ट भावना के अनुकूल की जाती है । यह मानसी सेवा यौगिक प्रक्रिया है । चंचल मन वालों के लिए यह दुर्गम है । जबतक भक्त अपनी मनोवृत्तियों को अन्यान्य विषयों से खींचकर उस परम सेव्य में नहीं रमाता तबतक उसे रसास्वादन नहीं हो पाता । इसमें सुखानुसंधाता ज्ञानस्वरूप आत्मा का

भावात्मक प्रकाशन होता है । अतः मानसिक अष्टयाम भावना पराभक्ति का स्वरूप प्रत्यक्ष करती है ।

प्रेमलताजी ने पंच रसों का सम्बन्ध स्वरूप संकेतिक कर उनके चौबीस सूत्र बताए हैं, ये वैविध्यसंबंध ही भक्त को प्रभु सेवा का अधिकारी सिद्ध करते हैं --

बिनु संबंध स्वरूप न जानैं । केहि विधि इष्ट सु सेवा ठानैं ।।
नाम-स्ववय-सेवा अधिकारा । भाव-परापति-सुख-आधारा ।।
मातु-पिता-भगिनी-प्रिय भ्राता । बंस-विचार-महत्व सु नाता ।।
रस-अनन्यता-इष्ट-भावना । रीति -रहस्य-प्रबोध-पावना ।।
अस्थाई-निजधे सब भेदा । जाने बिनु न मिटत उर खेदा ।।
ये चौबीस सूत्र सुखदाई । इन्हके भेद भाव बहुताई ।।
सम्बन्धनि महँ ये सब बानी । लिखीं ललित नहिं जाँई बखानी ।।
जो संबंध लेइ सो जाने । रसिक अनन्य भाव सुख साने ।।

--- वृहद् उपासना रहस्य, पृष्ठ-207

प्रेमलताजी ने अष्टयाम-भावना में "निज रस अनन्यता" को महत्व दिया है । युगल सरकार के "महल" के भीतर पुरुष प्रवेश वर्जित है वहाँ तत्सुखी सखी भाव से ही जाया जा सकता है । श्री साकेत पुरी दिव्य है ।कल्प वृक्षों की पंक्तियों, कुंज निकुंजों से युक्त सभी साधनों से सम्पन्न है । अलियों के यूथ में यूथेश्वरी चन्द्रकला चारुशीला आदि महत्वपूर्ण हैं । चन्द्रकला श्री भरत हैं और चारुशीला या चारु सुशील हनुमान जी हैं । प्रतिकुंज में अलग-अलग सियाराम शोभित हैं ।

जहँ देखौं तहँ श्री सियरामा । विहरहिं अलिनि संग वसुयामा ।।

--- वही, पृष्ठ-212

श्री वृहद् उपासना रहस्य में वर्णित अष्टयाम भावना के मधुर भाव परक कुछ चित्र इस प्रकार हैं --

1. लखहिं परस्पर छवि पिय प्यारी । चिबुकनि कर धरि जर भुजडारी ।।

--- पृष्ठ-215

2. चलेउ परस्पर दै गर बाँहीं । आयेउ भोजन कुंज सु माँही ।
स्यामल गौर किशोर किसोरी । सुखमा सदन मनोहर जोरी ।।

3. अनुपम झाँकी झाँकि अलि, हँसी सकल दै ताल ।
मंद मंद मुशिकाय सिय, लिये लाय उर लाल ।। --- पृष्ठ-219

4. केलि कुंज गवने अखिल नाथा । चलीं पाय सब सिय रघुनाथा ।।

--- पृष्ठ-220

5. त्तिमि त्तिय भाव सदृश कोउ भावा । सुनत न वेद पुराण नि गावा ।
गति अनन्यता आत्म समर्पन । सखी भाव बिनु करिन सकत जन ।।
असली आत्म समर्पण सोई । जेहि महँ परदा रहहि न कोई ।।
पति पत्नी संबंध सु माँहीं । परदा बीच रहत कछु नाहीं ।।
तेहि कारन त्तिय भाव शिरोमनि । भयेउ सकल भावनि में धनि धनि

--- पृष्ठ-232

वृहद् उपासना रहस्य में कवि ने हिंडोर कुंज के झूलन का विस्तृत वर्णन किया है --

चले हिंडोर कुंज हरषाई । लगीं संग ललना समुदाई ।।

कर सों कर जोरे दोउ पीता । आलि निरत्न बतरात सप्रीता ।।

दिये परस्पर दोउ गर बाँहीं । झूलत भरे मोद मन माँहीं ।।

कबहुं परस्पर झूलत दोऊ । उपमा योग न त्रिभुवन कोऊ ।।

बाढ़त पैंग डरपि सिय प्यारी । लपटहि पिय अंग गर भुज डारी ।।

कबहुं प्रीतम सियहिं झुलावत । लखि नखसिख छवि अति सुख पावत ।।

कबहुं चमर कहुं विजन दुरावत । कबहुं नवत पिय सिय गुण गावत ।।

--- पृष्ठ-223

प्रेमलताजी ने रास कुंज लीला में अनेक मिथिला वासी सखियों की नाम गणना कराई है । वे हैं -- कमला, विमला, लक्ष्मणा, कृपा कौशिकी, अधोउवारा, जामुनी, बाघमती, शशिमाल, विरजा, अकुली, सालिग्रामी, वनघोषा, धुम्रा, गेल्का, वामा आदि इन सोलह सखियों को "सियसनेह प्रतिपाली" कहा गया है ।

अष्टयाम के लीलाभाव में राम और सीता को पुरुष प्रकृति की भाँति दिव्य और सनातन संबंध के रूप में देखा गया है । सीता को "पराशक्ति माया सिया" कहा गया है । राम और सीता अभिन्न हैं । रसिक साधना में सीता मध्यस्था के रूप में विराजती हैं । परिकर सदा जानकी भावापन्न रहता है । सीता द्वारा अपनाए जाने पर ही जीव ब्रह्म तत्त्व में लीन हो पाता है । यह अपनाना ही सखीत्व प्रदान है । प्रभु की नित्य साकेत लीला में प्रवेश की स्वरूप योग्यता और कैंकर्य प्रदान कराने की कृपा जानकी जी द्वारा ही प्राप्त होती है । वस्तुतः परिकर जीवात्मा के रूप में सीताजी का ही अंश होता है । परिकर तत्त्व द्वारा जीव अपने मूल रूप का ज्ञान प्राप्त करता है ।

वह सीताजी की अहैतुकी कृपा द्वारा ही आत्मस्वरूप का ज्ञान प्राप्त कर पाता है । परिकर पद प्राप्त करने या नित्य लीला में प्रवेश का पात्र बनने के लिए साधक को स्त्री भाव या सखी रूप प्राप्त करना आवश्यक होता है ।

सखी या अलिवर्ग में सर्वेश्वरी का स्थान सर्वोच्च होता है ।[19] श्रृंगार रस की आचार्या होने के साथ लीला की संपूर्ण व्यवस्था इन्हीं के द्वारा निष्पन्न होती है । दिव्य-दम्पति की षोडश सखियों में श्री चारुशीलाजी [हनुमान जी] और श्री चन्द्रकला जी [भरत जी] का पहली सेवा रूप महत्त्वपूर्ण है । इसके अतिरिक्त अलियों में केलि प्रवर्तिका, यूथेश्वरी, सखी, अनुचारी आदि सेविकाएँ परिगणित हैं । अष्टयाम-भावना की सेवा में सक्रिय और निष्क्रिय -- सक्रिय और निश्चेष्ट दोनों प्रकार की सेवायें प्राप्त होती हैं । युगल सरकार के लीला सुखभोग में तत्सुखी भाव में साक्षीभाव प्रधान दिखाई देता है । लीला में संयोग मूलक आनंदास्वादन निहित होता है । आचार्यों ने संभोग के तीन रूप माने हैं -- मनःसंभोग, दृष्टि संभोग, और साक्षात् या स्पर्श संभोग । प्रथम दो स्थितियों में तत्सुखी भाव और तीसरी स्थिति में स्व सुखी भाव की प्रधानता होती है । प्रेमलताजी का लीला रसास्वादन का आधार तत्सुखी भावना है ।

---

19. सर्वेषामपि यूथानां ईश्वरीयं भविष्यति ।
अतः सर्वेश्वरी ख्याता सखीनां भुवनत्रये ।।
--- लोमश संहिता, पृष्ठ-49

प्रेमलताजी ने सीताराम रहस्य दर्पण में संकलित "श्री सियवर षट् ऋतु विहार दर्पण" अथवा षट् ऋतु विमल विहार नामक ग्रंथ में सीताराम की छविच्छटा और षट्ऋतु क्रीड़ा के रसमय चित्रों को प्रस्तुत किया है

नख शिख छवि शृंगार --

1. जनक भवन मंडप तर राजत श्री सियराम सलोने हैं ।
श्याम गौर तनु अमल अनूपम हैं न कतहुँ अस होने हैं ।
केहि विधि कहौं कठिन मरकत मणि सम सुगंध बिनु सोने हैं ।
नख शिख छवि शृंगार कहत श्रुति शेषहु साधी मौने हैं ।

--- पृष्ठ-1

2. एकहिं एक निहारत मुरि मुरि मन हीं मन मुसिकावत हैं ।
गुरुजन लाज समाज विलोकि सुधीरज पुनि उर लावत हैं ।।
एक प्राण द्वै देह नेह अति पुनि पुनि पुलक बढ़ावत हैं ।
प्रेमलता सियलाल सु छवि लखि देव सुमन बरसावत हैं ।। -- पृष्ठ-2

आभूषण-वर्णन --

1. झुलनी नथइत सुभग नाक में उत नाशामणि सुखदाई । -- पृष्ठ-3
2. कनक फूल ताटंक बिन्दियाँ राजहिं इतश्रुति सी के हैं ।
मकराकृत कुंडलमणि लटकनवाले उत अति नीके हैं ।। -- पृष्ठ : वही
3. इत कल कंठ जड़ाऊ हंसुली हार हमेल सुहाये हैं ।
पंचलरी तिलरी दुलरी उर मणिमय रुचिर बनाये हैं ।।
उत मणिमाल जाल झलकात सु कंठा कंठ लगाये हैं ।
प्रेमलता अनमोल सु भूषण लखि रति काम लजाये हैं ।। -- पृष्ठ : वही

इनके अतिरिक्त बाजूबर, मणि अंगद वलय, चुरियाँ, बंगलियाँ पहुँची, कंकण, हथफूल, मुदरियाँ, अंगूठी आदि आभूषणों का भी वर्णन हुआ है। सीता के नीलावस्त्र और राम के लिए पीत वस्त्रों का विधान हुआ है

कवि ने युगल माधुरी के रस को सर्वाधिक श्रेष्ठ सिद्ध किया है और शृंगारी अलि भाव वाले भाविक की प्रशंसा की है --

युगल माधुरी छके रसिक जन मन मतंग वश कीना हैं।
श्री सियराम काम परिपूरण अर्पि तिन्हैं सबु दीना हैं।
इष्ट रजा में मुदित रहत जिमि गहरे जल में मीना हैं।
प्रेमलता मतिमन्द न यह रस जानहिं जे गुरू हीना हैं।।

--- पृष्ठ : 5-6

भाविक-प्रशंसा --

1. कोटिन में कोउ एक भेद यह जानत सन्त सयाना हैं।
भजिबे लायक पारब्रह्म इक सियवर सम नहिं आना है।।

--- पृष्ठ-7

2. तिनहूँ में कोउ एक परम बड़ भागी भाविक होते हैं।
शृंगारी अलि भाव धारि उर दम्पति पर छवि जोते हैं।।
पिय प्यारी रसकेलि नींद में छके छबीले सोते हैं।
प्रेमलता बहुयोनि जगत में जननि न खाते गोते हैं।। -- पृष्ठ-7

प्रिया-प्रियतम का जागरण--सखी चेष्टा ---

कैतिक नचहिं बाँधि पग नूपुर, छुम-छननन विचि वत्तवाला
कैतिक करहिं अलाप सुभैरव राग रागिनी मुदमाला ।।

कैतिक वीणा वेनु बजावहिं मधुर मजीर सु करताला ।

प्रेमलता कोउ नाम उचारहिं जय सियराम सु जनपाला ।।

--- पृष्ठ-11

सेवा-भाव --

नख शिख अंग अवलोकि माधुरी निबछावरि करि गुण गाये ।

सेज आरती करि प्रमुदित मन कंचन चौकिनि बैठाये ।।

मुख मज्जन करि पोंछि पटनि मुनि माखनमिसरी कछु खाये ।

प्रेमलता पुनि पान परस्पर दै गर भुज सिय पिय पाये ।।

--- पृष्ठ-13

झूलन --

1. हरी छाति तर हरे बिछौना हरे खिलौना मन मोहैं ।

वरणौं छवि सु हिंडोर कुंज की त्रिभुवन में अस कवि कोहैं ।।

झूलत बहाँ नित नव नागरि नागर जो सुख सन्दो हैं ।

प्रेमलता अलि परम धन्य जो संग रहि दंपति छवि जो हैं ।।

--- पृष्ठ-22

2. झूलत हिलिमिलि दै गर बहियाँ सिय सियसैंयाँ सुखरासी ।

झुकि झुकि पैंग देइ ललना नव पियहिं नयन पुट छविरवासी ।।

कैतिक विलग विलोकहिं ठाढ़ी हाव भाव दम्पति दासी ।

प्रेमलता दोउ रूप अनूपम उपमा त्रिभुवन नहिं भासी ।।

रसिक भाव --

यह रसिकन को ध्यान मनोहर जे रसराज उपासी हैं ।

रँगी रहत सियराम नाम रँग गुलमुख विषम उदासी हैं ।
डंक बजाय निशंक लहहिं ते प्रेम भक्ति गति खासी हैं ।
प्रेमलता लुचि सन्त कहहिं जे सिय पिय संग विलासी हैं ।

--- पृष्ठ-24

"षट् ऋतु विमल विहार" नामक इस ग्रंथ में बहत्तर यूथेश्वरी अलियों का नाम गिनाया गया है । सोलह अपर सखियों-नारियों के भी नाम दिये गए हैं । पाँच प्रधान अलियाँ में चन्द्रकला, श्रुतिकीर्ति, माण्डवी, चारुशिला और उर्मिला को सियस्वामिनी की समशीला बताया गया है । सभी परिकर "प्रिय प्रभुहि" प्राणसम, "सर्व समर्थ", "सब गुण पूरे", "सब सेवा विधि कुशल" कहे गए हैं ।

रासनृत्य --

अष्टयाम की रसव्यवस्था में सखियों के रासनृत्य का भी जीवंत वर्णन हुआ है । यह रासनृत्य ध्यान योग से संवलित है --

कबहुं कंकनाकार होयँ सब विलगै विलग ह्वै कहुं नाचैं ।
नृत्यकला कल कुशल छबीलीं छकीं रासरस सुख साँचैं ।।
नाना विधिगति लेहिं देहिं सुख अवलोकत उर मुद माचैं ।
प्रेमलता जे रँगी ध्यान यह तेन त्यौं भव भ्रम आँचैं ।।

--- पृष्ठ-29

सखीभाव की महिमा --

1. यह सुख सखी भाव बिनु दुर्लभ अमरनिहू कह बरना हैं ।

--- पृष्ठ-35

2. रस स्वरूप संबंध भाव विधि सेवकाई सिय वर केरी ।
जानत रसिक संत शृंगारी भली भाँति होइ सिय चेरी ।।
--- पृष्ठ-38

3. रसिकनि की करि टहल महल में जाव सखी उर भाव धरौ ।
--- पृष्ठ : वही

होली-वर्णन --

"षट् ऋतु विमल विहार" में होली के अनेक मधुर चित्र मिलते हैं जिनमें सीताराम की रंग-क्रीड़ाओं की बहुविध लीलाओं हार जीत आदि का वर्णन हुआ है --

1. वर्षन लगे सुरंग झमाझम उड़न अबीर गुलाल लगे ।
कोटिन चलैं कुमकुमा कन्दुक सबके मन निज जीत पगे ।।
भिरे एक ते एक पकरि कहुँ फिरैं विपुल चहुँ ओर भगे ।
प्रेमलता परिकर बड़ भागी सब विधि जिन्ह के सुकृत जगे ।।
--- पृष्ठ-50

2. कोउ कह हम तुम ते न घटिक कछु होस हवास भुलाउँगी ।
रंगनि मारि मारि तुम सब कहँ रण ते आजु हटाउँगी ।
इत उत भागि बची हौ अब लगि अब मैं नाच नचाउँगी ।
प्रेमलता सियकृपा फाग सुख भली भाँति दरसाउँगी ।।
--- पृष्ठ-51

3. लिये गोल महँ लाल ख्याल करि बाल ताल दैं सोर किया ।
पकरो पकरो जान न पावैं पहिचानहु सब यही पिया ।।

सुनि सुनि दूटि परीं चहुँ दिशि ते धरहु धरहु कहि नवल तिया ।

प्रेमलता को रोकि सकै तिहिं जिन्हकी स्वामिनि प्रबल सिया ।।

--- पृष्ठ-53

4. चंचलता चातुरी गई सब परे प्रेम के फन्दन हैं ।

यह मत मूढ़ न जानि सकैं जो भजत न सिय रघुनंदन हैं ।

अबलनि के कर बंधे महाबल सागर दुष्ट निकन्दन हैं

प्रेमलता कर जोरिं विहोरत सखियनि करि पद वन्दन हैं ।।

--- पृष्ठ-54

मधुर रूप और माधुर्य भाव --

सीताराम की मधुर मूर्त्ति की चर्चा करते हुए कवि ने भक्ति पक्ष के सभी पक्षों को स्पष्ट किया है --

1. श्री सियराम रूप अनुरागी रटहिं नाम लय लाई है ।

बसहिं धाम मद मोह काम त जि बनिता सुत पितु माई हैं ।

माँगि खाय मधुकरी मुदित मन गुरु पद प्रीति दृढ़ाई हैं ।

प्रेमलता अलि भाव विमल उर मूरति मधुर बसाई है ।

2. श्री सियराम बिहार उपासक शृंगारी रस रागी हैं ।

चेतन अमल अनूप भाव उर रटहिं सु नाम अदागी हैं ।

-- सीताराम नाम जापक महत्व, पृष्ठ-166

गाली-सुख --

3. नवल बधू सिय नवल प्रेम प्रिय सासु ससुर नर नारिन का ।

नवल विहार भोग सुख नितन व अटन बाग बन क्यारिन का ।।

नित नव भोजन वसन विभूषण कौतुक केलि सवारित का ।
प्रेमलता पैहैं कहं यह सुख पियसारिनि की गारिन का ।।

--- पृष्ठ-95

"सार सिद्धांत प्रकाश" नामक ग्रंथ में कुण्डलिया छंद में कवि ने वैष्णव रूप और शृंगार भाव का संकेत कर शृंगार को रसोत्तम और सबका कारण सिद्ध किया है --

वैष्णव शृंगारी रूप --

भूषण संयुत तिलक शिर, युगल कंठिका माल ।
पंच छाप सखि भावना, युगल मंत्र जपमाल ।।
युगल मंत्र जपमाल नाम सियराम अधारा ।
युगल ध्यान अभिराम मुख्य रस श्री शृंगारा ।।
सतगुरु सन नव रतन लेइं जो ये निरदूषण ।
प्रेमलता प्रिय प्रभुहिं होइं ते वैष्णव भूषण ।। --- पृष्ठ-90

रसोत्तम और कारण रूप शृंगार-वर्णन --

कारण श्री शृंगार रस, कारज सब संसार ।
सुर नर मुनि जहं लगि जिते, अवतारी अवतार ।।
अवतारी अवतार सकल शृंगार विहीना ।
अशुभ अपुज्य अमान्य अशोभित खिन्न मलीना ।।
मंगल मोद निधान राम मूरति भवतारण ।
प्रेमलता शृंगार रसोत्तम सबके कारण ।। --- पृष्ठ-90

रसिक-गुण-गान --

रसिकनि की का होड़ कोउ करिहैं मूढ़ गमार ।
जिनके उर निशिदिन बसत श्री सियराम उदार ।।
श्री सियराम उदार नेति नित जेहि श्रुति गावहिं ।
माया मन गुण पार रसिक तेहि लाड़ लड़ावहिं ।।
प्रेम विवस प्रभु सदा रहत सन्तनि मन बसिकनि ।
प्रेमलता किमि लखैं अज्ञ यह रस विनु रसिकनि ।। -- पृष्ठ :118-11

शृंगार रस और प्रभुभजन --

सज्जन सन्त विचारि उर, पंच रसनि के भेद ।
शृंगारादि सुधारि दृढ़ भजहिं प्रभुहिं तजि खेद ।। -- पृष्ठ-160

"प्रेमलता पदावली" में सीताराम सौन्दर्य और माधुर्य भाव की प्रतीति अनेक पदों में व्यक्त हुई है । इस सौन्दर्य-वर्णन में रसिकता और अनन्यता की गहरी अभिव्यक्ति मिलती है । कुछ प्रमुख उदाहरण द्रष्टव्य हैं ।

1. भजि बार बार नाम सिया राम मोहिनी ।
सुखमा सलोने अंग के लिखते बने नहीं,
लाजैं उमा रमादि अमित रति सु रोहिनी ।। -- पृष्ठ-2

2. सिया के योग सुबर आली राम बिधना बनाये हैं । -- पृष्ठ-3

3. गोर तनु सिया राम घनश्याम अनूपम जोरी सुखदाई ।
चंद्रिका सिया शीश राजै, मुकुट मणि रघुबर शिर भ्राजै,
रूप लखि काम कोटि लाजै, सुभगता अंग अंग छाई ।।
---- पृष्ठ-4

4. पिया रंग रंगी सिया प्यारी, पिया सिय छवि की बलिहारी ।

--- पृष्ठ-5

5. सियवर रंग रंगी दोउ नैना ।

श्यामल अमल अनूप सु अदभुत त्रिभुवन अरु रंग है ना । -- पृष्ठ-13

6. युगल छवि वैसी बनी अलबेली ।

नख शिख अंग अनूप मनोहर, पावन धर्म सहेली ।। -- पृष्ठ-14

7. युगल छवि प्यारी लगै मन भावै ।

श्यामल और सुधाम कामप्रद देखत बनि आवै ।। -- पृष्ठ-15

8. युगल छवि मन मैं लगै अति प्यारी । -- पृष्ठ-16

9. जोड़ी बनी सुहावनी सिय रामलाल की । -- पृष्ठ : वही

10. कजरा कजल करे पिय तेरो मेरो जियरा वश कीनो । -- पृष्ठ-26

11. बसो उर मेरे सखि यह जोरी ।

श्याम वरण रघुवर धनुधारी, जनक लली सिय सुन्दर गोरी ।।

-- पृष्ठ-28

12. युगल छवि लाग्नि गई उर गहरी ।

लोक लाज तजि फिरौं दिमानी, उठै दरद की लहरी ।।

-- पृष्ठ : 28-29

13. गोरे घनश्याम राम श्याम सिया गोरी ।

मैं निरखौं निज नैन अलीरी, मंडप तर बरजोरी ।

दुलहाराम जानकी दुलहिनि, सुखमा सुखद अथोरी ।

अंग अंग पर रति अनंग दोउ वारिय अमित करोरी ।

युगल माधुरी पियत सु परिकर निशि जिमि चन्द्र चकोरी ।।

-- पृष्ठ-32

14. तजत नहिं राम कबहुं ससुरारि । -- पृष्ठ-42

15. महल की टहल करिय चितलाय । -- पृष्ठ-47

16. बाँकी अदा सियलाल की दिल बीच बसी है । -- पृष्ठ-51

17. डरत मन वरणत युगल विलास । -- पृष्ठ-56

18. देखो देखो सुमन का बंगला बना ।

अवलोकत अपहरत अमंगल, होत हृदय आनंद घना ।। -- पृष्ठ-57

19. बाँका बंगला बना अलि फूलों का । -- पृष्ठ-58

20. राजत सेज दिये गल बहियाँ ।

आलस ।वश दोउ झुकत परस्पर, परमानन्द मोद मन महियाँ ।

-- पृष्ठ-61

21. जगेउ जगत पति सिय रघुनंदन अलिगण जय जय कीन्हा । -- पृष्ठ-65

22. प्रातकाल लखि कहहिं अलीगण जागिय युगलकिशोर जू । -- पृष्ठ-66

23. प्रातकाल करि विनय जगावहिं सिय रघुवरहिं सुदासी । -- पृष्ठ-67

24. प्रातकाल जागे सुख पागे स्वामिनि सिय रघुराई । -- पृष्ठ-70

25. प्रात समय उठि हरखि निरखि मुख पतिहिं जगावति सीता ।

-- पृष्ठ-71

26. जागेउ प्रात सिया रघुनंदन सुनि बहु शब्द सुहाना । -- पृष्ठ-72

27. श्री कनक भवन में विहरत सीताराम । -- पृष्ठ-74

28. जोरी लखो सियराम की कैसी बनी नीकी । -- पृष्ठ89

29. बाँके नयना न मारो अवध छैला ।

हम हैं नारि पराये घर की, समुझि लगो पिय निज गैला।

नेह लगाइ अवध चलि जैहो करि के हमार तन मन मैला । -- पृष्ठ-90

30. हँसि हेरो न प्यारे पराई नारी । -- पृष्ठ-90

31. गजबीले छबीले विहारे नयना ।

चंचल चोरि हमार चित लीनो, परत नहीं अब टुक चैना ।--पृष्ठ-91

32. सिया प्यारी को दूल्हा अजब आली । -- पृष्ठ-91

33. देखो सखि श्याम बना बनि आये । -- पृष्ठ-92

34. बाँकी झाँकी बनी सिय रघुवर की ।

बैठे रतन सिंहासन हेरत, प्रमुदित छवि सु परस्पर की । -- पृष्ठ-94

35. भेद कोउ रशिकन को का जाने ।

मन वच कर्म रँगी सियबर रँग, सहज स्वरूप समानें ।

रटहिं नाम सियराम निरन्तर, विचरहिं महि मस्ताने ।। -- पृष्ठ-114

36. भाये मुझे सियलाल के अंगों की निकाई । -- पृष्ठ-115

37. लखी सिय प्यारे की अलकें । -- पृष्ठ-119

38. हिय बाँकी अदा दरसाया करो । -- पृष्ठ-124

39. डारि गरे सियराम के जयमाल सुहाई । -- पृष्ठ-135

40. सिया जू चलीं डारि जयमाल । -- पृष्ठ-137

41. बना बने श्याम बनी सिय गोरी

सिय सी सिया राम से रामहिं त्रिभुवन इन्द सम कोरी । -- पृष्ठ-13

42. भमरिया लेत सिया रघुबीर । -- पृष्ठ-156

43. मंडप तर राजत सिय रघुनाथ । -- पृष्ठ-139

44. सिया की निरखत राम निकाई ।

थकित होत चख प्रति अंग अंगनि, तजि निमेऊ चपलाई । -- पृष्ठ-139

45. निरखु लखि सिय रघुबर को रूप । -- पृष्ठ-40

46. परस्पर चितवत दोउ चित चोर ।

सिय तन राम राम तन सियजू, सकुच भरे दृग कोर ।। -- पृष्ठ-142

47. चटपटी लगी मिलन की मन में । -- पृष्ठ-143

48. सिया छवि निरखत नख शिख राम ।

पूरण भाग भये सब ही विधि, पाइ सु अनुपम बाम ।। -- पृष्ठ-144

49. सरस अति सियजू को सिय नाम ।

कोमल कलित मधुर मन भावन,

बावन दुख सुख धाम । -- पृष्ठ-165

50. आतम मेरो नाम मैं तो राम की दुलहिया । -- पृष्ठ-227

51. आतम अनेक दुख पावै तजि बलमा । -- पृष्ठ-218

52. रसनि में राजा श्री शृंगार ।

अवतारी श्री राम रूप ही, यह रस परम उदार । -- पृष्ठ-231

53. द्रवहु सब रसिक सन्त सुखदानी ।

श्री रसराज शृंगार उपासक नारि धर्म उर आनी ।

सेवत प्रभुहिं अनन्य भावधरि, जो सब गुण गण खानी ।।

रहु नाम तजि पुरुष भावना आत्मतत्त्व पहिचानी । -- पृष्ठ-233

प्रेमलता पदावली में माधुर्य भाव वर्णन में होली और झूलन [हिंडोरा] के चित्र भी महत्वपूर्ण हैं। रसिक भावना की अभिव्यक्ति में ये चित्र सहायक हुए हैं। कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं --

होली --

1. खेलैं लली सियलाल सौं होरी उमंग से। -- पृष्ठ-283
2. होरी खेलत राम सियागोरी। -- पृष्ठ-284
3. देखो सखी सियलाल की होरी सुहावनी। -- पृष्ठ-286
4. रसरंग रंगीलो छबीलो लला। -- पृष्ठ-287
5. होरी खेलैं अनोखी सिया के बना -- पृष्ठ-287
6. निरमोही लला मोते रार करै।
   जब मैं जाऊं भरन जल कमला, आय अचानक हाथ धरै। -- पृष्ठ-288
7. होरी खेलैं छबीलो रसीलो बली। -- पृष्ठ-288
8. खेलत सियराम नाम संग सन्त होरी।
   नेह को गुलाल लाल, नेम अबिर भरि सु थाल,
   भाव भगति फूल माल विरति रंग घोरी। -- पृष्ठ-291

झूल न --

1. झूलत संग सिय रघुबीर। -- पृष्ठ-294
2. रिमझिम रिमझिम बरषत बादर
   हरषत सिय संग झूलत राम। -- पृष्ठ-295
3. आज दोउ झूलत झूलन साथ।
   गोर बदन सिय जनक लड़ैती, श्याम वरण रघुनाथ।। -- पृष्ठ-297

4• झूलत झमकि सिय रघुनन्द । -- पृष्ठ-297

5• झूलत नवल हिंडोरे हिलि मिलि प्रमुदित सिय रघुराई न ।--पृष्ठ-298

6• हिंडोरना में झूलत जानकि राम । -- पृष्ठ-299

7• राम नामैं में झूलैं हिंडोरा ।

रघुनंदन सिय जनक लली दोउ,

राशिक जनन चित चोरा । -- पृष्ठ-300

8• प्रेम हिंडोरे झूलहिं सिय गोरी ।

तनु मिथिला मन कंचन वन थल

हृदय सुरति रजु जोरी । -- पृष्ठ-301

9• झूला झुलाओ प्यार से ललि लाल को आली । -- पृष्ठ-306

10• झूलैं लली मिथिलेश की घनश्याम झुलावैं ।

ठाढ़ी अली चहुं ओर सरस रागिनी गावैं । -- पृष्ठ-307

11• नये रसिया ने झूला लगाया री ।

सावन मास नवल नभ छाया,

नव घन पिय मन भाया री । -- पृष्ठ-309

"प्रेमलता पदावली" के अंतिम भाग में सीता की अनन्यता और परत्व शक्ति विषयक अनेक पद संकलित हैं जिनमें सियास्वामिनी की शोभा और भक्ति का सरस वर्णन हुआ है ।

1• अपनाइये सिय स्वामिनी मोहि जानि कै चेरी ।

अरजी सु कान कीजिए न कीजिये देरी ।।

कलि काल चहूँ ओर घोर जोर छा रहा ।

बाटी अनीति लोक में नहिं जात सोहेरी । -- पद सं0 417, पृष्ठ-349

2. सरस अति सिय जू को सिय नाम ।

कोमल कलित मधुर मन भावन, दावन दुख सुख धाम ।

-- पद संख्या-421, पृष्ठ-352

3. होरी खेलन पधारी हो नवीन सिय नागरी ।

नखशिख सजि शृंगार अनूपम, रूप सुशील उजागरी ।।

गोर बदन शशि कोटि लजावन, सकल सु गुण गत सागरी ।

सुन्दरता मर्याद छबीली, आदि शक्ति मति आगरी ।।

निज अनुरूप लिये ललना संग अगणित रंग नि गागरी ।

--- पद संख्या-337, पृष्ठ-291

4. झूलत झमकि सिय रघुनन्द ।

मोर कोकिल कीर बोलत, मधुप पी मकरन्द ।।

त्रिविध बहत सुगंधमय शुचि, पवन शीतल मन्द ।

--- पद संख्या-346, पृष्ठ-297

कवि प्रेमलताजी के काव्य का माधुर्य-भाव रसिक संत कवियों की परम्परा में एक दिव्य भाव के रूप में दृष्टिगत होता है । सियाराम की मधुर प्रणय-लीला और लीला-विलास का माधुर्यमूलक आनंद रस इनके काव्य-छंदों से अभिव्यंजित हुआ है । प्रेमलताजी का व्यक्तित्व माधुर्य भाव का साकार विग्रह था, इसी प्रकार उनके काव्य में भी माधुर्य भाव की सफल व्यंजना हुई है ।

-------- 0 --------

षष्ठ अध्याय

श्री सियालाल शरण जी "प्रेमलता" के काव्य का भाषा-शिल्प

षष्ठ अध्याय

श्री सियालाल शरण जी "प्रेमलता" के काव्य का भाषा-शिल्प

प्रेमलताजी के काव्य का भाषा-शिल्प मध्ययुगीन भक्तिकाव्य विशेषकर राम-काव्य परंपरा से पोषित है, यद्यपि उसमें बीसवीं शताब्दी के समसामयिक जीवन के प्रभाववश यथार्थवादी व्यंग्य शैली और आक्रामक प्रवृत्ति भी दिखाई देती है। प्रेमलताजी की काव्य-भाषा सहज संवेद्य और अनायास अभिव्यक्त हुई है। उनका काव्य कोरे संप्रदायवाद का पोषक न होकर भक्ति-रस से परिपूर्ण है।

काव्यभाषा अभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम है। कवि अपनी अनुभूतियों को भाषिक आकार प्रदान करता है। वी0 के0 गोकक ने स्पष्टतः कहना चाहा है कि "भाषा स्वतः कविता है।[1] मूलतः वे भाषा को काव्यात्मक या अकाव्यात्मक न मानकर उसके अंतर्गत लोकभाषा, बोलचाल की

1: द्रष्टव्य --- The Poetic Approach to Language -- V.K.Gokak, Page 50 Oxford University Press, 1952.

भाषा, साहित्यिक भाषा आदि सभी का आकलन हो जाता है । इसमें जीवन के सभी क्षेत्रों के शब्द, मुहावरे, लोकोक्तियों आदि का ग्रहण होता है । गोल्डवर्ग[2] के अनुसार मुहावरों की चित्रात्मकता भाषा के विकास के साथ-साथ समाप्त होती जाती है । एफ0 एल0 लूकस[3] ने माना है कि जैसे जीवन क्रमशः जटिल, कृत्रिम और वैज्ञानिक होता जाता है वैसे ही भाषा चित्रों की गैलरी से गणितीय प्रतीकों का ब्लैकबोर्ड होती जाती है ।

वस्तुतः काव्यभाषा के स्वरूप में रूपकात्मकता, संक्षिप्तता, व्यंजकता, प्रतीकात्मकता, बिम्बात्मकता, रागात्मकता आदि का सम्मिलन देखा गया है ।

डॉ0 सियाराम तिवारी ने भाषा और काव्य के अभिन्न संबंध पर प्रकाश डालते हुए लिखा है कि "भाषा और काव्य का संबंध जल और लहर के संबंध से भी तुलनीय है । काव्यभाषा का सच्चा स्वरूप इसी से स्पष्ट होता है । जल और लहर परस्पर भिन्न हैं और अभिन्न भी हैं । जल और लहर परस्पर भिन्न हैं क्योंकि जल में सदैव एवं सर्वत्र लहर नहीं होती । इसी तरह दोनों परस्पर अभिन्न भी है, क्योंकि जल से पृथक् लहर का कोई अस्तित्व नहीं है । तब, यही कहना पड़ेगा कि लहर जल के भीतर एक जल है । ठीक यही संबंध भाषा और काव्य का है । काव्यभाषा के भीतर एक भाषा है । इसको स्पष्ट करके इस प्रकार कह सकते हैं कि काव्य सामान्य भाषा के भीतर एक

---

2. The wonder of words, Page 84 (New york, 1939)

3. Style, Page 171 (London, 1964)

विशिष्ट भाषा है । काव्य भाषा है और भाषा काव्य है, इन दोनों उक्तियों की संगति जल और लहर के संबंध की तुलना से ही स्पष्ट होती है । ... काव्य भाषा है, क्योंकि काव्य के लिए वही भाषा एकमात्र और अलम होती है जिसमें वह प्रसूत होता है और भाषा काव्य है, क्योंकि उस भाषा में वही अभिव्यक्ति संभव ही थी जो कविता के रूप में हुई है ।[4]

डॉ० नगेन्द्र की मान्यता है कि "अभिव्यंजना का सबसे मुख्य और सहज माध्यम है भाषा ।[5] उन्होंने स्पष्ट किया है कि काव्य भाषा कवि की रागात्मक अनुभूति को संवेद्य बनाती है । "अब प्रश्न उठता है कि कवि अपने हृदय रस को सहृदय के लिए संवेद्य किस प्रकार बनाता है ? इसका उत्तर है : भाषा के द्वारा । परन्तु उसे भाषा का साधारण प्रयोग नकर विशेष प्रयोग करना पड़ता है अर्थात् शब्दों को साधारण वाचक रूप में प्रयुक्त न कर विशेष "चित्र रूप" में प्रयुक्त करना पड़ता है । ... यह कार्य कवि की कल्पना-शक्ति की अपेक्षा करता है । ... दूसरे शब्दों में हम यह कह सकते हैं कि यह "विशेष प्रयोग" भाषा का कल्पनात्मक प्रयोग है"।[6]

---

4. काव्यभाषा, पृष्ठ : 42-43, मैकमिलन, प्रथम संस्करण, 1976

5. देव और उनकी कविता -- डॉ० नगेन्द्र, पृष्ठ-205
प्रकाशक- नेशनल पब्लिशिंग हाउस दिल्ली, तीसरा संस्करण, 1960

6. ध्वन्यालोक -- सं0- डॉ० नगेन्द्र, भूमिका, पृष्ठ : 16-17
ज्ञानमंडल लिमिटेड, वाराणसी, 1962

डॉ0 महेन्द्र मधुकर की दृष्टि में "काव्यभाषा सर्जनात्मक भाषा होती है । कवि सदैव बने-बनाए रास्तों पर नहीं चलता, वह स्वयं अपनी अभिव्यक्ति की विधि चुन लेता है । वह काव्यात्मक प्रतीकों की उद्भावना में दक्ष और काव्यात्मक बिम्बों की रुचिर कल्पना में समर्थ होता है।"[7]

काव्यभाषा का स्वरूप-गठन यद्यपि परंपरा द्वारा होता है पर पंडिताऊ भाषा और लोकभाषा में टकराव बना रहता है । लोक चेतना मनुष्य की आरंभिक अनुभूतियों से जुड़ी हुई होती है । "हिन्दी साहित्य कोष" में इसे परिभाषित करते हुए कहा गया है कि "लोक मनुष्य-समाज का वह वर्ग है, जो आभिजात्य संस्कार, शास्त्रीयता और पांडित्य की चेतना और पांडित्य के अलंकार से शून्य है और जो एक परंपरा के प्रवाह में जीवित रहता है ।"[8]

आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने "रस-मीमांसा" में काव्यभाषा की शक्तियों की चर्चा करते हुए लिखा है कि "कविता में भाषा की सब शक्तियों से काम लेना पड़ता है । वस्तु या व्यापार की भावना चटकीली करने और भाव को अधिक उत्कर्ष पर पहुंचाने के लिए कभी किसी वस्तु का आकार या गुण बहुत बढ़ाकर दिखाना पड़ता है, कभी उसके रूप-रंग या गुण की भावना

7· काव्यभाषा के सिद्धान्त -- डॉ0 महेन्द्र मधुकर [अ प्र0 प्रबंध], पृष्ठ-20। [पटना विश्वविद्यालय]

8· हिन्दी साहित्य कोश [प्रथम भाग], पृष्ठ-747 ज्ञानमंडल लिमिटेड, वराणसी

उसी प्रकार के और रूप रंग मिलाकर तीव्र करने के लिए समान रूप और धर्मवाली और वस्तुओं को सामने लाकर रखना पड़ता है । कभी-कभी बात को भी घुमा-फिरा कर कहना पड़ता है । इस तरह के भिन्न-भिन्न विधान और कथन के ढंग अलंकार कहलाते हैं । इनके सहारे से कविता अपना प्रभाव बहुत कुछ बढ़ाती है।"[9]

विचारकों[10] ने माना है कि "कवि केवल आवेग प्रधान भाषा को ही काव्य-भाषा की महत्ता प्रदान नहीं कर सकता वह आवेग के साथ कलात्मक आवश्यकता को भी ध्यान में रखता है । काव्यभाषा की पारदर्शिता अनुभूतियों को संप्रेषण और संमूर्त्तन में सहायक होती है । इसके अभाव में भाषा कृत्रिम और बोझिल हो जाती है । कवि अपनी अभिव्यक्ति-प्रक्रिया में नितान्त नूतन होना चाहता है इसीलिए काव्य का प्रत्येक युग अभिव्यक्ति के नए क्षेत्रों को उद्घाटित करना चाहता है । तब घिसे हुए शब्दों और जीर्ण प्रतीकों का संस्कार होता तथा उन्हें नयी अर्थवत्ता प्राप्त होती है ।"[11]

काव्यभाषा का कोई निश्चित साँचा नहीं होता, कवि युगीन प्रभावों और परिस्थितियों के अनुसार अपनी निजी अभिव्यक्ति पद्धति का आविष्कार कर लेता है । लोक भाषा या सामान्य भाषा से अपने अनुकूल तत्त्वों को चुनकर कवि अभीष्ट अर्थ उत्पन्न करने में सफल होता है ।

---

9. रस-मीमांसा, पृष्ठ-39

10. काव्यभाषा के सिद्धान्त -- डॉ० महेन्द्र मधुकर, पृष्ठ-23।

11. वही, पृष्ठ-23।

काव्यभाषा का शिल्प कविता के प्रभाव को नियोजित करने में समर्थ होता है । डॉ0 महेन्द्र कुमार का अभिमत है कि "शिल्प शिल्पकार के मन द्वारा अपने भीतर निर्मित बिम्ब-विशेष का अभिव्यक्ति-व्यापार है जो अपने व्यक्त रूप द्वारा भावक के मन पर तदनुरूप बिम्ब उपस्थित कर उसका विभावक के साथ तादात्म्य स्थापित कराता है । अतः स्थूल रूप से बिम्ब और अभिव्यक्ति को शिल्प-व्यापार के दो मुख्य अंगों के रूप में स्वीकार किया जा सकता है ।"[12] यह भी स्पष्ट किया गया है कि "भारतीय परम्परा के अंतर्गत "कला" और "शिल्प" के स्वरूपों में विशेष मौलिक भेद स्वीकार नहीं किया गया यही कारण है कि कला और शिल्प के विवेचक आचार्यों ने कला के भेदों की परिगणना करते हुए उनमें शिल्प के कतिपय भेदों का तथा शिल्प के भेदों का उल्लेख करते समय कला के भेदों का समावेश ही नहीं कर दिया, कभी-कभी एक को दूसरे के पर्याय-रूप में भी ग्रहण कर लिया है ।"[13] कामसूत्र के टीकाकार यशोधर ने चित्रकला के छः भेदों को स्वीकृति दी है, वे हैं -- रूपभेद, प्रमाण, भाव,लावण्य, सादृश्य और वर्णिकाभंग ।[14] भारतीय काव्यशास्त्र में यद्यपि

---

12. रीतिकालीन रीतिकवियों का काव्य-शिल्प, पृष्ठ-14
    आर्य बुक डिपो, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, 1968

13. सम्मेलन पत्रिका (कला अंक), पृष्ठ : 17 तथा 71

14. रूपभेदाः प्रमाणानि भावलावण्ययोजनम् ।
    सादृश्यं वर्णिकाभंग इति चित्रं षडंगकम् ।।
    --- कामसूत्र, काशी संस्कृत सिरीज, पृष्ठ-30, सं0 1986

काव्य शिल्प का व्यवस्थित स्पष्ट विवेचन नहीं मिलता पर पाश्चात्य आलोचना-शास्त्र में बिम्ब, भाषा, रचना-विधान और छन्द-योजना के माध्यम से प्रस्तुत शिल्प-विवेचन को विविध रूपों में भारतीय काव्यशास्त्र में समालोचित किया गया है। रसवादी आचार्यों ने विभाव आदि के निरूपण में बिम्ब के समग्र रूप पर बल दिया है तो अलंकार-संप्रदाय में शब्द और अर्थ के माध्यम से बिम्ब-बोध को महत्व मिला है । इसी प्रकार ध्वनि में बिम्ब विधायिनी कल्पना का समावेश हो जाता है ।

अत: भारतीय काव्य शास्त्रीय चिन्तन में भाषा-शिल्प की दृष्टि से शब्द, अलंकार, छन्द, रीति, वक्रोक्ति, ध्वनि आदि का महत्व मिलता है ।

भाषा-शिल्प की उपर्युक्त धारणाओं के आलोक में बीसवीं शताब्दी के रसिक संत कवि श्री सियालाल शरण "प्रेमलता" का काव्य अत्यंत समृद्ध और प्रयोग की विविधता से पूर्ण दिखाई देता है ।

शब्द --

भाषा-शिल्प की दृष्टि से शब्द महत्वपूर्ण तत्व है जिससे रचना-विधान संभव होता है । राजशेखर[15] ने लिखा है -- "जो व्याकरण शास्त्र से प्रकृति-प्रत्यय द्वारा सिद्ध किया जाता है उसे शब्द कहते हैं और निरूक्त निघंटु, कोष, व्यवहार आदि से शब्द जिस वस्तु का संकेत करता है वह उसका

15· व्याकरणस्मृत निर्णीत: शब्दो निरूक्त निघण्ट्वादिभि निर्दिष्टस्तदभिधेयो र्थस्तौ पदम् ।

-- काव्यमीमांसा 15/11

अभिधेय अर्थ है । शब्द और अर्थ मिलकर पद कहलाते हैं । वस्तुत: काव्य-रचना का मुख्य आधार और साधन शब्द है । प्रेमलताजी के काव्य में शब्द-प्रयोगों की मुख्यत: चार कोटियाँ मिलती हैं --

1. तत्सम शब्द प्रयोग
2. तद्भव शब्द प्रयोग
3. देशज शब्द प्रयोग
4. उर्दू या विदेशी शब्द प्रयोग

प्रेमलताजी के काव्य में मुख्यता तत्सम एवं तद्भव शब्दों की है । तत्सम शब्दों के कुछ प्रमुख उदाहरण निम्नलिखित हैं --
परमानन्द, श्रम सकल, मायिक भोग, इष्ट ललाम, युगल, अभिराम, सुर दुर्लभ, प्रमाद, वैष्णव कुल, मुद्रा वेष मंत्र, नृप विराग {सार सिद्धान्त प्रकाश}, सृष्टि, दृष्टि, सचर अचर जड़ चेतन, आत्म ज्ञान, आत्मबोध, नामानन्य, मंत्र, श्रुति, सुकृत, मृदुल वचन, उपासक, अमित रूप, यूथ, ललनागण, सदन, सरि सागर, विस्मयजनित {वृहद् उपासना रहस्य}, दीनजन उद्धरण, युगल छवि, नित्यकर्म, तप समाधि, त्रिभुवन छवि शृंगार, आवेश {प्रेमलता पदावली}, नाम तत्त्व, दुर्वासना, याचकता, समर, शास्त्र, रणशूर {नाम महिमा दृष्टान्तावली}, भूषण, मुखश्रवण, कर्पूरी, कदली, वर्णाश्रम, शास्त्र सुबोध, शुभगुण {सतगुरु शब्दयथार्थ ज्ञान}, साधु, शुचि, समुदाय, परलोक सुख, शोकप्रद, दिव्य असन भूषण वसन {गुह्यार्थ प्रबोधिका}, रूपधाम लीला ललित, निर्बन्धन, मायिक भोग, पंचतत्वमय देह, पंच विषय, मिथ्या वाद विवाद, अभय अभायक अनघ, विज्ञानी शुद्धाचरण, अनन्य गति {निजात्म बोध दर्पण} आदि ।

तद्भव शब्द --

प्रेमलताजी के काव्य में तद्भव शब्दों की बहुलता मिलती है । तद्भव शब्द रचनाकार की प्रयोगशीलता और शब्द-रचना की प्रवृत्ति को भी पुष्ट करते हैं । ऐसे शब्द प्रेमलताजी के काव्य में "प्रयोग एवं रचना की दृष्टि से अधिक मौलिक प्रतीत होते हैं ।

"सार सिद्धान्त प्रकाश" में प्रयुक्त मुख्य तद्भव शब्द हैं -- किवार, भाग, हीया, बिहाय, पूरण, पूरणभाग, सिधि, ऋधि, दरशन, छेम, नेम, विपति, काज आदि ।

नाम तत्व सिद्धान्त दोहावली के मुख्य तद्भव शब्द हैं -- आग, परिछाँहिं, लखात, कुटुम, दिवारी, सुहात आदि ।

षट्ऋतु विमल विहार में अनूप, सनेह, सयन, गरभुज, पाँय, नेह, परसहिं, सनेही आदि तद्भव शब्दों का प्रयोग हुआ है ।

सीताराम नाम संबंध बहत्तरी में बैन, इकान्त, अंहूं, जारत आदि तद्भव शब्द मिलते हैं ।

प्रेमलता पदावली में सुहावनी, प्रगटानी, स्वाँस, जोरी विसरू, सुमिरू जरता, नगीच, मीच, सकुन, ठाम आदि तद्भव शब्दों की विशाल सूची प्राप्त होती है ।

देशज शब्द-प्रयोग --

प्रेमलताजी की काव्य-भाषा पर अवध एवं मिथिला के स्थानगत प्रभाव के साथ-साथ व्रजभाषा का भी पर्याप्त प्रभाव पड़ा है । अतः

देशज शब्दों की भी बहुलता उनके शब्द-प्रयोगों में दृष्टिगत होती है । कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं -- ताके, सिरात, सूझि परै, लहहिं, लौन, भृंगार, पातरि, धमूका, थापड़, चाबि, मूड़, बतरावत, कतहुँ, सुधार आदि ।

उर्दू शब्द --

प्रेमलताजी ने उर्दू शब्द-प्रयोगों द्वारा अपनी अभिव्यक्ति को सहज और स्वाभाविक रूप में प्रस्तुत करना चाहा है ।

"प्रेमलता-पदावली" में दिल, मस्ताने, तारीफ, मस्त, हैरानी, राजी, दगाबाजी, निकम्मा, कत्ल, अदा, दिवाने, फकीरी, मजा दिलदार, ताज, बदनाम, मोहब्बत, अजब, दिमानी आदि उर्दू शब्दों का प्रयोग हुआ है । कुछ पदों में उर्दू पदों और पद्धतियों का खुलकर प्रयोग किया गया है --

1. बदनाम किया दिलदार मोहब्बत तेरी ।
मोंहि अब न तजिय करि छोह जानि निज चेरी ।।
तन मन से मैं सरकार तिहारे दासी ।
हो चुकी ललन जनि तजो अवध पुर वासी ।।
दरशन बिनु अँखियाँ तरसि रही सुख रासी ।
मनमोहन प्यारे लाल राखु निज पासी ।
अब मिलो सनम चितचोर लाव जनि देरी ।

--- प्रेमलता पदावली, पृष्ठ-81, पद संख्या-87

2. प्यारे दिमानी होगई तेरे नाम के आर ।।
कर में लिया कमंडल गर गूदरी महनी

खप्पर दबाया काँख में शिर टोप दै जबर ।।

सब तौर से हूँ आप की दिल्दार गुन्हेगार

दो जग के लिए झूमती फिरती हूँ दर बदर ।

---- वही, पृष्ठ-243, पद संख्या-278

"सार सिद्धान्त प्रकाश" नामक ग्रंथ में गफलत, खतरा, ख्याल आदि उर्दू शब्द, षट्ऋतु विमल विहार में कनून, कैद, पोशाक, सब्ज आदि शब्द मिलते हैं । कुछ अन्य उदाहरण भी द्रष्टव्य है --

1. पढ़ि पढ़ि वेद मरे बहु पंडित धरि धरि ध्यान मरे ध्यानी ।
करि करि योग मरे बहु योगी सोहम् कहि मरि गये ज्ञानी ।।
मुल्ला मरे बाँग दै दै बहु करि करि बकरे कुर्बानी ।
प्रेमलता सियराम रटै बिनु सियवर महिमा नहिं जानी ।।

--- षट्ऋतु विमल विहार [सीताराम नाम जापक महत्व]

-- पृष्ठ-176

2. राम नाम का सौदा सच्चा धोखे का है काम नहीं ।
सस्ता चोखा यद्यपि जाहिर लेते इसको आम नहीं ।
परखैया कोउ सन्त सनेही तजते आठो याम नहीं ।
प्रेमलता मूरख किमि पावैं श्रद्धा रूपी दाम नहीं ।

-- वही - ज्ञानपचासा, पृष्ठ-187

3. बेचनेवाले सन्त महाजन श्रद्धा सम्पति चहते हैं ।
सत्य सराफी लेना देना झूठ वचन नहिं कहते हैं ।।
नफा कमावैं सदा न टोटा खोटा माल न गहते हैं ।

प्रेमलता अलमस्त हमेशे रामराज में रहते हैं ।।

--- वही, पृष्ठ-188

कवि ने भाषा को अभिव्यक्ति के अनुरूप मोड़ने कि लिए शब्दों का गतिमय सर्जनात्मक प्रयोग किया है --

धोखे का संसारी सौदा आदिउ मध्यउ कच्चा है ।
जिल्यदार चटकीला केवल अज्ञानी मनरच्चा है ।।
जान सनेही राम नाम का ठग विद्या ते बच्चा है ।
प्रेमलता सो पर्म सयाना उसका सौदा सच्चा है ।।

--- वही, पृष्ठ-188

"नाम तत्त्व सिद्धान्त दोहावली" में संकलित काव्य-ग्रंथों के दोहों में प्रयुक्त उर्दू शब्दों के कुछ संकेत इस प्रकार हैं --

1. नाम रटन महिमा कहत, रटत न निज मन मारि ।
प्रेमलता ते जीव जिमि, नामर्द नर नारि ।। -- पृष्ठ-11

2. ते घर तजि सुख संवहीं रहहिं फैलते फर्क ।
फक्त फकीरी जक्त तजि, कहिं मुदित तजि अर्क ।। -- पृष्ठ-134

वस्तुत: प्रेमलताजी की काव्यभाषा अवधी और व्रजभाषा का कलात्मक मिश्रण है, यथास्थान वह अन्य भाषाओं और बोलियों से भी प्रभावित होती रही है । प्रेमलताजी का शब्द-समूह और भंडार पर्याप्त समृद्ध है, इसमें संदेह नहीं कि अपनी अभिव्यक्ति को अधिक मार्मिक और सरस बनाने के लिए उन्होंने व्रजभाषा के शब्दों का भी पर्याप्त प्रयोग किया है । संस्कार और अर्जन के फलस्वरूप उनकी भाषा में संस्कृत, उर्दू आदि समृद्ध भाषाओं

के शब्द भी यथेष्ट मिलते हैं। तत्सम, तद्भव और देशज शब्दों के अतिरिक्त मूल शब्दों को तोड़ने या उनका स्वरूप-परिवर्त्तन करने की प्रवृत्ति प्रेमलताजी में अधिक मिलती है। निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि प्रयोग, परम्परा एवं प्रवृत्ति की दृष्टि से प्रेमलताजी में तत्सम शब्दों का ही प्रयोग-बाहुल्य देखा जाता है। वास्तव में संस्कृत समास बहुला भाषा है, जबकि व्रजभाषा इसके विपरीत व्यास-प्रधान है। ऐसी स्थिति में संस्कृत के शब्द स्वभावत: व्रजभाषा की प्रकृति के अनुकूल नहीं पड़ते और यदि इनका प्रयोग इसमें कर भी दिया जाय तो इसके स्वारस्य में एक प्रकार की शिथिलता आ जाती है। यद्यपि कवि का आग्रह संस्कृत शब्दों को शुद्ध रूप में प्रस्तुत करने की ओर सचेष्ट दिखाई देता है पर भाषा-मार्दव की दृष्टि से नहीं। जहाँ उन्हें भाषा के माधुर्य का हनन परिलक्षित होता है वहाँ वे शब्द को प्राय: तद्भव रूपों में लेते हैं।

अलंकार-विधान --

कवि अपने काव्य में अभिव्यंजनात्मक सौन्दर्य उत्पन्न करने के लिए अलंकारों का विधान करता है। अलंकार का शाब्दिक अर्थ अलंकृत करना है। अलंकारों द्वारा काव्य में चारुता उत्पन्न करने के संबंध में भारतीय काव्यशास्त्र में दो वर्ग रहे हैं। भामह,[16] दण्डी,[17] जयदेव[18] आदि आलंकारिक आचार्यों ने अलंकारों को काव्य का शोभाविधायक तत्त्व मानकर उनके अभाव में

---

16. काव्यालंकार --- भामह, पृष्ठ : 1/13 तथा 3/58

17. काव्यादर्श, पृष्ठ : 2/1

18. चन्द्रालोक, पृष्ठ : 1/8

काव्य की सत्ता को ही अस्वीकार किया है । इनके विपरीत वामन,[19] आनंदवर्द्धन,[20] मम्मट,[21] विश्वनाथ,[22] आदि ने अलंकार को रसोपकारक या काव्य का मात्र शोभावर्द्धक धर्म स्वीकार किया है । वस्तुत: अलंकार शब्द के अस्थिर धर्म हैं और अंगद्वार से काव्य की श्री वृद्धि करते हैं । अलंकारों द्वारा काव्य की आनन्दोत्पादिनी शक्ति प्रकट होती है । विचारकों का मत है कि "अलंकारों से अलंकृत वाक्य-विन्यास ही मनोरंजक और समाकर्षक होता है ।"[23] अलंकारों समर्थ प्रयोग भाषा में चमत्कार की सृष्टि करता है ।[24] डॉ० ओमप्रकाश की मान्यता है कि "अलंकार वाणी के विभूषण हैं, अभिव्यक्ति में स्पष्टता, भावों में प्रभावोत्पादन की शक्ति, भाषा में सौन्दर्य तथा श्रोताओं का मनोविनोद आदि इनके फल हैं ।"[25] पं० रामदहिन मिश्र का कथन है कि

---

19. हिन्दी काव्यालंकार सूत्र, पृष्ठ : 3/1/1,2

20. हिन्दी ध्वन्यालोक, पृष्ठ : 2/6

21. हिन्दी काव्य प्रकाश, पृष्ठ : 8/67

22. हिन्दी साहित्य दर्पण, पृष्ठ : 10/1

23. अलंकार-पीयूष {पूर्वार्द्ध} -- डॉ० रमाशंकर शुक्ल "रसाल", पृष्ठ :35-36

24. A figure of speech is a dviation from the plain and ordinary mode of speaking, for the sake of greater effect.
उद्धृत बेन का मत -- Some Concepts of the Alankar sastra- Dr.V.Raghvam,Pg.50

25. हिन्दी अलंकार-साहित्य, पृष्ठ-1

अलंकारों की योजना करने में एक सहृदयतापूर्ण अनुभूति से उत्पन्न विशेष विदग्धता की आवश्यक्ता है जो यह अनुभूत कर सके कि यह योजना भावोत्कर्ष में, रसोद्रेक में, प्रेषणीयता में, सौन्दर्यबोध में सहायक हो सक्ती है ।"[26]

प्रेमलताजी के काव्य में शब्द भांडार के समान ही सौष्ठव की दृष्टि से अलंकारों का महत्व मिलता है । हमारे आलोच्य कवि बहुपठित शास्त्राभ्यासी पंडित न होकर भक्त और भावावेशी कवि थे, जिनका काव्यत्व अध्यात्म से प्रेरित था, अत: इनके काव्य में कला-पक्ष की अभिव्यंजना सहजलभ्य है । भाषा-शिल्प का सौष्ठव काव्य को समग्रत: आकर्षण के योग्य बनाता है । सौष्ठव भाषागत सौन्दर्य है जो सामान्यत: उसके विभिन्न अवयवों के औचित्य तथा प्रसाधन के अतिरिक्त तद्गत बिम्ब की ग्राह्यता और आह्लादक्ता के साथ भी विशेष संबंध रखता है । शब्द के प्रसाधक तत्वों में मुख्यत: शब्दालंकारों की गणना होती है जिनका औचित्यपूर्ण प्रयोग संगीत और चमत्कार की सृष्टि करता है । इसी प्रकार अर्थ-सौन्दर्य के विधायक उपकरण अर्थालंकार होते हैं । अर्थ मुख्यत: बिम्ब या भाव को व्यंजित करता है, अत: अर्थालंकार अर्थ-प्रसाधन के साथ-साथ बिम्ब या भाव का भी स्वाभाविक रूप से सौन्दर्य-वर्द्धन करते हैं । अत: बिम्ब या भाव के अनुसार शब्द और अर्थ का उचित एवं सुन्दर प्रयोग भाषा-शिल्प के सौष्ठव की संरचना करता है ।

प्रेमलताजी के काव्य में शब्दालंकारों में मुख्यत: अनुप्रास, वक्रोक्ति यमक आदि का तथा अर्थालंकारों में उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा,

---

26. काव्य में अप्रस्तुत योजना, पृष्ठ-1।

उदाहरण स्वभावोक्ति आदि का अधिक प्रयोग हुआ है ।

अनुप्रास का संबंध शब्द की सर्वाधिक लघु इकाई व्यंजन-ध्वनि के साथ रहता है -- व्यंजन-ध्वनियों की आवृत्ति से उत्पन्न होनेवाले अक्षर-सौन्दर्य के साथ हुआ करता है । इसके भेद हैं छेकानुप्रास, वृत्यनुप्रास, श्रुत्यनुप्रास, अन्त्यानुप्रास और लाटानुप्रास । अनुप्रास के ये भेद ध्वनियों के स्वरूप, उनके उच्चारण की कालावधि तथा क्रम-वैशिष्ट्य के अनुसार किए गए प्रतीत होते हैं । वस्तुतः वर्णों की पुनः पुनः आवृत्ति से काव्य में श्रुति पेशलता तथा संगीत की सर्जना होती है । भोजराज का कथन है कि यदि काव्य में अनुप्रास की कुछ भी छटा है तो उपमा आदि अलंकारों से रहित होने पर भी वह काव्य-रचना सुशोभित होती है ।"[27]

प्रेमलताजी के काव्य में प्रयुक्त अनुप्रास कृत्रिम न होकर भाव व्यंजक और कवि की रसिकता एवं माधुर्यवृत्ति के पोषक प्रतीत होते हैं । अनुप्रासिक प्रयोगों के कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं --

1. कुंजहिं कोकिल कीर पुंज सरस सरति सु कूजन ।
प्रेमलता सुर छकहिं निरखि मिथिला महि झूलन ।।

-- सार सिद्धान्त प्रकाश, पृष्ठ-152

2. कारीं कलित कुटिल लट लटकहिं दोउ दोउ दिशि धनि जो जो हैं ।
प्रेमलता लखि छटा छकी मति वरणि कहैं अस कवि को हैं ।

-- षड्ऋतु विमल विहार, पृष्ठ-2

---

27. सरस्वती कंठाभरण, पृष्ठ : 2/106

आलंकारिक शब्द प्रयोग द्वारा "सियवर षट्ऋतु विमल विहार दर्पण" अर्थात् "षट्ऋतु विमल विहार" में विशेषकर झंकार और अनुरजनमूलक भाषा शैली का प्रचुर प्रयोग हुआ है। कवि की रससिद्ध भाषा वर्णन को सजीव बनाती हुई भावानुगामिनी होकर संप्रेष्य होने में सफल होती है। ऐसे कुछ चित्र द्रष्टव्य हैं --

1. चुरियाँ चारु बंगलियाँ पहुँची महिरे इत श्री सिय प्यारी। --पृष्ठ-4
2. इत हथ फूल आरसी अनुपम छला मुदरियाँ मन मोहैं।
   उत अंगुरिनि अनमोल अंगूठी छला छाप बहुविधि सोहैं।। --पृष्ठ-वही
3. झनर झनर झींगुर झनकारत चातकि सोर मचाय रही।
   सीतल मन्द सुगंध बहै बर बात उछाह बढ़ाय रही।
   झरना झरहिं चरहिं प्रमुदित मन खग मृग सुखमा छाय रही।
   हरे बाग वन विटप हरी महि प्रेमलता लहराय रही।।
   --- पृष्ठ : 20-21
4. छुम् छुम् छननन छुम् छुम् छन नन करहिं नूपुर हरत जिया।
   प्रेमलता प्रभुरतन सिंहासन बैठि बिलोकहिं राम सिया।। --पृष्ठ-29
5. झमकि धरहिं महि चरण चमकि जब सुर संग दामिनि सम गोरी।
   फैलति दश दिशि छटा छिटकि तक चितवहिं मुरि सिय पिय ओरी।।
   --- पृष्ठ-30

प्रेमलताजी की आलंकारिक भाषा अर्थालंकारों को भी समान रूप से स्वीकार करती व्यक्त होती है। भक्ति, उपासना और सौन्दर्य-वर्णन के प्रसंगों में कवि ने आलंकारिक उक्तियों का सहारा अधिक लिया है।

नाम महिमा दृष्टान्तावली नामक ग्रंथ में अनेक दृष्टान्तों द्वारा आलंकारिक भाषा की काव्यात्मक अभिव्यक्ति हुई है । उनमें कुछ उदाहरण निम्नलिखित हैं --

1. नाम रटन बहुतक करत, जग प्रसिद्ध कोउ होत ।
प्रेमलता नभ नखत जिमि, लखि बड़ छोट उजोत ।। -- पृष्ठ-10

2. नाम रटत दृढ़ सन्त कोउ, बिरले रस पर हेत ।
प्रेमलता श्री खंड जिमि, सब कहँ सम सुख देत ।। -- पृष्ठ : वही

3. नाम रटन में स्वाद जस, तस मुख किमि कहि जात ।
प्रेमलता रुचिगरसु अति, जिमि मिथिला को भात ।। -- पृष्ठ-14

4. नाम रटन बिनु निपट अति, फीको लगे फकीर ।
प्रेमलता जिमि समर में, शस्त्र ढाल बिनु वीर ।। -- पृष्ठ-16

5. राम नाम पूरण शशी, राका श्री सियनाम ।
प्रेमलता सु चकोर मन अवलोकत सुखधाम ।।
--- युगलनाम संबंध अष्टोत्तरी, पृष्ठ-208

6. राम नाम सुन्दर जलद, श्री सियनाम सुनीर ।
प्रेमलता मन मोर लखि, कूकत पुलकि शरीर । -- वही, पृष्ठ-वही

7. राम नाम की रेल सिय, नाम सु अंजन ठाट ।
प्रेमलता पटरी रटन, मन अंजन गुरू गाट ।। -- वही, पृष्ठ-212

8. रामनाम दुलहा सुघर, श्री सियनाम बरात ।
प्रेमलता दुलहिनि रटन, पंडित गुरू विख्यात ।। -- वही, पृष्ठ-वही

9. रामनाम अमि कूप सिय, नाम पात्र पटु लीन ।
प्रेमलता रसरी रटनि, भरिं भरि पियत प्रवीन । -- वही, पृष्ठ-214

10. राम सुनाम हिंडोर बर, श्री सियनाम सु खंभ ।
प्रेमलता डोरी रटनि, झूलत जन निर्दम्य ।। -- वही, पृष्ठ-214

11. जगत जलधि तिरहुत कमल, जनक सु पुर मकरन्द ।
प्रेमलता सिय गंध सुचि, भ्रमर सु रघुकुल नन्द ।। -- वही, पृष्ठ-280

प्रेमलताजी के दोहों में रूपकात्मक भाषा का सर्वाधिक निर्वाह हुआ है । इस भाषा में भक्ति तत्त्व और नीति तत्त्व का सुन्दर सम्मिश्रण दिखाई पड़ता है ।

प्रेमलताजी की काव्यभाषा का एक विशिष्ट पक्ष मिश्रित भाषा के रूप में दीख पड़ता है जिसमें व्रज, अवधी और खड़ी बोली का सम्मिश्रण हुआ है --

1. सेवा सुख अधिकार अधिक अति शृंगारी जिउ पाते हैं ।
रोक टोक नहिं कहूं महल में जी चाहे जह जाते हैं ।।
बड़े बड़े इन्द्रादि देव मुनि पावन पूज्य कहाते हैं ।
प्रेमलता तेउ शृंगारिनि के कृपा कटाक्ष मनाते हैं ।।

--- षट्ऋतु विमल विहार, पृष्ठ-45

2. कोउ कह हम तुमते न घाटिक कछु होस हवास भुलाउंगी ।
रंगनि मारि मारि तुम सब कह रण ते आजु हटाउंगी ।।
इत उत भाति बचीहौ अब लगि अब मैं नाच नचाउंगी ।
प्रेमलता सिय कृपा फाग सुख भली भांति दरसाउंगी ।।

--- वही - सतगुरू कृपा प्रकाशान्तर, पृष्ठ-51

3• धन है विषधर साँप कठिन अति अज्ञानिन डसि लेता है ।
प्रभु ते विमुख कराय भली विधि लख चौरासी देता है ।।
तेहिकर मंत्र परम परमारथ जानत कोउ जो चेता है ।
प्रेमलता धन पाय तरहिं भव ते परिवार समेता है ।।

--- जानकी विनय नामादि महत्व, पृष्ठ-70

4• चहियत कृपा लली सिय जू की यह सुख जाते मिलता है ।
श्री मिथिलापुर अटत रटत सियराम नाम उर खिलता है ।।
होत अचल मन चंचलता तजि फिरि न हिलाये हिलता है ।
प्रेमलता पाखंड खंडि सब जीव मोदनिधि पिलता है ।।

-- वही, पृष्ठ-84

5• श्री सियराम नाम की महिमा बहु विधि पढ़ते सुनते हो ।
रटत न काहे खूब निरन्तर बातें केहि लगि गढ़ते हो ।
हटते हो क्यों नाम रटन में आगे क्यों नहिं बढ़ते हो ।
प्रेमलता कसि कमर प्रेम पथ पाई न काहे चढ़ते हो ।।

--- हितोपदेश शतक, पृष्ठ-138

6• जितना रटि हो नाम अन्त में उतना ही सुख पावोगे ।
जो न मानिहो सीख मोहवश तो पीछे पछतावोगे ।।
रटे बिना सियराम नाम बहु घर घर धक्का खायोगे ।
प्रेमलता तजि देह भजन बिनु यमपुर बाँधे जावोगे ।।

-- वही, पृष्ठ-139

मुहावरे --

मुहावरे काव्य-भाषा की शक्ति को बढ़ाकर उसे लाक्षणिक प्रभाव से युक्त करते हैं। मुहावरों में भाषा की संध्वनित शक्ति कार्य करती है। सधुक्कड़ी भाषा और अर्थगर्भी संकेतों के कारण प्रेमलताजी के काव्य में अनेक मुहावरों का रुचिर और कलात्मक प्रयोग हुआ है।

षट्ऋतु विमल विहार --

1. प्रेमलता चख छके सुछवि लखि पूरे सकल मन काजे हैं। -- पृष्ठ-2
2. उड़ि उड़ि गिरत भिरत पुनि उठि उठि रचौ धीर न धरते हैं।
--- पृष्ठ-18
3. धाइ मिलीं परि पाँयँ जाँयँ वलि नयन लाय लूटन लागीं। --पृष्ठ-28
4. मधुर मंजरी मुग्ध सु प्रौढ़ा चतुर व्यूह रचि रास करैं। --पृष्ठ-30
5. इत उत भागि बचीहौ अब लगि अब मैं नाच नचाउँगी।--पृष्ठ-51
6. लाखनि कही न चली एक हू अलियनि प्रति प्रभु चतुराँई।--पृष्ठ-54
7. जीते हैं कूकर सूकर सम इन्द्रिनि हाथ बिकाने हैं। -- पृष्ठ-139
8. नाम प्रभाव अपार बखानत रामउ हिय्रे ल जाते हैं। -- पृष्ठ-143
9. प्रेमलता सोइ अपर अपर सब अग जग काल कलेवा है।-- पृष्ठ-174
10. प्रेमलता तिहुं काल तिहूं पुर उसका सौदा पटता है। --पृष्ठ-177
11. कोटिन विघ्न पर न जो तदपि पौवन पाछे हटनाजी।
-- पृष्ठ-184
12. प्रेमलता फिर हाट उठे पर शिर धुनि धुनि पछितावोगे। --पृष्ठ-185

13· जग भग ते मुख मोरि जोरि नाते सियवर ते ।

--- सार सिद्धान्त प्रकाश, पृष्ठ-46

14· सीताराम रटि भव सागर तरत जू । -- नाम रहस्य त्रयी, पृष्ठ-6

15· करनी बिनु बहु गाल बजावत उदर हेतु जग धावत हैं

--- परमहंस ज्ञान प्रबोधक पचीसी, पृष्ठ-43

छन्द विधान --

छन्द-योजना द्वारा काव्य को गद्य से पृथक् कर उसकी लयात्मकता का निर्वाह किया जाता है । छन्द का संबंध भाव और भाषा दोनों से है । डॉ० पुत्तू लाल शुक्ल का कथन है कि "छन्द का नियत एवं मधुर आवर्त्तन मानस-धरातल पर गीत की धारा बहाता है, जिसमें वर्ण, शब्द, वाक्यांश और वाक्य वेग से प्रवाहित होकर मूर्त्त होते हैं ।[28] छन्द-विधान में लय की रक्षा और व्यवस्था के लिए विशिष्ट शब्दों का चुनाव करना पड़ता है । काव्य-प्रवाह की अखंडता बनाए रखने के लिए उसके पर्यायों की खोज और नए शब्दों की रचना करनी पड़ती है । डॉ० गुलाब राय की स्थापना है कि "भावमयी भाषा में जो स्वाभाविक गति आ जाती है, छन्द उसी का बाहरी आकार है । ··· छन्द भाषा को भावानुकूल बनाकर पाठक में एक विशेष ग्राहकता उत्पन्न कर देते हैं ।"[29]

28· आधुनिक हिन्दी काव्य में छंद-योजना, पृष्ठ-55

29· सिद्धान्त और अध्ययन, पृष्ठ-243

प्रेमलताजी के काव्य में छन्दों की विविधता, पूर्णता और प्रभाव क्षमता का यथाशक्य ध्यान रखा गया है । कवि ने कुंडलिया, कवित्त, सवैया, मंजु छन्द, दोहा, पद, गजल, रेखता, चौपाई आदि के रूप में छन्द-वैविध्य का प्रयोग किया है । कवि ने लय-यति के साथ अर्ध-यति की व्यवस्था तथा अन्त्यानुप्रास के साथ आन्तरिक तुक साम्य के द्वारा भाषा की प्रवहमानता का ध्यान रखा है । यति, ग ति, तुक आदि छन्द के अन्तवर्ती तत्त्व हैं जिनका भाषा पर अनिवार्य प्रभाव पड़ता है । मधुरता और गत्यात्मकता प्रेमलताजी के छन्दों की आन्तरिक विशेषताएं हैं ।

पद --

कवि ने पदों की रचना अनेकत्र की है, मुख्यतः प्रेमलता पदावली, नित्य प्रार्थना, जानकी जी की बधाई आदि ग्रंथों में उनकी रचना अधिक हुई है ।

1. गुरू बिनु बोध करै जग कौन ।
प्रबल प्रताप प्रभाव सुगुरू को, प्रगट चतुर्दश भौन ।
भयौ न है कोउ गुरू समान कहुँ, आगेहू नहिं होन ।
गुरू महिमा अति अगम बखानत, वेदहु साधी मौन ।।

--- प्रेमलता पदावली, पृष्ठ-150, पद सं0-169

2. भजु मन राम नाम अति मीठा ।
फीके सकल पदारथ जग के अभिमउ लागत सीठा ।।
नाम प्रभाव राम शुभ गति के, केहि न दियै करि चीठा ।

चहुँ युग चहुँ श्रुति तरयो न जो रटि नाम सु सुभान दीठा ।।
नाशन त्रिविधि पाप पाला हित, नाम सु प्रबल अँगीठा ।

--- वही, पृष्ठ-240, पद संख्या-273

3. मेरे मन निवसहु स्वामिनि आय ।
जनक लली सिय सह रघुनन्दन, निसिबासर सुखदाय ।
सहत दुसह दुख वहु दिन बीते, तुम बिनु परेउ भुलाल ।।
राम प्रिया करि कृपा जानि जन, लीजिय अब अपनाय ।
त्राहि त्राहि अब हे करुनाकर, अति सय जिय घबराय ।
पाहि पाहि जग जननि जानकी, कीजिये बेगि सहाय ।

--- नित्य प्रार्थना {रूप प्रार्थना}, पृष्ठ-27

4. सिया जू मेरी स्वामिनि सब सुख मूल ।
प्रगट भई मिथिलेश भवन में, नास्यो कठिन वशूल ।।
घर घर गावत नचत भामिनी तन मन सुधि गइ भूल
देत दान सनमानि सबहिं सब, जानि विधिहिं अनुकूल
धरणि धाम धन वसन विभूषण, गजरथ तुरंग सहूल
देत लेत हरसत हरषावत, बरषत विवुध सुफूल ।।

--- श्री जानकी जी की बधाई, पृष्ठ-30, पद सं0 30

कवित्त --

1. सीताराम सीताराम रटत सुमन्त जू ।
परम विराग उर सतसंग रुचि शुचि सुनत चरित

सीताराम के अनन्त जू ।

भोजन बसन अनयास हू मिलत आइ

माँगिहू के लेत पर बसत इकन्त जू ।।

अमल अभेद मन पारग पुराण वेद

सीताराम नाम प्रीति लिये निबहन्त जू ।।

सीताराम नाम गान सीताराम रूप ध्यान

सीताराम सीताराम रटत सुसन्त जू ।।

--- सीताराम नाम संबंध बहत्तरी, पृष्ठ-9

2. नाम महाराज की मैं जाऊं बलिहारियाँ ।

परम अगम जाहि बदत पुराण वेद

पायो सो अभेद सियवर धनुधारियाँ ।

अगुण सगुण ब्रह्म दोउ न के कारण सु,

तारण अगाध भव सागर अपारियाँ ।।

राम ऐसो नाम जाको रमत सकल माहिं

एकही अनादि नर रूप सब नारियाँ ।।

प्रेमलता नाम रटि प्रगट सो लखे राम

नाम महाराज की मैं जाऊं बलिहारियाँ ।।

--- वही, पृष्ठ-59

चौपाई --

प्रेमलता जी ने चौपाई और दोहों का सम्यक् प्रयोग

वृहद् उपासना रहस्य में किया है । छंद-रचना का उदाहरण निम्नलिखित है --

पिय बिनु राम राम बिनु सीया । रहि न सकत जिमि पति बिनु तीया
युगल रूप सुन्दर सुखदाई । श्याम गौर नखशिख छविछाई ।।
युगल उपासक जो सज्ञाना । सेवहिं दोउ दोउ अंग समाना ।
तत्व एक सिय राम उदारा । भक्तनि हित युग रूप सु धारा ।।
सदहिं नित्य सो युगल सरूपा । सेवत नशत घोर भव कूपा ।।
सिय रघुवर जब जेहि अपनावहिं । तेहि उर आतप रूप लखावहिं ।।
अहं भाव नरता जड़ नाशा । करैं दाइ हिय कृपा प्रकाशा ।।

--- वृहद् उपासना रहस्य, पृष्ठ-138

मंजु छन्द --

मंजु छन्द का सर्वाधिक प्रयोग सियवर षट्ऋतु विमल विहार में संकलित ग्रंथों में हुआ है । कुछ उदाहरण द्रष्टव्य हैं --

1. नामहिं इष्ट देवता नामहिं भजन भाव नामहिं गति है ।
नामहिं अंजन नाम निरंजन गंजन खल नामहिं मति है ।
नामहिं लैन दैन पुनि नामहिं कहब सुनब नामहिं रति है ।
प्रेमलता जो रटै नाम अस तिन्हें मोर बहु विधि नति है ।

--- श्री जानकी विनय नामादि महत्व, पृष्ठ-75

2. भजन करत अलसात कुटिल पै उदर भरन में पक्का है ।
धनहित व्याकुल फिरैं लाज तजि दर दर खाता धक्का है ।।
सुनि पावै कहुँ भोज खोज करि मारत चलै कुदक्का है ।

प्रेमलता परमारथ पथ में कहत सु पौरूष थक्का है ।

--- वैराग प्रबोधक बहत्तरी, पृष्ठ-115

3. ललकि ललकि सिय राम उचारहिं लोक वेद की तज शंका ।
परम सार लहि नाम मत्त ज्यों फिरहिं लखहिं किमि मति रंका ।।
परमहंस कर ज्ञान अगाध सु भाव भेद अतिशय बंका ।
प्रेमलता सु अशोच रहैं नित ज्यों बालक जननी अंका ।।

--- हितोपदेश शतक, पृष्ठ-131

4. श्री सियराम उपासक जो जन ते सबके सिर ताजा है ।
नाम रटत विचरत महि प्रमुदित राजन के ज्यों राजा हैं ।।
दशहू दिशि आनंद लहैं नित सरैं सकल मन काजा हैं ।
प्रेमलता मुद मंगल मय वपु राजत सन्त समाजा है ।

--- सीताराम नाम जापक महत्व, पृष्ठ-172

दोहा --

कवि ने "नाम तत्व सिद्धांत दोहावली" में संकलित ग्रंथों पूर्णत: दोहा छंद के प्रयोग के साथ-साथ दूसरे ग्रंथों में भी सहायक रूप से दोहों का समावेश किया है । दोहों का उपयोग मुख्यत: भक्ति, दर्शन, नीति और सूक्ति वाक्यों की रचना के लिए किया गया है --

1. तन सराय में बैठि जनि, दिन दिन होय अचेत ।
प्रेमलता चलना अवसि, सिय पिय पुर साकेत ।।

--- नाम महिमा दृष्टान्तावली, पृष्ठ-27

2. गली गली घूमत नहीं, सतगुरू विकत न हाट ।
प्रेमलता जू लखावहीं, पिया मिलन की बाट ।।

--- सतगुरू शब्द यथार्थ ज्ञान, पृष्ठ-35

3. सीता सिया सुनाम दोउ, जद्यपि परम अभेद ।
पै सिय नाम सु सरल अति, रटत हरत भव खेद ।।

--- गुरू पदार्थ प्रबोधिका, पृष्ठ-103

4. रटहिं नाम पै मुदित मन, होत न कबहु उदास ।
प्रेमलता रस एक नित, सजि नूतन विश्वास ।।

--- अनन्य शतक, पृष्ठ-152

5. राम नाम माला ललित, श्री सियनाम सुमेर ।
प्रेमलता फेरब रटनि, रसना कर मन केर ।।

--- युगल नाम संबंध अष्टोत्तरी, पृष्ठ-214

6. नारायण आदिक जिते, नामसु मंत्र अपार ।
प्रेमलता सियराम यह, नाम सकल आधार ।।

--- उपदेश पेटिका, पृष्ठ-247

कुंडलिया --

कुंडलिया छन्द का प्रयोग प्रेमलताजी ने सार सिद्धांत प्रकाश नामक ग्रंथ में किया है, उक्त ग्रंथ में कुल 452 कुण्डलिया छंद संकलित हैं । कुछ महत्वपूर्ण उदाहरण अधोलिखित हैं --

1. सीता पूजा पाठ मम, सम दम शरधा धाम ।
सीता श्रवण सु मनन सिय, समाधान विश्राम ।।
समाधान विश्राम धारणा अचल समाधी ।
अहंकार उपराम तितिक्षा बुद्धि अबाधी ।।
भजन विवेक विचार लोक परलोक प्रतीता ।
प्रेमलता बल भाग एक श्री स्वामिनि सीता ।। -- पृष्ठ-144

2. सीता प्राण अधार धन, आश बास विश्वास ।
सीता भजन सुतोष प्रण, सीता हर्ष हुलास ।।
सीता हर्ष हुलाश जहाँ लगि सुखद सु जेते ।
रहस राग रस रंग संग शुभ सिय जू तेते ।।
जाग्रत स्वप्न सुषुप्ति तुरिय अनुभव के पीता।
प्रेमलता सब ओर एक श्री स्वामिनि सीता ।। -- पृष्ठ-145

गजल --

प्रेमलताजी के काव्य पर उर्दू गजल शैली और उर्दू भाषा का भी पर्याप्त प्रभाव रहा है । सूफी शैली या दरवेश रूप के कारण हमारे आलोच्य कवि की मूल प्रवृत्ति रसिकता और शृंगार-भाव की है, अतः गजलों का उपयोग उसी "इश्क" भाव की प्रस्तुति के लिए हुआ है ।

1. भजु मन सु वचन काय सिया राम बावरे ।
संसार घोर धार जीव डूबत परे,
अज्ञान विकश मोह त्यागि नाम नाव रे ।
--- प्रेमलता पदावली, पृष्ठ-110

2• हर वक्त सियराम की लागी भारी रहै ।

टूटै न तार यार तैता धार की तरह,

मुख में अखंड नाम की रटना भरी रहै ।

--- वही, पृष्ठ-185

3• सबसे मुझे प्यारी लगी सियराम की रटन् ।।

साधे अनेक साधन बाधा मिटी नहीं,

पाये क्लेश खूबही जो जाय ना बरन् ।।

खाये सुने न कौन के धक्के कड़े वचन,

नायो न शीस कौन को ग्रह पेट के डरन् ।

सन्तों के निकट जाय कही विपत्ति ते कह्यो,

हनुमन्त निकट ब्बैठि चोखु नाम आखरन् ।।

--- वही, पृष्ठ : 183-184

रेखता --

लरबोरी नगर रुचिराई, दशो दिशि महा सुछ विछाई ।

पताका केतु ध्वज राजै, बधाई विविधि विधि बाजै ।।

गुणी बहु नाचते गाई, अरगजनि कीच मचवाई

--- जानकी जी की बधाई, पद रेखता-16, पृ0 12

इसके अतिरिक्त पद राग कजरी, लावनी आदि के छंदात्मक प्रयोग भी कवि ने किए हैं ।

इस प्रकार प्रेमलताजी का काव्य रसिक भाव-भक्ति का रसात्मक उद्रेक ही नहीं अपितु भाषा-शिल्प की दृष्टि से भी उदाहरणीय है ।

कवि ने भाषा की दृष्टि से जहाँ एक ओर व्रज, अवधी, खड़ी बोली, उर्दू एवं मैथिली, भोजपुरी के प्रभावों को आत्मसात् कर सधुक्कड़ी और प्रवाहमयी भाषा को अभिव्यंजित किया है वहाँ शिल्प की दृष्टि से अलंकार, छन्द, मुहावरे एवं सौन्दर्य के भावात्मक चित्रों एवं बिम्बों की भी प्रभावशाली अभिव्यंजना प्रस्तुत की है ।

प्रेमलताजी संग्राहक मनोवृत्ति के कवि थे, उन्होंने सार तत्व का आकलन किया और असार का त्याग किया । उनकी भक्ति और नाम रटन की निष्ठा उनके छन्द-छन्द में बिखरी मिलती है । भाषा और शास्त्र का पांडित्य न रखते हुए भी कवि द्वारा काव्य भाषा का ऐसा समर्थ अधिकार पूर्ण प्रयोग आध्यात्मिक शक्तियों से प्रेरित प्रतीत होता है । भाषा-शिल्प की दृष्टि से प्रेमलताजी का काव्य विविध, प्रयोगात्मक और रसात्मक कहा जा सकता है ।

------- 0 -------

सप्तम अध्याय

उपसंहार

सप्तम अध्याय

उपसंहार

रामभक्ति शाखा के कवि संत सियालाल शरण जी "प्रेमलता" और उनका काव्य शीर्षक शोध-प्रबंध के पिछले अध्यायों में विवेचित सामग्री का निष्कर्ष निम्नलिखित है --

रामभक्ति शाखा के उत्तरार्द्ध काल (19 वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध और 20 वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध) के कवियों में संत सियालाल शरण "प्रेमलता" का विशिष्ट स्थान है । रामभक्ति, नाम-रटन को सर्वजन संवेद्य और व्यावहारिक बनाकर उन्होंने सियाराम की माधुर्य भाव मूलक अनन्य भक्ति का प्रतिपादन किया । वस्तुतः रामभक्ति का विषय चरित्र, क्रिया और भाव की दृष्टि से महत्वपूर्ण है । भक्ति मानव-जीवन का उदात्त भाव है। शांडिल्य भक्ति सूत्र, भक्तिरसामृत सिन्धु, भक्ति रसायन आदि ग्रंथों की भक्ति विषयक चर्चा तथा रूपगोस्वामी के भक्ति के प्रभाव और लक्षण विषयक कथन महत्व रखते हैं ।

भक्ति या उपासना का मूल लक्ष्य भगवत् सान्निध्य की प्राप्ति या भागवत प्रेम पात्रता है । भक्ति सिद्धान्तों के अनुसार

भक्ति के तीन तत्व हैं -- अनुग्रह, प्रेम और भक्ति । शांडिल्य भक्ति सूत्र और नारद भक्ति सूत्र में भक्ति के मुख्या और गौणी प्रकार निरूपित हैं । नारद ने प्रेम रूपा भक्ति के ग्यारह प्रकार और चैतन्य महाप्रभु ने वैधी और रागानुगा कोटि निर्धारित की है । भक्ति में जीव और ईश्वर के प्रेम की प्रधानता होती है । भक्ति का वैधी और मर्यादावादी रूप हिन्दी रामकाव्य में प्रस्तुत हुआ है । श्री संप्रदाय में रामभक्ति का शास्त्रीय प्रतिपादन भी हुआ है । रामभक्ति संहिताओं में मुख्य हैं -- अगस्त्य संहिता, कलिराघव, वृहद् राघव और राघवीय संहिता । उपनिषदों में रामपूर्वतापनीय, रामोत्तर तापनीय तथा रामरहस्योपनिषद् गण्य हैं ।

रामकाव्य की विशेषताओं में सेवक-सेव्य भाव पर बल देने के साथ ज्ञान और कर्म से भक्ति की श्रेष्ठता का प्रतिपादन हुआ है । रचना शैलियों में श्रव्य, दृश्य और मुक्तकों का प्रयोग हुआ है । वैष्णव भक्ति में आलवारों के बाद आचार्यों का स्थान महत्व रखता है । आलवार भक्तों ने समन्वय, प्रपत्ति और मधुराभक्ति की रसोपासना को प्रस्तुत किया । सगुण रामभक्ति में मर्यादाबद्ध रामोपासना और रसिक रामोपासना की परंपरा प्राप्त होती है । रसिक साधना का प्रवर्त्तन 16 वीं शताब्दी में हुआ पर उसके संकेत पूर्व प्राप्त थे । वाल्मीकि रामायण हनुमन्नाटक, जानकी हरण, रघुवंश आदि ग्रंथों की प्रेरक शृंगार भावना भी रामभक्ति की रसिकोपासना को बल देती है । आचार्य शुक्ल ने गुह्य रहस्य माधुर्य भाव की कटु आलोचना भी की है पर डॉ० हजारी प्रसाद द्विवेदी ने इसे कृष्ण भक्ति का प्रभाव माना है । वस्तुतः वैष्णव रामकाव्य की रसिकोपासना भी उदात्त और दिव्य भाव से युक्त है ।

मधुरोपासना के शृंगार ग्रंथों की भाँति सांप्रदायिक सिद्धान्त ग्रंथ भी प्राप्त होते हैं। इनकी प्रथम कोटि में अद्वैत मतानुयायी शैवों की कृतियाँ है तो दूसरी कोटि में विशिष्टाद्वैतवादी श्री वैष्णव भक्तों के ग्रंथ हैं। इनमें सीताराम के पूर्व राग, प्रेम भाव, प्रेम लीला के चित्र मिलते हैं। "कंबन रामायण", "आनन्द रामायण", "रामलिंगामृत," भुशुण्डि रामायण, शिव संहिता, लोमश संहिता, हनुमत्संहिता, सत्योपाख्यान, वृहत्कोशल जैसे ग्रंथ परवर्त्ती रसिकोपासना के स्वरूप निर्माण में सहायक हैं।

मधुरोपासना की साधना पद्धति व्यवस्थित है। इसके उपास्य राम और सीता हैं। राम लीला पुरुष द्विभुज है, उनमें ऐश्वर्य और माधुर्य का मेल है। सीता आह्लादिनी शक्ति रूपा हैं। रसिक भाव में सखी-सखा भाव को महत्व मिला है। लीला में आनंदास्वादन की अनुभूति संभोगात्मक कही गई है। साक्षी या द्रष्टाभाव का कैंकर्य सुख तत्सुख भावना और स्वसुख भावना के रूप में कहा गया है। रसिक साधना में सख्य तथा शृंगार भाव के अधिकांश आचार्य अपनी उपासना-पद्धति को द्वैत परक सिद्ध करते हैं पर हमारे आलोच्य कवि प्रेमलता ने अपने को विशिष्टाद्वैतमतानुयायी कहा है।

रसिक साधना का साध्य तत्व है दिव्य दम्पति का सेवा-सुख और मर्यादाधीन युगल केलि के लोकोत्तर रस का आस्वादन। रसिक साधना की क्रमश: विकसित चार अवस्थाएं हैं -- आचार्य प्रपत्ति या ज्ञानदशा, संबंध दीक्षा या वरण दशा, साकेत लीला प्रवेश या प्राप्तिदशा लीला सुखभोग या प्राप्त्यनुभव दशा। आचार्य प्रपत्ति में पंच संस्कार दीक्षा, अर्थ पंचक, प्रपत्ति उपदेश, भाव साधना (लगन की उत्पत्ति आदि महत्वपूर्ण हैं। इसी

प्रकार नाम परत्व उपदेश को भी श्रेय दिया गया है । लगनोद्रेक की आठ भूमिकाएं हैं -- खेददा, दुःखदा, सिद्धिप्रदा, अंतर्वासिनी, विरति विधारिणी, विषयहारिणी, छविदायिनी, और विहार विलासिनी । प्रीति की अष्ट स्थितियों में प्रणय, प्रेम, आसक्ति, लगन, लाज, अनुराग, नेह और प्रीति परिगणित हैं । इनके अनुसार साधक की आठ दृष्टिमुद्राएं भी बताई गई हैं । संबंध-दीक्षा में दिव्य देह की कल्पना की गई है । प्रेमलता जी ने श्री सम्प्रदाय को "श्री सिया सम्प्रदाय कहना चाहा है । "सतगुरू" का महत्व निर्विवाद है ।

मानसी पूजा या अष्टयाम लीला का चिन्तन भक्त और भगवान की एकता में सहायक होता है । अष्टयाम चिन्तन प्रिय-प्रिया की नित्यकेलि की भावना की तदाकारता है ।

प्रेमलताजी का संबंध जीवाराम युगलप्रियाजी की गद्दी की परंपरा [चिरान-छपरा-बिहार] से है । जीवाराम की अयोध्यावाली परंपरा में महात्मा युगलानन्द शरण, महात्मा जानकी वर शरण, रामवल्लभा शरण तथा सियालाल शरण प्रेमलता जैसे साधक हुए हैं । इस संप्रदाय में आचार्यों के तीन रूप हैं आचार्य, दास और सखी रूप । साधक शिष्य के स्थूल शरीर संबंधी नाम के अतिरिक्त आत्म संबंधी महली नाम भी आवश्यक होता है ।

रसिक परंपरा के संत कवियों में प्रेमलताजी का स्थान महत्व का अधिकारी है । इस परंपरा के अन्य पूर्व कवि हैं -- अग्रदास "अग्रअली", नाभादास "नाभाअली", बालकृष्ण बालअली, बालानंद, छत्रसाल, रामप्रियाशरण "प्रेमकली", जानकी रसिकशरण "रसमाला", रूपलाल "रूपसखी", राम प्रपन्न [मधुराचार्य] "मधुरप्रिया", सूरकिशोर, मामा प्रयागदास, रामसखे,

प्रेमसखी, ह्याचार्य "हरिसहचरी", कृपानिवास, रामचरणदास, रामगुलाम द्विवेदी, महाराज विश्वनाथ सिंह, जीवाराम "युगलप्रिया", जनकराज किशोरी शरण "रसिक अली", प्रताप कुँवरिबाई, काष्ठजिह्वा स्वामी "देव", पतितदास, उमापति त्रिपाठी "कोविद", रामशरण, युगलानन्दशरण "हेमलता", महाराज रघुराज सिंह, हनुमान्शरण "मधुरअली", बैजनाथ, बनादास, शीलमणि, जानकीवर शरण "प्रीतिलता", परमहंस सीताशरण, वृषभानु कुँवरि "रामप्रिया", पं० रामवल्लभाशरण "प्रेमनिधि", रामवल्लभाशरण "युगल विहारिणी", कामेन्द्र मणि, सीतारामशरण "राम रसरंगमणि", सीतारामशरण भगवान प्रसाद "रूपकला" गोमतीदास "माधुर्यलता", सियाशरण मधुकरिया "प्रेमअली", स्वामी सियालाल शरण "प्रेमलता" आदि ।

प्रेमलताजी का महत्व सांप्रदायिक सिद्धान्त-विवेचन, नाम-रटन-प्रचार, युगल भाव के दासत्व और माधुर्य भाव द्वारा तत्कालीन युग में भक्ति और आस्था के उपदेश की दृष्टि से सर्वाधिक है ।

रामभक्तिशाखा के मधुरोपासक कवि प्रेमलताजी का साक्षात् केलिकुंज की यूथेश्वरी का अवतार या पराशक्ति सीता की अन्तरंग सहचरी आदि रूपों में संबोधित किया गया है । उनका जन्म ग्वालियर के पनियार ग्राम में संवत् 1928 (1871 ई0) में हुआ है । इनका मूल नाम बालाराम था । उनमें प्रारंभ से ही क्रीड़ा-प्रवृत्ति एवं भजन-प्रवृत्ति विद्यमान थी । सत्संग और साधना द्वारा उन्होंने रसिक भाव की सिद्धि प्राप्त की । चित्रकूट, अयोध्या, काशी और मिथिला (जनकपुर और सीतामढ़ी) में इनकी साधनाभूमि रही । इनके दीक्षा गुरू श्री रामवल्लभाशरण थे । प्रेमलता जी का निर्लोभ और त्यागी

व्यक्तित्व शृंगार रस की उपासना, नाम-रटन और वैष्णव-भाव से परिपूर्ण था। वे मस्तमौला, आबाल ब्रह्मचारी साधु थे। सीतामढ़ी की अन्तर्गृह एक कोशी परिक्रमा और वृहत् परिक्रमा द्वारा उन्होंने जनसाधारण को भक्ति रस का संदेश दिया। सीताराम उपासक होने के कारण उनमें प्रारंभ से ही हनुमत्साधना में रुचि थी। सामाजिक रूप से उन्होंने मिथिला के तीर्थ क्षेत्रों का पुनरुद्धार किया। उनमें लोकोपकारक चेतना और जनशक्ति के नेतृत्व की अद्भुत क्षमता थी। संवत् 1998 में काशी मे रेल्वे लाइन पर इंजन का धक्का इनके लिए प्राणघातक सिद्ध हुआ और वहीं इन्होंने साकेत-यात्रा की।

प्रेमलताजी का व्यक्तित्व अक्खड़, आक्रामक होने के साथ भावुक भक्त और सरस कवि रूप का संयोग दिखाई पड़ता है। वे कबीर की भाँति आपादमस्तक मस्तमौला थे। उनकी रूपाकृति आकर्षक और प्रभावशाली थी। उन्होंने नामध्वनि को कीर्तन का आधार बनाया था। वे "जय सियाराम जय जय सियाराम" के उद्घोषक और प्रेमी थे। उनके व्यक्तित्व में मनुष्यता, उदारता, सहिष्णुता आदि गुणों का अपूर्व समन्वय था।

अंतः साक्ष्य की दृष्टि से भी प्रेमलताजी के ग्रंथों में मस्ती और फकीरी, ध्यान और नाम-रटन की बहुशः चर्चा हुई है।

परिवेश की दृष्टि से प्रेमलताजी की लीलाभूमि अयोध्या, चित्रकूट, काशी और मिथिला [जनकपुर और सीतामढ़ी] रही है। विशेषकर इनका अनुराग मिथिला-भूमि से ही सिद्ध होता है। इनकी साधना के परिवेश में काशी के संकटमोचन हनुमान मंदिर का भी महत्वपूर्ण स्थान है। स्पष्ट है कि उनका जीवन, परिवेश, भक्ति और साधना की रससिद्ध यात्रा है।

मधुरोपासक श्रृंगारी कवि प्रेमलताजी के कर्तृत्व में पूर्वाचार्यों के सिद्धान्तों का समन्वय और माधुर्य भक्तिरस का परिपाक मिलता है। प्रेमलताजी लिखित सभी ग्रंथ प्रकाशित हैं। अनुसंधान के पश्चात् उनके ग्रंथों की कोटि और संख्या निम्नलिखित ठहरती है -- वृहद् उपासना रहस्य में संकलित रचनाएँ हैं -- सतगुरू प्रसंग, सियाराम नाम प्रसंग, रूप-प्रसंग, लीला प्रसंग, धाम प्रसंग, उपासना-प्रसंग, उपासक प्रसंग, पंच संस्कार प्रसंग, अष्टयाम प्रसंग, षट् शरणागति प्रसंग, षट् संपत्ति प्रसंग, प्रेमभक्ति प्रार्थना प्रसंग, प्रश्नोत्तर प्रसंग, अन्तिम ज्ञान प्रसंग, उत्तम वैष्णवों की शुभ लक्षणावली {गद्य रचना}, शिव-पार्वती संवाद {गद्य रचना}, प्रभु सेवा में बत्तीस अपराध {लघु रचना}, सत्संग के बयासी अपराध-वर्णन {लघु रचना}, दशनामापराध वर्णन {लघु रचना}।

सीताराम रहस्य-दर्पण में संकलित रचनाएँ हैं-- षट्ऋतु विमल विहार, जानकी विनय नामादि महत्व मिथिला विभूति प्रकाश चालीसा, वैराग प्रबोधक बहत्तरी, हितोपदेश शतक, सीताराम नाम रूप अनन्यता वर्णन, सीताराम नाम जापक महत्व, ज्ञान पचासा, भक्ति महारानी जू के अड़सठ अंग {लघु रचना}, जानकी जन्मस्तुति {लघु रचना}, प्रेमलता बाराखरी।

नाम तत्व सिद्धान्त दोहावली में संकलित रचनाएँ हैं -- नाम महिमा दृष्टान्तावली, सतगुरू शब्द यथार्थ ज्ञान वर्णन, गुरू पदार्थ प्रबोधिका, सन्त सीथ प्रसादी माहात्म्य, अनन्य शतक, नामस्तुति, निजात्म बोध दर्पण, अपेल सिद्धान्त प्रकाश, युगलनाम संबंध अष्टोत्तरी, पैही अष्टक

[लघु रचना], षोडश प्रकार की भक्ति [लघु रचना], सन्त महिमा बीसिका [लघु रचना], उपदेश पेटिका, सियाराम नामाष्टक [लघु रचना], नास्तिकी प्रश्न और आस्तिकी उत्तर [गद्य रचना] । स्वतंत्र ग्रंथ हैं -- जानकी जन्मस्तुति, प्रेमलता पदावली, सार सिद्धान्त प्रकाश, नित्य प्रार्थना, जानकी बधाई, बाल लीला, चैतन्य चालीसा, विश्व विलास वीसिका, सत्य सिद्धान्त रहस्य प्रकाश अर्थात् आत्म अनात्म ज्ञान, श्री धाम श्री सीतामढ़ी माहात्म्य । नाम रहस्य त्रयी में संकलित रचनाएं हैं --सीताराम नाम संबंध बहत्तरी, नाम महत्व वर्णन, नाम वैभव प्रकाश चालीसा, सीताराम नामाष्टक [लघु रचना], विशिष्टाद्वैत ध्यान वर्णन [लघु रचना] । श्री रामानंदी अवधूता मार्ग में संकलित रचनाएं हैं -- रामानंदी अवधूता मार्ग -- मुख्य वैष्णव सिद्धान्त, असली नकली परमहंसनि की पहिचान, परमहंस ज्ञान प्रबोधक पचीसी । इस प्रकार प्रेमलता विरचित छोटी-बड़ी सभी रचनाओं की संख्या 63 ठहरती है, जिनमें ग्रंथों की संख्या 49, लघु रचनाओं की संख्या 11 तथा गद्य रचनाओं की संख्या 3 है । ये सभी ग्रंथ मधुर भक्ति भाव के पोषक और रामकाव्य की सुदृढ़ परम्परा की कड़ी सिद्ध होते हैं ।

प्रेमलताजी सांप्रदायिक रसिक आचार्य होने के साथ भावावेशी भक्त संत भी थे । उनके काव्य में नाम तत्त्व और रूप तत्त्व का चित्रण मिलता है । सद्गुरू महत्व की चर्चा प्राय: प्रत्येक ग्रंथ में मिलती है । नाम महत्व के प्रतिपादन श्री सियाराम की उनके आराध्य और इष्ट हैं । सीताराम की महिमा और नाम-रटन को उन्होंने अपना प्रतिपाद्य बनाए रखा है । रूप प्रसंग में अवतार-तत्त्व के साथ युगल स्वरूप की छवि का वर्णन हुआ है । सीता और राम का अवतार रूप तत्त्व की दृष्टि से लीला भाव तथा शक्ति

तत्त्व और परत्व भाव का सूचक है । सीता को "सियस्वामिनी", "सर्वेश्वरी", "जनरक्षक" सुखादानि", समर्थ आह्लादिनी आदि रूपों में स्मरण किया गया है । प्रेमलताजी सियाराम नाम रटन को भजन और भक्ति का पर्याय मानते हैं । उपासना और उपासक प्रसंग में ऐश्वर्य और माधुर्य भाव का सम्मिश्रण मिलता है इसके कारण ही शील और मर्यादा का कहीं भी अतिक्रमण नहीं हुआ है । प्रेमलता जी की दृष्टि में उपासना के तीन प्रकार हैं -- अद्वैत, द्वैताद्वैत और विशिष्टा द्वैत । उन्होंने विशिष्टाद्वैत उपासना को अधिक महत्त्व दिया है । श्री संप्रदाय में उन्होंने पुरुष-भाव के त्याग करने का संकेत किया है । सखी भावना से ही यह दिव्यानुभव संभव है । इसके अतिरिक्त पंच संस्कार भी महत्वपूर्ण है । पंच संस्कार हैं -- मुद्रा, तिलक, नाम, मंत्र और माला {कंठी} । कवि ने युगल मंत्र और आत्म नाम या महली नाम की महत्ता और सार्थकता पर भी विचार किया है ।

अष्टयाम-प्रसंग का भावन मानसी पूजा और युगल रूप के रसात्मक चिन्तन हेतु होता है । अष्टयाम-भावना में साकेत लोक के अन्तर्गत दिव्य दम्पति श्री सियाराम की नित्य लीला में पंचकाल एवं अष्टकुंज की सेवा का मानसी ध्यान होता है । यह "महल की टहल" या "गुप्त रहस्य" जिसकी प्रेमी रसिक भक्त ही साक्षात्कार करता है । युगल दम्पति का यह रहस्य संबंध आत्मज्ञान और तत्सुखी भाव द्वारा ही संभव होता है । प्रेमलताजी ने "कुंज-निकुंज" लीला में गंभीर रूचि ली है । सखी भाव महिमा के साथ अष्टयाम-भावना-प्रसंग का विचार हुआ है । धाम-महत्व की दृष्टि से कवि ने मुख्यत: अयोध्या और मिथिला को सियाराम के धाम के रूप में विचारित किया है । मिथिला क्षेत्र में विशेषकर जनकपुर और सीतामही {सीतामढ़ी} का वर्णन विस्तार

पूर्वक हुआ है ।

प्रेमलताजी के अन्य भक्तिपरक दार्शनिक मत हैं -- षट् शरणागति, प्रेमभक्ति प्रार्थना, द्वादश प्रकार की भक्ति, सखी भाव की प्रेमा भक्ति, तत्सुखी भाव, हनुमतभक्ति, भजन और सत्संग आदि ।

प्रेमलताजी का मधुर भाव तत्सुखी शाखा की भक्ति के अंतर्गत है । मधुर भाव में उपासना का लक्ष्य है भगवत् सान्निध्य प्राप्त कर भगवान् का प्रेमपात्र बनना । प्रेम स्वरूपा भक्ति द्वारा साधक परमात्मा से संबंध-स्थापन कर लीला-माधुरी का पान करता है । इष्ट से आन्तर मिलन ही उसका लक्ष्य होता हैए। मधुरोपासना में मनोवैज्ञानिक दृष्टि से काम का उदात्त रूप दाम्पत्य भाव के रूप में दिखाई देता है । मधुर रस का आस्वादन अनेक भाव भूमियों पर होता है । मनुष्य की यह शाश्वत वृत्ति प्रेम या रति कान्ता विषयक, देव विषयक और अपत्य विषयक होने से क्रमशः शृंगार रस, मधुर भक्ति रस और वात्सल्य रस के नाम से जानी जाती है । रसिक संतों की मधुर भावना में साकेत लीला या युगल दम्पति श्री सीताराम के नित्य विहार का रस चिन्तन मुख्य है । मधुर भक्ति देव संबंधी रति है दिव्य दम्पति का लीला भाव ऐश्वर्य और माधुर्य रूपों में व्यक्त होता है । वह शृंगार भावना सामंजस्य मूलक और मर्यादापूर्ण होती हैं ।

प्रेमलताजी ने अष्टयाम भाव को पर्याप्त महत्व दिया है । मानसिक अष्टयाम-भावना पराभक्ति का स्वरूप प्रत्यक्ष करती है । इनकी भावना में "निज रस अनन्यता" को महत्व मिला है । हिंडोर, झूलन होली आदि की भी चर्चा हुई है । यहाँ भक्त परिकर पद प्राप्त करता है ।

सखी या अलि वर्ग में सर्वेश्वरी का स्थान सर्वोच्च माना गया है । कवि ने सीताराम की सौन्दर्यच्छटा के साथ आभूषण, वस्त्र सौन्दर्य-वर्णन पर भी ध्यान दिया है । इस क्रम में सेवा-भाव, झूलन, रसिक भाव, रास नृत्य, सखी भाव की महिमा, होली वर्णन, मधुर रूप और माधुर्य भाव, गाली-सुख, वैष्णव शृंगारी रूप रसिक गुणगान, शृंगार रस और प्रभु भजन आदि का रसाविल उपस्थापन हुआ है ।

प्रेमलताजी के काव्य का भाषा शिल्प मध्यकालीन भक्ति परंपरा और समसामयिक {बीसवीं शताब्दी क आरंभ} प्रभावों से युक्त है । कवि ने रसिक भाव के साथ यथार्थवादी व्यंग्य शैली का भी प्रयोग किया है ।

काव्य भाषा अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम होती है । साहित्यिक भाषा में बोलचाल की भाषा, मुहावरों आदि का भी प्रयोग होता है । काव्य भाषा के स्वरूप में रूपकात्मकता, बिम्बात्मकता, संक्षिप्तता, व्यंजकता, प्रतीकात्मकता, रागात्मकता आदि का सम्मिलन देखा जाता है । मुख्यतः काव्यभाषा सर्जनात्मक गुणों से युक्त होती है । उसका कोई निश्चित बना-बनाया साँचा नहीं है, कवि आवश्यकतानुसार भाषा के स्वरूप का चयन कर लेता है । काव्य भाषा का शिल्प कविता के प्रभाव को नियोजित करने में समर्थ होता है । बिम्ब, भाषा, रचना-विधान, छन्द योजना द्वारा भाषा-शिल्प को विवेचित किया गया है । भारतीय काव्य शास्त्रीय चिन्तन में भाषा शिल्प की दृष्टि से शब्द, अलंकार, छन्द, रीति, वक्रोक्ति, ध्वनि आदि की चर्चा हुई है ।

प्रेमलताजी के काव्य में शब्द प्रयोगों की चार कोटियाँ मिलती हैं -- तत्सम शब्द प्रयोग, तद्भव शब्द-प्रयोग, देशज शब्द प्रयोग और उर्दू या विदेशी शब्द-प्रयोग । इसके अतिरिक्त कवि शब्दों के स्वरूप में भी पर्याप्त परिवर्त्तन और हेर फेर किया है । काव्य भाषा की यह रचनात्मक शक्ति कवि के काव्य में प्राय: सर्वत्र मिलती है । शब्द प्रयोगों में मुख्यता तत्सम एवं तद्भव शब्दों को मिली है । उदाहरण स्वरूप कवि के प्रतिनिधि काव्य-ग्रंथों से कुछ शब्द चुने गए हैं । इसी प्रकार उर्दू शब्दों का भी खुलकर प्रयोग हुआ है ।

प्रेमलताजी की काव्यभाषा अवधी व्रजभाषा और खड़ी बोली हिन्दी का कलात्मक मिश्रण प्रतीत होती है । यथास्थान यह काव्यभाषा अन्य भाषाओं और बोलियों से भी प्रभावित दिखाई देती है । यद्यपि प्रयोग, परंपरा, प्रवृत्ति और संस्कार की दृष्टि से उनमें तत्सम शब्द-प्रयोग की प्रवृत्ति प्रधान कही जा सकती है ।

अलंकारों का विधान काव्य भाषा और अभिव्यंजना को सौन्दर्य, वक्रोक्ति और अतिशयोक्ति से युक्त करने के लिए होता है । प्रेमलताजी ने सौष्ठव की दृष्टि से आलंकारिक भाषा का प्रयोग किया है । शब्दालंकारों में अनुप्रास, यमक, वक्रोक्ति आदि का और अर्थालंकार की दृष्टि से उपमा, रूपक, निदर्शना, उत्प्रेक्षा आदि अलंकारों का विधान किया गया है । उनके काव्य में प्रयुक्त अलंकार कृत्रिम न होकर भाव व्यंजक और कवि की माधुर्य-वृत्ति के पोषक हैं ।

आलंकारिक शब्द प्रयोगों द्वारा कवि ने अनुरणन मूलक भाषा शैली का भी प्रयोग किया है । ऐसा विशेषकर अष्टयाम-प्रसंग, होली, नृत्य, रास, झूलन आदि के अवसरों पर हुआ है । भक्ति, उपासना, सौन्दर्य और नीति कथन में कवि ने विशेषतया आलंकारिक उक्तियों का सहारा लिया है ।

प्रेमलताजी की काव्यभाषा का एक विशिष्ट पक्ष मिश्रित भाषा के रूप में दिखाई देता है । जिसमें व्रज, अवधी और खड़ी बोली का सम्मिश्रण है ।

मुहावरे भाषा के लाक्षणिक प्रभाव और संचित शक्ति का संकेत करते हैं । प्रेमलताजी ने मधुक्कड़ी मौज में काव्य भाषा को मुहावरे दार बनाकर प्रस्तुत किया है ।

छन्द का संबंध भाव और भाषा दोनों से होता है । छन्द का नियत एवं मधुर आवर्तन काव्य को सांगीतिक लय से भर देता है । प्रेमलताजी ने छन्दों में कुंडलिया, कवित्त, सवैया, मंजु छन्द, दोहा, पद, चौपाई, गजल, रेखता आदि का प्रयोग किया है । यह छंद-वैविध्य कवि के काव्य को एक व्यापक रचनात्मक रूप प्रदान करने में समर्थ होता है ।

अतः स्पष्ट है कि भाव और भाषा दोनों ही दृष्टियों से कवि श्री सियालाल शरण "प्रेमलता" का काव्य मधुर भक्ति की रसिकोपासना परंपरा में एक उच्चासन का अधिकारी बनता है तथा साहित्यिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से वह चिरस्थायी कीर्ति का कारण सिद्ध होता है ।

-------- 0 --------

परिशिष्ट

सहायक ग्रंथ-सूची

हिन्दी

1. भक्ति का विकास - डॉ० मुंशीराम शर्मा
2. हिन्दी साहित्य कोश [प्रथम भाग] -- सं० डॉ० धीरेन्द्र वर्मा, ज्ञानमंडल लि० वाराणसी, प्रथम संस्करण.
3. रामभक्ति : परंपरा और साहित्य -- डॉ० भगवती प्रसाद सिंह, हिन्दी पुस्तक एजेन्सी, कलकत्ता प्रथम संस्करण, 1974
4. हिन्दी साहित्य का इतिहास -- आचार्य रामचंद्र शुक्ल काशी नागरी प्रचारिणी सभा
5. हिन्दी साहित्य उद्भव और विकास -- डॉ० हजारी प्रसाद द्विवेदी अत्तर चंद एण्ड कपूर
6. हजारी प्रसाद द्विवेदी ग्रंथावली-3 -- राजकमल प्रकाशन, दिल्ली प्रथम संस्करण, 1981
7. रामकथा [उत्पत्ति और विकास] -- डॉ० कामिल बुल्के हिन्दी परिषद् प्रकाशन, प्रयाग विश्वविद्यालय
8. मधुर रस : स्वरूप विकास भाग-1 -- डॉ० रामस्वार्थ चौधरी "अभिनव" राजकमल प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 1972
9. मधुर रस : स्वरूप विकास भाग-2 -- डॉ० रामस्वार्थ चौधरी "अभिनव" राजकमल प्रकाशन,

10. रामभक्ति साहित्य में मधुरोपासना -- डॉ0 भुवनेश्वर नाथ मिश्र माधव
विहार राष्ट्रभाषा परिषद्,
पटना, 1957

11. रामभक्ति में रसिक संप्रदाय -- डॉ0 भगवती प्रसाद सिंह
अवध साहित्य मंदिर, बलरामपुर

12. हिन्दी साहित्य कोश [भाग-2] -- सं0 धीरेन्द्र वर्मा
ज्ञानमंडल लि0 वाराणसी

13. साहित्यिक निबंधावली -- सं0 आचार्य देवेन्द्रनाथ शर्मा
ग्रंथमाला कार्यालय, बाँकीपुर,
पटना सं0 2003

14. रामचरित मानस -- तुलसीदास
गीताप्रेस, गोरखपुर

15. रीतिकालीन कविता एवं शृंगार रस का विवेचन
-- डॉ0 राजेश्वर प्रसाद चतुर्वेदी

16. रस-मीमांसा -- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल,
काशी नागरी प्रचारिणी सभा

17. भक्तमाल -- नाभादास

18. अष्टछाप और वल्लभ संप्रदाय -- डॉ0 दीनदयालु गुप्त

19. व्रजबुलि साहित्य -- रामपूजन तिवारी

20. रस-सिद्धान्त स्वरूप और विश्लेषण -- डॉ0 आनन्द प्रकाश दीक्षित

21. कबीर -- डॉ0 हजारी प्रसाद द्विवेदी
राजकमल प्रकाशन

22. इश्क कान्ति -- स्वामी युगलानन्द शरणजी महाराज
पु0-पं0 श्री सीताराम शरण
लक्ष्मण किला, अयोध्या

23• तुलसी काव्य-मीमांसा -- डॉ0 उदय भानु सिंह
राधाकृष्ण प्रकाशन, द्वितीय संस्करण, 1975

24• गोस्वामी तुलसीदास व्यक्तित्व-दर्शन-साहित्य
-- डॉ0 रामदत्त भारद्वाज
भारती साहित्य मंदिर, दिल्ली, 1962

25• गोस्वामी तुलसीदास -- आचार्य रामचंद्र शुक्ल
प्र0 काशी नागरी प्रचारिणी सभा

26• चिन्तामणि {भाग-1} -- आचार्य रामचंद्र शुक्ल
इंडियन प्रेस {पब्लि0} लि0, प्रयाग, 1956

27• नृत्यराघव मिलन कवितावली -- रामसखे जी
छोटेलाल लक्ष्मीचंद बुकसेलर
ककोरी अवध, 1897

28• मानस-दर्शन -- डॉ0 श्रीकृष्ण लाल
आनंद पुस्तक भवन, बनारस
प्रथम संस्करण 2006

29• रामभक्तिशाखा -- डॉ0 रामनिरंजन पाण्डेय
प्र0- नव हिन्द पब्लिकेशन्स
हैदराबाद, 1960

30• रामरसायन -- रसिक विहारी
खेमराज कृष्णदास, बम्बई
प्रथम प्रकाशन, सं0 1978

31• राम रसिकावली -- श्री महाराज रघुराज सिंह
गंगाविष्णु श्री कृष्णदास
लक्ष्मी वेंकटेश्वर प्रेस, मुंबई
सं0 2013

32· श्री रामाष्टयाम -- नाभादास
स0 राजकिशोरीवर शरण, अयोध्या
प्रकाशन-छतरपुर, प्रथम संस्करण
1935 ई0

33· संस्कृत साहित्य का इतिहास -- पं0 बलदेव उपाध्याय
शारदा मंदिर, काशी

34· हमारा सांस्कृतिक साहित्य [प्रथम भाग] -- प्रो0 जगन्नाथ राय शर्मा
ग्रंथमाला कार्यालय,
पटना, 1953

35· भागवत संप्रदाय -- परमानन्द दास

36· मध्यकालीन प्रेमसाधना -- पं0 परशुराम चतुर्वेदी

37· व्रजभाषा के कृष्णकाव्य में माधुर्य भक्ति की भूमिका -- वासुदेवशरण अग्रवा

38· व्रजभाषा के कृष्ण काव्य में माधुर्य भक्ति -- डॉ0 रूपनारायण

39· सन्त वैष्णव काव्य पर तांत्रिक प्रभाव -- डॉ0 विश्वंभर नाथ उपाध्या

40· हिन्दी साहित्य की भूमिका -- डॉ0 हजारी प्रसाद द्विवेदी
हजारी प्रसाद द्विवेदी ग्रंथावली,
राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
1981

41· आधुनिक हिन्दी साहित्य की भूमिका -- डॉ0 लक्ष्मीसागरवार्ष्णेय

42· नृत्यराघव मिलन दोहावली -- रामसखेजी

43· प्रेमलताजी का वृहद् जीवन चरित्र -- सियाराम स्वरूप शरण "सुहागलता",
काशी, सं0 2008 वि0

44· सतगुरू प्रसंग वृहद् उपासना रहस्य में संकलित - प्रेमलता

45· सियाराम नाम प्रसंग " - "

46· रूप प्रसंग - " - "

/

47.	लीला प्रसंग	-	"	-	"
48.	धाम प्रसंग	-	"	-	"
49.	उपासना प्रसंग	-	"	-	"
50.	उपासक प्रसंग	-	"	-	"
51.	पंच संस्कार प्रसंग	-	"	-	"
52.	अष्टयाम का प्रसंग	-	"	-	"
53.	षट् शरणागति प्रसंग	-	"	-	"
54.	षट् संपत्ति प्रसंग	-	"	-	"
55.	प्रेमभक्ति प्रार्थना प्रसंग	-	"	-	"
56.	प्रश्नोत्तर प्रसंग	-	"	-	"
57.	अंतिम ज्ञान प्रसंग	-	"	-	"
58.	उत्तम वैष्णवों की शुभ लक्षणावली {गद्य रचना}		"	-	"
59.	शिव-पार्वती-संवाद {गद्य रचना}	-	"	-	"
60.	प्रभु सेवा में बत्तीस अपराध {लघु रचना}		"	-	"
61.	सत्संग के बयासी अपराध वर्णन {"}	-	"	-	"
62.	दशनामापराध वर्णन - {"}	-	"	-	"
63.	षट् ऋतु विमल विहार - सीताराम रहस्य दर्पण में संकलित - प्रेमलता				
64.	जानकी विनय नामादि महत्व	-	"	-	"
65.	मिथिला विभूति प्रकाश चालीसा	-	"	-	"
66.	वैराग प्रबोधक बहत्तरी	-	"	-	"
67.	हितोपदेश शतक	-	"	-	"

68.	सीताराम नाम रूप अनन्यता वर्णन -	"	- "
69.	सीताराम नाम जापक महत्व -	"	- "
70.	ज्ञान पचासा -	"	- "
71.	भक्ति महारानी जू के अड़सठ अंग {लघु रचना} -	"	- "
72.	जानकी जन्मस्तुति {लघु रचना} -	"	- "
73.	प्रेमलता बाराखरी -	"	- "
74.	नाम महिमा दृष्टान्तावली {नाम तत्व सिद्धांत दोहावली- प्रेमलता में संकलित}		
75.	सतगुरू शब्द यथार्थ ज्ञान वर्णन -	"	- "
76.	गुरूपदार्थ प्रबोधिका -	"	- "
77.	सन्त सीथ प्रसादी माहात्म्य -	"	- "
78.	अनन्य शतक -	"	- "
79.	नामस्तुति -	"	- "
80.	निजात्मबोध दर्पण -	"	- "
81.	अपेल सिद्धांत प्रकाश -	"	- "
82.	युगल नाम संबंध अष्टोत्तरी -	"	- "
83.	नेही अष्टक -	"	- "
84.	षोडश प्रकार की भक्ति {लघु रचना} -	"	- "
85.	सन्त महिमा वीसिका {लघु रचना} -	"	- "
86.	उपदेश पेटिका -	"	- "
87.	सियाराम नामाष्टक {लघु रचना}-	"	- "

88. नास्तिकी प्रश्न आस्तिकी उत्तर (गद्य) - " - "
89. जानकी जन्मस्तुति - प्रेमलता
90. प्रेमलता पदावली - "
91. सार सिद्धांत प्रकाश - "
92. नित्य प्रार्थना - "
93. जानकी बधाई - "
94. बाल लीला (जानकी बधाई में संकलित) - "
95. चैतन्य चालीसा - "
96. विश्वविश्वास वीसिका - "
97. सीताराम नाम संबंध बहत्तरी - श्री नामरहस्य में संकलित- प्रेमलता
98. नाम महत्व वर्णन - " - "
99. नाम वैभव प्रकाश चालीसा - " - "
100. सीताराम नामाष्टक (लघु रचना)- " - "
101. विशिष्टाद्वैत ध्यान वर्णन (लघु रचना) - " - "
102. रामानंदी अवधूता मार्ग - मुख्य वैष्णव सिद्धान्त - प्रेमलता
103. असली नकली परमहंसनि की पहिचान (संकलित) - "
104. परमहंस ज्ञान प्रबोधक पचीसी - (संकलित) - "
105. सत्य सिद्धांत रहस्य प्रकाश अर्थात् आत्म अनात्म ज्ञान - "
106. श्री धाम श्री सीतामढ़ी माहात्म्य - "

107. पराशक्ति श्री सीता और अवतरण भूमि सीतामढ़ी
--- उपेन्द्र नाथ मिश्र मंजुल,
संपादक- डॉ0 महेन्द्र मधुकर,
मंजुल प्रकाशन, मुजफ्फरपुर
प्रथम संस्करण, 1979

108. रामरसरंग दोहावली

109. काव्यभाषा -- डॉ0 सियाराम तिवारी
मैकमिलन,
प्रथम संस्करण, 1979

110. देव और उनकी कविता -- डॉ0 नगेन्द्र
प्र0- नेशनल पब्लिशिंग हाउस
दिल्ली, तीसरा संस्करण,
1960

111. काव्यभाषा के सिद्धांत -- डॉ0 महेन्द्र मधुकर
[अप्र0 शोध-प्रबंध]
पटना विश्वविद्यालय, 1972

112. रीतिकालीन रीतिक विधों का काव्य-शिल्प -- डॉ0 महेन्द्र ~~मधुकर~~ कुमार,
आर्य बुक डिपो,
नई दिल्ली, प्रथम
संस्करण, 1968

113. अलंकार पीयूष [पूर्वार्द्ध] -- डॉ0 रमाशंकर शुक्ल "रसाल"

114. काव्य में अप्रस्तुत-योजना -- पं0 रामदहिन मिश्र

115. आधुनिक हिन्दी काव्य में छंद-योजना -- डॉ0 पुत्तूलाल शुक्ल

116. सिद्धान्त और अध्ययन -- डॉ0 गुलाब राय

117. कबीर -- डॉ0 हजारी प्रसाद द्विवेदी
राजकमल प्रकाशन,
तीसरा संस्करण, 1976

118. श्री नाम तत्त्व सिद्धान्त दोहावली-- श्री रामविश्वनाथ शरण

119. सार सिद्धान्त प्रकाश -- सतगुरू राम शरण मधुरलता

120. टीका नेह प्रकाश -- जानकी रसिक शरण

121. भाव नाम पचीसी -- कृपा निवास

122. रसिक प्रकाश भक्तमाल -- युगलप्रिया

123. अनन्य तरंगिनी

124. रामचरित मानस सटीक -- रामचरण दास

125. श्री जानकी सनेह हुलास शतक-।

126. अर्थ पंचक -- युगलानन्द शरण

127. माधुर्य कैलि कादम्बिनी

संस्कृत ग्रंथ --

128. ऋग्वेद

129. ध्वन्यालोक -- आनंदवर्धन

130. काव्यमीमांसा -- राजशेखर

131. काव्यालंकार -- भामह
भाष्यकार-देवेन्द्रनाथ शर्मा,
राष्ट्रभाषा परिषद,पटना

132. हिन्दी काव्यादर्श -- दण्डी

133. हिन्दी काव्यालंकार सूत्र -- वामन

134. हिन्दी साहित्य दर्पण -- विश्वनाथ

135. सरस्वती-कंठाभरण -- भोजराज

136. चंद्रालोक -- जयदेव

137. शांडिल्य भक्ति सूत्र

138. भक्तिरसामृत सिन्धु -- रूपगोस्वामी

139. भक्तिरसायन -- मधुसूदन सरस्वती

140. नारद भक्तिसूत्र

141. श्री मद् भागवत

142. वाल्मीकि रामायण

143. जानकी हरण -- कुमारदास

144. हनुमत्संहिता

145. हनुमन्नाटक

146. सीतोपनिषद्

147. लोमश संहिता

148. श्री चारुशीला स्तोत्रम्

149. अगस्त्य संहिता

150. अर्थ पंचक तथा तत्त्वत्रय -- पं0 रामवल्लभा शरण

152· आत्मसंबंध दर्पण -- रसिकअली

153· उज्ज्वलनील मणि -- रूपगोस्वामी

154· उपासना त्रय सिद्धान्त -- पं0 सरभूदास

155· तैत्तिरीय ब्राह्मण

156· पद्मपुराण [पाताल खंड]

157· वृहत्कोशल खंड

158· वृहदारण्यकोपनिषद्

159· रघुवंश

160· रामतापनीयोपनिषद्

161· रामार्चन पद्धति -- स्वामी रामानंद

162· वैष्णव मताब्ज भास्कर -- "

163· शिव संहिता

164· श्री जानकी स्तवराज

165· श्री भाष्य -- रामानुजाचार्य

167· श्री वैष्णव धर्म संग्रह -- चन्द्रकला शरण

168· सीता सहस्रनाम स्तोत्रम्

169· सुन्दर मणि संदर्भ -- मधुराचार्य

170· एकादशोपनिषद्

171· भारद्वाज संहिता

172· श्री सद्गुरू चरितम् -- श्री प्रेमलता वृहद् चरितामृतम्
-- श्री जानकी नाथ शरण "प्रेमअली"
[प्रेमलताजी का वृहद् जीवन चरित में संकलित]

अंग्रेजी ग्रंथ --

173· दि जरनल आफ द इंडियन एकेदमी आफ फिलौसफी-वौल्यूम -2

174· दि इन्टेरियर कैस्टल आर द मैन्शान्स

175· हिन्दू साइकालोजी -- अखिलानन्द

176· दि मैन्शान्स आफ फिलौसफी -- विलियम ड्यूरान्ट

177· ए हिस्ट्री आफ इंडियन फिलौसफी -- सुरेन्द्र नाथ दास गुप्त {वौल्यूम-2}

178· थ्योरी आफ रस ऐंड ध्वनि -- डॉ० ए० शंकरन

179· साइन्स आफ इमोशन्स -- डॉ० भगवान दास

पत्र-पत्रिकाएँ --

180· सम्मेलन पत्रिका {कला अंक}

181· कल्याण {भक्ति अंक}

182· कल्याण {उपासना अंक}

183· कल्याण {रामांक}

184· कल्याण {संतांक}

185· कल्याण {तीर्थांक}

------- 0 -------

षष्ठ अध्याय

श्री सियालाल शरण जी "प्रेमलता" के काव्य का भाषा-शिल्प

षष्ठ अध्याय

श्री सियालाल शरण जी "प्रेमलता" के काव्य का भाषा-शिल्प

प्रेमलताजी के काव्य का भाषा-शिल्प मध्ययुगीन भक्तिकाव्य विशेषकर राम-काव्य परंपरा से पोषित है, यद्यपि उसमें बीसवीं शताब्दी के समसामयिक जीवन के प्रभाववश यथार्थवादी व्यंग्य शैली और आक्रामक प्रवृत्ति भी दिखाई देती है। प्रेमलताजी की काव्य-भाषा सहज संवेद्य और अनायास अभिव्यक्त हुई है। उनका काव्य कोरे संप्रदायवाद का पोषक न होकर भक्ति-रस से परिपूर्ण है।

काव्यभाषा अभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम है। कवि अपनी अनुभूतियों को भाषिक आकार प्रदान करता है। वी0 के0 गोकक ने स्पष्टतः कहना चाहा है कि "भाषा स्वतः कविता है।"[1] मूलतः वे भाषा को काव्यात्मक या अकाव्यात्मक न मानकर उसके अंतर्गत लोकभाषा, बोलचाल की

1: द्रष्टव्य --- The Poetic Approach to Language -- V.K.Gokak, Page 50 Oxford University Press, 1952.

भाषा, साहित्यिक भाषा आदि सभी का आकलन हो जाता है । इसमें जीवन के सभी क्षेत्रों के शब्द, मुहावरे, लोकोक्तियों आदि का ग्रहण होता है । गोल्डवर्ग[2] के अनुसार मुहावरों की चित्रात्मकता भाषा के विकास के साथ-साथ समाप्त होती जाती है । एफ0 एल0 लूकस[3] ने माना है कि जैसे जीवन क्रमश: जटिल, कृत्रिम और वैज्ञानिक होता जाता है वैसे ही भाषा चित्रों की गैलरी से गणितीय प्रतीकों का ब्लैकबोर्ड होती जाती है ।

वस्तुत: काव्यभाषा के स्वरूप में रूपकात्मकता, संक्षिप्तता, व्यंजकता, प्रतीकात्मकता, बिम्बात्मकता, रागात्मकता आदि का सम्मिलन देखा गया है ।

डॉ0 सियाराम तिवारी ने भाषा और काव्य के अभिन्न संबंध पर प्रकाश डालते हुए लिखा है कि "भाषा और काव्य का संबंध जल और लहर के संबंध से भी तुलनीय है । काव्यभाषा का सच्चा स्वरूप इसी से स्पष्ट होता है । जल और लहर परस्पर भिन्न हैं और अभिन्न भी हैं । जल और लहर परस्पर भिन्न हैं क्योंकि जल में सदैव एवं सर्वत्र लहर नहीं होती । इसी तरह दोनों परस्पर अभिन्न भी है, क्योंकि जल से पृथक् लहर का कोई अस्तित्व नहीं है । तब, यही कहना पड़ेगा कि लहर जल के भीतर एक जल है । ठीक यही संबंध भाषा और काव्य का है । काव्यभाषा के भीतर एक भाषा है । इसको स्पष्ट करके इस प्रकार कह सकते हैं कि काव्य सामान्य भाषा के भीतर एक

---

2. The wonder of words, Page 84 (New york, 1939)

3. Style, Page 171 (London, 1964)

विशिष्ट भाषा है । काव्य भाषा है और भाषा काव्य है, इन दोनों उक्तियों की संगति जल और लहर के संबंध की तुलना से ही स्पष्ट होती है । ... काव्य भाषा है, क्योंकि काव्य के लिए वही भाषा एकमात्र और अलम होती है जिसमें वह प्रसूत होता है और भाषा काव्य है, क्योंकि उस भाषा में वही अभिव्यक्ति संभव ही थी जो कविता के रूप में हुई है ।[4]

डॉ० नगेन्द्र की मान्यता है कि "अभिव्यंजना का सबसे मुख्य और सहज माध्यम है भाषा ।[5] उन्होंने स्पष्ट किया है कि काव्य भाषा कवि की रागात्मक अनुभूति को संवेद्य बनाती है । "अब प्रश्न उठता है कि कवि अपने हृदय रस को सहृदय के लिए संवेद्य किस प्रकार बनाता है ? इसका उत्तर है : भाषा के द्वारा । परन्तु उसे भाषा का साधारण प्रयोग नकर विशेष प्रयोग करना पड़ता है अर्थात् शब्दों को साधारण वाचक रूप में प्रयुक्त न कर विशेष "चित्र रूप" में प्रयुक्त करना पड़ता है । ... यह कार्य कवि की कल्पना-शक्ति की अपेक्षा करता है । ... दूसरे शब्दों में हम यह कह सकते हैं कि यह "विशेष प्रयोग" भाषा का कल्पनात्मक प्रयोग है"।[6]

---

4. काव्यभाषा, पृष्ठ : 42-43, मैकमिलन, प्रथम संस्करण, 1976
5. देव और उनकी कविता -- डॉ० नगेन्द्र, पृष्ठ-205
   प्रकाशक- नेशनल पब्लिशिंग हाउस दिल्ली, तीसरा संस्करण, 1960
6. ध्वन्यालोक -- सं0- डॉ० नगेन्द्र, भूमिका, पृष्ठ : 16-17
   ज्ञानमंडल लिमिटेड, वाराणसी, 1962

डॉ0 महेन्द्र मधुकर की दृष्टि में "काव्यभाषा सर्जनात्मक भाषा होती है । कवि सदैव बने-बनाए रास्तों पर नहीं चलता, वह स्वयं अपनी अभिव्यक्ति की विधि चुन लेता है । वह काव्यात्मक प्रतीकों की उद्भावना में दक्ष और काव्यात्मक बिम्बों की रुचिर कल्पना में समर्थ होता है।"[7]

काव्यभाषा का स्वरूप-गठन यद्यपि परंपरा द्वारा होता है पर पंडिताऊ भाषा और लोकभाषा में टकराव बना रहता है । लोक चेतना मनुष्य की आरंभिक अनुभूतियों से जुड़ी हुई होती है । "हिन्दी साहित्य कोष" में इसे परिभाषित करते हुए कहा गया है कि "लोक मनुष्य-समाज का वह वर्ग है, जो आभिजात्य संस्कार, शास्त्रीयता और पांडित्य की चेतना और पांडित्य के अलंकार से शून्य है और जो एक परंपरा के प्रवाह में जीवित रहता है ।"[8]

आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने "रस-मीमांसा" में काव्यभाषा की शक्तियों की चर्चा करते हुए लिखा है कि "कविता में भाषा की सब शक्तियों से काम लेना पड़ता है । वस्तु या व्यापार की भावना चटकीली करने और भाव को अधिक उत्कर्ष पर पहुंचाने के लिए कभी किसी वस्तु का आकार या गुण बहुत बढ़ाकर दिखाना पड़ता है, कभी उसके रूप-रंग या गुण की भावना

7• काव्यभाषा के सिद्धान्त -- डॉ0 महेन्द्र मधुकर [अ प्र0 प्रबंध], पृष्ठ-20। [पटना विश्वविद्यालय]

8• हिन्दी साहित्य कोश [प्रथम भाग], पृष्ठ-747 ज्ञानमंडल लिमिटेड, वराणसी

उसी प्रकार के और रूप रंग मिलाकर तीव्र करने के लिए समान रूप और धर्मवाली और वस्तुओं को सामने लाकर रखना पड़ता है । कभी-कभी बात को भी घुमा-फिरा कर कहना पड़ता है । इस तरह के भिन्न-भिन्न विधान और कथन के ढंग अलंकार कहलाते हैं । इनके सहारे से कविता अपना प्रभाव बहुत कुछ बढ़ाती है।"[9]

विचारकों[10] ने माना है कि "कवि केवल आवेग प्रधान भाषा को ही काव्य-भाषा की महत्ता प्रदान नहीं कर सकता वह आवेग के साथ कलात्मक आवश्यकता को भी ध्यान में रखता है । काव्यभाषा की पारदर्शिता अनुभूतियों को संप्रेषण और संमूर्त्तन में सहायक होती है । इसके अभाव में भाषा कृत्रिम और बोझिल हो जाती है । कवि अपनी अभिव्यक्ति-प्रक्रिया में नितान्त नूतन होना चाहता है इसीलिए काव्य का प्रत्येक युग अभिव्यक्ति के नए क्षेत्रों को उद्घाटित करना चाहता है । तब घिसे हुए शब्दों और जीर्ण प्रतीकों का संस्कार होता तथा उन्हें नयी अर्थवत्ता प्राप्त होती है ।"[11]

काव्यभाषा का कोई निश्चित साँचा नहीं होता, कवि युगीन प्रभावों और परिस्थितियों के अनुसार अपनी निजी अभिव्यक्ति पद्धति का आविष्कार कर लेता है । लोक भाषा या सामान्य भाषा से अपने अनुकूल तत्त्वों को चुनकर कवि अभीष्ट अर्थ उत्पन्न करने में सफल होता है ।

---

9. रस-मीमांसा, पृष्ठ-39

10. काव्यभाषा के सिद्धान्त -- डॉ0 महेन्द्र मधुकर, पृष्ठ-23।

11. वही, पृष्ठ-23।

काव्यभाषा का शिल्प कविता के प्रभाव को नियोजित करने में समर्थ होता है । डॉ0 महेन्द्र कुमार का अभिमत है कि "शिल्प शिल्पकार के मन द्वारा अपने भीतर निर्मित बिम्ब-विशेष का अभिव्यक्ति-व्यापार है जो अपने व्यक्त रूप द्वारा भावक के मन पर तदनुरूप बिम्ब उपस्थित कर उसका विभावक के साथ तादात्म्य स्थापित कराता है । अतः स्थूल रूप से बिम्ब और अभिव्यक्ति को शिल्प-व्यापार के दो मुख्य अंगों के रूप में स्वीकार किया जा सकता है ।"[12] यह भी स्पष्ट किया गया है कि "भारतीय परम्परा के अंतर्गत "कला" और "शिल्प" के स्वरूपों में विशेष मौलिक भेद स्वीकार नहीं किया गया यही कारण है कि कला और शिल्प के विवेचक आचार्यों ने कला के भेदों की परिगणना करते हुए उनमें शिल्प के कतिपय भेदों का तथा शिल्प के भेदों का उल्लेख करते समय कला के भेदों का समावेश ही नहीं कर दिया, कभी-कभी एक को दूसरे के पर्याय-रूप में भी ग्रहण कर लिया है ।"[13] कामसूत्र के टीकाकार यशोधर ने चित्रकला के छः भेदों को स्वीकृति दी है, वे हैं -- रूपभेद, प्रमाण, भाव,लावण्य, सादृश्य और वर्णिकाभंग ।[14] भारतीय काव्यशास्त्र में यद्यपि

---

12. रीतिकालीन रीतिकवियों का काव्य-शिल्प, पृष्ठ-14
    आर्य बुक डिपो, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, 1968

13. सम्मेलन पत्रिका (कला अंक), पृष्ठ : 17 तथा 71

14. रूपभेदाः प्रमाणानि भावलावण्ययोजनम् ।
    सादृश्यं वर्णिकाभंग इति चित्रं षडंगकम् ।।
    --- कामसूत्र, काशी संस्कृत सिरीज, पृष्ठ-30, सं0 1986

काव्य शिल्प का व्यवस्थित स्पष्ट विवेचन नहीं मिलता पर पाश्चात्य आलोचना-शास्त्र में बिम्ब, भाषा, रचना-विधान और छन्द-योजना के माध्यम से प्रस्तुत शिल्प-विवेचन को विविध रूपों में भारतीय काव्यशास्त्र में समालोचित किया गया है। रसवादी आचार्यों ने विभाव आदि के निरूपण में बिम्ब के समग्र रूप पर बल दिया है तो अलंकार-संप्रदाय में शब्द और अर्थ के माध्यम से बिम्ब-बोध को महत्व मिला है । इसी प्रकार ध्वनि में बिम्ब विधायिनी कल्पना का समावेश हो जाता है ।

अत: भारतीय काव्य शास्त्रीय चिन्तन में भाषा-शिल्प की दृष्टि से शब्द, अलंकार, छन्द, रीति, वक्रोक्ति, ध्वनि आदि का महत्व मिलता है ।

भाषा-शिल्प की उपर्युक्त धारणाओं के आलोक में बीसवीं शताब्दी के रसिक संत कवि श्री सियालाल शरण "प्रेमलता" का काव्य अत्यंत समृद्ध और प्रयोग की विविधता से पूर्ण दिखाई देता है ।

शब्द --

भाषा-शिल्प की दृष्टि से शब्द महत्वपूर्ण तत्व है जिससे रचना-विधान संभव होता है । राजशेखर[15] ने लिखा है -- "जो व्याकरण शास्त्र से प्रकृति-प्रत्यय द्वारा सिद्ध किया जाता है उसे शब्द कहते हैं और निरुक्त निघंटु, कोष, व्यवहार आदि से शब्द जिस वस्तु का संकेत करता है वह उसका

---

15. व्याकरणस्मृत निर्णीत: शब्दो निरूक्त निघण्ट्वादिभि निर्दिष्टस्तदभिधेयो र्थस्तो पदम् ।

अभिधेय अर्थ है । शब्द और अर्थ मिलकर पद कहलाते हैं । वस्तुतः काव्य-रचना का मुख्य आधार और साधन शब्द है । प्रेमलताजी के काव्य में शब्द-प्रयोगों की मुख्यतः चार कोटियाँ मिलती हैं --

1. तत्सम शब्द प्रयोग
2. तद्भव शब्द प्रयोग
3. देशज शब्द प्रयोग
4. उर्दू या विदेशी शब्द प्रयोग

प्रेमलताजी के काव्य में मुख्यता तत्सम एवं तद्भव शब्दों की है । तत्सम शब्दों के कुछ प्रमुख उदाहरण निम्नलिखित हैं -- परमानन्द, श्रम सकल, मायिक भोग, इष्ट ललाम, युगल, अभिराम, सुर दुर्लभ, प्रमाद, वैष्णव कुल, मुद्रा वेष मंत्र, नृप विराग [सार सिद्धान्त प्रकाश], सृष्टि, दृष्टि, सचर अचर जड़ चेतन, आत्म ज्ञान, आत्मबोध, नामानन्य, मंत्र, श्रुति, सुकृत, मृदुल वचन, उपासक, अमित रूप, यूथ, ललनागण, सदन, सरि सागर, विस्मयजनित [वृहद् उपासना रहस्य], दीनजन उद्धरण, युगल छवि, नित्यकर्म, तप समाधि, त्रिभुवन छवि शृंगार, आवेश [प्रेमलता पदावली], नाम तत्त्व, दुर्वासना, याचकता, समर, शास्त्र, रणशूर [नाम महिमा दृष्टान्तावली], भूषण, मुखश्रवण, कर्पूरी, कदली, वर्णाश्रम, शास्त्र सुबोध, शुभगुण [सतगुरु शब्दयथार्थ ज्ञान], साधु, शुचि,समुदाय, परलोक सुख, शोकप्रद, दिव्य असन भूषण वसन [गुह्यदार्थ प्रबोधिका], रूपधाम लीला ललित, निर्बन्धन, मायिक भोग, पंचतत्वमय देह, पंच विषय, मिथ्या वाद विवाद, अभय अभायक अनघ, विज्ञानी शुद्धाचरण, अनन्य गति [निजात्म बोध दर्पण] आदि ।

तद्भव शब्द --

प्रेमलताजी के काव्य में तद्भव शब्दों की बहुलता मिलती है । तद्भव शब्द रचनाकार की प्रयोगशीलता और शब्द-रचना की प्रवृत्ति को भी पुष्ट करते हैं । ऐसे शब्द प्रेमलताजी के काव्य में "प्रयोग एवं रचना की दृष्टि से अधिक मौलिक प्रतीत होते हैं ।

"सार सिद्धान्त प्रकाश" में प्रयुक्त मुख्य तद्भव शब्द हैं -- किवाँर, भाग, हीया, बिहाय, पूरण, पूरणभाग, सिधि, रिधि, दरशन, छेम, नेम, विपत्ति, काज आदि ।

नाम तत्व सिद्धान्त दोहावली के मुख्य तद्भव शब्द हैं -- आग, परिछाँहिं, लखात, कुटुम, दिवारी, सुहात आदि ।

षट्ऋतु विमल विहार में अनूप, सनेह, सयन, गरभुज, पाँय, नेह, परसहिं, सनेही आदि तद्भव शब्दों का प्रयोग हुआ है ।

सीताराम नाम संबंध बहत्तरी में बैन, इकान्त, अँहूं, जारत आदि तद्भव शब्द मिलते हैं ।

प्रेमलता पदावली में सुहावनी, प्रगटानी, स्वाँस, जोरी विसरू, सुमिरू जरता, नगीच, मीच, सकुन, ठाम आदि तद्भव शब्दों की विशाल सूची प्राप्त होती है ।

देशज शब्द-प्रयोग --

प्रेमलताजी की काव्य-भाषा पर अवध एवं मिथिला के स्थानगत प्रभाव के साथ-साथ व्रजभाषा का भी पर्याप्त प्रभाव पड़ा है । अतः

देशज शब्दों की भी बहुलता उनके शब्द-प्रयोगों में दृष्टिगत होती है । कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं -- ताके, सिरात, बूझि परै, लहहिं, लौन, भूँगार, पातरि, धमूका, थापड़, चाबि, मूँड़, बतरावत, कतहुँ, सुधार आदि ।

उर्दू शब्द --

प्रेमलताजी ने उर्दू शब्द-प्रयोगों द्वारा अपनी अभिव्यक्ति को सहज और स्वाभाविक रूप में प्रस्तुत करना चाहा है ।

"प्रेमलता-पदावली" में दिल, मस्ताने, तारीफ, मस्त, हैरानी, राजी, दगाबाजी, निकम्मा, कत्ल, अदा, दिवाने, फकीरी, मजा दिलदार, ताज, बदनाम, मोहब्बत, अजब, दिमानी आदि उर्दू शब्दों का प्रयोग हुआ है । कुछ पदों में उर्दू पदों और पद्धतियों का खुलकर प्रयोग किया गया है --

1. बदनाम किया दिल्दार मोहब्बत तेरी ।
मोहि अब न तजिय करि छोह जानि निज चेरी ।।
तन मन से मैं सरकार तिहारे दासी ।
हो चुकी ललन जनि तजो अवध पुर वासी ।।
दरशन बिनु अँखियाँ तरसि रही सुख रासी ।
मनमोहन प्यारे लाल राखु निज पासी ।
अब मिलो सनम चितचोर लाव जनि देरी ।

--- प्रेमलता पदावली, पृष्ठ-81, पद संख्या-87

2. प्यारे दिमानी होगई तेरे नाम के आर ।।
कर में लिया कमंडल गर गूदरी महनी

खप्पर दबाया कॉख में शिर टोप दै जबर ।।

सब तौर से हूं आप की दिल्दार गुन्हेगार

दो जग्के लिए झूमती फिरती हूं दर बदर ।

---- वही, पृष्ठ-243, पद संख्या-278

"सार सिद्धान्त प्रकाश" नामक ग्रंथ में गफलत, खतरा, ख्याल आदि उर्दू शब्द, षट्ऋतु विमल विहार में कनून, कैद, पोशाक, सब्ज आदि शब्द मिलते हैं । कुछ अन्य उदाहरण भी द्रष्टव्य है --

1. पढ़ि पढ़ि वेद मरे बहु पंडित धरि धरि ध्यान मरे ध्यानी ।
करि करि योग मरे बहु योगी सोहम् कहि मरि गये ज्ञानी ।।
मुल्ला मरे बांग दै दै बहु करि करि बकरे कुर्बानी ।
प्रेमलता सियराम रटै बिनु सियवर महिमा नहिं जानी ।।

--- षट्ऋतु विमल विहार (सीताराम नाम जापक महत्व)

-- पृष्ठ-176

2. राम नाम का सौदा सच्चा धोखे का है काम नहीं ।
सस्ता चोखा यद्यपि जाहिर लेते इसको आम नहीं ।
परखैया कोउ सन्त सनेही तजते आठो याम नहीं ।
प्रेमलता मूरख किमि पावैं श्रद्धा रूपी दाम नहीं ।

-- वही - ज्ञानपचासा, पृष्ठ-187

3. बेचनेवाले सन्त महाजन श्रद्धा सम्पति चहते हैं ।
सत्य सराफी लेना देना झूठ वचन नहिं कहते हैं ।।
नफा कमावैं सदा न टोटा खोटा माल न गहते हैं ।

प्रेमलता अलमस्त हमेशे रामराज में रहते हैं ।।

--- वही, पृष्ठ-188

कवि ने भाषा को अभिव्यक्ति के अनुरूप मोड़ने कि लिए शब्दों का गतिमय सर्जनात्मक प्रयोग किया है --

धोखे का संसारी सौदा आदिउ मध्यउ कच्चा है ।
जिलयदार चटकीला केवल अज्ञानी मनरच्चा है ।।
जान शनेही राम नाम का ठग विद्या ते बच्चा है ।
प्रेमलता सो पर्म सयाना उसका सौदा सच्चा है ।।

--- वही, पृष्ठ-188

"नाम तत्त्व सिद्धान्त दोहावली" में संकलित काव्य-ग्रंथों के दोहों में प्रयुक्त उर्दू शब्दों के कुछ संकेत इस प्रकार हैं --

1. नाम रटन महिमा कहत, रटत न निज मन मारि ।
प्रेमलता ते जीव जिमि, नामर्द नर नारि ।। -- पृष्ठ-11

2. ते घर तजि सुख संवहीं रहहिं फैलते फर्क ।
फक्त फकीरी जक्त तजि, कहिं मुदित तजि अर्क ।। -- पृष्ठ-134

वस्तुत: प्रेमलताजी की काव्यभाषा अवधी और व्रजभाषा का कलात्मक मिश्रण है, यथास्थान वह अन्य भाषाओं और बोलियों से भी प्रभावित होती रही है । प्रेमलताजी का शब्द-समूह और भंडार पर्याप्त समृद्ध है, इसमें संदेह नहीं कि अपनी अभिव्यक्ति को अधिक मार्मिक और सरस बनाने के लिए उन्होंने व्रजभाषा के शब्दों का भी पर्याप्त प्रयोग किया है । संस्कार और अर्जन के फलस्वरूप उनकी भाषा में संस्कृत, उर्दू आदि समृद्ध भाषाओं

के शब्द भी यथेष्ट मिलते हैं । तत्सम, तद्भव और देशज शब्दों के अतिरिक्त मूल शब्दों को तोड़ने या उनका स्वरूप-परिवर्त्तन करने की प्रवृत्ति प्रेमलताजी में अधिक मिलती है । निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि प्रयोग, परम्परा एवं प्रवृत्ति की दृष्टि से प्रेमलताजी में तत्सम शब्दों का ही प्रयोग-बाहुल्य देखा जाता है । वास्तव में संस्कृत समास बहुला भाषा है, जबकि व्रजभाषा इसके विपरीत व्यास-प्रधान है । ऐसी स्थिति में संस्कृत के शब्द स्वभावतः व्रजभाषा की प्रकृति के अनुकूल नहीं पड़ते और यदि इनका प्रयोग इसमें कर भी दिया जाय तो इसके स्वारस्य में एक प्रकार की शिथिलता आ जाती है । यद्यपि कवि का आग्रह संस्कृत शब्दों को शुद्ध रूप में प्रस्तुत करने की ओर सचेष्ट दिखाई देता है पर भाषा-मार्दव की दृष्टि से नहीं । जहाँ उन्हें भाषा के माधुर्य का हनन परिलक्षित होता है वहाँ वे शब्द को प्रायः तद्भव रूपों में लेते हैं ।

अलंकार-विधान --

कवि अपने काव्य में अभिव्यंजनात्मक सौन्दर्य उत्पन्न करने के लिए अलंकारों का विधान करता है । अलंकार का शाब्दिक अर्थ अलंकृत करना है । अलंकारों द्वारा काव्य में चारुता उत्पन्न करने के संबंध में भारतीय काव्यशास्त्र में दो वर्ग रहे हैं । भामह,[16] दण्डी,[17] जयदेव[18] आदि आलंकारिक आचार्यों ने अलंकारों को काव्य का शोभाविधायक तत्त्व मानकर उनके अभाव में

---

16. काव्यालंकार --- भामह, पृष्ठ : 1/13 तथा 3/58

17. काव्यादर्श, पृष्ठ : 2/1

18. चन्द्रालोक, पृष्ठ : 1/8

काव्य की सत्ता को ही अस्वीकार किया है । इनके विपरीत वामन,[19] आनंदवर्द्धन,[20] मम्मट,[21] विश्वनाथ,[22] आदि ने अलंकार को रसोपकारक या काव्य का मात्र शोभावर्द्धक धर्म स्वीकार किया है । वस्तुत: अलंकार शब्द के अस्थिर धर्म हैं और अंगद्वार से काव्य की श्री वृद्धि करते हैं । अलंकारों द्वारा काव्य की आनन्दोत्पादिनी शक्ति प्रकट होती है । विचारकों का मत है कि "अलंकारों से अलंकृत वाक्य-विन्यास ही मनोरंजक और समाकर्षक होता है ।"[23] अलंकारों समर्थ प्रयोग भाषा में चमत्कार की सृष्टि करता है ।[24] डॉ० ओमप्रकाश की मान्यता है कि "अलंकार वाणी के विभूषण हैं, अभिव्यक्ति में स्पष्टता, भावों में प्रभावोत्पादन की शक्ति, भाषा में सौन्दर्य तथा श्रोताओं का मनोविनोद आदि इनके फल हैं ।"[25] पं० रामदहिन मिश्र का कथन है कि

---

19. हिन्दी काव्यालंकार सूत्र, पृष्ठ : 3/1/1,2

20. हिन्दी ध्वन्यालोक, पृष्ठ : 2/6

21. हिन्दी काव्य प्रकाश, पृष्ठ : 8/67

22. हिन्दी साहित्य दर्पण, पृष्ठ : 10/1

23. अलंकार-पीयूष {पूर्वार्द्ध} -- डॉ० रमाशंकर शुक्ल "रसाल", पृष्ठ : 35-36

24. A figure of speech is a dviation from the plain and ordinary mode of speaking, for the sake of greater effect.
उद्धृत बेन का मत -- Some Concepts of the Alankar sastra- Dr.V.Raghvam,Pg.50

25. हिन्दी अलंकार-साहित्य, पृष्ठ-1

अलंकारों की योजना करने में एक सहृदयतापूर्ण अनुभूति से उत्पन्न विशेष विदग्धता की आवश्यकता है जो यह अनुभूत कर सके कि यह योजना भावोत्कर्ष में, रसोद्रेक में, प्रेषणीयता में, सौन्दर्यबोध में सहायक हो सकती है ।"[26]

प्रेमलताजी के काव्य में शब्द भंडार के समान ही सौष्ठव की दृष्टि से अलंकारों का महत्त्व मिलता है । हमारे आलोच्य कवि बहुपठित शास्त्राभ्यासी पंडित न होकर भक्त और भावावेशी कवि थे, जिनका काव्यत्व अध्यात्म से प्रेरित था, अत: इनके काव्य में कला-पक्ष की अभिव्यंजना सहजलभ्य है । भाषा-शिल्प का सौष्ठव काव्य को समग्रत: आकर्षण के योग्य बनाता है । सौष्ठव भाषागत सौन्दर्य है जो सामान्यत: उसके विभिन्न अवयवों के औचित्य तथा प्रसाधन के अतिरिक्त तद्गत बिम्ब की ग्राह्यता और आह्लादकता के साथ भी विशेष संबंध रखता है । शब्द के प्रसाधक तत्वों में मुख्यत: शब्दालंकारों की गणना होती है जिनका औचित्यपूर्ण प्रयोग संगीत और चमत्कार की सृष्टि करता है । इसी प्रकार अर्थ-सौन्दर्य के विधायक उपकरण अर्थालंकार होते हैं । अर्थ मुख्यत: बिम्ब या भाव को व्यंजित करता है, अत: अर्थालंकार अर्थ-प्रसाधन के साथ-साथ बिम्ब या भाव का भी स्वाभाविक रूप से सौन्दर्य-वर्द्धन करते हैं । अत: बिम्ब या भाव के अनुसार शब्द और अर्थ का उचित एवं सुन्दर प्रयोग भाषा-शिल्प के सौष्ठव की संरचना करता है ।

प्रेमलताजी के काव्य में शब्दालंकारों में मुख्यत: अनुप्रास, वक्रोक्ति यमक आदि का तथा अर्थालंकारों में उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा,

---

26. काव्य में अप्रस्तुत योजना, पृष्ठ-11

उदाहरण स्वभावोक्ति आदि का अधिक प्रयोग हुआ है ।

अनुप्रास का संबंध शब्द की सर्वाधिक लघु इकाई व्यंजन-ध्वनि के साथ रहता है -- व्यंजन-ध्वनियों की आवृत्ति से उत्पन्न होनेवाले अक्षर-सौन्दर्य के साथ हुआ करता है । इसके भेद हैं छेकानुप्रास, वृत्यनुप्रास, श्रुत्यनुप्रास, अन्त्यानुप्रास और लाटानुप्रास । अनुप्रास के ये भेद ध्वनियों के स्वरूप, उनके उच्चारण की कालावधि तथा क्रम-वैशिष्ट्य के अनुसार किए गए प्रतीत होते हैं । वस्तुतः वर्णों की पुनः पुनः आवृत्ति से काव्य में श्रुति पेशलता तथा संगीत की सर्जना होती है । भोजराज का कथन है कि यदि काव्य में अनुप्रास की कुछ भी छटा है तो उपमा आदि अलंकारों से रहित होने पर भी वह काव्य-रचना सुशोभित होती है ।"[27]

प्रेमलताजी के काव्य में प्रयुक्त अनुप्रास कृत्रिम न होकर भाव व्यंजक और कवि की रसिकता एवं माधुर्यवृत्ति के पोषक प्रतीत होते हैं । अनुप्रासिक प्रयोगों के कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं --

1. कुंजहिं कोकिल कीर पुंज सरस सरति सु कूजन ।
प्रेमलता सुर छकहिं निरखि मिथिला महि झूलन ।।

-- सार सिद्धान्त प्रकाश, पृष्ठ-152

2. कारीं कलित कुटिल लट लटकहिं दोउ दोउ दिशि धनि जो जो हैं ।
प्रेमलता लखि छटा छकी मति वरणि कहैं अस कवि को हैं ।

-- षड्ऋतु विमल विहार, पृष्ठ-2

---

27. सरस्वती कंठाभरण, पृष्ठ : 2/106

आलंकारिक शब्द प्रयोग द्वारा "सियवर षट्ऋतु विमल विहार दर्पण" अर्थात् "षट्ऋतु विमल विहार" में विशेषकर झंकार और अनुरजनमूलक भाषा शैली का प्रचुर प्रयोग हुआ है । कवि की रससिद्ध भाषा वर्णन को सजीव बनाती हुई भावानुगामिनी होकर संप्रेष्य होने में सफल होती है । ऐसे कुछ चित्र द्रष्टव्य हैं --

1. चुरियाँ चारू बँगलियाँ पहुँची महिरे इत श्री सिय प्यारी । --पृष्ठ-4

2. इत हथ फूल आरसी अनुपम छला मुदरियाँ मन मोहैं ।
उत अँगुरिनि अनमोल अँगूठी छला छाप वहुविधि सोहैं ।।--पृष्ठ-वही

3. झनर झनर झींगुर झनकारत चातकि सोर मचाय रही ।
सीतल मन्द सुगंध बहै बर बात उछाह बढ़ाय रही ।
झरना झरहिं चरहिं प्रमुदित मन खग मृग सुखमा छाय रही ।
हरे बाग वन विटप हरी महि प्रेमलता लहराय रही ।।

--- पृष्ठ : 20-21

4. छुम् छुम् छननन छुम् छुम् छन नन करहिं सुनूपुर हरत जिया ।
प्रेमलता प्रभुरतन सिंहासन बैठि बिलोकहिं राम सिया ।। --पृष्ठ-29

5. झमकि धरहिं महि चरण चमकि जब सुर संग दामिनि सम गोरी ।
फैलति दश दिशि छटा छिटकि तक चितवहिं मुरि सिय पिय ओरी ।।

--- पृष्ठ-30

प्रेमलताजी की आलंकारिक भाषा अर्थालंकारों को भी समान रूप से स्वीकार करती व्यक्त होती है । भक्ति, उपासना और सौन्दर्य-वर्णन के प्रसंगों में कवि ने आलंकारिक उक्तियों का सहारा अधिक लिया है ।

नाम महिमा दृष्टान्तावली नामक ग्रंथ में अनेक दृष्टान्तों द्वारा आलंकारिक भाषा की काव्यात्मक अभिव्यक्ति हुई है । उनमें कुछ उदाहरण निम्नलिखित हैं --

1. नाम रटन बहुतक करत, जग प्रसिद्ध कोउ होत ।
प्रेमलता नभ नखत जिमि, लखि बड़ छोट उजोत ।। -- पृष्ठ-10

2. नाम रटत दृढ़ सन्त कोउ, बिरले रत पर हेत ।
प्रेमलता श्री खंड जिमि, सब कहँ सम सुख देत ।। -- पृष्ठ : वही

3. नाम रटन में स्वाद जस, तस मुख किमि कहि जात ।
प्रेमलता रुचिगरसु अति, जिमि मिथिला को भात ।। -- पृष्ठ-14

4. नाम रटन बिनु निपट अति, फीको लगे फकीर ।
प्रेमलता जिमि समर में, शस्त्र ढाल बिनु वीर ।। -- पृष्ठ-16

5. राम नाम पूरण शशी, राका श्री सियनाम ।
प्रेमलता सु चकोर मन अवलोकत सुखधाम ।।
--- युगलनाम संबंध अष्टोत्तरी, पृष्ठ-208

6. राम नाम सुन्दर जलद, श्री सियनाम सुनीर ।
प्रेमलता मन मोर लखि, कूकत पुलकि शरीर । -- वही, पृष्ठ-वही

7. राम नाम की रेल सिय, नाम सु अंजन ठाट ।
प्रेमलता पटरी रटन, मन अंजन गुरु गाट ।। -- वही, पृष्ठ-212

8. रामनाम दुलहा सुघर, श्री सियनाम बरात ।
प्रेमलता दुलहिनि रटन, पंडित गुरु विख्यात ।। -- वही, पृष्ठ-वही

9. रामनाम अमि कूप सिय, नाम पात्र पटु लीन ।
प्रेमलता रसरी रटनि, भरिं भरि पियत प्रवीन । -- वही, पृष्ठ-214

10• राम सुनाम हिंडोर बर, श्री सियनाम सु खंभ ।

प्रेमलता डोरी रटनि, झूलत जन निर्दम्य ।। -- वही, पृष्ठ-214

11• जगत जलधि तिरहुत कमल, जनक सु पुर मकरन्द ।

प्रेमलता सिय गंध सुचि, भ्रमर सु रघुकुल नन्द ।। -- वही, पृष्ठ-280

प्रेमलताजी के दोहों में रूपकात्मक भाषा का सर्वाधिक निर्वाह हुआ है । इस भाषा में भक्ति तत्त्व और नीति तत्त्व का सुन्दर सम्मिश्रण दिखाई पड़ता है ।

प्रेमलताजी की काव्यभाषा का एक विशिष्ट पक्ष मिश्रित भाषा के रूप में दीख पड़ता है जिसमें व्रज, अवधी और खड़ी बोली का सम्मिश्रण हुआ है --

1• सेवा सुख अधिकार अधिक अति शृंगारी जिउ पाते हैं ।

रोक टोक नहिं कहूं महल में जी चाहै जहं जाते हैं ।।

बड़े बड़े इन्द्रादि देव मुनि पावन पूज्य कहाते हैं ।

प्रेमलता तेउ शृंगारिनि के कृपा कटाक्ष मनाते हैं ।।

--- षट्ऋतु विमल विहार, पृष्ठ-45

2• कोउ कह हम तुमते न घाटिक कछु होस हवास भुलाउंगी ।

रंगनि मारि मारि तुम सब कहं रण ते आजु हटाउंगी ।।

इत उत भांति बचीहौ अब लगि अब मैं नाच नचाउंगी ।

प्रेमलता सिय कृपा फाग सुख भली भांति दरसाउंगी ।।

--- वही - सतगुरू कृपा प्रकाशान्तर, पृष्ठ-51

3. धन है विषधर साँप कठिन अति अज्ञानिन डसि लेता है ।
प्रभु ते विमुख कराय भली विधि लक्ष चौरासी देता है ।।
तेहिकर मंत्र परम परमारथ जानत कोउ जो चेता है ।
प्रेमलता धन पाय तरहिं भव ते परिवार समेता है ।।

--- जानकी विनय नामादि महत्व, पृष्ठ-70

4. चहियत कृपा लली सिय जू की यह सुख जाते मिलता है ।
श्री मिथिलापुर अटत रटत सियराम नाम उर खिलता है ।।
होत अचल मन चंचलता तजि फिरि न हिलाये हिलता है ।
प्रेमलता पाखंड खंडि सब जीव मोदनिधि पिलता है ।।

-- वही, पृष्ठ-84

5. श्री सियराम नाम की महिमा बहु विधि पढ़ते सुनते हो ।
रटत न काहे खूब निरन्तर बातें केहि लगि गढ़ते हो ।
हटते हो क्यों नाम रटन में आगे क्यों नहिं बढ़ते हो ।
प्रेमलता कसि कमर प्रेम पथ पाई न काहे चढ़ते हो ।।

--- हितोपदेश शतक, पृष्ठ-138

6. जितना रटि हो नाम अन्त में उतना ही सुख पावोगे ।
जो न मानिहो सीख मोहवश तो पीछे पछतावोगे ।।
रटे बिना सियराम नाम बहु घर घर धक्का खायोगे ।
प्रेमलता तजि देह भजन बिनु यमपुर बाँधे जावोगे ।।

-- वही, पृष्ठ-139

मुहावरे --

मुहावरे काव्य-भाषा की शक्ति को बढ़ाकर उसे लाक्षणिक प्रभाव से युक्त करते हैं । मुहावरों में भाषा की संघनित शक्ति कार्य करती है । सधुक्कड़ी भाषा और अर्थगर्भी संकेतों के कारण प्रेमलताजी के काव्य में अनेक मुहावरों का रुचिर और कलात्मक प्रयोग हुआ है ।

षट्ऋतु विमल विहार --

1. प्रेमलता चख छके सुछवि लखि पुरे सकल मन काजे हैं । -- पृष्ठ-2
2. उड़ि उड़ि गिरत भिरत पुनि उठि उठि रचौ धीर न धरते हैं ।
   --- पृष्ठ-18
3. धाइ मिलीं परि पाँय जाँय वलि नयन लाय लूटन लागीं । --पृष्ठ-28
4. मधुर मंजरी मुग्ध सु प्रौढ़ा चतुर व्यूह रचि रास करैं । --पृष्ठ-30
5. इत उत भागि बचीहौ अब लगि अब मैं नाच नचाउंगी ।--पृष्ठ-51
6. लाखनि कही न चली एक हू अलियनि प्रति प्रभु चतुराई ।--पृष्ठ-54
7. जीते हैं कूकर सूकर सम इन्द्रिनि हाथ बिकाने हैं । -- पृष्ठ-139
8. नाम प्रभाव अपार बखानत रामउ हियेे ल जाते हैं । -- पृष्ठ-143
9. प्रेमलता सोइ अपर अपर सब अग जग काल कलेवा है ।-- पृष्ठ-174
10. प्रेमलता तिहुं काल तिहूं पुर उसका सौदा पटता है । --पृष्ठ-177
11. कोटिन विह्न पर न जो तदपि पौवन पाछे हटनाजी ।
    -- पृष्ठ-184
12. प्रेमलता फिर हाट उठे पर शिर धुनि धुनि पछितावोगे । --पृष्ठ-185

13. जग भग ते मुख मोरि जोरि नाते सियवर ते ।

--- सार सिद्धान्त प्रकाश, पृष्ठ-46

14. सीताराम रटि भव सागर तरत जू । -- नाम रहस्य त्रयी, पृष्ठ-6

15. करनी बिनु बहु गाल बजावत उदर हेतु जग धावत हैं

--- परमहंस ज्ञान प्रबोधक पचीसी, पृष्ठ-43

छन्द विधान --

छन्द-योजना द्वारा काव्य को गद्य से पृथक् कर उसकी लयात्मकता का निर्वाह किया जाता है । छन्द का संबंध भाव और भाषा दोनों से है । डॉ० पुत्तू लाल शुक्ल का कथन है कि "छन्द का नियत एवं मधुर आवर्त्तन मानस-धरातल पर गीत की धारा बहाता है, जिसमें वर्ण, शब्द, वाक्यांश और वाक्य वेग से प्रवाहित होकर मूर्त्त होते हैं ।[28] छन्द-विधान में लय की रक्षा और व्यवस्था के लिए विशिष्ट शब्दों का चुनाव करना पड़ता है । काव्य-प्रवाह की अखंडता बनाए रखने के लिए उसके पर्यायों की खोज और नए शब्दों की रचना करनी पड़ती है । डॉ० गुलाब राय की स्थापना है कि "भावमयी भाषा में जो स्वाभाविक गति आ जाती है, छन्द उसी का बाहरी आकार है । ... छन्द भाषा को भावानुकूल बनाकर पाठक में एक विशेष ग्राहकता उत्पन्न कर देते हैं ।"[29]

---

28. आधुनिक हिन्दी काव्य में छंद-योजना, पृष्ठ-55

29. सिद्धान्त और अध्ययन, पृष्ठ-243

प्रेमलताजी के काव्य में छन्दों की विविधता, पूर्णता और प्रभाव क्षमता का यथाशक्य ध्यान रखा गया है। कवि ने कुंडलिया, कवित्त, सवैया, मंजु छन्द, दोहा, पद, गजल, रेखता, चौपाई आदि के रूप में छन्द-वैविध्य का प्रयोग किया है। कवि ने लय-यति के साथ अर्ध-यति की व्यवस्था तथा अन्त्यानुप्रास के साथ आन्तरिक तुक साम्य के द्वारा भाषा की प्रवहमानता का ध्यान रखा है। यति, ग ति, तुक आदि छन्द के अन्तवर्ती तत्त्व हैं जिनका भाषा पर अनिवार्य प्रभाव पड़ता है। मधुरता और गत्यात्मकता प्रेमलताजी के छन्दों की आन्तरिक विशेषताएं हैं।

पद --

कवि ने पदों की रचना अनेकत्र की है, मुख्यतः प्रेमलता पदावली, नित्य प्रार्थना, जानकी जी की बधाई आदि ग्रंथों में उनकी रचना अधिक हुई है।

1. गुरु बिनु बोध करै जग कौन।
प्रबल प्रताप प्रभाव सुगुरु को, प्रगट चतुर्दश भौन।
भयो न है कोउ गुरु समान कहुँ, आगेहू नहिं हौन।
गुरु महिमा अति अगम बखानत, वेदहु साधी मौन।।

--- प्रेमलता पदावली, पृष्ठ-150, पद सं0-169

2. भजु मन राम नाम अति मीठा।
फीके सकल पदारथ जग के अभिअउ लागत सीठा।।
नाम प्रभाव राम शुभ गति के, केहि न दियो करि चीठा।

चहुँ युग चहुँ श्रुति तरयो न जो रटि नाम सु सुभान दीठा ।।
नाशन त्रिविधि पाप पाला हित, नाम सु प्रबल अँगीठा ।

--- वही, पृष्ठ-240, पद संख्या-273

3· मेरे मन निवसहु स्वामिनि आय ।
जनक लली सिय सह रघुनन्दन, निसिबासर सुखदाय ।
सहत दुसह दुख वहु दिन बीते, तुम बिनु परेउ भुलाल ।।
राम प्रिया करि कृपा जानि जन, लीजिय अब अपनाय ।
त्राहि त्राहि अब हे करुणाकर, अति भय जिय घबराय ।
पाहि पाहि जग जननि जानकी, कीजिये बेगि सहाय ।

--- नित्य प्रार्थना {रूप प्रार्थना}, पृष्ठ-27

4· सिया जू मेरी स्वामिनि सब सुख मूल ।
प्रगट भई मिथिलेश भवन में, नास्यो कठिन वशूल ।।
घर घर गावत नचत भामिनी तन मन सुधि गइ भूल
देत दान सनमानि सबहिं सब, जानि विधिहिं अनुकूल
धरणि धाम धन वसन विभूषण, गजरथ तुरंग सहूल
देत लेत हरसत हरषावत, बरषत विवुध सुफूल ।।

--- श्री जानकी जी की बधाई, पृष्ठ-34, पद सं0 30

कवित्त --

1· सीताराम सीताराम रटत सुमन्त जू ।
परम विराग उर सतसंग रुचि शुचि सुनत चरित

सीताराम के अनन्त जू ।

भोजन बसन अनयास हू मिलत आइ

मैंगिहू के लेत पर बसत इकन्त जू ।।

अमल अभेद मन पारग पुराण वेद

सीताराम नाम प्रीति लिये निबहन्त जू ।।

सीताराम नाम गान सीताराम रूप ध्यान

सीताराम सीताराम रटत सुसन्त जू ।।

--- सीताराम नाम संबंध बहत्तरी, पृष्ठ-9

2. नाम महाराज की मैं जाऊं बलिहारियाँ ।

परम अगम जाहि बदत पुराण वेद

पायो सो अभेद सियवर धनुधारियाँ ।

अगुण सगुण व्रह्म दोउ न के कारण सु,

तारण अगाध भव सागर अपारियाँ ।।

राम ऐसो नाम जाको रमत सकल माहिं

एकही अनादि नर रूप सब नारियाँ ।।

प्रेमलता नाम रटि प्रगट सो लखे राम

नाम महाराज की मैं जाऊं बलिहारियाँ ।।

--- वही, पृष्ठ-59

चौपाई --

प्रेमलता जी ने चौपाई और दोहों का सम्यक् प्रयोग

वृहद् उपासना रहस्य में किया है । छंद-रचना का उदाहरण निम्नलिखित है --

पिय बिनु राम राम बिनु सीया । रहि न सक्त जिमि पति बिनु तीया
युगल रूप सुन्दर सुखदाई । श्याम गौर नखशिख छविछाई ।।
युगल उपासक जो सज्ञाना । सेवहिं दोउ दोउ अंग समाना ।
तत्व एक सिय राम उदारा । भक्तनि हित युग रूप सु धारा ।।
सदहिं नित्य सो युगल सरूपा । सेवत नशत घोर भव कूपा ।।
सिय रघुवर जब जेहि अपनावहिं । तेहि उर आतप रूप लखावहिं ।।
अहं भाव नरता जड़ नाशा । करें हाइ हिय कृपा प्रकाशा ।।

--- वृहद् उपासना रहस्य, पृष्ठ-138

मंजु छन्द --

मंजु छन्द का सर्वाधिक प्रयोग सियवर षट्ऋतु विमल विहार में संकलित ग्रंथों में हुआ है । कुछ उदाहरण द्रष्टव्य हैं --

1. नामहिं इष्ट देवता नामहिं भजन भाव नामहिं गति है ।
नामहिं अंजन नाम निरंजन गंजन खल नामहिं मति है ।
नामहिं लैन दैन पुनि नामहिं कहब सुनब नामहिं रति है ।
प्रेमलता जो रटै नाम अस तिन्हैं मोर बहु विधि नति है ।

--- श्री जानकी विनय नामादि महत्व, पृष्ठ-75

2. भजन करत अलसात कुटिल पै उदर भरन में पक्का है ।
धनहित व्याकुल फिरैं लाज ~~ि~~ तजि दर दर खाता धक्का है ।।
सुनि पावै कहुं भोज खोज करि मारत चलै कुदक्का है ।

प्रेमलता परमारथ पथ में कहत सु पौरुष थक्का है ।

--- वैराग प्रबोधक बहत्तरी, पृष्ठ-115

3. ललकि ललकि सिय राम उचारहिं लोक वेद की तज शंका ।

परम सार लहि नाम मत्त ज्यों फिरहिं लखहिं किमि मति रंका ।।

परमहंस कर ज्ञान अगाध सु भाव भेद अतिशय बंका ।

प्रेमलता सु अशोच रहैं नित ज्यों बालक जननी अंका ।।

--- हितोपदेश शतक, पृष्ठ-131

4. श्री सियराम उपासक जो जन ते सबके सिर ताजा है ।

नाम रटत विचरत महि प्रमुदित राजन के ज्यों राजा हैं ।।

दशहू दिशि आनंद लहैं नित सरैं सकल मन काजा हैं ।

प्रेमलता मुद मंगल मय वपु राजत सन्त समाजा है ।

--- सीताराम नाम जापक महत्व, पृष्ठ-172

दोहा --

कवि ने "नाम तत्व सिद्धांत दोहावली" में संकलित ग्रंथों पूर्णत: दोहा छंद के प्रयोग के साथ-साथ दूसरे ग्रंथों में भी सहायक रूप से दोहों का समावेश किया ~~गया~~ है । दोहों का उपयोग मुख्यत: भक्ति, दर्शन, नीति और सूक्ति वाक्यों की रचना के लिए किया गया है --

1. तन सराय में बैठि जनि, दिन दिन होय अचेत ।

प्रेमलता चलना अवसि, सिय पिय पुर साकेत ।।

--- नाम महिमा दृष्टान्तावली, पृष्ठ-27

2. गली गली घूमत नहीं, सतगुरू विक्त न हाट ।

प्रेमलता जू लखावहीं, पिया मिलन की बाट ।।

--- सतगुरू शब्द यथार्थ ज्ञान, पृष्ठ-35

3. सीता सिया सुनाम दोउ, जद्यपि परम अभेद ।

पै सिय नाम सु सरल अति, रटत हरत भव खेद ।।

--- गुरू पदार्थ प्रबोधिका, पृष्ठ-103

4. रटहिं नाम पै मुदित मन, होत न कबहुँ उदास ।

प्रेमलता रस एक नित, सजि नूतन विश्वास ।।

--- अनन्य शतक, पृष्ठ-152

5. राम नाम माला ललित, श्री सियनाम सुमेर ।

प्रेमलता फेरब रटनि, रसना कर मन फेर ।।

--- युगल नाम संबंध अष्टोत्तरी, पृष्ठ-214

6. नारायण आदिक जिते, नामसु मंत्र अपार ।

प्रेमलता सियराम यह, नाम सकल आधार ।।

--- उपदेश पेटिका, पृष्ठ-247

कुंडलिया --

कुंडलिया छन्द का प्रयोग प्रेमलताजी ने सार सिद्धांत प्रकाश नामक ग्रंथ में किया है, उक्त ग्रंथ में कुल 452 कुण्डलिया छंद संकलित हैं । कुछ महत्वपूर्ण उदाहरण अधोलिखित हैं --

1. सीता पूजा पाठ मम, सम दम शरधा धाम ।

सीता श्रवण सु मनन सिय, समाधान विश्राम ।।

समाधान विश्राम धारणा अचल समाधी ।

अहंकार उपराम तितिक्षा बुद्धि अबाधी ।।

भजन विवेक विचार लोक परलोक प्रतीता ।

प्रेमलता बल भाग एक श्री स्वामिनि सीता ।। -- पृष्ठ-144

2. सीता प्राण अधार धन, आश बास विश्वास ।

सीता भजन सुतोष प्रण, सीता हर्ष हुलास ।।

सीता हर्ष हुलाश जहाँ लगि सुखद सु जेते ।

रहस राग रस रंग संग शुभ सिय जू तेते ।।

जाग्रत स्वप्न सुषुप्ति तुरिय अनुभव के पीता।

प्रेमलता सब मोर एक श्री स्वामिनि सीता ।। -- पृष्ठ-145

गजल --

प्रेमलताजी के काव्य पर उर्दू गजल शैली और उर्दू भाषा का भी पर्याप्त प्रभाव रहा है । सूफी शैली या दरवेश रूप के कारण हमारे आलोच्य कवि की मूल प्रवृत्ति रसिकता और शृंगार-भाव की है, अत: गजलों का उपयोग उसी "इश्क" भाव की प्रस्तुति के लिए हुआ है ।

1. भजु मन सु वचन काय सिया राम बावरे ।

संसार घोर धार जीव डूबत परे,

अज्ञान विवश मोह त्यागि नाम नाव रे ।

--- प्रेमलता पदावली, पृष्ठ-110

2· हर वक्त सियराम की लागी भारी रहै ।

टूटै न तार यार तैता धार की तरह,

मुख में अखंड नाम की रटना भरी रहै ।

--- वही, पृष्ठ-185

3· सबसे मुझे प्यारी लगी सियराम की रटन् ।।

साधे अनेक साधन बाधा मिटी नहीं,

पाये क्लेश खूबही जो जाय ना बरन् ।।

खाये सुने न कौन के धक्के कड़े वचन,

नायो न शीस कौन को ग्रह पेट के डरन् ।

सन्तों के निकट जाय कही विपत्ति ते कह्यो,

हनुमन्त निकट बैठि बोखु नाम आखरन् ।।

--- वही, पृष्ठ : 183-184

रेखता --

लरबोरी नगर रुचिराई, दशो दिशि महा सुख छिाई ।

पताका केतु ध्वज राजै, बधाई विविधि विधि बाजै ।।

गुणी बहु नाचते गाई, अरगजनि कीच मचवाई

--- जानकी जी की बधाई, पद रेखता-16,पृ0 12

इसके अतिरिक्त पद राग कजरी, लावनी आदि के छंदात्मक प्रयोग भी कवि ने किए हैं ।

इस प्रकार प्रेमलताजी का काव्य रसिक भाव-भक्ति का रसात्मक उद्रेक ही नहीं अपितु भाषा-शिल्प की दृष्टि से भी उदाहरणीय है ।

कवि ने भाषा की दृष्टि से जहाँ एक ओर व्रज, अवधी, खड़ी बोली, उर्दू एवं मैथिली, भोजपुरी के प्रभावों को आत्मसात् कर सधुक्कड़ी और प्रवाहमयी भाषा को अभिव्यंजित किया है वहाँ शिल्प की दृष्टि से अलंकार, छन्द, मुहावरे एवं सौन्दर्य के भावात्मक चित्रों एवं बिम्बों की भी प्रभावशाली अभिव्यंजना प्रस्तुत की है ।

प्रेमलताजी संग्राहक मनोवृत्ति के कवि थे, उन्होंने सार तत्व का आकलन किया और असार का त्याग किया । उनकी भक्ति और नाम रटन की निष्ठा उनके छन्द-छन्द में बिखरी मिलती है । भाषा और शास्त्र का पांडित्य न रखते हुए भी कवि द्वारा काव्य भाषा का ऐसा समर्थ अधिकार पूर्ण प्रयोग आध्यात्मिक शक्तियों से प्रेरित प्रतीत होता है । भाषा-शिल्प की दृष्टि से प्रेमलताजी का काव्य विविध, प्रयोगात्मक और रसात्मक कहा जा सकता है ।

------- 0 -------

सप्तम अध्याय

उपसंहार

सप्तम अध्याय

उपसंहार

रामभक्ति शाखा के कवि संत सियालाल शरण जी "प्रेमलता" और उनका काव्य शीर्षक शोध-प्रबंध के पिछले अध्यायों में विवेचित सामग्री का निष्कर्ष निम्नलिखित है --

रामभक्ति शाखा के उत्तरार्द्ध काल (19 वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध और 20 वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध) के कवियों में संत सियालाल शरण "प्रेमलता" का विशिष्ट स्थान है । रामभक्ति, नाम-रटन को सर्वजन संवेद्य और व्यावहारिक बनाकर उन्होंने सियाराम की माधुर्य भाव मूलक अनन्य भक्ति का प्रतिपादन किया । वस्तुतः रामभक्ति का विषय चरित्र, क्रिया और भाव की दृष्टि से महत्वपूर्ण है । भक्ति मानव-जीवन का उदात्त भाव है। शांडिल्य भक्ति सूत्र, भक्तिरसामृत सिन्धु, भक्ति रसायन आदि ग्रंथों की भक्ति विषयक चर्चा तथा रूपगोस्वामी के भक्ति के प्रभाव और लक्षण विषयक कथन महत्व रखते हैं ।

भक्ति या उपासना का मूल लक्ष्य भगवत् सान्निध्य की प्राप्ति या भागवत प्रेम पात्रता है । भक्ति सिद्धान्तों के अनुसार

भक्ति के तीन तत्व हैं -- अनुग्रह, प्रेम और भक्ति । शांडिल्य भक्ति सूत्र और नारद भक्ति सूत्र में भक्ति के मुख्या और गौणी प्रकार निरूपित हैं । नारद ने प्रेम रूपा भक्ति के ग्यारह प्रकार और चैतन्य महाप्रभु ने वैधी और रागानुगा कोटि निर्धारित की है । भक्ति में जीव और ईश्वर के प्रेम की प्रधानता होती है । भक्ति का वैधी और मर्यादावादी रूप हिन्दी रामकाव्य में प्रस्तुत हुआ है । श्री संप्रदाय में रामभक्ति का शास्त्रीय प्रतिपादन भी हुआ है । रामभक्ति संहिताओं में मुख्य हैं -- अगस्त्य संहिता, कलिराघव, वृहद् राघव और राघवीय संहिता । उपनिषदों में रामपूर्वतापनीय, रामोत्तर तापनीय तथा रामरहस्योपनिषद् गण्य हैं ।

रामकाव्य की विशेषताओं में सेवक-सेव्य भाव पर बल देने के साथ ज्ञान और कर्म से भक्ति की श्रेष्ठता का प्रतिपादन हुआ है । रचना शैलियों में श्रव्य, दृश्य और मुक्तकों का प्रयोग हुआ है । वैष्णव भक्ति में आलवारों के बाद आचार्यों का स्थान महत्व रखता है । आलवार भक्तों ने समन्वय, प्रपत्ति और मधुराभक्ति की रसोपासना को प्रस्तुत किया । सगुण रामभक्ति में मर्यादाबद्ध रामोपासना और रसिक रामोपासना की परंपरा प्राप्त होती है । रसिक साधना का प्रवर्त्तन 16 वीं शताब्दी में हुआ पर उसके संकेत पूर्व प्राप्त थे । वाल्मीकि रामायण हनुमन्नाटक, जानकी हरण, रघुवंश आदि ग्रंथों की प्रेरक शृंगार भावना भी रामभक्ति की रसिकोपासना को बल देती है । आचार्य शुक्ल ने गुह्य रहस्य माधुर्य भाव की कटु आलोचना भी की है पर डॉ० हजारी प्रसाद द्विवेदी ने इसे कृष्ण भक्ति का प्रभाव माना है । वस्तुत: वैष्णव रामकाव्य की रसिकोपासना भी उदात्त और दिव्य भाव से युक्त है ।

मधुरोपासना के शृंगार ग्रंथों की भाँति सांप्रदायिक सिद्धान्त ग्रंथ भी प्राप्त होते हैं । इनकी प्रथम कोटि में अद्वैत मतानुयायी शैवों की कृतियाँ है तो दूसरी कोटि में विशिष्टाद्वैतवादी श्री वैष्णव भक्तों के ग्रंथ हैं । इनमें सीताराम के पूर्व राग, प्रेम भाव, प्रेम लीला के चित्र मिलते हैं । "कंबन रामायण", "आनन्द रामायण","रामलिंगामृत," भुशुण्डि रामायण, शिव संहिता, लोमश संहिता, हनुमत्संहिता, सत्योपाख्यान, वृहत्कोशल जैसे ग्रंथ परवर्त्ती रसिकोपासना के स्वरूप निर्माण में सहायक हैं ।

मधुरोपासना की साधना पद्धति व्यवस्थित है । इसके उपास्य राम और सीता हैं । राम लीला पुरुष द्विभुज है, उनमें ऐश्वर्य और माधुर्य का मेल है । सीता आह्लादिनी शक्ति रूपा हैं । रसिक भाव में सखी-सखा भाव को महत्व मिला है । लीला में आनंदास्वादन की अनुभूति संभोगात्मक कही गई है । साक्षी या द्रष्टाभाव का कैंकर्य सुख तत्सुख भावना और स्वसुख भावना के रूप में कहा गया है । रसिक साधना में सख्य तथा शृंगार भाव के अधिकांश आचार्य अपनी उपासना-पद्धति को द्वैत परक सिद्ध करते हैं पर हमारे आलोच्य कवि प्रेमलता ने अपने को विशिष्टाद्वैतमतानुयायी कहा है ।

रसिक साधना का साध्य तत्व है दिव्य दम्पति का सेवा-सुख और मर्यादाधीन युगल केलि के लोकोत्तर रस का आस्वादन । रसिक साधना की क्रमश: विकसित चार अवस्थाएं हैं -- आचार्य प्रपत्ति या ज्ञानदशा, संबंध दीक्षा या वरण दशा, साकेत लीला प्रवेश या प्राप्तिदशा लीला सुखभोग या प्राप्त्यनुभव दशा । आचार्य प्रपत्ति में पंच संस्कार दीक्षा, अर्थ पंचक, प्रपत्ति उपदेश, भाव साधना {लगन की उत्पत्ति आदि महत्वपूर्ण हैं । इसी

प्रकार नाम परत्व उपदेश को भी श्रेय दिया गया है । लगनोद्रेक की आठ भूमिकाएं हैं -- खेददा, दुःखदा, सिद्धिप्रदा, अखंवासिनी, विरति विधारिणी, विषयहारिणी, छविदायिनी, और विहार विलासिनी । प्रीति की अष्ट स्थितियों में प्रणय, प्रेम, आसक्ति, लगन, लाज, अनुराग, नेह और प्रीति परिगणित हैं । इनके अनुसार साधक की आठ दृष्टिमुद्राएं भी बताई गई हैं । संबंध-दीक्षा में दिव्य देह की कल्पना की गई है । प्रेमलता जी ने श्री सम्प्रदाय को "श्री सिया सम्प्रदाय कहना चाहा है । "सतगुरू" का महत्व निर्विवाद है ।

मानसी पूजा या अष्टयाम लीला का चिन्तन भक्त और भगवान की एकता में सहायक होता है । अष्टयाम चिन्तन प्रिय-प्रिया की नि त्यकेलि की भावना की तदाकारता है ।

प्रेमलताजी का संबंध जीवाराम युगलप्रियाजी की गद्दी की परंपरा [चिरान-छपरा-बिहार] से है । जीवाराम की अयोध्यावाली परंपरा में महात्मा युगलानन्द शरण, महात्मा जानकी वर शरण, रामवल्लभा शरण तथा सियालाल शरण प्रेमलता जैसे साधक हुए हैं । इस संप्रदाय में आचार्यों के तीन रूप हैं आचार्य, दास और सखी रूप । साधक शिष्य के स्थूल शरीर संबंधी नाम के अतिरिक्त आत्म संबंधी महली नाम भी आवश्यक होता है ।

रसिक परंपरा के संत कवियों में प्रेमलताजी का स्थान महत्व का अधिकारी है । इस परंपरा के अन्य पूर्व कवि हैं -- अग्रदास "अग्रअली", नाभादास "नाभाअली", बालकृष्ण बालअली, बालानंद, छत्रसाल, रामप्रियाशरण "प्रेमकली", जानकी रसिकशरण "रसमाला", रूपलाल "रूपसखी", राम प्रपन्न [मधुराचार्य] "मधुरप्रिया", सूरकिशोर, मामा प्रयागदास, रामसखे,

प्रेमसखी, ह्यांचार्य "हरिसहचरी", कृपानिवास, रामचरणदास, रामगुलाम द्विवेदी, महाराज विश्वनाथ सिंह, जीवाराम "युगलप्रिया", जनकराज किशोरी शरण "रसिक अली", प्रताप कुँवरिबाई, काष्ठजिह्वा स्वामी "देव", पतितदास, उमापति त्रिपाठी "कोविद", रामशरण, युगलानन्दशरण "हेमलता", महाराज रघुराज सिंह, हनुमानशरण "मधुरअली", बैजनाथ, बनादास, शीलमणि, जानकीवर शरण "प्रीतिलता", परमहंस सीताशरण, वृषभानु कुँवरि "रामप्रिया", पं० रामवल्लभाशरण "प्रेमनिधि", रामवल्लभाशरण "युगल विहारिणी", कामेन्द्र मणि, सीताराम शरण "राम रसरंगमणि", सीतारामशरण भगवान प्रसाद "रूपकला" गोमतीदास "माधुर्यलता", सियाशरण मधुकरिया "प्रेमअली", स्वामी सियालाल शरण "प्रेमलता" आदि ।

प्रेमलताजी का महत्व सांप्रदायिक सिद्धान्त-विवेचन, नाम-रटन-प्रचार, युगल भाव के दासत्व और माधुर्य भाव द्वारा तत्कालीन युग में भक्ति और आस्था के उपदेश की दृष्टि से सर्वाधिक है ।

रामभक्तिशाखा के मधुरोपासक कवि प्रेमलताजी का साक्षात् केलिकुंज की यूथेश्वरी का अवतार या पराशक्ति सीता की अन्तरंग सहचरी आदि रूपों में संबोधित किया गया है । उनका जन्म ग्वालियर के पनियार ग्राम में संवत् 1928 (1871 ई०) में हुआ है । इनका मूल नाम बालाराम था । उनमें प्रारंभ से ही क्रीड़ा-प्रवृत्ति एवं भजन-प्रवृत्ति विद्यमान थी । सत्संग और साधना द्वारा उन्होंने रसिक भाव की सिद्धि प्राप्त की । चित्रकूट, अयोध्या, काशी और मिथिला (जनकपुर और सीतामढ़ी) में इनकी साधनाभूमि रही । इनके दीक्षा गुरू श्री रामवल्लभाशरण थे । प्रेमलता जी का निर्लोभ और त्यागी

व्यक्तित्व शृंगार रस की उपासना, नाम-रटन और वैष्णव-भाव से परिपूर्ण था। वे मस्तमौला, आबाल ब्रह्मचारी साधु थे। सीतामढ़ी की अन्तर्गृह एक कोशी परिक्रमा और वृहत् परिक्रमा द्वारा उन्होंने जनसाधारण को भक्ति रस का संदेश दिया। सीताराम उपासक होने के कारण उनमें प्रारंभ से ही हनुमत्साधना में रुचि थी। सामाजिक रूप से उन्होंने मिथिला के तीर्थ क्षेत्रों का पुनरुद्धार किया। उनमें लोकोपकारक चेतना और जनशक्ति के नेतृत्व की अद्भुत क्षमता थी। संवत् 1998 में काशी में रेल्वे लाइन पर इंजन का धक्का इनके लिए प्राणघातक सिद्ध हुआ और वहीं इन्होंने साकेत-यात्रा की।

प्रेमलताजी का व्यक्तित्व अक्खड़, आक्रामक होने के साथ भावुक भक्त और सरस कवि रूप का संयोग दिखाई पड़ता है। वे कबीर की भाँति आपादमस्तक मस्तमौला थे। उनकी रूपाकृति आकर्षक और प्रभावशाली थी। उन्होंने नामध्वनि को कीर्तन का आधार बनाया था। वे "जय सियाराम जय जय सियाराम" के उद्घोषक और प्रेमी थे। उनके व्यक्तित्व में मनुष्यता, उदारता, सहिष्णुता आदि गुणों का अपूर्व समन्वय था।

अंतः साक्ष्य की दृष्टि से भी प्रेमलताजी के ग्रंथों में मस्ती और फकीरी, ध्यान और नाम-रटन की बहुशः चर्चा हुई है।

परिवेश की दृष्टि से प्रेमलताजी की लीलाभूमि अयोध्या, चित्रकूट, काशी और मिथिला [जनकपुर और सीतामढ़ी] रही है। विशेषकर इनका अनुराग मिथिला-भूमि से ही सिद्ध होता है। इनकी साधना के परिवेश में काशी के संकटमोचन हनुमान मंदिर का भी महत्वपूर्ण स्थान है। स्पष्ट है कि उनका जीवन, परिवेश, भक्ति और साधना की रससिद्ध यात्रा है।

मधुरोपासक शृंगारी कवि प्रेमलताजी के कर्तृत्व में पूर्वाचार्यों के सिद्धान्तों का समन्वय और माधुर्य भक्तिरस का परिपाक मिलता है । प्रेमलताजी लिखित सभी ग्रंथ प्रकाशित हैं । अनुसंधान के पश्चात् उनके ग्रंथों की कोटि और संख्या निम्नलिखित ठहरती है -- वृहद् उपासना रहस्य में संकलित रचनाएं हैं -- सतगुरु प्रसंग, सियाराम नाम प्रसंग, रूप-प्रसंग, लीला प्रसंग, धाम प्रसंग, उपासना-प्रसंग, उपासक प्रसंग, पंच संस्कार प्रसंग, अष्टयाम प्रसंग, षट् शरणागति प्रसंग, षट् संपत्ति प्रसंग, प्रेमभक्ति प्रार्थना प्रसंग, प्रश्नोत्तर प्रसंग, अन्तिम ज्ञान प्रसंग, उत्तम वैष्णवों की शुभ लक्षणावली [गद्य रचना], शिव-पार्वती संवाद [गद्य रचना], प्रभु सेवा में बत्तीस अपराध [लघु रचना], सत्संग के बयासी अपराध-वर्णन [लघु रचना], दशनामापराध वर्णन [लघु रचना] ।

सीताराम रहस्य-दर्पण में संकलित रचनाएं हैं-- षट्ऋतु विमल विहार, जानकी विनय नामादि महत्व मिथिला विभूति प्रकाश चालीसा, वैराग प्रबोधक बहत्तरी, हितोपदेश शतक, सीताराम नाम रूप अनन्यता वर्णन, सीताराम नाम जापक महत्व, ज्ञान पचासा, भक्ति महारानी जू के अड़सठ अंग [लघु रचना], जानकी जन्मस्तुति [लघु रचना], प्रेमलता बाराखरी ।

नाम तत्व सिद्धान्त दोहावली में संकलित रचनाएं हैं -- नाम महिमा दृष्टान्तावली, सतगुरु शब्द यथार्थ ज्ञान वर्णन, गुरु पदार्थ प्रबोधिका, सन्त सीथ प्रसादी माहात्म्य, अनन्य शतक, नामस्तुति, निजात्म बोध दर्पण, अपेल सिद्धान्त प्रकाश, युगलनाम संबंध अष्टोत्तरी,. पैही अष्टक

{लघु रचना}, षोडश प्रकार की भक्ति {लघु रचना}, सन्त महिमा बीसिका {लघु रचना}, उपदेश पेटिका, सियाराम नामाष्टक {लघु रचना}, नास्तिकी प्रश्न और आस्तिकी उत्तर {गद्य रचना} । स्वतंत्र ग्रंथ हैं -- जानकी जन्मस्तुति, प्रेमलता पदावली, सार सिद्धान्त प्रकाश, नित्य प्रार्थना, जानकी बधाई, बाल लीला, चैतन्य चालीसा, विश्व विलास बीसिका, सत्य सिद्धान्त रहस्य प्रकाश अर्थात् आत्म अनात्म ज्ञान, श्री धाम श्री सीतामढ़ी माहात्म्य । नाम रहस्य त्रयी में संकलित रचनाएं हैं --सीताराम नाम संबंध बहत्तरी, नाम महत्व वर्णन, नाम वैभव प्रकाश चालीसा, सीताराम नामाष्टक {लघु रचना}, विशिष्टाद्वैत ध्यान वर्णन {लघु रचना} । श्री रामानंदी अवधूता मार्ग में संकलित रचनाएं हैं -- रामानंदी अवधूता मार्ग -- मुख्य वैष्णव सिद्धान्त, असली नकली परमहंसनि की पहिचान, परमहंस ज्ञान प्रबोधक पचीसी । इस प्रकार प्रेमलता विरचित छोटी-बड़ी सभी रचनाओं की संख्या 63 ठहरती है, जिनमें ग्रंथों की संख्या 49, लघु रचनाओं की संख्या ।। तथा गद्य रचनाओं की संख्या 3 है । ये सभी ग्रंथ मधुर भक्ति भाव के पोषक और रामकाव्य की सुदृढ़ परम्परा की कड़ी सिद्ध होते हैं ।

प्रेमलताजी सांप्रदायिक रसिक आचार्य होने के साथ भावावेशी भक्त संत भी थे । उनके काव्य में नाम तत्त्व और रूप तत्त्व का चित्रण मिलता है । सद्गुरू महत्व की चर्चा प्राय: प्रत्येक ग्रंथ में मिलती है । नाम महत्व के प्रतिपादन श्री सियाराम की उनके आराध्य और इष्ट हैं । सीताराम की महिमा और नाम-रटन को उन्होंने अपना प्रतिपाद्य बनाए रखा है । रूप प्रसंग में अवतार-तत्त्व के साथ युगल स्वरूप की छवि का वर्णन हुआ है । सीता और राम का अवतार रूप तत्त्व की दृष्टि से लीला भाव तथा शक्ति

तत्त्व और परत्व भाव का सूचक है । सीता को "सियस्वामिनी", "सर्वेश्वरी", "जनरक्षक" सुखादानि", समर्थ आह्लादिनी आदि रूपों में स्मरण किया गया है । प्रेमलताजी सियाराम नाम रटन को भजन और भक्ति का पर्याय मानते हैं । उपासना और उपासक प्रसंग में ऐश्वर्य और माधुर्य भाव का सम्मिश्रण मिलता है इसके कारण ही शील और मर्यादा का कहीं भी अतिक्रमण नहीं हुआ है । प्रेमलता जी की दृष्टि में उपासना के तीन प्रकार हैं -- अद्वैत, द्वैताद्वैत और विशिष्टा द्वैत । उन्होंने विशिष्टाद्वैत उपासना को अधिक महत्त्व दिया है । श्री संप्रदाय में उन्होंने पुरुष-भाव के त्याग करने का संकेत किया है । सखी भावना से ही यह दिव्यानुभव संभव है । इसके अतिरिक्त पंच संस्कार भी महत्वपूर्ण है । पंच संस्कार हैं -- मुद्रा, तिलक, नाम, मंत्र और माला {कंठी} । कवि ने युगल मंत्र और आत्म नाम या महली नाम की महत्ता और सार्थकता पर भी विचार किया है ।

अष्टयाम-प्रसंग का भावन मानसी पूजा और युगल रूप के रसात्मक चिन्तन हेतु होता है । अष्टयाम-भावना में साकेत लोक के अन्तर्गत दिव्य दम्पति श्री सियाराम की नित्य लीला में पंचकाल एवं अष्टकुंज की सेवा का मानसी ध्यान होता है । यह "महल की टहल" या "गुप्त रहस्य" जिसकी प्रेमी रसिक भक्त ही साक्षात्कार करता है । युगल दम्पति का यह रहस्य संबंध आत्मज्ञान और तत्सुखी भाव द्वारा ही संभव होता है । प्रेमलताजी ने "कुंज-निकुंज" लीला में गंभीर रुचि ली है । सखी भाव महिमा के साथ अष्टयाम-भावना-प्रसंग का विचार हुआ है । धाम-महत्व की दृष्टि से कवि ने मुख्यत: अयोध्या और मिथिला को सियाराम के धाम के रूप में विचारित किया है । मिथिला क्षेत्र में विशेषकर जनकपुर और सीतामही {सीतामढ़ी} का वर्णन विस्तार

पूर्वक हुआ है ।

प्रेमलताजी के अन्य भक्तिपरक दार्शनिक मत हैं -- षट् शरणागति, प्रेमभक्ति प्रार्थना, द्वादश प्रकार की भक्ति, सखी भाव की प्रेमा भक्ति, तत्सुखी भाव, हनुमत्भक्ति, भजन और सत्संग आदि ।

प्रेमलताजी का मधुर भाव तत्सुखी शाखा की भक्ति के अंतर्गत है । मधुर भाव में उपासना का लक्ष्य है भगवत् सान्निध्य प्राप्त कर भगवान् का प्रेमपात्र बनना । प्रेम स्वरूपा भक्ति द्वारा साधक परमात्मा से संबंध-स्थापन कर लीला-माधुरी का पान करता है । इष्ट से आन्तर मिलन ही उसका लक्ष्य होता हैए। मधुरोपासना में मनोवैज्ञानिक दृष्टि से काम का उदात्त रूप दाम्पत्य भाव के रूप में दिखाई देता है । मधुर रस का आस्वादन अनेक भाव भूमियों पर होता है । मनुष्य की यह शाश्वत वृत्ति प्रेम या रति कान्ता विषयक, देव विषयक और अपत्य विषयक होने से क्रमशः शृंगार रस, मधुर भक्ति रस और वात्सल्य रस के नाम से जानी जाती है । रसिक संतों की मधुर भावना में साकेत लीला या युगल दम्पति श्री सीताराम के नित्य विहार का रस चिन्तन मुख्य है । मधुर भक्ति देव संबंधी रति है दिव्य दम्पति का लीला भाव ऐश्वर्य और माधुर्य रूपों में व्यक्त होता है । वह शृंगार भावना सामंजस्य मूलक और मर्यादापूर्ण होती हैं ।

प्रेमलताजी ने अष्टयाम भाव को पर्याप्त महत्व दिया है । मानसिक अष्टयाम-भावना पराभक्ति का स्वरूप प्रत्यक्ष करती है । इनकी भावना में "निज रस अनन्यता" को महत्व मिला है । हिंडोर, झूलन होली आदि की भी चर्चा हुई है । यहाँ भक्त परिकर पद प्राप्त करता है ।

सखी या अलि वर्ग में सर्वेश्वरी का स्थान सर्वोच्च माना गया है । कवि ने सीताराम की सौन्दर्यच्छटा के साथ आभूषण, वस्त्र सौन्दर्य-वर्णन पर भी ध्यान दिया है । इस क्रम में सेवा-भाव, झूलन, रसिक भाव, रास नृत्य, सखी भाव की महिमा, होली वर्णन, मधुर रूप और माधुर्य भाव, गाली-सुख, वैष्णव शृंगारी रूप रसिक गुणगान, शृंगार रस और प्रभु भजन आदि का रसाविल उपस्थापन हुआ है ।

प्रेमलताजी के काव्य का भाषा शिल्प मध्यकालीन भक्ति परंपरा और समसामयिक (बीसवीं शताब्दी क आरंभ) प्रभावों से युक्त है । कवि ने रसिक भाव के साथ यथार्थवादी व्यंग्य शैली का भी प्रयोग किया है ।

काव्य भाषा अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम होती है । साहित्यिक भाषा में बोलचाल की भाषा, मुहावरों आदि का भी प्रयोग होता है । काव्य भाषा के स्वरूप में रूपकात्मकता, बिम्बात्मकता, संक्षिप्तता, व्यंजकता, प्रतीकात्मकता, रागात्मकता आदि का सम्मिलन देखा जाता है । मुख्यत: काव्यभाषा सर्जनात्मक गुणों से युक्त होती है । उसका कोई निश्चित बना-बनाया साँचा नहीं है, कवि आवश्यकतानुसार भाषा के स्वरूप का चयन कर लेता है । काव्य भाषा का शिल्प कविता के प्रभाव को नियोजित करने में समर्थ होता है । बिम्ब, भाषा, रचना-विधान, छन्द योजना द्वारा भाषा-शिल्प को विवेचित किया गया है । भारतीय काव्य शास्त्रीय चिन्तन में भाषा शिल्प की दृष्टि से शब्द, अलंकार, छन्द, रीति, वक्रोक्ति, ध्वनि आदि की चर्चा हुई है ।

प्रेमलताजी के काव्य में शब्द प्रयोगों की चार कोटियाँ मिलती हैं -- तत्सम शब्द प्रयोग, तद्भव शब्द-प्रयोग, देशज शब्द प्रयोग और उर्दू या विदेशी शब्द-प्रयोग । इसके अतिरिक्त कवि शब्दों के स्वरूप में भी पर्याप्त परिवर्त्तन और हेर फेर किया है । काव्य भाषा की यह रचनात्मक शक्ति कवि के काव्य में प्राय: सर्वत्र मिलती है । शब्द प्रयोगों में मुख्यता तत्सम एवं तद्भव शब्दों को मिली है । उदाहरण स्वरूप कवि के प्रतिनिधि काव्य-ग्रंथों से कुछ शब्द चुने गए हैं । इसी प्रकार उर्दू शब्दों का भी खुलकर प्रयोग हुआ है ।

प्रेमलताजी की काव्यभाषा अवधी व्रजभाषा और खड़ी बोली हिन्दी का कलात्मक मिश्रण प्रतीत होती है । यथास्थान यह काव्यभाषा अन्य भाषाओं और बोलियों से भी प्रभावित दिखाई देती है । यद्यपि प्रयोग, परंपरा, प्रवृत्ति और संस्कार की दृष्टि से उनमें तत्सम शब्द-प्रयोग की प्रवृत्ति प्रधान कही जा सकती है ।

अलंकारों का विधान काव्य भाषा और अभिव्यंजना को सौन्दर्य, वक्रोक्ति और अतिशयोक्ति से युक्त करने के लिए होता है । प्रेमलताजी ने सौष्ठव की दृष्टि से आलंकारिक भाषा का प्रयोग किया है । शब्दालंकारों में अनुप्रास, यमक, वक्रोक्ति आदि का और अर्थालंकार की दृष्टि से उपमा, रूपक, निदर्शना, उत्प्रेक्षा आदि अलंकारों का विधान किया गया है । उनके काव्य में प्रयुक्त अलंकार कृत्रिम न होकर भाव व्यंजक और कवि की माधुर्य-वृत्ति के पोषक हैं ।

आलंकारिक शब्द प्रयोगों द्वारा कवि ने अनुरणन मूलक भाषा शैली का भी प्रयोग किया है । ऐसा विशेषकर अष्टयाम-प्रसंग, होली, नृत्य, रास, झूलन आदि के अवसरों पर हुआ है । भक्ति, उपासना, सौन्दर्य और नीति कथन में कवि ने विशेषतया आलंकारिक उक्तियों का सहारा लिया है ।

प्रेमलताजी की काव्यभाषा का एक विशिष्ट पक्ष मिश्रित भाषा के रूप में दिखाई देता है । जिसमें व्रज, अवधी और खड़ी बोली का सम्मिश्रण है ।

मुहावरे भाषा के लाक्षणिक प्रभाव और संचित शक्ति का संकेत करते हैं । प्रेमलताजी ने सधुक्कड़ी मौज में काव्य भाषा को मुहावरे दार बनाकर प्रस्तुत किया है ।

छन्द का संबंध भाव और भाषा दोनों से होता है । छन्द का नियत एवं मधुर आवर्तन काव्य को सांगीतिक लय से भर देता है । प्रेमलताजी ने छन्दों में कुंडलिया, कवित्त, सवैया, मंजु छन्द, दोहा, पद, चौपाई, गजल, रेखता आदि का प्रयोग किया है । यह छंद-वैविध्य कवि के काव्य को एक व्यापक रचनात्मक रूप प्रदान करने में समर्थ होता है ।

अतः स्पष्ट है कि भाव और भाषा दोनों ही दृष्टियों से कवि श्री सियालाल शरण "प्रेमलता" का काव्य मधुर भक्ति की रसिकोपासना परंपरा में एक उच्चासन का अधिकारी बनता है तथा साहित्यिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से वह चिरस्थायी कीर्ति का कारण सिद्ध होता है ।

------- 0 -------